पुराना नियम

सुसमाचार सिद्धांत शिक्षक की निर्देशिका

पुराना नियम

सुसमाचार सिद्धांत शिक्षक की पुस्तिका

अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर
सॉल्ट लेक सिटी, यूटाह
द्वारा प्रकाशित

इस पुस्तिका के संदर्भ में आपकी टिप्पणियों और सुझावों की सराहना की जाएगी ।
कृप्या इन्हें निम्न पते पर भेजें:

Curriculum Planning
50 East North Temple Street, Floor 24
Salt Lake City, UT 84150-3200
USA
E-mail: cur-development@ldschurch.org

कृप्या अपने नाम, पता, वार्ड और स्टेक की सूचना दें ।
पुस्तिका के शीर्षक का निश्चित रूप से उल्लेख करें ।
तब पुस्तिका की मज़बूती और उन क्षेत्रों के सम्भावित उन्नति के विषय में
अपनी टिप्पणियों और सुझावों को दें ।

आवरण: *हन्ना अपने पुत्र शमूएल को एली को समर्पित करते हुए,* रोबर्ट टी. बैरेट के द्वारा
© 1996, 2005 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत में छपी

अंग्रेजी अनुमति: 01/01
अनुवाद अनुमति: 01/01
Old Testament: Gospel Doctrine Teacher's Manual का अनुवाद
Hindi

विषय-सूची

पाठ संख्या और शीर्षक		पृष्ठ
शिक्षक के लिए सहायता		v
1	''यह मेरा काम और मेरी महिमा है'' (मूसा 1)	1
2	''तुम्हें तुम्हारे जन्म से पूर्व ही चुन लिया गया था'' (इब्राहीम 3; मूसा 4:1...4)	4
3	सृष्टि (मूसा 1:27...42; 2...3)	7
4	''क्योंकि मेरे पाप के कारण मेरी आँखें खुल गईं'' (मूसा 4;5:1...15; 6:48...62)	10
5	''यदि तुम अच्छा करोगे, तुम्हें स्वीकार किया जाएगा'' (मूसा 5...7)	14
6	''नूह ने...अपने घर को बचाने के लिए एक जहाज बनाया'' (मूसा 8:19...30; उत्पत्ति 6...9; 11:1...9)	19
7	इब्राहीम की वाचा (इब्राहीम 1:1...4; 2:1...11; उत्पत्ति 12:1...8; 17:1...9)	23
8	दुष्ट संसार में धार्मिकता से जीना (उत्पत्ति 13...14; 18...19)	27
9	''परमेश्वर स्वयं एक मेमने को उपलब्ध कराएगा'' (इब्राहीम 1; उत्पत्ति 15...17; 21...22)	30
10	जन्मसिद्ध आशीषें; अनुबंध में विवाह (उत्पत्ति 24...29)	33
11	''इस महान दुष्टता को मैं कैसे कर सकता हूं'' (उत्पत्ति 34; 37...39)	38
12	''मेरी विपत्ति की जमीन में फलवान'' (उत्पत्ति 40...45)	42
13	दासता, पर्व्व, और निर्गमन (निर्गमन 1...3; 5...6; 11...14)	46
14	''तुम मेरे लिए एक असाधारण खजाना हो सकते हो'' (निर्गमन 15...20; 32...34)	50
15	''परमेश्वर की ओर देखो और जीओ'' (गिनती 11...14; 21:1...9)	55
16	''मैं प्रभु के शब्द के आगे नहीं जा सकता'' (गिनती 22...24; 31:1...16)	59
17	''सावधान ऐसा न हो कि तुम भूल जाओ'' (व्यवस्थाविवरण 6; 8; 11; 32)	62
18	''मजबूत और अच्छाई के लिए साहसी बनो'' (यहोशू 1...6; 23...24)	66
19	न्यायधीशों का राज्य (न्यायियों 2; 4; 6...7; 13...16)	70
20	''सारा शहर...जानता है कि तुम एक सदगुणी स्त्री हो'' (रूत; 1 शमूएल 1)	74
21	परमेश्वर उनका सम्मान करेगा जो उसका सम्मान करते हैं (1 शमूएल 2...3; 8)	77
22	''प्रभु हृदय को देखता है'' (1 शमूएल 9...11; 13; 15...17)	81
23	''प्रभु सदैव मेरे और तुम्हारे बीच में रहता है'' (1 शमूएल 18...20; 23...24)	86
24	''मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर'' (2 शमूएल 11...12; भजन संहिता 51)	89
25	''जितने प्राणी हैं सब के सब प्रभु की स्तुति करें'' (भजन संहिता)	94
26	राजा सुलेमानः बुद्धिमान व्यक्ति, मूर्ख व्यक्ति (1 राजा 3; 5...11)	98
27	दुष्ट और धार्मिक मार्गदर्शकों का प्रभाव (1 राजा 12...14; 2 इतिहास 17; 20)	102
28	''आग के बाद एक धीमी शान्त आवाज'' (1 राजा 17...19)	106

29	''उसने...एलिय्याह की चद्दर को उठाया'' (2 राजा 2; 5...6)	110
30	''यहोवा के भवन को आओ'' (2 इतिहास 29...30; 32; 34)	113
31	''वह व्यक्ति प्रसन्न है जो समझ प्राप्त करता है'' (नीतिवचन और सभोपदेशक)	118
32	''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है'' (अय्यूब 1...2; 13; 19; 27; 42)	123
33	संसार में सुसमाचार को बांटना (योना 1...4; मीका 2; 4...7)	127
34	''मैं धर्म के साथ तुझे अपना बनाऊंगा'' (होशे 1...3; 11; 13...14)	130
35	परमेश्वर अपने भविष्यवक्तों को अपने मर्म की बातें प्रकट करता है (आमोस 3; 7...9; योएल 2...3)	133
36	समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा (यशायाह 1...6)	137
37	''तू ने आश्चर्य कर्म किए है'' (यशायाह 22; 24...26;28...30)	140
38	''मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं'' (यशायाह 40...49)	143
39	''पहाड़ पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं'' (यशायाह 50...53)	146
40	''अपने तम्बू के स्थान चौड़ा कर'' (यशायाह 54...56; 63...65)	148
41	''आज मैंने तुझे इस...लोहे का खम्भा...बनाया है (यिर्मयाह 1...2; 15; 20; 26; 36...38)	151
42	''मैं उनके हृदयों में लिखूंगा'' (यिर्मयाह 16; 23; 29; 31)	154
43	इस्राएल के चरवाहे (यहेजकेल 18; 34; 37)	157
44	''जहां जहां यह नदी जायेगी वहां जीवन होगा'' (यहेजकेल 43...44; 47)	162
45	''यदि नाश हो गई तो हो गई'' (दानिय्येल 1; 3; 6; एस्तेर 3...5; 7...8)	165
46	''राज्य, जो अनन्तकाल तक नहीं टुटेगा'' (दानिय्येल 2)	169
47	''आओ हम कमर बान्धकर निर्माण करें'' (एज्रा 1...8; नहेमायाह 1...2; 4; 6; 8)	173
48	''यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन'' (जकर्याह 10...14; मलाकी)	177

शिक्षक के लिए सहायता

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था: ''मैं आशा करता हूं कि आपके लिए (धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना) एक काम से कुछ अधिक आनंददायक होगा; कि, बल्कि, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना, परमेश्वर के प्रति आपके प्रेम को बढ़ाने में आपकी सहायता करेगा । मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूं कि जब आप पढ़ते हैं, आपका ज्ञान विकसित होगा और आपकी आत्मिक उन्नति होगी'' ("The Light Within You," *Ensign,* मई 1995, 99) ।

एक सुसमाचार सिद्धांत शिक्षक होने के नाते, आपको कक्षा सदस्यों से पुराने नियम को प्रेम करना सिखाने में और जानकारी को खोजन में जिसकी अध्यक्ष हिंकली ने प्रतिज्ञा की थी, उनकी सहायता के लिए आपके पास अवसर हैं । जब आप पढ़ाते हैं, आप उद्धारकर्ता के उदाहरण का अनुसरण करेंगे, जिसने धर्मशास्त्रों से प्रेम किया और उनका उपयोग अपने शिष्यों को शिक्षा देने के लिए किया था ।

यीशु मसीह के पुनरूत्थान के तुरन्त बाद, उसने दो शिष्यों को शक्तिशाली सच्चाइयों की शिक्षा देने के लिए धर्मशास्त्रों का उपयोग किया था । एक शिष्य जिसका नाम क्लियुपास था और उसके साथी इम्माऊस नामक गाँव की सड़क पर चल रहे थे, समाचार पर चर्चा करते हुए जिसे उन्होंने सुना था कि यीशु का शरीर कब्र में नहीं था । जब वे चल रहे थे, उनके साथ यीशु भी हो लिया थे परन्तु उसे नहीं पहचाना था । उसने पूछा कि वे किसके बारे में बात कर रहे थे और वे क्यों दु:खी थे, और उन्होंने उसे क्रूसारोहण और पुनरूत्थान को बताया । जब यीशु ने यह सुना, ''उसने सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ उन्हें समझा दिया'' (लूका 24:27) ।

क्लियुपास और उसके साथी ने उद्धारकर्ता से उनके साथ रहने के लिए पूछा, और जब वे भोजन करने के लिए बैठे तब उन्होंने उसे पुनरूत्थारित प्रभु के रूप में पहचान लिया । तब वह उनकी आँखों से ओझल हो गया, और उन्होंने एक दूसरे से कहा, ''जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई ?'' (लूका 24:32) ।

धर्मशास्त्र जिन्होंने शिष्यों के मनों को उत्तेजित करने के लिए प्रेरित किया था, वह पुराने नियम के उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था गिनती और व्यवस्थाविवरण नामक किताबों से था और भविष्यवक्ताओं के द्वारा लिखी गई यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल इत्यादि नामक किताबों से था...धर्मशास्त्र जिन्हें हम पुराने नियम के रूप में जानते हैं । जब आप इन समान पवित्र सच्चाइयों की शिक्षा देते हैं, पवित्र आत्मा आपकी कक्षा के लिए उनकी सच्चाइयों की गवाही देगा जैसा कि उसने क्लियुपास और उसके साथी को दिया था ।

पुराने नियम का अध्ययन, कक्षा के सदस्यों की उद्धारकर्ता की गवाहियों और उनके सुसमाचार को जीने की उनकी वचनबद्धता को मजबूत करेगा । उनके अध्ययन में जब वे आत्मा के द्वारा निर्देशित किए जाएंगे, कक्षा के सदस्य अय्यूब के साथ गवाही के लिए समर्थ हो सकेंगे, ''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा'' (अय्यूब 19:25) ।

आत्मा के द्वारा शिक्षा देना

शिक्षा देने के लिए जब आप सुसमाचार सिद्धांत कक्षा की तैयारी करते हैं, यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रभु की आत्मा से प्रेरणा और मार्गदर्शन को खोजें । ''विश्वास की प्रार्थना के द्वारा तुम्हें आत्मा दी जाएगी, ''प्रभु ने कहा था, और यदि तुम आत्मा को प्राप्त नहीं करोगे तो तुम शिक्षा नहीं दोगे'' (सि. और अनु. 42:14) । याद रखें कि आपकी कक्षा में पवित्र आत्मा शिक्षक है ।

जिन तरीकों से आप आत्मा को खोजते हैं वह प्रार्थना, उपवास, नियमित रूप से धर्मशास्त्र का अध्ययन, और नियमों के प्रति आज्ञाकारी होना है । कक्षा की तैयारी करते समय, धर्मशास्त्रों और कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को समझने में आपकी सहायता के लिए, आत्मा के लिए प्रार्थना करें । धर्मशास्त्रों पर चर्चा करने के अर्थपूर्ण तरीकों की योजना और उन्हें अपने आज के जीवन में लागू करने की सहायता के लिए भी आत्मा आपकी सहायता कर सकती है (1 नफी 19:23) । आत्मा की सहायता के साथ, उसके बच्चों को उसके शब्द की शिक्षा देने के लिए आप प्रभु के हाथों में एक प्रभावी औजार बन सकेंगे ।

आपकी कक्षा में आत्मा को कैसे आमंत्रित किया जाए, के लिए कुछ सुझावों को नीचे दिया गया है:

1. पाठ के पहले और बाद में प्रार्थना करने के लिए कक्षा के सदस्यों को आमंत्रित करें । कक्षा के दौरान, अपने हृदय में आत्मा के मार्गदर्शन, कक्षा के सदस्यों के हृदयों की तैयारी और उनके प्रति गवाही और प्रेरणा के लिए, प्रार्थना करें ।

2. धर्मशास्त्रों का उपयोग करें (''धर्मशास्त्रों पर प्रकाश डालना'' के लिए नीचे देखें) ।

3. केवल पाठ के अंत में ही नहीं जब भी आत्मा आपको प्रोत्साहित करें, गवाही दें । उद्धारकर्ता की गवाही दें । प्रायः कक्षा के सदस्यों को उनकी गवाहियों को देने के लिए आमंत्रित करें ।

4. कक्षा के सदस्यों की आत्मा को महसूस करने की तैयारी के लिए स्तुति गीत, प्राथमिक गीतों, और अन्य पवित्र संगीत का उपयोग करें ।

5. कक्षा के सदस्यों के प्रति, अन्यों के प्रति, और स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति प्रेम को व्यक्त करें ।

6. कक्षा के सदस्यों के साथ अपनी पूरी जानकारी, अहसासों, और अनुभवों को बाँटें जो कि पाठ में सिद्धांतों से संबंधित हों । कक्षा के सदस्यों को भी इसे करने के लिए आमंत्रित करें । सदस्य यह भी बता सकते हैं कि पहले के पाठ में जिस पर चर्चा की गई थी, उसे उन्होंने कैसे लागू किया या क्या सीखा था ।

धर्मशास्त्रों पर प्रकाश डालना

सुसमाचार सिद्धांत कक्षा की तैयारी में, परिश्रमपूर्ण और प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्रों के अध्ययन की आवश्यकता है । प्रभु ने आज्ञा दी थी, ''मेरे शब्द को घोषणा के लिए मत खोजो, परन्तु पहले मेरे शब्द को प्राप्त करने के लिए खोजो ।'' धर्मशास्त्र अध्ययन के द्वारा, जब आप उसके शब्द को प्राप्त करते हैं, प्रभु प्रतिज्ञा करता है कि ''आपकी जबान को बंधनमुक्त किया जाएगा; तब, यदि आपकी इच्छा होगी, आपके पास मेरी आत्मा और मेरा शब्द होगा, हाँ लोगों को विश्वास करने के लिए परमेश्वर की शक्ति होगी'' (सि. और अनु. 11:21) ।

यह पुस्तिका धर्मशास्त्रों को पढ़ाने में आपकी सहायता के लिए एक औजार है । कक्षा के सदस्यों को उनके धर्मशास्त्रों को प्रत्येक सप्ताह लाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

कक्षा के दौरान, धर्मशास्त्रों पर प्रकाश डालने के लिए चर्चा रखें । सूचना के स्रोतों टीका-टिप्पणी और अन्य तरीके जो धर्मशास्त्र के न हों, के उपयोग में ज्ञानी और अच्छे न्यायी बनें । कक्षा के सदस्यों को, धर्मशास्त्रों से बुद्धि और प्रेरणा को खोजने के लिए और अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ताओं के शब्दों को सिखाया जाना चाहिए ।

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को, *पुराना-नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* (34592) देना चाहिए । यह निर्देशिका संक्षेपों और प्रश्नों को प्रदान करता है जो कक्षा के सदस्यों की धर्मशात्रों को समझने में, चिंतन करने में कि कैसे लागू किया जाए, और कक्षा में चर्चा की तैयारी में सहायता करेगा । पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन में अध्ययन निर्देशिका के उपयोग के लिए माता-पिता को प्रोत्साहित करें ।

पाठ की रूपरेखा

इस पुस्तिका को युवा और वयस्क सुसमाचार सिद्धांत कक्षाओं के लिए लिखा गया है और इसका उपयोग प्रत्येक चार वर्षों में किया जाना चाहिए । अधिक सूचनाओं का समावेश करते हुए पाठों को बनाया गया है जिसे आप एक कक्षा अवधि में पढ़ाने के लिए सक्षम हो सकें । धर्मशास्त्र विवरणों, प्रश्नों, और गतिविधियों को चुनने में प्रभु की आत्मा को खोजें जो कि कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से पूरा करता हो ।

प्रत्येक पाठ निम्नलिखित भागों को सम्मिलित करता हैः

1. *उद्देश्य* । जब आप पाठ की तैयारी और शिक्षा देते हैं, उसपर प्रकाश डालने के लिए उद्देश्यपूर्ण कथन आपको मुख्य सुझाव प्रदान करता है ।

2. *तैयारी* । पाठ की रूपरेखा में, इस भाग का पहला हिस्सा धर्मशास्त्र वृत्तान्तों को संक्षिप्त करता है । कुछ पाठ अतिरिक्त अध्ययन का सुझाव देते हैं जो आपकी समझ को बढ़ायेगा । कई पाठों में यह भाग अन्य प्रस्तावित तैयारियों को भी सम्मिलित करता है, जैसा कि सामग्रियाँ (चित्र, वस्तु, विडियो इत्यादि) जिसे आप कक्षा में लाना चाहेंगे ।

3. *ध्यान गतिविधि* । कक्षा के सदस्यों की सीखने, भागीदारी, और आत्मा के प्रभाव को महसूस करने की तैयारी की सहायता के लिए, यह भाग एक साधारण गतिविधि, वस्तु पाठ, या प्रश्नों को समाविष्ट करता है । या तो आप पुस्तिका की ध्यान गतिविधि या अपने स्वयं की एक का उपयोग करते हैं, यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि पाठ के आरंभ में कक्षा के सदस्यों के ध्यान पर प्रकाश डाला जाए । गतिविधि संक्षिप्त में होनी चाहिए ।

4. *धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना* । यह पाठ का मुख्य हिस्सा है । प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्र वृत्तान्तों का अध्ययन करें ताकि आप प्रभावपूर्ण तरीके से उनकी शिक्षा दे सकें और उनपर चर्चा कर सकें । कक्षा के सदस्यों की विभिन्न तरीकों से शिक्षा देने में और रूचि को बनाए रखने के लिए ''धर्मशास्त्रों को शिक्षा देने के लिए सहायता'' (नीचे) में से सुझावों का उपयोग करें ।

5. *निष्कर्ष*। यह भाग पाठ को संक्षिप्त करने में आपकी सहायता करता है और कक्षा के सदस्यों को सिद्धांतों को जीने में प्रोत्साहित करता है जिसकी आप चर्चा कर चुके हैं। यह आपको गवाही देने के लिए भी याद दिलाता है। प्रत्येक पाठ को समाप्त करने के लिए पर्याप्त समय को रखना निश्चित करें।

6. *अतिरिक्त शिक्षा सुझाव*। यह भाग धर्मशास्त्र वृत्तान्तों से अतिरिक्त सच्चाइयों, शिक्षा प्रस्तावों के विकल्प, गतिविधियों, और अन्य सुझावों को सम्मिलित करता है जो कि पाठ की रूपरेखा को पूरा करता है। पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ विचारों का उपयोग करना चाहें।

धर्मशास्त्रों की शिक्षा के लिए सहायता

धर्मशास्त्र वृत्तान्तों को अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से और बहुत विविधता के साथ शिक्षा देने के लिए निम्नलिखित सुझावों का उपयोग करें:

1. कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करें कि धर्मशास्त्र यीशु मसीह के बारे में क्या शिक्षा देते हैं, पुराने नियम के यहोवा, उसके जन्म, नश्वर मिशन, दूसरे आगमन के बारे में, और उसके बारे में जो पुराने नियम में हजार वर्ष के राज्य की भविष्यवाणी हुई थी।

2. कक्षा के सदस्यों को, धर्मशास्त्र से एक उद्धरण को विशेष तरीकों को सोचने और बताने के लिए कहें जो उनके जीवन में लागू होता हो।

3. सिद्धांत के अतिरिक्त, पुराने नियम की कहानियों पर भी जोर दें, खासकर विश्वास की कहानियों पर, सुनिश्चित करते हुए कि कक्षा के सदस्य उनको समझें और उनके लागू के प्रति उन्हीं के तरीकों पर चर्चा करें।

4. कक्षा के सदस्यों को शब्दों, मुहावरों, या विचारों को देखने दें जो एक धर्मशास्त्र उद्धरण में बार बार दोहराया गया हो या उनके लिए उसका विशेष मतलब हो।

5. चॉकबोर्ड पर कुछ मुहावरों, महत्वपूर्ण शब्दों, या प्रश्नों को लिखें जो धर्मशास्त्र वृत्तान्तों से संबंधित हों। तब वृत्तान्तों को पढ़ें और संक्षिप्त करें। जब कक्षा के सदस्य मुहावरों, महत्वपूर्ण शब्दों, या प्रश्नों के उत्तरों को सुनते हैं, रूकें और उनपर चर्चा करें।

6. मॉरमन की पुस्तक में शुरू से अंत तक, वाक्यांश ''और हम देखते हैं'' सिद्धांतों के सार के परिचय के लिए जिसकी शिक्षा दी गई है, उपयोग किया गया है। एक धर्मशास्त्र उद्धरण पर चर्चा के पश्चात, कक्षा के सदस्यों को ''और हम देखते हैं'' को तरीके से वाक्य को पूरा करने में लगाएं, सुसमाचार सिद्धांत को समझाने के लिए जिसे पढ़ाया जाना बाकी हो।

7. उन चिन्हों को देखें और चर्चा करें जिसका पुराने नियम में शुरू से अंत तक उपयोग किया गया हो। उदाहरण के तौर पर, दुल्हा और दुल्हिन इस्राएल और उद्धारकर्ता को दर्शाते हैं।

8. धर्मशास्त्रों में लोगों और घटनाओं पर ध्यान दें जो एक दूसरे के साथ विषमता में हों। उदाहरण के तौर पर, आप कैन की तुलना हाबिल और हनोक के साथ कर सकते हैं (मूसा 5...7); दाऊद और बतशेबा (2 शमूएल 11) की तुलना मिस्र के यूसुफ और पोतीपर की प्रस्तावित के साथ कर सकते हैं (उत्पत्ति 39:7...13); या भविष्यवक्ता एलिय्याह की तुलना दुष्ट राजा अहाब से कर सकते हैं (1 राजा 16:29..33; 17...19)।

9. कक्षा के सदस्य की अपने जगह पर खड़े होकर या बैठकर, धर्मशास्त्र में विभिन्न लोगों के शब्दों को पढ़ने के द्वारा, एक पढ़ने वाले नाटक का संचालन करें।

10. कक्षा को दो या अधिक छोटे छोटे दलों में बाँटे। धर्मशास्त्र वृत्तान्तों की समीक्षा के पश्चात, प्रत्येक दल को वृत्तान्तों में सिखाए गए नियमों को लिखने दें। फिर दलों को बारी बारी से चर्चा करने दें कि कैसे ये नियम उनके जीवन में लागू होते हैं।

11. कक्षा सदस्यों को पेन्सिल लाने के लिए आमंत्रित करें ताकि वे अपने धर्मशास्त्र की प्रतियों की महत्वपूर्ण आयतों पर निशान लगा सकें जब आप उनपर चर्चा करते हैं।

कक्षा में चर्चा को प्रोत्साहित करना

आपको व्याख्यान नहीं देना चाहिए परन्तु धर्मशास्त्रों पर चर्चा करते समय कक्षा के सदस्यों की अर्थपूर्ण भागीदारी के लिए सहायता करने की कोशिश करनी चाहिए। जब कक्षा के सदस्य भाग लेते हैं, वे अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से धर्मशास्त्रों के बारे में सीखते और अच्छी तरह से समझते हैं कि कैसे सुसमाचार सिद्धांतों को उनके जीवनों में लागू करना चाहिए। आत्मा की सहायता को खोजें यह निश्चित करते समय कि कौन सा प्रश्न पूछना है, उन्हें कैसे संगठित करना है, और उन्हें कैसे बढ़ाना है। कक्षा में चर्चा

उस विषय पर केन्द्रित चाहिए जो सदस्यों की यीशु के पास आने में और उसके शिष्यों की तरह जीने में सहायता करता है । चर्चा को रोक दें जो इन उद्देश्यों को पूरा नहीं है ।

धर्मशास्त्र प्रसंगों को, आपकी और कक्षा के सदस्यों की धर्मशास्त्रों में से अधिकतर प्रश्नों के उत्तरों को खोजने में सहायता के लिए दिया गया है । कुछ प्रश्नों के उत्तर कक्षा के सदस्यों के अनुभवों से मिलेगा ।

पाठ में सम्मिलित सभी चर्चाओं या बातों को पूरा करने से अधिक महत्वपूर्ण है कक्षा के सदस्यों की धर्मशास्त्रों को अच्छी तरह से समझने में सहायता करना और यीशु के शिष्यों की तरह जीने में अपने आपको समर्पित करना । यदि कक्षा के सदस्य अच्छी चर्चा से सीखते हैं तो अक्सर इसे जारी रखना सहायक होता है बजाय इसके कि पाठ में सम्मिलित सभी चर्चाओं या बातों को पूरा करना ।

कक्षा में चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए निम्नलिखित सहायक पंक्तियों का उपयोग करें:

1. प्रश्न पूछें और धर्मशास्त्र प्रसंग दें ताकि कक्षा के सदस्य उत्तर को खोज सकें ।

2. उन प्रश्नों को पूछें जिनमें विचार और चर्चा की आवश्यकता हो, बजाय उनके जिनमें हाँ या ना के उत्तर हों । प्रश्न जो क्यों, कैसे, कौन, क्या, कब, और कहाँ से आरंभ होते हैं, अधिकतर चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रभावपूर्ण होते हैं ।

3. कक्षा के सदस्यों को उनके अहसासों को बताने के बारे में प्रोत्साहित करें कि वे धर्मशास्त्रों से क्या सीख रहे हैं । उन्हें उन अनुभवों को भी बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो दिखाता हो कि कैसे धर्मशास्त्र के नियमों को जीवन में लागू किया जा सकता है । उनके सहयोग के बारे में सकारात्मक टिप्पणी दें ।

4. कक्षा के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकताओं पर विचार करें । यद्यपि कक्षा के सारे सदस्यों को कक्षा चर्चाओं में भागीदारी के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, इसके जवाब में कुछ हिचकिचा सकते हैं । पता करने के लिए आप उनके साथ अकेले में बात कर सकते हैं कि वे जोर से पढ़ने या कक्षा में भागीदारी के बारे में कैसा महसूस करते हैं । ध्यान दें कि कक्षा के उन सदस्यों को न बुलाएं जो शायद उलझ जाएं ।

5. सौंपे गए धर्मशास्त्र वृत्तान्त और पुराना नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका (34592) के अध्ययन द्वारा कक्षा की तैयारी के लिए कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें । यदि वे तैयार होते हैं तो वे चर्चा में भागीदारी के लिए अच्छी तरह से समर्थ होंगे । सुझाव दें कि कक्षा के सदस्य अपने परिवारों के साथ धर्मशास्त्र वृत्तान्तों और पाठों पर चर्चा करें ।

''यह मेरा काम और मेरी महिमा है''

पाठ
1

मूसा 1

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि (1) हम परमेश्वर के बच्चे हैं, (2) हम शैतान की लालचों का सामना कर सकते हैं, और (3) परमेश्वर का काम और महिमा हमारे लिए अमरत्व और अनन्त जीवन लाता है ।

तैयारी

1. अनमोल मोती से निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. मूसा 1:1...11 । मूसा परमेश्वर को देखता है और आमने-सामने उससे बात करता है । मूसा सीखता है कि परमेश्वर के इकलौते उत्पन्न की समानता में परमेश्वर का पुत्र है । सूचना: कक्षा के सदस्यों को समझना चाहिए कि स्वर्गीय पिता नहीं, बल्कि यहोवा दिव्यदर्शन में मूसा को दिखाई दिया थो । यहोवा पुराने नियम के पहले के जीवन में यीशु मसीह और परमेश्वर था । उद्देश्य में वही एक अपने पिता के साथ था और सामर्थ और अधिकार में उसका प्रतिनिधित्व किया था । उसके शब्द वही थे जो उसके पिता के थे, और कभी कभी, जैसा कि मूसा 1:6 में है, पिता के प्रति बोलने वाला प्रथम व्यक्ति था ।

   ख. मूसा 1:12...23 । शैतान मूसा का मुकाबला करता है; मूसा उसे बाहर निकाल देता है ।

   ग. मूसा 1:24...39 । परमेश्वर फिर से दिखाई देता है और अपने काम और महिमा की शिक्षा देता है ।

2. पाठ का अधययन करें और निश्चय करें कि धर्मशास्त्र वृत्तांतों की शिक्षा कैसे दी जाए । क्योंकि पाठ के प्रत्येक प्रश्न को पूछना और प्रत्येक चीज को पूरा करना कठिन हो सकता है, प्रार्थनापूर्वक उनको चुनें जो कक्षा के सदस्यों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से पूरा करता हो । आपको कुछ प्रश्नों को बताने की आवश्यकता हो सकती है जो कक्षा के सदस्यों की परिस्थितियों के अनुकूल हो ।

3. आपकी कक्षा में प्रत्येक व्यक्ति के लिए *पुराना नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* (34592) की एक प्रति को प्राप्त कराएं । (वार्षिक पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में इन अध्ययन निर्देशिकाओं को वार्ड ने पहले से ही मँगवाया होगा; अध्यक्षता के एक सदस्य को उन्हें रविवार विद्यालय अध्यक्षता को देनी चाहिए ।)

4. यदि आप दूसरी ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, एक कागज या कपड़े के थैले को प्राप्त करें और उसमें कुछ प्रतिदिन के उपयोग की वस्तुओं को रखें, जैसा कि एक पत्थर, कंघी, और पेन्सिल ।

प्रस्तावित पाठ विकास

पुराने नियम का परिचय

पुराना नियम परमेश्वर का उसके अनुबंधित लोगों के साथ व्यवहार का, सृष्टि से लेकर उद्धारकर्ता के जन्म से कुछ सैकड़ों वर्ष पहले तक का एक लेखा है, पुराना नियम विश्वास और आज्ञाकारिता का शक्तिशाली उदाहरण प्रदान करता है । यह भूल जाने,आज्ञा न मानने, या परमेश्वर के खिलाफ जाने के परिणामों को भी व्यक्त करता है । इसकी भविष्यवाणियाँ मसीह के जन्म, मुक्त करने वाले बलिदान, दूसरा आगमन, और हजार वर्ष के राज्य की साक्षी देती हैं ।

पुराने नियम के अतिरिक्त, इस पाठ्यक्रम में अनमोल मोती से मूसा और इब्राहीम की पुस्तकें सम्मिलित हैं । ये पुस्तकें, उत्पत्ति की पुस्तक में कुछ सामग्रियों के लिए महत्वपूर्ण संकलन और स्पष्टता प्रदान करतीं हैं । मूसा की पुस्तक बाइबिल के जोसफ स्मिथ अनुवाद से एक सार है । इब्राहीम की पुस्तक एक अनुवाद है जो भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कुछ मिस्र के पेपरियों से बनाया था । जोसफ स्मिथ अनुवाद के बारे में अतिरिक्त जानकारी के लिए, देखें ''जोसफ स्मिथ अनुवाद'' ।

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. कक्षा के सदस्यों को महत्वपूर्ण सच्चाइयों को पहचानने के लिए जिन्हें प्रकट किया जा चुका है, मूसा 1:6; 20...22 को देखने के लिए कहें । उत्तर अलग अलग हो सकते हैं । समझाएं कि यह पाठ तीन सच्चाइयों पर प्रकाश डालेगा जिसे पाठ 1 के प्रथम पृष्ठ पर ''उद्देश्य'' के अंतर्गत सूचीबद्ध किया गया है ।

2. कक्षा के दो सदस्यों को चुनें और उन्हें एक थैला थमाएं जिसमें प्रतिदिन के उपयोग की कुछ वस्तुएं हों (देखें ''तैयारी'' पृष्ठ 1) । भाग लेने वालों को बताएं कि वे एक खेल खेलने जा रहे हैं, परन्तु आदेश न दें या खेल के उद्देश्य को न समझाएं । भाग लेने

वालों को थैले को खोलने और खेल का आरंभ करने के लिए कहें । खेल को समझाने के लिए उन्हें थैले की वस्तुओं की आवश्यकता होगी । जब कि वस्तुएं इसकी जानकारी नहीं देते हैं, और भाग लेने वाले आश्चर्य करेंगे कि उन्हें करना क्या है ।

संकेत करें कि एक खेल को समझने के लिए हमें उसके विषय और उद्देश्य को समझना होगा । इसी तरह, धरती पर हमारे जीवन को समझने के लिए हमें अपने जीवन के विषय और उद्देश्य को समझना होगा । इसे समझने में मूसा 1, हमारी सहायता तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तरों द्वारा करता है ।

हम कौन हैं ?
हम शैतान के प्रभाव से बाहर कैसे आ सकते हैं ?
परमेश्वर का काम और उसकी महिमा क्या है ?

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र उद्धरणों की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कि इसका दैनिक जीवन में कैसे उपयोग होता हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्र के सिद्धांतों से संबंधित हों । पाठ के दौरान एक उपयुक्त समय पर *पुराना नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* (34592) को दें और कक्षा के सदस्यों को उनके व्यक्तिगत और पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन में सहायता के लिए इसके उपयोग को प्रोत्साहित करें ।

1. परमेश्वर शिक्षा देता है कि मूसा परमेश्वर का एक पुत्र है ।

मूसा 1:1...11 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- उन अनुभवों से मूसा परमेश्वर के बारे में क्या सीखता है जिनका वर्णन मूसा 1:1...7 में किया गया था ? मूसा स्वयं के बारे में क्या सीखता है ? (आप चाहेंगे कि कक्षा के सदस्य संख्या पर ध्यान दें कि इन आयतों में परमेश्वर मूसा को कितनी बार ''मेरा पुत्र'' कहता है ।)

- इसका क्या मतलब है कि मूसा को उद्धारकर्ता की ''समानता'' में बनाया गया है ? (मूसा 1:6) । यह जानकर हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, उसके पुत्र की समानता में बनाए हुए ?

  एल्डर डैलिन एच. ओक्स ने सीखाया थाः ''हमारे प्रिय गीत में सीखाए गए विचार की शक्ति पर ध्यान दें 'मैं परमेश्वर का एक बच्चा हूं।'...यह जीवन के महान प्रश्नों में से एक का उत्तर है, 'मैं कौन हूं ?' मैं स्वर्गीय माता-पिता के एक वंशावली आत्मा के साथ, परमेश्वर का एक बच्चा हूं । वह पितृत्व हमारी अनन्त क्षमता को निर्धारित करता है । वह शक्तिशाली विचार एक प्रभावशाली अवनत-विरोधी है । यह हममें से प्रत्येक को धार्मिक चुनावों के लिए मजबूत करता है और सबसे उत्तम को खोजने के लिए जो हममें है । एक...व्यक्ति के मन में शक्तिशाली विचार की स्थापना करें कि वह परमेश्वर का एक बच्चा है, और आपको जीवन की परेशानियों के विरूद्ध चलने के लिए आत्म-सम्मान और प्रयोजन को दिया गया है'' (Conference Report, में, अक्टू. 1995, 31; या *Ensign,* नव. 1995, 25) ।

- मूसा ''मेरा पुत्र'' कहकर बुलाने को दोहराये जाने के द्वारा और यह कहने के द्वारा कि उसे ''मेरे इकलौते उत्पन्न की समानता में'' बनाया गया है, परमेश्वर ने मूसा को उसकी योग्यता के अनुसार भरोसा और समझ को दिया । माता पिता होने के नाते, नियम का अनुसरण करने से हमारी सहायता कैसे हो सकती है ? यह विवाहों को कैसे मजबूत कर सकता है ? यह दोस्ती को कैसे मजबूत कर सकता है ?

  सुझाव दें कि संसार में जहाँ आलोचना और विरोध, नीचा दिखाने वाली टिप्पणियों का वर्चस्व प्रतीत होता है, हमें प्रभु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए और उन चीजों के बारे में बताना चाहिए जो दूसरों को उन्हें परमेश्वर के बच्चे के रूप में देखने में सहायता करें, जिनके पास गौरव और योग्यता है ।

- मूसा 1:1...7 में, मूसा की महता और अनन्त क्षमता पर बल दिया गया है । फिर भी, उससे परमेश्वर की मौजूदगी को हटा लेने के पश्चात, मूसा ने कहा था, ''अब, इस कारण के लिए मैं जानता हूं कि पुरूष कुछ भी नहीं है'' (मूसा 1:10) । किस तरह से दोनों धारणाएं सच हैं ? (परमेश्वर अन्नत महान और नश्वर पुरूष और स्त्रियों से अधिक शक्तिशाली है । उसके बिना हम कुछ भी नहीं हैं । फिर भी, उसके बच्चे होने के नाते हमारे पास उसकी तरह बनने की क्षमता है ।)

2. शैतान मूसा का मुकाबला करता है; मूसा उसे बाहर निकाल देता है ।

मूसा 1:12...23 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- जब शैतान आया, उसने मूसा को क्या करने की आज्ञा दी थी ? (देखें मूसा 1:12) । आपके विचार से शैतान ने मूसा को ''मनुष्य का पुत्र'' कहकर क्यों बुलाया ? (शैतान चाहता था कि मूसा विश्वास करे कि वह परमेश्वर का पुत्र नहीं है) । शैतान क्यों चाहता है कि हम सन्देह में रहें और अवहेलना करें कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं ? इसे करने की कोशिश वह किस तरह से करता है ?

- मूसा ने किस तरह उत्तर दिया जब शैतान ने उसे ''मनुष्य का पुत्र'' कहकर बुलाया ? (देखें मूसा 1:13) । किस तरह से मजबूत गवाहियाँ, कि हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं, लालच का सामना करने में हमारी सहायता करती है ?

- कितनी बार मूसा ने शैतान को चले जाने के लिए कहा था ? (देखें मूसा 1:16, 18, 20, और 21) । हमें परमेश्वर से दूर ले जाने की शैतान की कोशिशों का सामना करने के बारे में यह हमें क्या सीखाता है ?

- शैतान के लालच का सामना करने के लिए मूसा ने कैसे बल प्राप्त किया था ? (देखें मूसा 1:18; 20...21) । मूसा ने शैतान को कैसे भगाया था ? लालच का सामना करने में प्रार्थना हमें कैसे मजबूत कर सकता है ? इस बल को प्राप्त करने के लिए हम और क्या कर सकते हैं ?

3. परमेश्वर फिर से दिखाई देता है और अपने काम और महिमा की शिक्षा देता है ।

मूसा 1:24...39 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- शैतान के चले जाने के पश्चात, मूसा ने फिर से परमेश्वर की महिमा का अवलोकन किया और उसे पृथ्वी और उसकी दूसरी जातियों के दिव्यदर्शन को दिखाया गया (मूसा 1:24...28) । कौन से दो प्रश्न मूसा ने पूछा था जब उसे इस दिव्यदर्शन को दिखाया गया था ? (देखें मूसा 1:30) । परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया था ? (देखें मूसा 1:31...32, 39) ।

- यहाँ तक कि परमेश्वर ने संसारों और लोगों की सृष्टि की थी जो कि हमारे लिए असंख्यक हैं, उसने मूसा को आश्वासन दिया कि वह सभी को जानता है (मूसा 1:35) । क्या आपको ऐसा महसूस होता है कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह आप में से प्रत्येक को जानते हैं और प्रेम करते हैं ? (आप एक समय के बारे में गवाही देना चाहें जब अपने प्रति उनके प्रेम और चिन्ता को महसूस किया था) ।

- परमेश्वर का काम और महिमा ''आदमी के अमरत्व और अनन्त जीवन को जानना'' है (मूसा 1:39) । अमरत्व क्या है ? अमरत्व किसे प्राप्त होगा ? अनन्त जीवन क्या है ? अनन्त जीवन किसे प्राप्त होगा ?

  एलडर जेम्स ई. फॉस्ट ने कहा थाः ''अमरत्व, या अनन्त अस्तित्व, और अनन्त जीवन में अन्तर है, जो कि परमेश्वर की मौजूदगी में एक स्थान प्राप्त करना है । यीशु मसीह के अनुग्रह द्वारा, अमरत्व सभी के पास आता है...न्यायी या अन्यायी, धार्मिक या दुष्ट के पास । फिर भी, अनन्त जीवन परमेश्वर के महान उपहारों में सबसे बड़ा है' (सि. और अनु. 14:7) । प्रभु के अनुसार, हम इस महान उपहार को प्राप्त करते हैं, 'यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानते हो और अंत तक दृढ़ बने रहे ।' यदि हम दृढ़ बने रहते हैं, प्रतिज्ञा है कि, 'तुम्हें अनन्त जीवन प्राप्त होगा' (सि.और अनु. 14:7)'' (Conference Report, में, अक्टू. 1988,14; या *Ensign*, नव. 1988, 12) ।

- हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि परमेश्वर का काम और महिमा क्या है ? कुछ विशेष तरीके क्या हैं जिससे इस महान काम में हम उसकी सहायता कर सकते है ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः ''हम यहाँ पर अपने पिता के काम और उसकी महिमा में सहायता करने के लिए हैं, 'आदमी के अमरत्व और अनन्त जीवन को जानने'' के लिए (मूसा 1:39) । आपकी जिम्मेदारी के क्षेत्र में आपकी बाधा उतनी ही गंभीर है जितनी कि मेरे क्षेत्र में मेरी बाधा । इस गिरजाघर में कोई भी बुलाहट छोटी या तुच्छ नहीं है । जब हम अपने सारे कार्यों को पूरा करते हैं तब वह दूसरों के जीवन को प्रभावित करता है । हममें से प्रत्येक की निजी जिम्मेदारियों के प्रति प्रभु ने कहा हैः...'इन चीजों को करने से तुम अपने साथियों के प्रति बहुत अच्छा करते हो, और उसकी महिमा को बढ़ाते हो जो तुम्हारा प्रभु है' (सि. और अनु. 81:4)'' (Conference Report में, अप्रैल 1995,94; या *Ensign*, मई 1995, 71); सि. और अनु. 81:5...6 को भी देखें) ।

निष्कर्ष

मूसा 1 शक्तिशाली सिद्धांत की शिक्षा देता है कि हम परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं । कक्षा के सदस्यों को इस सच के अर्थ पर चिंतन करने के लिए आमंत्रित करें । गवाही दें कि स्वर्गीय पिता हममें से प्रत्येक को जानता है और प्रेम करता है । कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने परिवारों को अपने अहसासों के बारे में व्यक्त करें जिसे उन्होंने मूसा 1 से सीखा है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''मूसा को उसके हाल पर छोड़ दिया गया था'' (मूसा 1:9)

- ऐसे समय हो सकते हैं जब हमें ''अपने हाल पर'' छोड़ दिया जाए जैसा कि मूसा को छोड़ दिया गया था...समय जब हम आत्मा को मजबूती से महसूस नहीं करते हैं या बहुत परेशानियाँ हों । इन समयों का सामना करने में हमारी सहायता के बारे में, हम मूसा से क्या सीख सकते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता हैः इस तरह की कठिनाइयाँ हमारे तरफ से कुछ गलत करने

से शायद न आई हों; परमेश्वर हमें पूरी तरह से नहीं छोड़ेगा, जैसा कि आयत 15 में दिखाया गया है; और अपनी परेशानियों को सामना करने, परमेश्वर की बुलाहट, और अपने विश्वास को बढ़ाने के द्वारा हम अक्सर बहुत मजबूती प्राप्त करते हैं ।)

2. सभी परमेश्वर के बच्चे हैं

- मिस्र से इस्राएल के बच्चों को बाहर निकालने से पहले जो दिव्यदर्शन मूसा ने प्राप्त किया था, उसे मूसा 1 में अभिलेखित किया गया है । आपके विचार से इस कार्य में दिव्यदर्शन ने उसकी कैसे सहायता की थी, विशेषकर जब वह लोगों के निरन्तर विरोध और विश्वास की कमी के द्वारा हतोत्साहित हुआ था ? यह जानते हुए कि हममें से सभी परमेश्वर के बच्चे हैं, एक शिक्षक या मार्गदर्शक की सहायता कैसे कर सकता है ? यह ज्ञान हमें पारिवारिक सदस्यों, दोस्तों, और अन्यों के साथ संबंध बनाए रखने में हमारी सहायता कैसे कर सकता है ?

3. बाइबिल का जोसफ स्मिथ अनुवाद

यदि पुराना नियम का विडियो प्रस्तुरिकरण (53224) उपलब्ध हो, पाठ के हिस्से के रूप में आप पाँच मिनट का एक खण्ड, ''जोसफ स्मिथ अनुवाद की शक्ति'' को दिखाना चाहेंगे । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि मूसा की पुस्तक बाइबिल के जोसफ स्मिथ अनुवाद से एक सार है ।

''तुम्हें तुम्हारे जन्म से पूर्व ही चुन लिया गया था''

पाठ
2

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि पहले से नियुक्ति के सिद्धांत और उनके स्वयं की जिम्मेदारियाँ, परमेश्वर के राज्य के निर्माण और मसीह के पास आत्माओं को लाने में सहायता करना है ।

तैयारी

1. अनमोल मोती और सिद्धांत और अनुबंध से निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. इब्राहीम 3:11...12, 22...23; सिद्धांत और अनुबंध 138:53...57 । इब्राहीम परमेश्वर से आमने-सामने बात करता है और जानता है कि पहले के जीवन में कई ''उदार और महान'' आत्माओं को उनके नश्वर मिशन के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया था (इब्राहीम 3:11...12, 22...23) । अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ''उदार और महान आत्माओं'' के बारे में अधिक सीखते हैं उस दिव्यदर्शन से जिसमें, उद्धारकर्ता ने उसके पुनरूत्थारित के पहले आत्मिक दुनिया में दौरा किया था (सि. और अनु. 138:53...57) ।

   ख. इब्राहीम 3:24...28; मूसा 4:1...4 । दिव्यदर्शन में इब्राहीम और मूसा को दिखाया गया था कि स्वर्ग में एक परिषद् हुआ था जिसमें हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए यीशु मसीह को चुना गया था और कि हमने उसका अनुसरण करना चुना था । उन्हें यह भी दिखाया गया था कि लूसीफर (शैतान) और आत्माएं जिन्होंने उसका अनुसरण किया था, स्वर्ग से निकाल दिए गए थे ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: यशायाह 14:12...15; प्रकाशितवाक्य 12:7...9; अलमा 13:3...5; सिद्धांत और अनुबंध 29:36...39; और इब्राहीम 3 और सिद्धांत और अनुबंध 138 का बाकी बचा हिस्सा ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. समझाएं कि धर्मशास्त्र हमारे लिए तब अधिक अर्थपूर्ण बन जाता है जब उसकी शिक्षाओं को हम अपने जीवन में लागू करते हैं । इसे करने के लिए, अक्सर हमें अपने आपको पुराने भविष्यवक्ताओं की जगह पर रखकर उनका अनुसरण करना चाहिए । फिर भी, इब्राहीम 3:22...28 में हमें अपने आपको किसी और की जगह पर नहीं रखना है क्योंकि ये आयतें उन महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में है जिसमें हमने भाग लिया था । ये घटनाएं हमारे पहले के जीवन के दौरान हुई थीं ।

2. चॉकबोर्ड पर 14 खाली स्थान छोड़ें, अंग्रेजी में पहले से नियुक्ति के शब्द के 14 अक्षरों का प्रतिनिधित्व करने के लिए । समझाएं कि जिस शब्द का इन स्थानों के द्वारा प्रतिनिधित्व होता है वह पहले के जीवन से संबंधित है ।

   कक्षा के सदस्यों को 14 मौके दें उस शब्द के अक्षरों का अनुमान लगाने के लिए । जब वे एक सही अक्षर का अनुमान लगाते हैं, उसे उपयुक्त स्थान या स्थानों में लिखें । जब वे एक ऐसे अक्षर का अनुमान लगाते हैं जिसका शब्द में उपयोग नहीं है, दूसरे अनुमानों से बचने के लिए उसे चॉकबोर्ड पर कहीं और लिख दें ।

   जब कक्षा के सदस्यों ने सारे खाली स्थानों को भर दिया हो या शब्द का अनुमान लगा लिया हो, उसके अर्थ को समझने में उनकी सहायता करें । (पहले से नियुक्ति, परमेश्वर के आत्मिक बच्चों का उनके पहले के जीवन में उनकी नश्वर जीवनों के दौरान निश्चित कार्यों को पूरा करने के लिए किया गया था) । समझाएं कि यह पाठ पहले के जीवन के बारे में हैं जब स्वर्गीय पिता के लिए महत्वपूर्ण कामों को करने के लिए कई आत्माओं को पहले से ही नियुक्त किया गया था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. इब्राहीम सीखता है कि पहले के जीवन में कई आत्माओं को उनके नश्वर कार्यों के लिए पहले से ही नियुक्त किया गया था ।

इब्राहीम 3:11...12, 22...23, और सिद्धांत और अनुबंध 138:53...57 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- इब्राहीम 3 में अभिलेखित दिव्यदर्शन में, स्वर्ग में हुए परिषद् को प्रभु ने इब्राहीम को दिखाया था जो सृष्टि से पहले हुआ था । (ध्यान दें कि अंतिम-दिन के भविष्यवक्ताओं ने संकेत किया है कि स्वर्ग में परिषद् एक अकेली सभा की बजाय सभाओं की श्रृंखला थी) । इस परिषद् में कौन उपस्थित था ? (स्वर्गीय पिता और उसके आत्मिक बच्चे) । इब्राहीम 3:22...23 से हम परिषद् के बारे में क्या सीखते हैं ?

- इब्राहीम 3:22...23 में वर्णित किए गए ''उदार और महान लोग'' कौन थे ? (भविष्यवक्ता और गिरजाघर के अन्य मार्गदर्शक) । समझाएं कि 1918 में, अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने आत्मिक दुनिया के एक दिव्यदर्शन में उनमें से कुछ ''उदार और महान लोगों'' को देखा था । अध्यक्ष स्मिथ ने किसे देखा था ? (देखें सि. और अनु. 138:53; दूसरे अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को भी देखें) ।

- इसका क्या अर्थ है कि इब्राहीम को ''उसके जन्म से पहले चुन लिया गया'' था ? (देखें इब्राहीम 3:23 । उसे एक भविष्यवक्ता होने के लिए पहले से ही चुन लिया गया था) । पहले से नियुक्त होना का क्या अर्थ है ? (दूसरे ध्यान गतिविधि की परिभाषा देखें) । सिद्धांत और अनुबंध में व्याख्या किए गए लोगों को क्या करने के लिए पहले से नियुक्त किया गया था ? (देखें सि. और अनु. 138:53...56) ।

- क्या पहले से नियुक्त होना आश्वासन देता है कि इब्राहीम, जोसफ स्मिथ, और दूसरे भविष्यवक्ता बनेंगे ? पहले से नियुक्त होना और चुनने की स्वतंत्रता में क्या संबंध है ? (यहाँ तक कि व्यक्ति की बुलाहट को पहले से ही नियुक्त किया गया हो, यह बुलाहट व्यक्ति के योग्यता और उसके ग्रहण करने की इच्छा पर आधारित होती है) ।

- भविष्यवक्ताओं की उनकी बुलाहट की पहले से नियुक्ति के अतिरिक्त, परमेश्वर ने कई ''अन्य चुनी हुई आत्माओं'' को, विभिन्न तरीकों में उसके राज्य की निर्माण की सहायता के लिए पहले से नियुक्त किया था । क्या करने के लिए हमारी नियुक्ति पहले से ही हुई हो सकती है ? (देखें सि. और अनु. 138:56) ।

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया थाः

  ''प्रभु के दूसरे आगमन से पहले, अन्तिम दिनों में आपके उपस्थिति के लिए परमेश्वर ने आपको बचा कर रखा है । कुछ व्यक्ति दूर हो जाएंगे; परन्तु परमेश्वर का राज्य उसके प्रधान के स्वागत के लिए अखंड रहेगा...यहाँ तक कि यीशु मसीह के लिए भी । जब हमारी पीढ़ी की तुलना नूह के दिनों की दुष्टता से की जाएगी, जब प्रभु ने पृथ्वी की सफाई बाढ़ के द्वारा की थी, इस समय एक बहुत बड़ा अंतर है । अंत में परमेश्वर ही था जिसने अपने कुछ मजबूत बच्चों को बचाया था, जो कि राज्य को विजयमान बनाने में सहायता करेंगे...

  ''...इसके विषय में कोई गलती न करें...आप विशेष वशं के हैं । इतने कम समय में कभी भी विश्वासियों से अधिक आशा नहीं की गई थी, बजाय कि हमसे की गई है'' (The Teaching of Ezra Taft Benson [1988], 104..5) ।

- कैसे हम निश्चित हो सकते हैं कि हम अपनी पहले से नियुक्त की गई बुलाहटों को पूरा कर रहे हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है सुसमाचार को जीने में, अपने कुलपति के आशीर्वाद, और व्यक्तिगत प्रकटीकरणों को खोजने के द्वारा । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि इन बुलाहटों को पूरा करने के लिए, हमें इच्छुक और योग्य होना चाहिए । सि. और अनु. 58:27...28 को भी देखें) ।

२. यीशु मसीह को हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए स्वर्ग में हुई परिषद् में चुन लिया गया था; हमने उसका अनुसरण करना चुना था । लूसीफर (शैतान) और आत्माएं जिन्होंने उसका अनुसरण किया था, स्वर्ग से निकाल दिए गए थे ।

इब्राहीम 3:24...28 और मूसा 4:1...4 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- समझाएं कि स्वर्ग में हुई परिषद् में, स्वर्गीय पिता ने उनकी उद्धार की योजना को प्रस्तुत किया था और हमारे लिए एक उद्धारकर्ता को चुना था । हमारा उद्धारकर्ता होने के लिए कौन सी दो आत्माओं ने प्रस्ताव दिये थे ? (देखें इब्राहीम 3:27; मूसा 4:1...2) । उनके प्रस्ताव भिन्न कैसे थे ? (यीशु स्वर्गीय पिता की योजना का अनुसरण करना और उन्हें महिमा देना चाहता था । लूसीफर अपने स्वयं की योजना का अनुसरण और अपने लिए महिमा लेना चाहता था) । स्वर्गीय पिता ने हमारा मुक्तिदाता होने के लिए यीशु मसीह को क्यों चुना था ? (देखें मूसा 4:2...3) ।

- स्वर्ग में हुई परिषद् में हमने किसका अनुसरण करना चुना था ? हम कैसे जानते हैं कि हमने यीशु मसीह का अनुसरण करना चुना था ? (हमने शारीरिक शरीरों को प्राप्त करने के लिए पृथ्वी पर जन्म लिया है) ।

- इब्राहीम 3:26 में *प्रथम स्थिति* और *दूसरी स्थिति* का क्या अर्थ है ? (पहली स्थिति का अर्थ है पहले का जीवन, और दूसरी स्थिति का अर्थ है हमारा नश्वर जीवन । हमने अपनी पहली स्थिति को लूसीफर की जगह यीशु मसीह का अनुसरण करना चुनने के द्वारा बनाए रखा) । अपनी पहली स्थिति को बनाए रखने के कारण हममें से प्रत्येक कौन सी आशीष को प्राप्त करता है ? (पृथ्वी पर जन्म लेने के अवसर को) । कौन सी आशीषें हमें प्राप्त होंगी यदि हम अपनी दूसरी स्थिति को बनाए रखेंगे ? (देखें इब्राहीम 3:26) । हम अपनी दूसरी स्थिति को कैसे रख सकते हैं ?
- लूसीफर (शैतान) का और उनका क्या हुआ जिन्होंने उसका अनुसरण करना चुना था ? (उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया गया और उन्होंने शारीरिक शरीरों को प्राप्त करने के अवसर को खो दिया था । देखें मूसा 4:3; इब्राहीम 3:28; प्रकाशितवाक्य 12:7...9; सि. और अनु. 29:36...27) ।
- शैतान और उसके अनुसरण करने वाले अब क्या कर रहे है ? (वे अभी भी हमारी स्वतंत्रता को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं । वे पृथ्वी पर बुरी आत्माओं के रूप में आज भी हैं जो हमें पाप करने का लालच देते हैं । देखें मूसा 4:4) । वे कौन से कुछ तरीके हैं जिनसे शैतान और उसका अनुसरण करने वाले हमारी स्वतंत्रता को कम या नष्ट करने की कोशिश करते हैं ? हम उनके काम को पहचानने और उनका सामना करने के लिए क्या कर सकते हैं ?
- यह जानना आपकी कैसे सहायता करता है कि स्वर्ग में हुई परिषद् में आपने यीशु मसीह का अनुसरण करना चुना था ? कक्षा के सदस्यों को प्रात्साहित करें कि उन्होंने मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लेना जारी रखा है, जैसा कि उन्होंने पहले के जीवन के अस्तित्व में किया था ।

निष्कर्ष

हमारे लिए पहले से नियुक्त उद्धारकर्ता के रूप में यीशु मसीह और उसके कार्य की गवाही दें । कक्षा के सदस्यों की क्षमता में अपने भरोसे को व्यक्त करें कि वे परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए पहले से नियुक्त अपने कार्य को पूरा करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''और यहाँ पर हम उन्हें सिद्ध करेंगे''

- इब्राहीम 3:24...25 मुख्य उद्देश्यों में से एक को उल्लेखित करता है जिसके लिए यीशु मसीह ने स्वर्गीय पिता के निर्देशन में पृथ्वी की सृष्टि की थी । पृथ्वी की सृष्टि क्यों की गई थी ? यह आपकी जानने में कैसे सहायता करता है कि यह जानते हुए कि आपकी परीक्षा ली जाएगी, आपने पृथ्वी पर आना चुना ?

2. ''महान और शक्तिशाली लोग''

- सिद्धांत और अनुबंध 138 में अभिलेखित अपने दिव्यदर्शन में, अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने कुछ ''महान और बलवान लोगों'' को भी देखा था जो मसीह के जन्म से पहले धरती पर रह चुके थे । अध्यक्ष स्मिथ ने किसे देखा था ? (देखें सि. और अनु. 138:38...49) । आप इन नामों की सूची चॉकबोर्ड पर बनाना चाहें । संकेत करें कि आने वाले वर्ष में रविवार विद्यालय के दौरान कक्षा के सदस्य इन व्यक्यिों में से अधिकतर के बारे में सीखेंगे) ।

पाठ
3

सृष्टि

मूसा 1:27...42; 2...3

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को आभार महसूस करने में सहायता करना कि परमेश्वर ने सारी चीजों की सृष्टि हमारे फायदे के लिए किया है और कि हम उसकी समानता में बनाए गए हैं ।

तैयारी

1. अनमोल मोती से निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. मूसा 1:27...42 । मूसा परमेश्वर की सृष्टि के एक दिव्यदर्शन को देखता है और उसे पृथ्वी की सृष्टि के एक विवरण को लिखने की आज्ञा दी जाती है ।

   ख. मूसा 2:1...25; 3:1...14 । मूसा सीखता है कि परमेश्वर सारी चीजों का सृष्टिकर्ता है ।

   ग. मूसा 2:26...31; 3:7,15–25 मूसा सीखता है कि पुरूष और स्त्रियों को परमेश्वर की समानता में बनाया गया है ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः इब्राहीम 4...5; उत्पत्ति 1...2 ।

3. यदि आप दूसरे ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, प्रतिरूपण मिट्टी या चॉक लाएं ।

4. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहें:

   क. ''परमेश्वर की समानता में'', पुराना नियम के विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) से एक तीन मिनट का खण्ड ।

   ग. चित्रित सृष्टि...जीवित प्राणी (62483; सुसमाचार कला चित्र किट 100) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. कक्षा के सदस्यों को सोचने के लिए कहें कि वे कितनी जानकारी दे सकते हैं यदि वे पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चे, जो अभी विद्यालय न जाता हो, के निम्नलिखित प्रश्नों में से एक का उत्तर देने की कोशिश करते हैं । कैसे एक हवाई जहाज हवा में रूकता है ? टेलिविजन कैसे काम करता है ? पौधे कैसे बढ़ते हैं ? हममें से अधिकतर उस बच्चे की समझदारी पर सोचेंगे और केवल सामान्य धारणाओं को ही बताएंगे, बाकी सारी जानकारी को तब तक के लिए छोड़ते हुए जब तक कि बच्चा विकसित न हो जाए ।

   - निम्नलिखित उदाहरण कैसे सृष्टि के बारे में प्रभु के प्रकटीकरणों की तरह है ? (प्रभु ने केवल अनन्त सच के उस भाग का प्रकटीकरण किया था जिसे हमारा नश्वर मन समझ सकता है और हमें उद्धार की प्राप्ति को जानने की आवश्यकता है) ।

   यह पाठ सच्चाइयों पर चर्चा करेगा जिसे प्रभु ने सृष्टि के बारे में प्रकट किया है ।

2. कक्षा के एक सदस्य को स्वेच्छा से प्रतिरूपण मिट्टी या चॉक का उपयोग करते हुए एक छोटे जानवर को बनाने या उसका चित्र बनाने के लिए कहें (केवल एक या दो मिनट दें) । तब तथ्य पर चर्चा करें कि जब हम एक जीवित चीज का नमूना बना सकते हैं, केवल परमेश्वर ही जीवन दे सकता है । यह पाठ परमेश्वर की पृथ्वी की सृष्टि की महान चमत्कार और प्रत्येक चीज के बारे में जो उसमें रहता है, पर चर्चा करेगा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. मूसा परमेश्वर की सृष्टियों के एक दिव्यदर्शन को देखता है ।

मूसा 1:27...42 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- उत्पत्ति में सृष्टि के विवरण को किसने लिखा था ? (देखें मूसा 1:40; 2:1) ।मूसा ने इस विवरण को क्यों लिखा था ? (देखें मूसा 1:40...41) । मूसा 1:27...39 से हम परमेश्वर के सामर्थ के बारे में क्या सीख सकते हैं ? हम परमेश्वर का उसके बच्चों के प्रति प्रेम के बारे में क्या सीख सकते हैं ?

- उत्पत्ति, मूसा, और इब्राहीम में पाया जाने वाला सृष्टि का विवरण एक दूसरे से कैसे अलग है ? (इब्राहीम और मूसा ने इस पृथ्वी के संगठन के दिव्यदर्शन को देखा था और फिर अपने दिव्यदर्शनों को अभिलेखित किया था । प्रत्येक ने थोड़ी सी विभिन्न जानकारियों को सम्मिलित किया था । उत्पत्ति में जो विवरण था वह हकीकत में मूसा द्वारा लिखा गया था, परन्तु उसके विवरण के कुछ पूर्णता खो गए थे । इसी पूर्णता को मूसा की पुस्तक में पुनःस्थापित किया गया है ।

2. मूसा सीखता है कि परमेश्वर ने सारी चीजों की सृष्टि की थी।

मूसा 2:1...25; 3:1...14 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- पृथ्वी की सृष्टि किसने की ? (देखें मूसा 1:32; 2:1; यूहन्ना 1:1...3, 14; इब्रानियों 1:1...2; मुसायाह 3:8; सि. और अनु. 14:9 को भी देखें) । हमारे लिए यह जानना महत्वपूर्ण क्यों है कि सृष्टिकर्ता कौन है ?

- सृष्टि के उद्देश्य के बारे में परमेश्वर ने क्या प्रकट किया था ? (देखें मूसा 1:39; इब्राहीम 3:24...25; 1 नफी 17:36; 2 नफी 2:11...15 को भी देखें । सृष्टि का उद्देश्य एक स्थान को प्रदान कराना है जहाँ पर स्वर्गीय पिता के आत्मिक बच्चे एक शारीरिक शरीर को प्राप्त करने के लिए आ सकते हैं और यह देखने के लिए उनकी परीक्षा होगी कि क्या वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे जब वे उसकी उपस्थिति से दूर होंगे । जो विश्वासी हैं अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे । आप संकेत करना चाहें कि यद्यपि सृष्टि का विवरण उत्पत्ति की पुस्तक में सम्मिलित है, सृष्टि का उद्देश्य और उसकी महता को केवल अन्तिम-दिनों के प्रकटीकरण में ही समझाया गया है ।

- पृथ्वी का जीवन, अनन्त जीवन के लिए किन तरीकों से तैयारी करता है ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता हैः हम शारीरिक शरीरों को प्राप्त करते हैं, अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करना सीखते हैं, ज्ञान प्राप्त करते हैं, परिवार बनाते हैं, धर्मविधियों को प्राप्त करते हैं, और अनुबंधों को बनाते हैं) ।

- सृष्टि के परिणामों के बारे में परमेश्वर क्या कहता है ? (देखें मूसा 2:4, 10, 12, 18, 21, 25, 31; 3:2 । सृष्टि के संक्षिप्त विवरण में आठ बार, परमेश्वर ने घोषित किया था कि उसका कार्य अच्छा था) । परमेश्वर की सृष्टियों में से विशेषकर आपके लिए कौन सी सुंदर हैं ? प्रत्येक दिन सृष्टि की सुंदरताओं पर अधिक ध्यान देने के द्वारा हम फायदेमंद क्यों हो सकते हैं ?

- क्या पृथ्वी की सृष्टि उससे हुई थी जो शून्य था ? (देखे इब्राहीम 3:24; 4:1)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा थाः ''शब्द सृष्टि, इब्रानी शब्द *बौरो* से आया जिसका मतलब शून्य से बनाना नहीं था; इसका मतलब संगठित करना था; उसी तरह जैसा कि एक पुरूष सामग्रियों को इकट्ठा करता है और एक जहाज बनाता है । इसलिए, हम अनुमान लगाते हैं कि परमेश्वर के पास अव्यवस्था...अस्तव्यस्त तत्वों से संसार को संगठित करने के लिए सामग्रियाँ थीं । (*Teachings of the Prophet Joseph Smith,* Sel. Joseph Fielding Smith [1976], 350...51) ।

- स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के प्रति, सृष्टि का विवरण आपके एहसासों को कैसे प्रभावित करता है ? सृष्टियाँ परमेश्वर के ''अभिलेख'' को कैसे बताती हैं ? (देखें मूसा 6:63; अलमा 30:44) । सृष्टि के उपहार के लिए हम अपना आभार कैसे व्यक्त कर सकते हैं ?

3. मूसा सीखता है कि पुरूष और स्त्रियों को परमेश्वर की समानता में बनाया गया है ।

मूसा 2:26...31; 3:7, 15...25 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- हमें किसकी समानता में बनाया गया है ? (देखें मूसा 2:26...27) ।

  प्रथम अध्यक्षता ने कहा थाः ''सारे पुरूष और स्त्रियों को विश्वव्यापक माता और पिता की समानता में बनाया गया है, और वास्तविक में परमेश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं'' । ("The Origin of Man," *Improvement Era,* नव. 1909, 78) ।

- किस तरह से यह ज्ञान हमारें जीवनों को आशीषित करता है कि हमें परमेश्वर की समानता में बनाया गया है ? दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंध पर इसका क्या प्रभाव होना चाहिए ?

- मूसा 7:30 में हनोक के शब्द, हममें से प्रत्येक के प्रति परमेश्वर के व्यक्तिगत रूप से देखभाल के बारे में क्या शिक्षा देता है ? स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के बारे में वे क्या शिक्षा देते हैं ?

- आपके विचार से प्रभु के लिए इसका क्या मतलब था जब उसने पृथ्वी पर सारी सृष्टियों के ऊपर हमारे स्वामित्व को कहा था ? (देखें मूसा 2:26 । हमें पृथ्वी का सम्मान करने की और परमेश्वर की सृष्टियों के प्रति देखभाल करने की आवश्यकता है) । सृष्टियों के ऊपर अपने स्वामित्व की जिम्मेदारी को हम अच्छी तरह से कैसे पूरा कर सकते हैं ?

निष्कर्ष

सिद्धांतों की सच्चाई की गवाही दें जिसे आपको सीखाया गया है । कक्षा के सदस्यों को सृष्टि के बारे में उनके अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

सृष्टि की अवधि

सृष्टि के लिए आवश्यक समय की अवधि के बारे में जानकारी नहीं है । सृष्टि के धर्मशास्त्र विवरण में समय *दिन*, एक 24 घंटे की अवधि को नहीं दर्शाता है । इब्रानी शब्द योम का ''दिन'', ''समय'', या ''अवधि'' के रूप में अनुवाद किया जा सकता है । प्रेरित पतरस ने कहा था कि ''प्रभु के साथ एक दिन एक हजार वर्ष के बराबर है'' (2 पतरस 3:8; इब्राहीम 3:4 को भी देखें) ।

''क्योंकि मेरे पाप के कारण मेरी आँखें खुल गईं''

पाठ
4

मूसा 4; 5:1...15; 6:48...62

उद्देश्य

कक्षा के प्रत्येक सदस्य की समझने में सहायता करना कि आदम और हव्वा का पतन हमारे लिए स्वर्गीय पिता की योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. मूसा 4; 5:10...11; 6:48...49, 55...56 । शैतान अदन बाटिका में आता है और हव्वा को छलने का प्रयत्न करता है । आदम और हव्वा अच्छे और बुरे ज्ञान के वृक्ष का फल खाते हैं (4:5...12) । पाप में गिरने के पश्चात, बाटिका में से आदम और हव्वा को निकाल दिया जाता है (4:13...31) । बाद में आदम और हव्वा पतन की आशीषों को प्राप्त करते हैं (5:10...11) । हनोक पतन के प्रभाव के बारे में शिक्षा देता है (6:48...49, 55...56) ।

   ख. मूसा 5:14...15; 6:50...54, 57...62 । यीशु मसीह के प्रायश्चित के कारण, नश्वरता को पुनरूत्थान के द्वारा शारीरिक मृत्यु से बचाया जाएगा और शायद विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार, और नियमों के प्रति आज्ञाकारिता के कारण आत्मिक मृत्यु से बचाया जाएगा ।

   ग. मूसा 5:1...9, 12 । नश्वरता के रूप में आदम और हव्वा जीवन का आरंभ करते हैं । उनके पास बच्चे होते हैं और उन्हें उन सच्चाइयों की शिक्षा देते हैं जिन्हें उन्होंने सीखा था (5:1...4, 12) । आदम उसी तरह के बलिदानों को करता है जैसा कि इकलौते जन्मे ने किया था (5:5...9) ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: उत्पत्ति 2...3; 1 कुरिन्थियों 15:20...22; 2 नफी 2:5...30; 2 नफी 9:3...10; इलामन 14:15...18; सिद्धांत और अनुबंध 19:15...19; 29:34...44; विश्वास के अनुच्छेद 1:2 ।

3. आप शायद कक्षा के एक सदस्य से आदम और हव्वा के पतन के विवरण (मूसा 4:6...31) को संक्षिप्त में करने की तैयारी के लिए और कक्षा के अन्य एक सदस्य से आदम के बलिदानों के विवरण (मूसा 5:5...9) को संक्षिप्त में करने की तैयारी के लिए पूछ सकते हैं ।

4. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहें:

   क. ''पतन'', पुराने नियम विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) से एक छः मिनट का खण्ड करें ।
   ख. आदम और हव्वा का चित्र (62461; सुसमाचार कला चित्र किट 101) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

पृष्ठ 13 के उदाहरण का चित्र चॉकबोर्ड पर बनाएं । कक्षा के सदस्यों को बताएं कि एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा था कि हमारे लिए उद्धार को ''तीन ईश्वरीय घटनाओं...अनन्तता के तीन स्तम्भों'' के कारण संभव बनाया गया (*A New Witness for the Articles of Faith* [1985], 81) । तब निम्नलिखित प्रश्न को पूछें:

- कुछ घटनाएं कौन सी हैं जो ''अनन्तता के स्तम्भों'' की तरह महत्वपूर्ण है जो उद्धार को संभव बनाता है ? (एल्डर मैकान्की ने कहा था कि ये स्तम्भ सृष्टि, पतन, और प्रायश्चित है, जो हमारे लिए परमेश्वर के उद्धार की योजना का सारा हिस्सा है । चॉकबोर्ड पर शब्द *सृष्टि, पतन,* और प्रायश्चित को तीन स्तम्भों में लिखें) ।

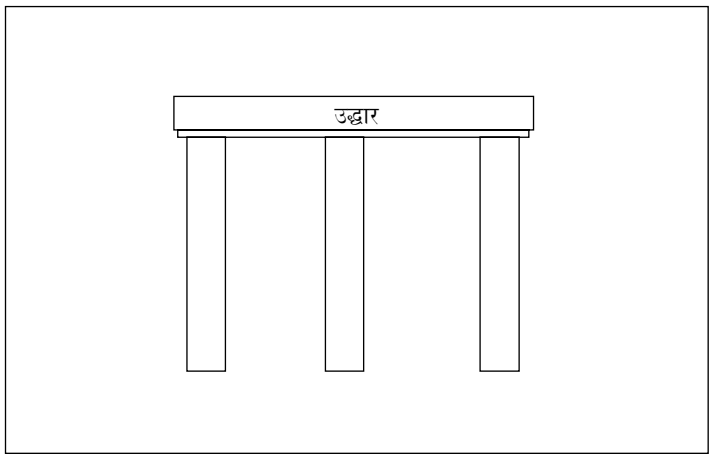

समझाएं कि यह पाठ हमारी समझने में सहायता करता है कि कैसे पतन हमारे लिए नश्वरता को लाने और अनन्त जीवन तक ले जाने का स्वर्गीय पिता की योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था । (मूसा 1:39) ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र उद्धरणों की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कि वे दैनिक जीवन में कैसे उपयोग होती हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्र के सिद्धांतों से संबंधित हों ।

1. आदम और हव्वा का पतन और इसका उनपर और हमपर प्रभाव

मूसा 4; 5:10...11; 6:48...49, 55...56 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

अदन बाटिका में, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को ''फलने फूलने और पृथ्वी में भर जाने'' की आज्ञा दी (मूसा 2:28) । उसने उन्हें अच्छे और बुरे ज्ञान के वृक्ष का फल न खाने की आज्ञा दी (मूसा 3:17) । जब तक वे मना किए गए फल को नहीं खाते, तब तक वे बाटिका में रहते और उन्हें मृत्यु नहीं आती । परन्तु वे भी बच्चे पैदा करने के नियम के आज्ञापालन में समर्थ न हो सके (मूसा 5:11; 2 नफी 2:23) । दोनों आज्ञाओं के बीच चुनाव करने के लिए स्वर्गीय पिता ने उन्हें चुनने की स्वतंत्रता दी ।

मूसा 4:6...31 से आदम और हव्वा के पतन के विवरण की संक्षिप्त में समिक्षा करें, या कक्षा के एक नियुक्त सदस्य से ऐसा करने के लिए कहें ।

- आदम और हव्वा...और हमारे लिए पतन के क्या परिणाम थे ? (देखें मूसा 4:22...29; 5:10...11; 6:48...49, 55...56; 2 नफी 2:22...23; 9:6; उत्पत्ति 3:16...23) । आप चॉकबोर्ड पर इनमें से कुछ परिणामों की सूची बनाना चाहें । संकेत करें कि पतन के बारे में से कई सच्चाइयों को भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ के द्वारा पुनःस्थापित किया गया था और सामान्यतः संसार को पता नहीं था ।

  क. आदम और हव्वा के पास बच्चे हुए थे, जिन्होंने हमें पृथ्वी पर आने और नश्वर शरीरों को प्राप्त करने की अनुमति दी (मूसा 5:11; 6:48; 2 नफी 2:23, 25) ।
  ख. हम शारीरिक मृत्यु, या शारीरिक शरीर को आत्मा से अगल करने का अनुभव करते हैं (मूसा 4:25; 6:48; 2 नफी 9:6) ।
  ग. हम आत्मिक मृत्यु, या परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना अनुभव करते हैं (मूसा 4:29; 6:49; 2 नफी 9:6) ।
  घ. हम दुर्दशा और दुःख को लेने वाले हैं (मूसा 6:48; उत्पत्ति 3:16...17) ।
  च. हम पाप करने के लिए समर्थ हैं (मूसा 6:49, 55; 2 नफी 2:22...23) ।
  छ. धरती श्रापित है, हमारे लिए कार्य की आवश्यकता के कारण को उत्पन्न करते हुए (मूसा 4:23...25; उत्पत्ति 3:17...19) ।
  ज. हम अच्छे और बुरे को पहचानना सीख सकते हैं (मूसा 4:28; 6:55...56; 2 नफी 2:23; उत्पत्ति 3:22) ।
  झ. नश्वरता में हमारे पास प्रसन्नता हो सकती है (मूसा 5:10; 2 नफी 2:23, 25) ।
  ट. हम अपने पुनरूत्थान की प्रसन्नता को जान सकते हैं (मूसा 5:11) ।
  ठ. हम अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते हैं (मूसा 5:11) ।

  जब आप पतन के इन परिणामों पर चर्चा करते हैं, जोर दें कि पतन हमारे लिए फायदेमंद कैसे है । अन्तिम-दिन प्रकटीकरण स्पष्ट करता है कि यहाँ तक कि सृष्टि से पहले ही, हमारे पृथ्वी के जीवन में परीक्षा और सिद्ध करने के समय के लिए स्वर्गीय पिता ने सोचा था (इब्राहीम 3:24...26) । इसके लिए हमें नश्वर शरीर को प्राप्त करने की आवश्यकता थी, अच्छे और बुरे के बीच चुनाव करने की क्षमता को सीखना था, जिसे पतन के द्वारा संभव बनाया गया था ।

- नश्वरता के दौरान, पतन की सही समझ हमारी सहायता कैसे कर सकती है ?
- यह समझना क्यों महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर ने पहले से ही पतन को देखा था और कि हमारे उद्धार के लिए यह उसकी योजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था ।
- शैतान ने आशा किया था कि मना किए गए फल को आदम और हव्वा के खाने के द्वारा, वह परमेश्वर की योजना का विनाश कर देगा (मूसा 4:6) । परमेश्वर के उद्देश्य के विनाश के लिए शैतान की क्षमता के बारे में हमें पतन का विवरण क्या शिक्षा देता है (देखें सि. और अनु. 3:1...2) ।

2. यीशु मसीह का प्रायश्चित हमें शारीरिक और आत्मिक मृत्यु से बचाता है ।

मूसा 5:14...15; 6:50...54, 57...62 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

आदम और हव्वा का पतन संसार में शारीरिक और आत्मिक मृत्यु को लाया था । शारीरिक मृत्यु शरीर और आत्मा का अलग होना है जो कि हमारे नश्वर जीवनों के अंत में आता है । आत्मिक मृत्यु परमेश्वर की उपस्थिति से अलग होना है, जो तब हुआ था जब आदम और हव्वा को बाटिका से निकाल दिया गया था । समझाएं कि हम अपने स्वयं के द्वारा मृत्यु पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते । इस कारण से, हमारी मृत्यु से मुक्ति के लिए, स्वर्गीय पिता ने अपने इकलौते जन्मे पुत्र को उसके प्रायश्चित बलिदान के द्वारा भेजा था । (अलमा 22:14) ।

- जब भविष्यवक्ता आदम और हव्वा के पतन के बारे में शिक्षा देते हैं, वे अक्सर यीशु मसीह के प्रायश्चित के बारे में भी शिक्षा देते हैं (मूसा 5:10...15; 6:48...62; 2 नफी 9:6...10) । पतन के साथ साथ प्रायश्चित की शिक्षा देना क्यों महत्वपूर्ण है ? (हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में पतन ने प्रायश्चित को आवश्यक बनाया था । पतन के साथ साथ प्रायश्चित की शिक्षा हमारी समझने में सहायता करता है कि कैसे शारीरिक और आत्मिक मृत्यु से हम मुक्ति पाते हैं) ।

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः ''पुनरूत्थान की योजना का आरंभ आदम के पतन के विवरण के साथ होना चाहिए । मरोनी के शब्दों में, 'आदम के द्वारा मनुष्य का पतन आया । और मनुष्य के पतन के कारण यीशु मसीह आया,...और यीशु मसीह के कारण मनुष्य के लिए पुनरूत्थान आया' (मॉरमन 9:12) । बिल्कुल उसी तरह जिस तरह से एक मनुष्य तब तक भोजन की इच्छा नहीं करता जब तक कि वह भूखा न हो, इसलिए वह मसीह के उद्धार की इच्छा तब तक नहीं करता है जब तक उसे पता नहीं होता कि उसे मसीह की आवश्यकता क्यों है । कोई भी पर्याप्त और अच्छी तरह से नहीं जानता कि उसे मसीह की आवश्यकता क्यों है जब तक वह पतन के सिद्धांत को समझ नहीं जाता और मनुष्यजाति पर उसके प्रभाव को ग्रहण नहीं कर लेता'' (Conference Report, में, अप्रैल 1987,106; या *Ensign,* मई 1987, 85) ।

- हम शारीरिक मृत्यु से कैसे बचाये जा सकते हैं ? (देखें 1 कुरिन्थियों 15:20...22; 2 नफी 2:8; 9:6 । यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा, हम पुनरूत्थारित होंगे) ।
- हम आत्मिक मत्यु से कैसे बचाये जा सकते हैं ? (देखें मूसा 5:14...15; 6:50...52, 59; इलामन 14:15...18; सि. और अनु. 19:15...19 । प्रायश्चित के कारण, परमेश्वर के साथ रहने के लिए, यीशु मसीह में विश्वास, पश्चाताप, बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का उपहार, और नियमों के आज्ञापालन के द्वारा हमें स्वच्छ और योग्य बनाया जा सकता है) ।

मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता याकूब ने मृत्यु से पुनरूत्थान में आनंद मनाया था जो कि उद्धारकर्ता के प्रायश्चित बलिदान से आता है (2 नफी 9:10) । आप इस उद्धरण को पढ़ना और अपनी गवाही और आशीषों के बारे में अपने कुछ अनुभवों को बाँटना चाहें जिसे हम प्रयाश्चित के द्वारा प्राप्त करते हैं । कक्षा के सदस्यों को भी ऐसा करने के लिए आमंत्रित करें ।

3. आदम और हव्वा नश्वरता में अपने जीवन का आरंभ करते हैं, बच्चे पैदा करते हैं, उन्हें सुसमाचार की शिक्षा देते हैं, और परमेश्वर की आराधना और उसका आज्ञापालन करते हैं ।

मूसा 5:1...9, 12 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- आदम और हव्वा ने क्या किया जब उन्हें अदन की बाटिका से बाहर निकाल दिया गया ? (देखें मूसा 5:1...5, 12) । किन तरीकों से आदम और हव्वा का जीवन हमारे आज के जीवन की तरह था ? अपने नश्वर जीवन के उद्देश्य के बारे में मूसा 5:1...9, 12 से हम क्या सीख सकते हैं ?
- मूसा 5:5...9 के विवरण की समीक्षा करें, या कक्षा के एक नियुक्त सदस्य से ऐसा करने के लिए कहें । प्रभु ने आदम को क्या आज्ञा दी थी ? (देखें मूसा 5:5) । मूसा ने बलिदानों के कारण को न जानते हुए भी उन्हें क्यों किया था ? (देखें मूसा 5:6) ।

भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा था, ''जो भी परमेश्वर चाहता है वह सही है...यद्यपि हम उस कारण को तब तक नहीं देख सकते जब तक कि वह घटना घट न जाए'' (*Teaching of the Prophet Smith,* Sel. Jospeh Fielding Smith [1976], 256) ।

- तब भी प्रभु की आज्ञाओं का पालन करना क्यों महत्वपूर्ण है जब हम उनके कारणों को नहीं समझते हैं ? उस आज्ञा को मानने के कारण आप कैसे आशीषित हुए हैं जिसे आप पूरी तरह से समझते नहीं हैं ?
- उन बलिदानों का उद्देश्य क्या था जिन्हें आदम ने किया था ? (देखें मूसा 5:7...9 । वे उन बलिदानों की समानता में थे या उसी तरह के थे जिसे स्वर्गीय पिता अपने इकलौते पुत्र का करेगा । उस तरह के बलिदानों को करना आदम और उसके पीढ़ियों के लिए एक स्मरण था कि सारे नश्वर लोगों को यीशु मसीह के प्रायश्चित के द्वारा पतन से मुक्ति मिल सकती है) । हमारे लिए इस सिद्धांत से क्या याद दिलाया गया है ? पतन और प्रायश्चित के लिए हम अपने आभार को कैसे व्यक्त कर सकते हैं ?

निष्कर्ष

हव्वा की, पतन की आशीषों की गवाही को फिर से पढ़ें (मूसा 5:11) । आदम और हव्वा के कार्यों, पतन, और यीशु मसीह के प्रायश्चित के लिए आभार व्यक्त करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. मना किए गए फल को खाना पाप नहीं था

सहायता के लिए समझाएं कि आदम और हव्वा ने पाप नहीं किया था जब उन्होंने मना किए गए फल को खाया था, एल्डर डैलिन एच. ओक्स के निम्नलिखित वक्तव्य को पढ़ें ।

''वह हव्वा ही थी जिसने नश्वरता की स्थिति के कारण में अदन के नियम का पहले उल्लंघन किया था । उसका कार्य, किसी भी तरह का हो, नियमानुसार एक उल्लंघन था परन्तु परमेश्वर की अनन्त योजना में अनन्त जीवन के रास्ते को खोलने का एक महिमायुक्त आवश्यकता थी । उसी समान कार्य को करने के द्वारा आदम ने बुद्धिमानी दिखाई थी ।

''...उस महान घटना में हम हव्वा के कार्य की प्रशंसा और उसके ज्ञान और साहस का सम्मान करते हैं जिसे पतन कहा जाता है...एल्डर जोसफ फिल्डिंग स्मिथ ने कहा थाः 'इस पतन में हव्वा की भागीदारी को मैं कभी भी न तो पाप कहता हूं, ना ही आदम पर पाप का दोष लगाता हूं...यह नियन का एक उल्लंघन था, परन्तु पाप नहीं'...

''*पाप* और *उल्लंघन* के बीच यह सुझावित विषमता हमें दूसरे *विश्वास के अनुच्छेद* में लिखे हुए ध्यानपूर्वक शब्दों को याद दिलाता हैः ''हम विश्वास करते हैं कि लोग अपने स्वयं के *पाप* के लिए सजा पाएंगे, और आदम के *उल्लंधन* के लिए नहीं'' । यह नियम के जाने पहचाने अन्तर को भी दोहराता है । कुछ कार्य जैसे कि हत्या, अपराध है क्योंकि वे स्वाभाविक रुप से गलत हैं । दूसरे कार्य, जैसे कि बिना अनुमति पत्र के गाड़ी चलाना अपराध है क्योंकि वे कानूनी तौर पर निषेद हैं । इन विभिन्नताओं के अंतर्गत, कार्य जिसमें बताया गया कि पतन *पाप* नहीं था...स्वाभाविक रूप से गलत...परन्तु एक *उल्लंघन*...गलत क्योंकि वह कानून के विरूद्ध था । शब्दों को सदैव कुछ अलग करने के लिए उपयोग नहीं किया जाता, परन्तु ये अन्तर पतन की परिस्थितियों में अर्थपूर्ण दिखाई देते हैं'' (Conference Report में, अक्टू. 1993, 98; या *Ensign*, नव. 1993, 73) ।

2. पतन के *परिणामों* और *उसकी जिम्मेजारियों* के बीच अन्तर

आदम और हव्वा की सारी पीढ़ी पतन के *परिणामों* की उत्तराधिकारी है, शारीरिक और आत्मिक मृत्यु को सम्मिलित करते हुए, परन्तु पतन की *जिम्मेदारी* को सम्मिलित नहीं करते हुए ।दूसरा*विश्वास का अनुच्छेद* सीखाता है कि ''पुरूषों को उनके स्वयं के पापों की सजा मिलेगी, आदम के *उल्लंघन* के लिए नहीं'' । मरोनी 8:5...23 को भी देखें ।

3. ''तुम्हारी इच्छा तुम्हारे पति के लिए होगी''

शायद निम्नलिखित वक्तव्य कक्षा के सदस्यों की, हव्वा के लिए प्रभु के वक्तव्य को समझने में सहायता करे जब उसने कहा था, ''तुम्हारी इच्छा तुम्हारे पति के लिए होगी, और तुमपर उसका अधिकार होगा'' (मूसा 4:22) ।

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कहा थाः ''शब्द *अधिकार* के बारे में मेरे पास एक प्रश्न है । यह गलत धारणा देता है । मैं शब्द *संचालन* का उपयोग करना चाहूँगा क्योंकि यही तो वह करता है । एक धार्मिक पति अपनी पत्नी और परिवार पर संचालन करता है'' ("The Blessings and Responsibilites of Womanhood," *Ensign,* मार्च 1976, 72) ।

एलडर एम. रसल बलार्ड ने कहा थाः ''परमेश्वर ने अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्रकट किया है कि पुरूष पौरोहित्य को प्राप्त करने के लिए, पिता बनने के लिए, और सौम्यता, पवित्रता और निष्कपटता के साथ धार्मिकता में अपने परिवारों का मार्गदर्शन करने के लिए है और उन्हें पोषण देने के लिए है जैसा कि उद्धरकर्ता गिरजाघर का मार्गदर्शन करता है (देखें इफिसियों 5:23)'' ("Equality through Diversity," *Ensign*, नव. 1993, 90) ।

पाठ
5

''यदि तुम अच्छा करते हो, तुम्हें स्वीकार किया जाएगा''

मूसा 5..7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि यीशु मसीह का अनुसरण करने का चुनाव स्वतंत्रता, प्रसन्नता, और अनन्त जीवन के तरफ ले जाता है, जब कि शैतान का अनुसरण करने का चुनाव दुर्दशा और अधीनता के तरफ ले जाता है ।

तैयारी

1. अनमोल मोती से निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. मूसा 5:16...41 । कैन ने परमेश्वर से अधिक शैतान से प्रेम किया और प्रभु के प्रति भेंट के लिए शैतान की आज्ञा का पालन किया (5:16...19) । प्रभु कैन के भेंट को अस्वीकार करता है और कैन को पश्चाताप करने की आज्ञा देता है (5:20...25) । कैन शैतान के साथ अनुबंध करता है और हाबिल को मार डालता है (5:26...33) । प्रभु कैन को अभिशाप देता है, और कैन को प्रभु की अनुपस्थिति से अलग कर दिया जाता है (5:34...41) ।

   ख. मूसा 6:26...63 । हनोक, आदम की चौथी पीढ़ी का पोता, प्रभु के द्वारा लोगों के लिए पश्चाताप करने को बुलाया गया (6:26...36) । हनोक प्रभु की आज्ञा का पालन करता है और लोगों को शिक्षा देता है (6:37...63) ।

   ग. मूसा 7:13, 17...21, 23...47, 68...69 । हनोक का विश्वास इतना मजबूत था कि पर्वत हट गए, नदियों ने अपने रास्ते को बदल दिया, और सारी जातियाँ अत्याधिक घबरा गईं (7:13, 17) । प्रभु और हनोक ने पृथ्वी के लोगों की दुष्टता के लिए दुःख किया (7:23...47) । हनोक के नगर के लोग प्रभु में एक हृदय और एक मन के थे, और सारे नगर को स्वर्ग में उठा लिया गया था (7:18...21, 68...69) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः मूसा 5:42...55; 6:10...23; 7:14...16, 59...64; 2 नफी 2:25...27; उत्पत्ति 4:1...16 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के पहले, चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित वक्तव्यों के दोनों सेट को अगल बगल में लिखें:

सेट 1	*सेट 2*
''प्रभु कौन है जिसे मुझे जानना होगा ?''	''वह मेरा, और तुम्हारा परमेश्वर है'' ।
''मैं आजाद हूं ।''	''तुम स्वयं को सलाह क्यों देते हो, और स्वर्ग के पिता को अस्वीकार क्यों करते हो ?''
''क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं ?''	''तुम मेरे भाई हो ।''

कक्षा के सदस्यों को बताएं कि इन दो सूचियों के वक्तव्य दो पुरूषों के द्वारा बनाया गया है जिसके बारे में वे पाठ में सीखेंगे । कक्षा के सदस्यों से पूछें कि वे प्रत्येक पुरूष के वक्तव्य के सेट के आधार पर क्या निर्धारित कर सकते हैं । (वक्तव्यों पर चर्चा के लिए आप कक्षा के सदस्यों को छोटे दलों में एकत्रित करना चाहें । जब दल पाँच या छः मिनट तक वक्तव्यों पर चर्चा कर चुके हों, कक्षा के बाकी सदस्यों के लिए प्रत्येक दल में से एक व्यक्ति को दल की चर्चा को संक्षिप्त में बताने दें) ।

जब कक्षा के सदस्य जवाब दे चुके हों, समझाएं कि पहले सेट के वक्तव्य कैन के द्वारा बनाए गए थे, जिसने शैतान का अनुसरण करने को चुना था । दूसरे सेट के वक्तव्य हनोक द्वारा बनाए गए थे, जिसने प्रभु का अनुसरण करने को चुना था । प्रत्येक पुरूष के वक्तव्य परमेश्वर के प्रति उसके व्यवहार को प्रतिबिंबित करता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र उद्धरणों की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कि वे दैनिक जीवन में कैसे उपयोग होती हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्र के सिद्धांतों से संबंधित हों ।

1. कैन शैतान के साथ अनुबंधित होता है, हाबिल को मार डालता है, और प्रभु के द्वारा श्रापित किया जाता है ।

मूसा 5:16...41 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- आदम और हव्वा ने आशा किया था कि उनका बेटा कैन प्रभु का अनुसरण करेगा जैसा कि उन्होंने किया था । परन्तु कैन ने अपने माता-पिता और प्रभु की ''नहीं सुनी'' और पूछा, ''प्रभु कौन है जिसे मुझे जानना होगा ?'' (मूसा 5:16) । यह प्रश्न परमेश्वर के प्रति कैन के व्यवहार के बारे में क्या दिखाता है ? परमेश्वर को जानने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? (देखें अलमा 22:17...18) ।

- कैन ने प्रभु के प्रति एक भेंट को क्यों बनाया ? (देखें मूसा 5:18) । कैन ने क्या भेंट चढ़ाया ? (देखें मूसा 5:19) । प्रभु ने हाबिल के बलिदान को स्वीकार किया परन्तु कैन की भेंट को अस्वीकार क्यों किया ? (देखें मूसा 5:5; 20...23 । प्रभु ने आदम और हव्वा और उनके बच्चों को, उनके झुंड के पहिलौठे की भेंट चढ़ाने की आज्ञा दी थी । हाबिल ने आज्ञापालन किया, परन्तु कैन ने शैतान के शब्दों को सुना और धरती के फल को चढ़ाया) । बलिदानों को उन तरीकों से करना क्यों महत्वपूर्ण है जैसे प्रभु ने आज्ञा दी थी ?

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सीखाया थाः 'हाबिल ने परमेश्वर को एक बलिदान भेंट किया जो स्वीकारा था, जो कि झुंड का पहिलौठा था । कैन ने धरती के फल का भेंट चढ़ाया था, और वह स्वीकार नहीं था, क्योंकि उसने उसे विश्वास में नहीं किया था...मनुष्य के प्रायश्चित के लिए इकलौते पुत्र के लहू को बहाना...पुनरूत्थान की योजना थी;...और जैसा कि बलिदान को उसी तरह बनाया गया है, जिसके द्वारा मनुष्य को महान बलिदान पहचानना था जिसे परमेश्वर ने तैयार किया था; उसके विपरीत एक बलिदान का भेंट करने के लिए, विश्वास नहीं किया जा सकता था...; फलस्वरूप कैन के पास विश्वास नहीं हो सकता था; और जो विश्वास का नहीं है, पाप है'' (*Teaching of the Prophet Joseph Smith,* Sel. Joseph Fielding Smith [1976], 58) ।

- कैन ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब प्रभु ने उसके बलिदान को अस्वीकार किया और उसे पश्चाताप के लिए बुलाया ? (देखें मूसा 5:21, 26) । कई बार पश्चाताप की बुलाहट हमारे लिए मुश्किल क्यों होती है ? हम कैसे पश्चाताप करने की अपनी महान इच्छा को बढ़ा सकते हैं ?

- अपने भाई हाबिल को मारने के पश्चात, कैन ने कहा, ''मैं आजाद हूं'' (मूसा 5:33) । आपके विचार से कैन किस चीज से आजाद था ? परमेश्वर की आज्ञाओं को न मानना वास्तविक में हमारी आजादी को कैसे कम करता है ? आज्ञापालन कैसे हमारी आजादी को बढ़ाता है ?

- कैन ने क्या उत्तर दिया जब प्रभु ने पूछा था कि हाबिल कहाँ था ? (देखें मूसा 5:34) । हमारे लिए भाई का रखवाला होने का क्या मतलब है ? (देखें 1 यूहन्ना 3:11, 17...18) । किन तरीकों में हम अपने भाइयों और बहनों का रखवाला हो सकते हैं ?

  धर्माध्यक्ष रॉबर्ट एल. सिंप्सन ने कहा थाः ''आज का संसार आपसे कहता है कि अपने दोस्त को अकेले छोड़ दो । उसके पास उसकी इच्छानुसार आने और जाने का अधिकार है । संसार आपसे कहता है कि गिरजाघर या पौरोहित्य सभा में उपस्थित रहने या किसी बुरी लत को छोड़ने का प्रतिपादन आशाभंग और अनुचित दबाव के तरफ ले जा सकता है; परन्तु मैं फिर से प्रभु के शब्द को दोहराता हूं: आप अपने भाई के रखवाले हैं, और जब आप परिवर्तित हो जाते हैं, आपके पास अपने भाई को मजबूत करने का दायित्व है'' (in Conference Report, अक्टू. 1971, 114; या *Ensign,* दिसंबर 1971, 103) ।

- परमेश्वर के स्थान पर शैतान का अनुसरण करने के चुनाव के परिणामस्वरूप काइन का क्या हुआ ? (देखें मूसा 5:23...25, 36...41) । कैन के चुनाव का उसपर और उसके वंशजों पर क्या प्रभाव पड़ा ? (देखें मूसा 5:41...43, 49...52, 55) । हमारे धार्मिक या अधार्मिक चुनाव हमारे पारिवारिक सदस्यों पर क्या प्रभाव डालते हैं ?

2. हनोक लोगों के लिए पश्चाताप का प्रचार करता है।

मूसा 6:26...63 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- हनोक ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब उसे प्रभु द्वारा लोगों के लिए पश्चाताप का प्रचार करने को बुलाया गया ? (देखें मूसा 6:31) । प्रभु ने हनोक से क्या प्रतिज्ञा की यदि वह उसकी आज्ञानुसार करता ? (देखें मूसा 6:32...34) । प्रभु अपने मार्गदर्शकों को कैसे चुनता है, के बारे में हनोक की कहानी से हम क्या सीख सकते हैं ? (1 शमूएल 16:7 को भी देखें) । जब हम समर्थ होना महसूस नहीं करते हैं तब भी प्रभु की सेवकाई के बारे में हनोक से क्या सीख सकते हैं ?

- आपके विचार से लोग क्यों अप्रसन्न हुए थे जब हनोक ने पश्चाताप का प्रचार करना आरंभ किया था ? (देखें मूसा 6:37; 1 नफी 16:2; मुसायाह 13:7 को भी देखें) । यद्यपि वे अप्रसन्न थे फिर भी उन्होंने उसको सुनना क्यों जारी रखा ? (देखें मूसा 6:38...39 । पहले तो वे थोड़े जिज्ञासु थे, परन्तु फिर उन्होंने जाना कि वह परमेश्वर का एक व्यक्ति था) । हम एक गवाही को कैसे प्राप्त कर सकते हैं कि जीवित भविष्यवक्ता परमेश्वर का एक व्यक्ति है ? यद्यपि भविष्यवक्ता की शिक्षा अप्रसिद्ध हो तब भी यह गवाही हमें उसका अनुसरण करने में कैसे सहायता कर सकती है ?

- हनोक ने सुसमाचार के किन सिद्धांतों की शिक्षा दी थी जब उसने लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाया था ? (देखें मूसा 6:47...63 । यदि आप पाठ 4 में इन आयतों पर चर्चा कर चुके हों, शायद आपको इनकी दुबारा समीक्षा करने की आवश्यकता न हो) ।

- प्रभु ने हमें (हमारे स्वयं के लिए) अभिकर्ता बनाया है (मूसा 6:56) । इसका क्या मतलब है ? (हमारे पास चुनाव करने की शक्ति है) । हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना में स्वतंत्रता क्यों महत्वपूर्ण है ? (हमें स्वतंत्रता की आवश्यकता है इसलिए हम अपने चुनावों के प्रति जिम्मेदार हैं) । शैतान का अनुसरण करने के चुनाव के क्या परिणाम हैं ? प्रभु का अनुसरण करने के चुनाव के क्या परिणाम हैं ? (देखें 2 नफी 2:25...27) ।

3. हनोक के नगर के लोग प्रभु के साथ एक हृदय और एक मन के थे, और पूरे नगर को स्वर्ग में उठा लिया गया था।

मूसा 7:13, 17...21, 23...47, 68...69 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- हनोक के महान विश्वास के कारण प्रभु ने किन चमत्कारों को किया था ? (देखें मूसा 7:13) । हमारे आज के दिन में लोगों के विश्वास के कारण प्रभु किन चमत्कारों को करता है ?

- वे लोगा कैसे आशीषित हुए थे जिन्होंने हनोक के शब्दों को सुना था और अपने पापों का पश्चाताप किया था ? (देखें मूसा 7:17–18) । उनका नगर सिय्योन क्यों कहलाता था ? (देखें मूसा 7:18) । ''एक हृदय और एक मन के होने'' का क्या अर्थ है ? प्रभु के साथ, अपने परिवारों में, और गिरजाघर में एक हृदय और एक मन का बनने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

- अंततः हनोक और उसके नगर के लोगों के साथ क्या हुआ था ? (देखें मूसा 7:19...21, 69) ।

- मूसा 7:28 में, हनोक ने प्रभु के विलाप को देखा था । प्रभु विलाप क्यों कर रहा था ? हनोक ने प्रभु के विलाप पर प्रश्न क्यों पूछा ? (देखें मूसा 7:29...31) । प्रभु ने क्या उत्तर दिया ? (देखें मूसा 7:32...33, 36...37) । जब आप इन आयतों को पढ़ते हैं तब प्रभु के बारे में कैसा महसूस करते हैं ?

- जब हनोक ने लोगों की दुष्टता को देखा, उसने भी विलाप किया (मूसा 7:41, 44) । प्रभु ने हनोक को कैसे सांत्वना दी ? (देखें मूसा 7:44...47) ।

आप कक्षा के सदस्यों को बताना चाहें कि आगे के पाठ में अंतिम दिनों में (नये यरूशलेम को सम्मिलित करते हुए) सिय्योन की पुनःस्थापना, उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन, और पृथ्वी पर उसके हजार वर्ष के राज्य पर चर्चा करता है जिसे हनोक ने दिव्यदर्शन में देखा था (मूसा 7:62...65) ।

निष्कर्ष

समझाएं कि कैन ने शैतान का अनुसरण करने और अपने बच्चों और अनुसरण करने वालों को बुरे कार्यों की शिक्षा देने को चुना था । परिणामस्वरूप, कैन के वंशज दुष्टता में बढ़े और उनकी अधार्मिकता के लिए परमेश्वर द्वारा श्रापित हुए । विषमता में, हनोक ने प्रभु का अनुसरण करने को चुना । हनोक का आज्ञाकारिता का चुनाव और उन सारे लोगों के लिए सुसमाचार का प्रचार करने का चुनाव जिन्होंने सुना था, के परिणामस्वरूप पूरा नगर इतना धार्मिक बन गया था कि उन्हें परमेश्वर के साथ रहने के लिए धरती से उठा लिया गया था ।

गवाही दें कि जब हम यीशु मसीह का अनुसरण करने का चुनाव करते हैं तो वह हमें उसके नजदीक जाने में और आजादी, प्रसन्नता, और अनन्त जीवन के तरफ जाने में सहायता करता है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. पारिवारिक अभिलेखों को रखना

- आदम और हव्वा और उनके वंशजों के लिए यह क्यों महत्वपूर्ण था कि वे एक स्मरण की पुस्तक और वंशावली को बनाएं ? (देखें मूसा 6:5...8, 45...46) । आज हमारे लिए इन अभिलेखों को बनाना क्यों महत्वपूर्ण है ? आपके पूर्वजों के लिखे विवरणों ने आपकी कैसे सहायता की है ? आपके जीवन का लिखा हुआ विवरण और विश्वास आपके पारिवारिक सदस्यों की कैसे सहायता कर सकता है ?

- धर्मशास्त्रों को कैसे पारिवारिक अभिलेख माना जा सकता है ? बच्चों के प्रति प्रभावपूर्ण उपयोग के लिए माता पिता और शिक्षक धर्मशास्त्रों का उपयोग कैसे करते हैं ?

2. हनोक और कैन की तुलना हुई

चॉकबोर्ड पर चरण के दो सेटों का चित्र बनाएं, एक ऊपर जाते हुए और एक नीचे जाते हुए (पृष्ठ 21 के उदाहरण को देखें) । चरण जो ऊपर के तरफ जा रहा है, उसपर *व्यवहार जो परमेश्वर के तरफ ले जाता है,* का पर्चा बनाएं, और पहले चरण पर हनोक का नाम लिखें । चरण जो नीचे के तरफ जा रहा है, *व्यवहार जो विनाश के तरफ ले जाता है,* का पर्चा बनाएं, और पहले चरण पर कैन का नाम लिखें ।

कक्षा के सदस्यों को हनोक के चरण पर दिखाई गई पहली आयत (मूसा 7:59) और कैन के चरण पर दिखाई गई पहली आयत (मूसा 5:16) को पढ़ने दें । फिर चॉकबोर्ड के उपयुक्त चरणों पर कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को लिखें । बाकी बचे चरणों के लिए दोहराएं । जब सारी आयतें पढ़ी जा चुकी हों, हनोक के चरण के अंत में *परमेश्वर के साथ रहना* का पर्चा बनाएं । और कैन के चरण के अंत में *आत्मिक विनाश* का पर्चा बनाएं । चर्चा करें कि कैसे हनोक के शब्दों और कार्यों ने परमेश्वर के नजदीक जाने में उसकी सहायता की, जब कि कैन के शब्द और कार्य उसे शैतान के नजदीक ले गए ।

- हम किन तरीकों से हनोक के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं और परमेश्वर के नजदीक जाने में बढ़ते हैं ?

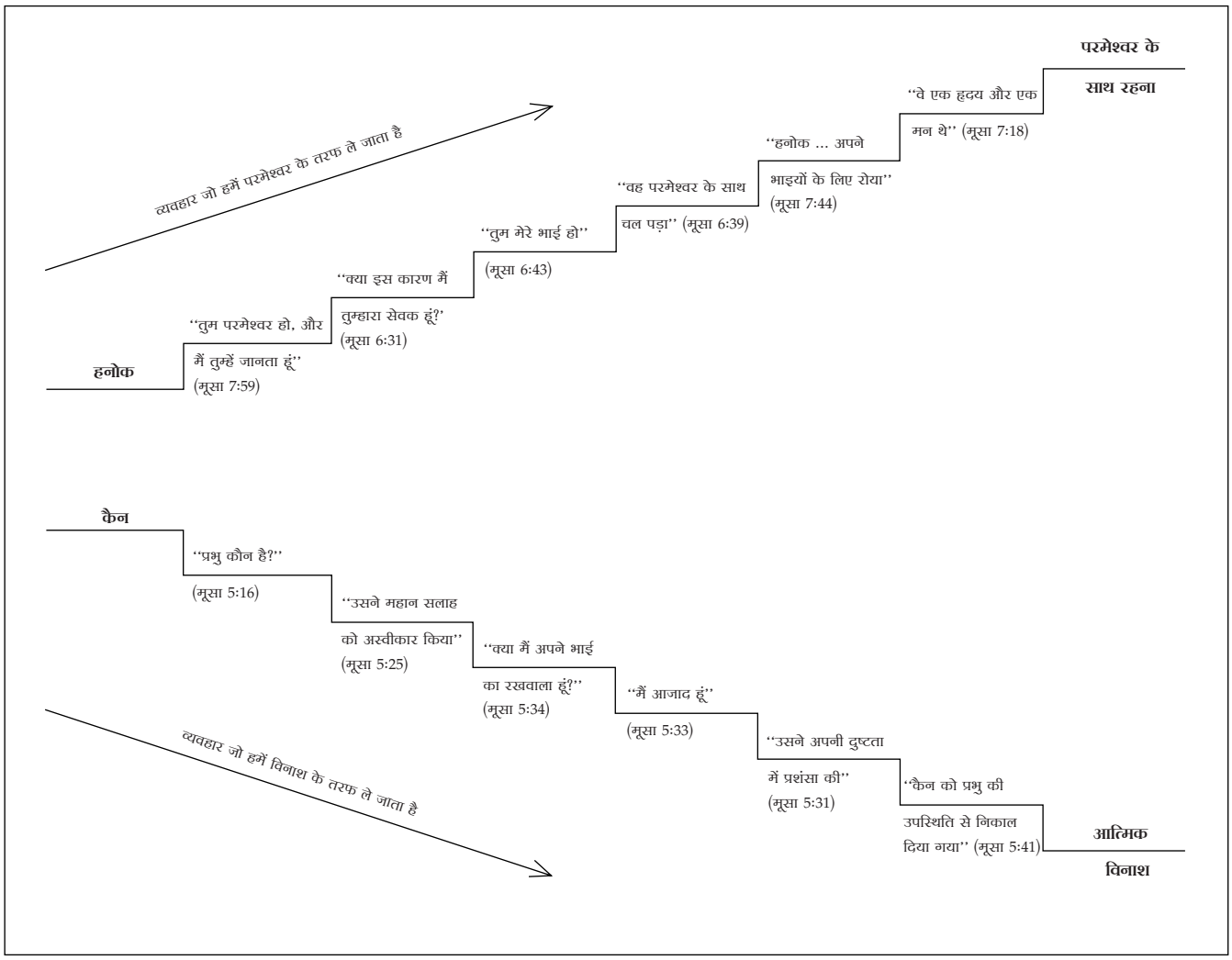

3. ''अपनी आँखों को अभिषिक्त करो...और तुम देखोंगे'' (मूसा 6:35)

यीशु मसीह ने एक बार एक अंधे पुरूष की आँखों को मिट्टी से अभिषिक्त करने के द्वारा चंगा किया था (यूहन्ना 9:1...7)। हनोक जो तब तक महान आत्मिक शक्ति और समझ में नहीं बढ़ा था, कुछ चीजों के प्रति आत्मिक रूप से अंधा था, उसको भी ''मिट्टी के द्वारा उसकी आँखों को धोने और अभिषिक्त'' करने की आज्ञा दी गई थी (मूसा 6:35)।

- हनोक ने क्या देखा जब उसने ऐसा किया ? (देखें मूसा 6:36)। मिट्टी से धोने का चिन्हित कार्य हमें क्या सीखाता है ?
- परमेश्वर की चीजों के प्रति अपनी आँखों को पूरी तरह से खोलने के लिए हम क्या कर सकते है ? हम अपने धर्मशास्त्र के अध्ययन को कैसे बढ़ा सकते हैं ताकि हम उन खजानों को देखें जो उनमें हैं ?

4. प्रियजन जो दूर चले जाते हैं

- यद्यपि आदम और हव्वा ने अपने बच्चों को सुसमाचार की शिक्षा दी थी (मूसा 5:12), कैन और अन्यों ने अधार्मिकता से जीने का चुनाव किया था। हम अपने स्वयं के दर्द को सहने में कैसे सहायता कर सकते हैं जब प्रियजन दूर चले जाते हैं ? हम इन प्रियजनों की सहायता के लिए क्या कर सकते हैं ?

  एल्डर रिचर्ड जी. स्कॉट ने सलाह दी थीः

  ''आपमें से बहुतों के पास बड़ा दुःख है क्योंकि एक बेटा या बेटी, पति या पत्नी, धार्मिकता से बुराई के पीछे चलने लगे हैं। आपके संदेश आपके लिए है।

  ''आपका जीवन वेदना, दर्द, और किसी समय निराशा से भर जाता है। मैं आपको बताऊँगा कि आप प्रभु के द्वारा सांत्वना को कैसे प्राप्त कर सकते हैं।

''पहले, आपको दो बुनियादी सिद्धांतों को पहचानना होगाः

''1. जब कि कई चीजें हैं जिसे आप किसी प्रियजन की आवश्यकता में सहायता के लिए कर सकते हैं, कई चीजें हैं जिसे प्रभु के द्वारा ही किया जाना चाहिए ।

''2. यह भी, कि बिना स्वतंत्रता के किसी भी धार्मिक चुनाव का कोई भी उन्नति टिक नहीं सकता । स्वतंत्रता को अलग करने की कोशिश न करें । प्रभु स्वयं यह नहीं करेगा । दबाव में आज्ञाकारिता किसी भी आशीष को उत्पन्न नहीं करता है (देखें सि. और अनु. 58:26...33) ।

''मैं सात तरीकों का सुझाव दूँगा जिससे आप सहायता कर सकते हैं ।

''पहला, बिना सीमा निर्धारण के प्रेम...दूसरा, उल्लंघन पर ध्यान न दें, परन्तु उल्लंघन के प्रति प्रत्येक आशा और सहारे को देना...तीसरा, सच्चाई सीखाएं...चौथा, जितनी बार आवश्यकता हो ईमानदारी से क्षमा दें...पाँचवा, विश्वासपूर्ण प्रार्थना करें । 'धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है' (याकूब 5:16) ।

छठवाँ, समस्या को अभी के जीवन और अनन्त जीवन की दूसरी चीजों के संबंध में लें,...जब चीजों को आप वास्तविक में सहायता के लिए कर सकते हैं जोकि पहले से ही किया जा चुका हो, समस्या को प्रभु के हाथों में छोड़ दें और परेशान न हों । दोषी महसूस न करें क्योंकि आप इससे अधिक नहीं कर सकते । बेकार की परेशानी पर अपनी ऊर्जा को बर्बाद न करें...समयानुसार, आप प्रभाव को महसूस करेंगे और जान जाएंगे कि आगे सहायता कैसे की जाए । आप अधिक शान्ति और प्रसन्नता पाएंगे, दूसरों को अनदेखा नहीं करेंगे जिन्हें आपकी आवश्यकता होगी, और उस अनन्त परिदृश्य के कारण बड़ी से बड़ी सहायता करने में समर्थ होंगे...

''एक आखिरी सुझाव...प्रियजन की सहायता के लिए कभी भी पीछे न हटें, कभी नहीं! (Conference Report में, अप्रैल 1988, 69...71; या *Ensign*, मई 1988, 60...61) ।

पाठ
6

''नूह ने...अपने घर को बचाने के लिए एक जहाज बनाया''

मूसा 8:19...30; उत्पत्ति 6...9; 11:1...9

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की योग्य रीति से जीने की इच्छा में और संसार की बुराइयों से बचने में सहायता करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. मूसा 8:19...30; उत्पत्ति 6:5...22; 7:1...10 । नूह सुसमाचार का प्रचार करता है, परन्तु लोग नहीं सुनते हैं (मूसा 8:19...25) । लोगों की दुष्टता के कारण, प्रभु घोषित करता है कि वह पृथ्वी के सारे प्राणियों को नष्ट कर देगा (मूसा 8:26...30; उत्पत्ति 6:5...13) । प्रभु नूह को एक जहाज बनाने और उसमें उसके परिवार और प्रत्येक जीवित चीजों के जोड़े को लेने की आज्ञा दी (उत्पत्ति 6:14...22; 7:1...10) ।

   ख. उत्पत्ति 7:11...24; 8; 9:8...17 । निरन्तर 40 दिन और 40 रात वर्षा होती रही (7:11...12) । सारे मनुष्य और प्राणी जो जहाज में नहीं थे मर जाते हैं, और पानी पृथ्वी को 150 दिन तक के लिए ढँक देता है (7:13...24) । जब पानी घटने लगा, नूह, उसका परिवार, और जानवर जहाज से बाहर आते हैं (8:1...19), और नूह प्रभु के लिए होमबलि चढ़ाता है (8:20...22) । प्रभु नूह के साथ अपनी वाचा बाँधता है और वाचा के चिन्ह के रूप में धनुष रखता है (9:8...17; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद की 15वीं आयत बताती है कि अनुबंध परमेश्वर और नूह के बीच था, परमेश्वर और प्रत्येक जीवित प्राणी के बीच में नहीं ।

   ग. उत्पत्ति 11:1...9 । प्रलय की कुछ पीढ़ियों के पश्चात, लोग स्वर्ग के लिए एक मीनार बनाने की कोशिश करते हैं (बाबुल का मीनार) । प्रभु उनकी भाषा में गड़बड़ी पैदा करता है ताकि वे एक दूसरे को न समझ सकें और उन्हें पूरी पृथ्वी पर फैला देता है ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: इब्रानियों 11:7; मूसा 7:32...36 ।

3. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहें:

   ख. चित्र, जहाज बनाना (62053; सुसमाचार कला चित्र किट 102); नूह और जानवरों के साथ जहाज (62305; सुसमाचार कला चित्र किट 103); और सृष्टि...जीवित प्राणी (62483; सुसमाचार कला चित्र किट 100) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. यदि आपकी कक्षा पर्याप्त से बड़ी हो, कक्षा के कई सदस्यों से कक्षा के तरफ मुँह करके अगल-बगल में एक सीधी कतार में उनके हाथों को ऊपर करते हुए और उनकी उँगली के ऊपरी हिस्से से बगल में खड़े व्यक्ति की उँगली के ऊपरी हिस्से को छुते हुए खड़े रहने के लिए कहें । समझाएं कि इस तरह से खड़े होने के लिए लगभग 85 कक्षा के सदस्यों की आवश्यकता हो सकती है, उतनी ही चौड़ी पंक्ति बनाने के लिए जितनी कि उस जहाज की थी जिसे नूह ने बनाई थी ।

2. पाठ के अंत में कक्षा के सदस्यों की सहायता के लिए चार्ट को दिखाएं ताकि वे नूह के जहाज के आकार की कल्पना उन जहाजों की तुलना में कर सकें जिसे वे अच्छी तरह से जानते हों ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र उद्धरणों की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कि वे रोजमर्रा के जीवन में कैसे उपयोग होती हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्र के सिद्धांतों से संबंधित हों ।

1. लोग नूह के पश्चाताप की बुलाहट को अस्वीकार करते हैं; नूह एक जहाज बनाता है।

मूसा 8:19...30 और उत्पत्ति 6:5...22; 7:1...10 की शिक्षा दें और चर्चा करें । (यदि कक्षा के सदस्यों के पास शुद्ध और अशुद्ध जानवरों के प्रति प्रश्न हैं, आप उन्हें लैव्यव्यवस्था 11:1...31 को बता सकते हैं) ।

- संसार किस तरह था जब सुसमाचार का प्रचार करने के लिए प्रभु ने नूह को बुलाया था ? (देखें मूसा 8:20...22) । नूह के दिनों के लोगों और हमारे दिनों के लोगों के बीच आप कौन सी समानताएं देख सकते हैं ? नूह के दिन के लोग कैसे विनाश से बच सकते थे ? (देखें मूसा 8:23...24) । भविष्यवक्ताओं को सुनना और उनका अनुसरण करना कैसे हमारी आत्मिक और लौकिक विनाश से बचने में सहायता कर सकते है ?

- नूह ने जहाज को क्यों बनाया था ? (देखें इब्रानियों 11:7) । गिरजाघर के मार्गदर्शकों ने हममें से प्रत्येक को ''एक व्यक्तिगत जहाज बनाने'' की सलाह दी है (W. Don Ladd, Conference Report में, अक्टू. 1994, 36; या *Ensign,* नव. 1994, 29) । आत्मिक रूप से हम अपने आपकी और अपने परिवार की सुरक्षा के लिए क्या कर सकते हैं ? किन आज्ञाओं को आप महसूस करते हैं कि आज हमारी सुराक्षा में खासकर महत्वपूर्ण है ? (आप अपनी चर्चा में पुस्तिका *युवा के बल के लिए* (34285) का उपयोग करना चाह सकते हैं) ।

- विपत्ति या अन्य आवश्यकता में हम लौकिक तैयारी के लिए क्या कर सकते हैं ? (आप नीचे के उद्धरणों और पृष्ठ 54 पर दिए गए एल्डर टॉम पेरी के उद्धरणों को देखें) । आवश्यक तैयारियों को करने में हममें से कई क्यों स्थगित करते हैं ? अभी तैयारी करने के लिए हम कैसे अधिक समर्पित हो सकते है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था, ''भोजन का उत्पादन और भंडार का प्रकटीकरण आज हमारी लौकिक भलाई के लिए उतना ही जरूरी है जितना कि जहाज में जाते समय नूह के दिनों के लोगों के लिए था'' (Conference Report में, अक्टू. 1987, 61; या *Ensign,* नव. 1987, 49) ।

  एल्डर डबल्यु. डॉन लैड ने सीखाया थाः ''जब वर्षा शुरू होती है, जहाज को बनाने की शुरूआत के लिए काफी देर हो जाता है...हमें...प्रभु के प्रवक्ताओं को सुनने की आवश्यकता है । हमें शान्तिपूर्वक आगे बढ़ने और तैयारी करने को जारी रखने की आवश्यकता है उसके लिए जो निश्चित ही आएगा । हमें आतंकित होने और डरने की आवश्यकता नहीं है, जिसके लिए यदि हम तैयार होते हैं तो हम और हमारा परिवार किसी भी प्रलय से आत्मिक और लौकिक रूप से बच जाएंगे । हमारा जहाज विश्वास के एक समुद्र पर तैरेगा यदि हमने अपने कार्य को नियमित और निश्चि रूप से भविष्य की तैयारी के लिए किया हो'' (Conference Report में, अक्टू. 1994, 37; या *Ensign,* नव. 1994, 29) ।

- जहाज को बनाने में किन गुणों को नूह ने दिखाया ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है विश्वास, आज्ञाकारिता, और कड़ी मेहनत) । इन गुणों को हम अपने आपमें कैसे मजबूत कर सकते हैं ?

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने समझाया था कि जब नूह ने जहाज को बनाया था, ''वहाँ पर वर्षा और प्रलय का कोई भी संकेत नहीं था...उसकी चेतावनियों को विवेक हीन माना गया था...कितना मूर्खतापूर्ण है सूर्य को रोशनी के साथ और हमेशा की तरह जीवन के चलते रहने के साथ सूखी धरती पर एक जहाज को बनाना! परन्तु समय बीतता गया । जहाज बनकर तैयार हो गया । प्रलय आया । आज्ञा न मानने वाले और विरोधी डूब गए । विश्वास जिसे उसके निर्माण में प्रकट किया गया था, जहाज का चमत्कार हुआ था'' (Faith Precedes the Miracle (1972), 5...6) ।

2. प्रभु एक प्रलय के साथ पृथ्वी की सफाई करता है।

उत्पत्ति 7:11...24; 8; और 9:8...17 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- क्या हुआ था जब प्रलय आया था ? (देखें उत्पत्ति 7:23) । हमारे पास कौन से ''जहाज'' हैं जो आज हमें हमारी आस-पास की बुराइयों से बचने में सहायता कर सकते हैं ? (चॉकबोर्ड पर आप उत्तरों की सूची बनाना चाहें और कक्षा के सदस्यों को यह बताने के लिए आमंत्रित करें कि कैसे इन ''जहाजों'' ने उनकी सुरक्षा में सहायता की थी । संभव उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है घर, परिवार, दोस्त, मंदिर, धर्म प्रशिक्षालय, और जीवित भविष्यवक्ता) । हम इन ''जहाजों'' में दूसरों की आश्रय खोजने में कैसे सहायता कर सकते हैं ?

- वर्षा के रूकने के पश्चात, नूह ने जहाज में से एक कबूतरी को क्यों उड़ाया ? (देखें उत्पत्ति 8:8) पहले दो समय क्या हुआ था जब उसने कबूतरी को भेजा था ? (देखें उत्पत्ति 8:8...11) । तीसरी बार क्या हुआ था ? (देखें उत्पत्ति 8:12) ।

- जहाज को छोड़ने के पश्चात वह पहली चीज क्या थी जिसे नूह ने किया था ? (देखें उत्पत्ति 8:20) । हम प्रभु के प्रति अपने आभार को कैसे व्यक्त कर सकते हैं जब वह हमारी एक कठिन परिस्थिति से निकलने में सहायता करता है ?

- प्रलय के खत्म होने के पश्चात परमेश्वर ने आकाश में क्या रखा था ? (देखें उत्पत्ति 9:13) । परमेश्वर ने क्या कहा था कि धनुष किसका प्रतिनिधित्व करता है ? (देखें उत्पत्ति 9:12...13, 16...17) । प्रभु ने नूह के साथ क्या अनुबंध किया था ? (देखें उत्पत्ति 9:8...11, 15) ।

3. लोगों ने बाबुल के मीनार को बनाया।

उत्पत्ति 11:1...9 की शिक्षा दें और

- नूह के वंशजों ने एक मीनार बनाने का निश्चिय क्यों किया था ? (देखें उत्पत्ति 11:4) । आपके विचार से वे अपने लिए ''एक नाम को बनाने'' के द्वारा क्या पाना चाहते थे ? अपने लिए एक नाम को बनाने और अपने ऊपर मसीह के नाम को लेने में क्या अन्तर है ? हम अपने ऊपर किन जिम्मेदारियों को लेते हैं जब हम मसीह के नाम को अपने ऊपर लेते हैं ? (देखें मुसायाह 18:8...10) ।
- स्वर्ग के लिए एक मीनार बनाने की कोशिश का क्या परिणाम हुआ था ? (देखें उत्पत्ति 11:5...9) । हम अपने आप या मनुष्य के तरीकों के द्वारा स्वर्ग में क्यों नहीं पहुँच सकते ? हमारे लिए स्वर्ग में जाने का प्रभु का मार्ग क्या है ?

निष्कर्ष

समझाएं कि लोगों ने जिन्होंने बाबुल के मीनार को बनाया था, उन्हें सजा हुई थी क्योंकि उन्होंने दुनियावी जरियों के द्वारा स्वर्ग में पहुँचने की कोशिश की थी । नूह और उसका परिवार जो कि स्वर्ग में पहुँचने के लिए दुनियावी चीजों के विरूद्ध था, प्रलय से बचाये गए थे क्योंकि वे परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीये थे ।

गवाही दें कि हमारे लिए स्वर्ग में पहुँचने का केवल एक ही रास्ता है...हमारे स्वर्गीय पिता के साथ रहने के लिए वापस जाने का...यीशु मसीह के सुसमाचार के द्वारा । हमें धार्मिकता में जीना होगा, जैसा कि नूह जीया था, यीशु में विश्वास रखते हुए, हमारे पापों का पश्चाताप करते हुए, पवित्र धर्मविधियों को प्राप्त करते हुए, और हमारे जीवन के अन्त तक धीरज रखते हुए । यदि हम इन चीजों को करते हैं, हम बुराई पर विजय प्राप्त करेंगे और परमेश्वर की उपस्थिति के लिए वापस होने में समर्थ होंगे ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. एक दिव्यदर्शन में हनोक नूह के दिनों को देखता है

हनोक, नूह के परदादा ने, नूह की पीढ़ी की दुष्टता को और प्रलय के परिणाम को एक दिव्यदर्शन में देखा था (मूसा 7:41...52) । इस दुष्टता के कारण हनोक दुःखी था, और उसने प्रभु से नूह और उसके बच्चों पर दया करने के लिए पूछा था । प्रभु ने हनोक से प्रतिज्ञा की थी कि वह फिर से संसार को प्रलय द्वारा नष्ट नहीं करेगा (मूसा 7:51) । प्रभु ने हनोक से यह भी प्रतिज्ञा की थी कि नूह उसका वंशज होगा, और इसलिए नूह का बीज पृथ्वी पर प्रलय के पश्चात भी रहेगा (मूसा 7:52; 8:2, 6, 8...9) । प्रलय के पश्चात प्रभु ने नूह के साथ अपने अनुबंध का नवीनीकरण किया था (उत्पत्ति 9:8...17; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद की 9वीं और 11वीं आयत हनोक के साथ प्रभु के अनुबंध को बताती है) ।

2. प्रभु धार्मिक लोगों को बचाकर रखता है

बिल्कुल उसी तरह जिस तरह कि नूह और उसका परिवार उनकी धार्मिकता के कारण प्रलय से बचाया गया था, बाबुल के मीनार के समय भी प्रभु ने धार्मिक लोगों की सुरक्षा की थी । संक्षिप्त में यारद और उसके भाईयों की कहानी पर चर्चा करें, जैसा कि एथर 1:1...5, 33...37 में पाया जाता है, और क्यों उनकी भाषा में गड़बड़ी नहीं हुई थी ।

विभिन्न जहाजों के तुलनात्मक आकार (देखें ध्यान गतिविधि)

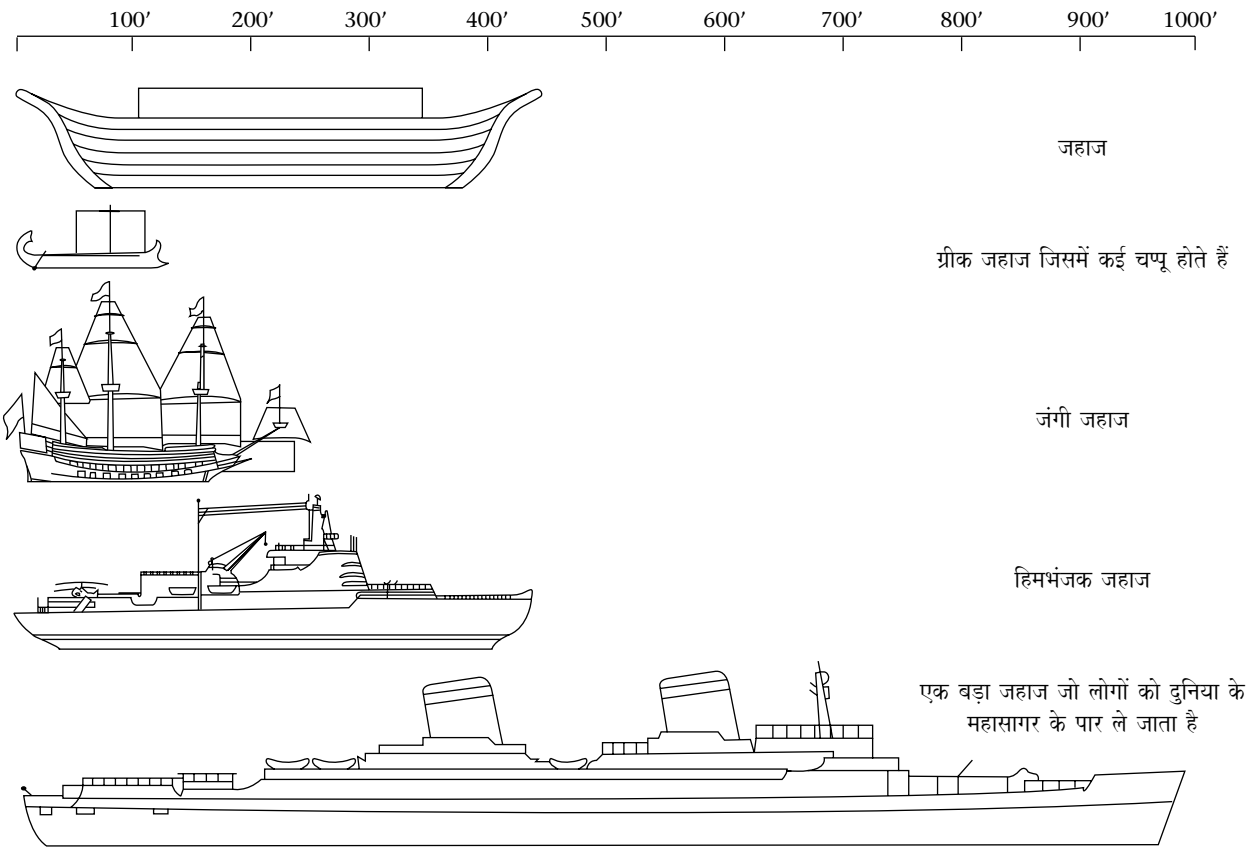

पाठ
7

इब्राहीम की वाचा

इब्राहीम 1:1...4; 2:1...11; उत्पत्ति 12:1...8; 17:1...9

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की इब्राहीम के वाचा की आशीषों और जिम्मेदारियों को समझने में सहायता करना ।

तैयारी

1. इब्राहीम 1:1...4; 2:1...11; उत्पत्ति 12:1...8; 17:1...9 का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें । इब्राहीम धार्मिक होने को खोजता है और परमेश्वर की आशीषों के लिए योग्यता से जीता है । परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हुए इब्राहीम के साथ अनुबंध करता है कि उसके पास कई पीढ़ियाँ होंगी जिन्हें एक प्रतिज्ञा की गई भूमि और पौराहित्य और सुसमाचार की आशीषें प्राप्त होंगी ।
2. अतिरिक्त अध्ययनः उत्पत्ति 15; सिद्धांत और अनुबंध 132:19...24, 29...32 ।
3. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहेंः

   ख. प्रचारकों का और एक स्थानीय मंदिर का चित्र (62611) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

- एक कुलपति का आशीर्वाद क्या है ?

  प्रथम अध्यक्षता ने कहा थाः ''कुलपति का आशीर्वाद प्राप्तकर्ता की वंशावली का एक प्रेरित घोषणा होता (है), और यह भी कि, आत्मा के द्वारा दिया जाता है, प्राप्तकर्ता के प्रचार कार्य के जीवन का एक प्रेरित और भविष्यसूचक वक्तव्य, उन आशीर्वादों, सावधानियों, और चेतावनियों के साथ जैसा कि कुलपति को देने के लिए कहा जा सकता है...सारी प्रतिज्ञा की गई आशीर्वादों का स्पष्ट अनुभव, हमारे प्रभु के सुसमाचार की विश्वासपूर्णता के ऊपर निर्भर करता है'' (स्टेक अध्यक्षों के लिए पत्र, 28 जुन 1957; ब्रूस आर. मैकान्की में उद्धरित, *Mormon Doctrine,* दूसरा संस्करण (1966), 558) ।

- आप में से कितनों ने अपने कुलपति के आशीर्वाद को प्राप्त किया है ? इसका क्या अर्थ है कि एक आशीर्वाद में कुलपति हमारी वंशावली की घोषणा करता है ? (जब एक कुलपति हमारी वंशावली की घोषणा करता है, वह हमारे लिए प्रकट करता है कि हम एप्रैम, मनश्शे के द्वारा भविष्यवक्ता इब्राहीम के या इब्राहीम के दूसरे वंशजों के वंशज हैं) ।

समझाएं कि यह पाठ उन आशीषों पर चर्चा करता है जिसे हम इब्राहीम के वंशज होने के नाते प्राप्त करते हैं और उनपर जो जिम्मेदारियां हमपर हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा के करें कि हैं, इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. परमेश्वर इब्राहीम के साथ वाचा बाँधता है।

इब्राहीम 1:1...4, 2:1...11; और उत्पत्ति 12:1...8; 17:1...9 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- जब इब्राहीम एक युवा पुरूष था, वह धार्मिक बनना चाहता था और परमेश्वर की आशीषों के योग्य जीना चाहता था । इब्राहीम 1:2...4 के अनुसार, इब्राहीम ने किन आशीषों की इच्छा की थी ?

- परमेश्वर ने इब्राहीम और उसके परिवार को ऊर में उनके घर को छोड़ने और एक जगह की यात्रा के लिए निर्देश दिया था जिसका नाम उन्होंने हरन रखा था (इब्राहीम 2:1...4) । वहाँ पर इब्राहीम ने प्रार्थना किया और एक दिव्यदर्शन को प्राप्त किया था जिसमें परमेश्वर ने उसे और उसकी पीढ़ियों को आशीषित करने का वाचा किया था । इसे इब्राहीम का वाचा कहते हैं । इस अनुबंध में परमेश्वर ने इब्राहीम से किन आशीषों की प्रतिज्ञा की थी ? (देखें इब्राहीम 2:6...11; उत्पत्ति 12:1...8; 17:1...9 । आप संकेत करना चाहें कि इब्राहीम को इंतजार करना पड़ा था उसके पहले कि इनमें से कुछ आशीषें पूरी हुई थीं, और वे आज भी पूरी हो रही हैं) ।

इब्राहीम के अनुबंध की आशीषों को संक्षिप्त में करने के लिए निम्नलिखित सारणी आपकी सहायता कर सकता है । चॉकबोर्ड पर आप एक संक्षिप्त सारणी को दिखाना चाहें, उस स्थान को खाली रखते हुए जहाँ पर खण्ड ''जिम्मेदारियाँ'' को लिखना होगा जैसा कि पृष्ठ 29 पर दिखाया गया है:

इब्राहीम के वाचा की आशीषें और जिम्मेदारियाँ			
पार्थिव आशीषें:	रहने के लिए एक प्रतिज्ञा की भूमि (इब्राहीम 2:6; 19; उत्पत्ति 12:7; 17:8)	एक महान भावी पीढ़ी (इब्राहीम 2:9...10; उत्पत्ति 12:2...3; 17:2, 4...6) ।	यीशु मसीह का सुसमाचार और इब्राहीम और उसकी भावी पीढ़ी के लिए पौरोहित्य (इब्राहीम 2:9...11; उत्पत्ति 17:7)
अनन्त समान्तर	सिलेस्टियल राज्य (सि. और अनु. 88:17...20)	अनन्त विवाह और अनन्त बढ़त (सि. और अनु. 132:19...22)	उत्कर्ष और अनन्त जीवन (सि. और अनु. 132:23...24)

2. हम इब्राहीम के वाचा की आशीषों और जिम्मेदारियों के उत्तराधिकारी हैं।

समझाएं कि गिरजाघर के सारे सदस्य इब्राहीम के वंश हैं, जिसका मतलब है कि हम उसके वंशज हैं । एल्डर जोसफ फिल्डिंग स्मिथ ने कहा था: ''ज्यादातर उनमें से जो गिरजाघर के सदस्य बने थे, वे वास्तविकता में यूसुफ के पुत्र एप्रैम के द्वारा इब्राहीम के वंशज हैं । जो वास्तविकता में इब्राहीम और इस्राएल के वंशज नहीं हैं उन्हें वैसा बनना है, और जब उनका बपतिस्मा और पुष्टिकरण होता है, उनका पेड़ में कलमबद्ध हो जाता है और उत्तराधिकारियों के रूप में सारे अधिकार और सौभाग्य के हकदार बन जाते हैं'' (''कैसे कोई इस्राएल के घराने का बन सकता है'', *Improvement Era,* अक्टू. 1923, 1149) ।

- इब्राहीम के वंश होने के नाते, गिरजाघर के सदस्य इब्राहीम के वाचा की आशीषों और जिम्मेदारियों के उत्तराधिकारी हैं । हम इस वाचा के उत्तराधिकारी कैसे बनते हैं ? (जब हम गिरजाघर में बपतिस्मा लेते हैं, इब्राहीम का वाचा हमसे उद्धार के नवीनीकरण की प्रतिज्ञा करता है । जब हम मंदिर में मुहरबंद होते हैं, इब्राहीम का वाचा हमसे उत्कर्ष के नवीनीकरण की प्रतिज्ञा करता है । वाचा की आशीषों को प्राप्त करने के लिए, हमें संबद्ध जिम्मेदारियों को पूरा करना होगा और योग्यता से जीना होगा) ।

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने समझाया था:

  ''इब्राहीम ने सुसमाचार को पहले बपतिस्मा के द्वारा प्राप्त किया था (जो कि उद्धार का अनुबंध है); फिर उसने अपने ऊपर उच्च पौरोहित्य को लिया था, और उसने सिलेस्टियल विवाह में प्रवेश किया था (जो कि उत्कर्ष का अनुबंध है), वहीं से आश्वासन को प्राप्त करते हुए कि उसके पास अनन्त बढ़त होगी; अंततः उसने एक प्रतिज्ञा को प्राप्त किया कि ये सारी आशीषें उसकी नश्वर पाढ़ियों को दी जाएंगी । (इब्राहीम 2:6...11; सि. और अनु. 132:29...50) । इब्राहीम की ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं में सम्मिलित था कि मसीह उसकी वंशावली से आएगा, और यह आश्वासन कि इब्राहीम की पीढ़ियों के पास कुछ चुनाव होंगे, प्रतिज्ञा की भूमि जैसा कि एक अनन्त विरासत में । (इब्राहीम 2; उत्पत्ति 17; 22:15...18; गलतियों 3) ।

  ''इन सारी प्रतिज्ञाओं को एक साथ मिला दें तो इब्राहीम का वाचा कहलाता है । इस अनुबंध का इसहाक के साथ नवीनीकरण हुआ था (उत्पत्ति 24:60; 26:1...4, 24) और फिर याकूब के साथ । (उत्पत्ति 28; 35:9...13; 48:3...4) । *इसका वह हिस्सा जो कि व्यक्तिगत उत्कर्ष और अनन्त बढ़त के अनुकूल है, उसका इस्राएल के घराने के प्रत्येक सदस्य के साथ नवीनीकरण हुआ है जो सिलेस्टियल विवाह के अंतर्गत प्रवेश करते हैं;* उस नियम के अनुसार भाग लेने वाले दल इब्राहीम, इसहाक, और याकूब की सारी आशीषों के उत्तराधिकारी बन जाते हैं । (सि. और अनु. 132; रोमियों 9:4; गलतियों 3; 4) । (*Mormon Doctrine,* दूसरा संस्करण (1966), 13) ।

- इब्राहीम के वाचा के द्वारा हम किन आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं ? (हम उन सारी आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं जिन्हें इब्राहीम ने प्राप्त किया था, जैसा कि पहले की सारणी में रूपरेखा दिया गया था । इन आशीषों में सम्मिलित है सुसमाचार, पौरोहित्य, उत्कर्ष, और अनन्त पारिवारिक संबंध) ।

- इब्राहीम के अनुबंध के उत्तराधिकारी होने के नाते हमारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं ? (देखें इब्राहीम 2:9; 11; उत्पत्ति 18:19 । हम परमेश्वर के बच्चों की जो जीवित हैं या जिनकी मृत्यु हो चुकी है, सुसमाचार की आशीषों की पूर्णता को प्राप्त कराने में सहायता करने के लिए हैं । हम परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के भी हैं) ।

  यदि आपने चॉकबोर्ड पर पृष्ठ 28 के सारणी को लिखा है, सारणी के नीचे एक खण्ड को जोड़ें, हमारी जिम्मेदारियों की सूची को बनाते हुए जैसा कि दिखाया गया है:

जिम्मेदारियाँ:	परमेश्वर के सारे बच्चों की, सुसमाचार की पूर्ण आशीषों को प्राप्त करने में सहायता करो (इब्राहीम 2:9, 11)	परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करो (उत्पत्ति 18:19)

- हम दूसरों की सुसमाचार को प्राप्त करने में कैसे सहायता कर सकते हैं ? (प्रचार कार्य करने के द्वारा, मरे हुओं के लिए मंदिर की धर्मविधियों को करने के द्वारा, और धार्मिकता के उदाहरण बनने के द्वारा । आप एक मंदिर और प्रचारकों के चित्र को दिखाना चाहें) ।

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था, ''इब्राहीम के वंश की जिम्मेदारी, जो कि हम हैं, 'सारी जातियों के लिए इस सेवकाई और पौरोहित्य को लेने' के लिए हमें प्रचारक होना होगा (इब्राहीम 2:9)'' (Conference Report में, अप्रैल 1987, 107; या *Ensign*, मई 1987, 85) ।

  दूसरों के साथ सुसमाचार को बाँटने की हमारी जिम्मेदारी पर जोर देने के लिए एल्डर बोएड के. पैकर ने निम्नलिखित अनुरूपता को बनाया है:

  कल्पना करें कि हमारे धर्माध्यक्ष ने हमें वार्ड के सदस्यों के लिए एक पिकनिक की योजना के लिए नियुक्त किया है । इस गतिविधि को वार्ड के इतिहास में सबसे अच्छा होना है, और हमें इस बात की चिन्ता नहीं करनी है कि कितना खर्च होता है । हमें देश के एक सुंदर पिकनिक के स्थान को आरक्षिक करना है जहाँ मेज और कुर्सियाँ हों जिसपर लोग खाना खा सकें । इन सारी चीजों को हमें अपने स्वयं के लिए करना है ।

  वह दिन आ जाता है और सारी चीजें पूर्ण हो जाती हैं । मेजें व्यवस्थित कर दी जाती हैं और दावत शानदार होती है । तभी, आशीष देने के तुरन्त पश्चात, एक पुरानी मोटर गाड़ी पिकनिक के स्थान पर आती है और रूकने के लिए चरचराहट होती है । एक परेशान व्यक्ति कार का इंजन खोलता है और उसकी रेडियेटर से भाप बाहर आता है । कई बच्चे मोटर गाड़ी में से बाहर कूदते हैं । मेज के पास एक चिन्तित माँ एक डिब्बे को लेकर आती है । मेज के बचे हुए भोजन में से कुछ वह डिब्बे में डालती है, भूखे बच्चों के लिए उसे एक भोजन की तरह बनाने को कोशिश करते हुए । परन्तु वह पयार्पत नहीं होता है ।

  फिर छोटी लड़कियों में से एक हमारे मेज के तरफ देखती है । वह अपने छोटे भाई को अपनी ओर खींचती है और अपने सिर को मेरे और आपके बीच में धकेलती है । हम बगल में हट जाते हैं । छोटी लड़की कहती है, ''उसे देखो; मैं चकित हूं कि उसका स्वाद कैसा होगा ।''

  हम क्या करेंगे ? क्या हम लोगों पर ध्यान नहीं देंगे या उन्हें जाने के लिए कहेंगे ? क्या हम उन्हें मेज दिखाएंगे और उन्हें कुछ भोजन देंगे जिसकी हमें आवश्यकता नहीं है ? या क्या हम उन्हें हमारे साथ होने के लिए आमंत्रित करेंगे, हमारे बीच बैठने के लिए और दावत को बाँटने के लिए, और उनकी मोटर गाड़ी को ठीक करने में सहायता करेंगे और उनकी यात्रा के लिए उन्हें कुछ देंगे ?

  एल्डर पैकर कहते हैं: ''क्या और अधिक सच्ची प्रसन्नता हो सकती है बजाय देखने के कि हम उन भूखे बच्चों को खाने के लिए कितना दे सकते हैं ? क्या और अधिक संतुष्टि प्राप्त होगी बजाय उसके कि हम अपने उत्सव को रोककर उनकी मोटर गाड़ी को ठीक करने में उनकी सहायता करें ?...

  ''...संसार में चारों तरफ और हमारे आस-पास लोग हैं...हमारे पड़ोसी, हमारे दोस्त, कुछ हमारे स्वयं के परिवारों में...जिन्हें आत्मिक चीजों के बारे में बहुत पता नहीं होता है । उनमें से कुछ भूखे मर रहे हैं! यदि इन सारी चीजों को हम अपने स्वयं के

लिए रखें, यह उनके समक्ष उत्सव की तरह है जो कि भूखे हैं'' (Conference Report में, अप्रैल 1984, 59...61; या *Ensign,* मई 1984, 41...42) ।

- यह अनुरूपता दूसरों की सुसमाचार की आशीषों को प्राप्त करने की सहायता के लिए हमारी जिम्मेदारियों के बारे में शिक्षा देता है ? (हम सुसमाचार की पूर्णता से आशीषित हुए हैं, महान दावत जिसे संसार ने कभी भी जाना हो (सि. और अनु. 58:8...12) । परमेश्वर हमसे आशा करता है कि हम इस आशीष को दूसरों के साथ बाँटें, दोनों के साथ जो जीवित हैं या जो मर गए हैं) ।

- हमारे कुलपति की आशीषों में वंशावली की घोषणा किस तरह से वैसी है जैसी कि इब्राहीम के वाचा के उत्तराधिकारियों के रूप में हमारी जिम्मेदारियों को पूरा करने की बुलाहट है ? (घोषणा करने के द्वारा कि हम इब्राहीम के वंश हैं, हमारी कुलपति की आशीषें, इब्राहीम के वाचा की आशीषों को प्राप्त करने की हमारी सौभाग्यता पर और उसकी जिम्मेदारियों को पूरा करने के हमारे दायित्व पर फिर से जोर देता है) ।

निष्कर्ष

इब्राहीम के वाचा की आशीषों की गवाही को दें । कक्षा के सदस्यों को, इन वाचा के उत्तराधिकारी होने के नाते उनकी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

संसार में रहने की चुनौती

समझाएं कि पुराने समय के इस्राएली कई जातियों के द्वारा घिरे हुए थे जिनके लोग सच्चे परमेश्वर में विश्वास नहीं करते थे । इन जातियों में सम्मिलित था एसीरियन्स, बेबीलोनियन्स, इजीप्सियन्स और अन्य ।

- आपके विचार से प्रभु ने अपने अनुबंधित लोगों को पुराने संसार के मध्य में क्यों रखा था बजाय उसके कि उन्हें अकेला छोड़ा जा सकता था ? (देखें व्यवस्थाविवरण 4:6...8 । वह चाहता था कि वे दूसरों के लिए उदाहरण को रखें और सारी जातियों को आशीषित करने के लिए इब्राहीम के वाचा को पूरा करें) ।

  समझाएं कि पुराने नियम की कई कहानियाँ, प्रभु के लोगों की उनके अनुबंधों को रखने और धार्मिकता में दूसरों के प्रति प्रभाव की सफलता और विफलता को व्यक्त करता है । इब्राहीम, यूसुफ, दानिय्येल, एस्तेर, और कई अन्य धार्मिक प्रभाव थे । उजाड़ भूमि में घुमते हुए शिमशोन, अहाब, इस्राएल के बच्चे, और अन्यों ने संसार को उनके प्रति प्रभाव की अनुमति दी थी ।

  जैसा कि उसने पुराने इस्राएल के साथ किया था, प्रभु ने हमें, उसके अंतिम दिन के अनुबंधित लोगों को, संसार के मध्य में रखा है । हमारी चुनौती है कि हम धार्मिक तरीकों में संसार को प्रभावित करें बजाय कि संसार को हमें अधार्मिक तरीकों में प्रभावित करने की अनुमति को देते हुए ।

पाठ
8

दुष्ट संसार में धार्मिकता से जीना

उत्पत्ति 13...14; 18...19

उद्देश्य

दुष्टता के बढ़ने के दौरान धार्मिक स्तर के लिए कक्षा के प्रत्येक सदस्य की उपवास रखने के संकल्प को मजबूत करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें । सूचनाः उत्पत्ति 17:5 प्रभु के अब्राम नाम को बदलकर इब्राहीम रखने के बारे में बताता है । इस पूरे पाठ में *इब्राहीम* नाम का उपयोग किया गया है ।

   क. उत्पत्ति 13 । कनान की धरती में एक अकाल होने के कारण कुछ समय के लिए मिस्र में रहने के पश्चात, इब्राहीम और उसका परिवार कनान वापस आते हैं । इब्राहीम हेब्रोन में बस जाता है और उसकी भतीजा लूत सदोम के पास बस जाता है ।

   ख. उत्पत्ति 14:1...2, 8...24 । राजाओं के युद्ध के दौरान लूत को बंदी बना लिया जाता है और वह इब्राहीम के द्वारा बचाया जाता है (14:1...2, 8...16) । इब्राहीम मेल्कीसेदेक को दसमांश देता है और सदोम के राजा से युद्ध में बिगड़ी चीजों को स्वीकार करने से मना करता है (14:17...24)

   ग. उत्पत्ति 18:16...33; 19:1...29 । प्रभु घोषणा करता है कि वह लोगों की दुष्टता के कारण सदोम और अमोरा को नष्ट करेगा (18:16...22) । इब्राहीम प्रभु से नगरों को नाश ना करने से बचाने की याचना करता है यदि वह वहाँ रह कर धार्मिक लोग को पा सकता है (18:23...33) । लूत और उसके परिवार को सदोम छोड़ने की आज्ञा दी जाती है (19:1...23; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद में, उत्पत्ति 19:11...13 बताता है कि लूत ने अपनी बेटियों को सदोम के लोगों के पास नहीं भेजा; बजाय इसके, उसने अपनी बेटियों की लोगों से रक्षा करने की कोशिश की) । प्रभु सदोम और अमोरा को नष्ट करता है (19:24...29) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः उत्पत्ति 12 ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, कक्षा में एक ताजा अखबार लाएं ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा को एक ताजा अखबार दिखाएं । किसी विशिष्ट समाचार में जाने की बजाय, टिप्पणी करें कि कैसे हम अधार्मिक प्रभावों से घिरे हुए हैं । समझाएं कि यह पाठ धार्मिक होने के महत्व पर है तब भी जब दुष्टता हमारे आस-पास हो ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. इब्राहीम और उसका परिवार हेब्रोन में बस जाता है और लूत और उसका परिवार सदोम के पास बस जाता है।

उत्पत्ति 13 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

आप, जीवन के इस समय की इब्राहीम की यात्रा का एक संक्षिप्त पर्यावलोकन करना चाहें । उसे पर्यावलोकन के ऊर नगर से हटा लिया गया, तब हारान में बसने के लिए प्रभु द्वारा मार्गदर्शित किया गया (उत्पत्ति 11:31; इब्राहीम 2:1...5) । बाद में प्रभु ने उसे हारान से कनान देश के लिए मार्गदर्शित किया और प्रतिज्ञा की, ''यह देश मैं तेरे वंश को दूँगा'' (उत्पत्ति 12:7) । कनान में एक अकाल के कारण, इब्राहीम और उसका परिवार मिस्र को चले गए (उत्पत्ति 12:10) । उत्पत्ति 13 आरंभ होता है इब्राहीम और उसके परिवार के मिस्र से कनान वापस आने से ।

- इब्राहीम और लूत और उनके परिवार मिस्र से कनान वापस आने पर एक साथ क्यों नहीं रह सकते थे ? (देखें उत्पत्ति 13:5...7) । उत्पत्ति 13:8..9 में इब्राहीम की टिप्पणियों से उसके बारे में क्या सीख सकते है ? हम इब्राहीम के उदाहरण का कैसे अनुसरण कर सकते हैं जब हम पारिवारिक सदस्यों और अन्यों के साथ विरोध में होते हैं ?

- लूत ने कहाँ रहना चुना था ? (देखें उत्पत्ति 13:10...12) । संकेत करें कि सदोम के लोग अत्याधिक दुष्ट थे (उत्पत्ति13:13), परन्तु तब भी लूत ने उनके पास रहना चुना । सदोम के नजदीक की धरती में ऐसा क्या था जिसने लूत को आकर्षित किया था ? (देखें उत्पत्ति 13:10 । वह ''पानी से भरपूर'' और सुंदर था) ।

- पहले तो लूत सदोम के बाहर ''तराई के नगरों में रहा था'', परन्तु उसने ''अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा कर लिया था'' (उत्पत्ति 13:12) । बाद में वह सदोम के नगर में ही रहा था (उत्पत्ति 14:12) । हम किन चीजों को कर सकते हैं जो कि आत्मिकता में अपने तम्बूओं को सदोम के निकट खड़ा करने के समान हो ? (बुरी चीजों को उजागर करने की बजाय हम उनके सहयोगी बन सकते हैं, या अपने आपको छोटे पापों को करने की अनुमति दे सकते हैं बिना यह सोचते हुए कि वे पाप बड़े हो सकते हैं) । छोटी परेशानियों और पापों के बड़ा होने से पहले हम अपने व्यवहार को कैसे बदल सकते हैं ?

- लूत की तरह, मॉरमन की पुस्तक में राजा बिन्यामिन के लोग भी अपने तम्बूओं को एक विशिष्ट दिशा के तरफ खड़ा किया था । उनका तम्बू किस तरफ था ? (देखें मुसायाह 2:6) । हम अपने घरों को सांसारिक सिद्धांतों की बजाय मंदिर के तरफ कैसे रख सकते हैं ?

2. इब्राहीम लूत को बचाता है, मेल्कीसेदेक को दसमांश देता है, और सदोम के राजा से युद्ध में बिगड़ी चीजों को स्वीकार करने से मना करता है

उत्पत्ति 14:1...2, 8...24 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- जब लूत सदोम में रह रहा था, कई नगर-राज्यों के राजाओं ने, सदोम और अमोरा को सम्मिलित करते हुए, एक दूसरे के साथ युद्ध करना आरंभ किया (उत्पत्ति 14:1...2, 8...9) । इस युद्ध के दौरान लूत का क्या हुआ था ? (देखें उत्पत्ति 14:10...12) । लूत को बंदी बनाने के पश्चात इब्राहीम ने उसकी कैसे सहायता की थी ? (देखें उत्पत्ति 14:13...16) ।

- लूत को बचाने के पश्चात इब्राहीम किससे मिला था ? (देखें उत्पत्ति 14:17...18) । मेल्कीसेदेक कौन था ? (देखें उत्पत्ति 14:18; सि. और अनु. 107:1...2 को भी देखें) । इब्राहीम ने मेल्कीसेदेक को क्या दिया ? (देखें उत्पत्ति 14:20; जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 14:36...40 को भी देखें) ।

- सदोम के राजा से एक धागा को भी इनाम के रूप में स्वीकार करने के लिए इब्राहीम ने क्यों मना किया था ? (देखें उत्पत्ति 14:21...24 । वह एक अधार्मिक राजा से किसी भी चीज को प्राप्त नहीं करना चाहता था) । आज की दुनिया में अनैतिकता का एक ''धागा'' किसको माना जा सकता है ? बेइमानी का एक ''धागा'' क्या हो सकता है ? कभी कभी हम अधार्मिकता के बदले कैसे अपने सिद्धांतों को भूल जाते हैं, मनोरंजन के रूप में स्वीकार करने के इच्छुक होते हैं जिसे हम खोजते हैं ? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हमें अपने जीवन में छोटे छोटे सांसारिक तरीकों को भी न आने देने की कोशिश करनी चाहिए ? (देखें 2 नफी 28:20...21) ।

- मेल्कीसेदेक और सदोम के राजा के प्रति उसकी प्रतिक्रिया की तुलना के द्वारा, हम प्रभु के लिए इब्राहीम के समर्पण के बारे में क्या सीख सकते हैं ?

3. प्रभु सदोम और अमोरा का विनाश करता है।

उत्पत्ति 18:16...33; 19:1...29 ।

- सदोम और अमोरा के लोगों के अधर्म के कारण, प्रभु ने नगरों को नाश करने की योजना बनाई (उत्पत्ति 18:20...21) । इस योजना को जानने के पश्चात इब्राहीम ने प्रभु से क्या पूछा ? (देखें उत्पत्ति 18:23...32) । इस सच्चाई से हम क्या सीख सकते हैं कि प्रभु नगरों को नष्ट नहीं करने का इच्छुक था यदि उसमें रह रहे धार्मिक लोग मिल सकते थे ?

- लूत को सदोम छोड़ने का निर्देश क्यों दिया गया था ? (देखें उत्पत्ति 19:12...13, 15) । लूत के दामादों ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब उसने उनसे छोड़ने का आग्रह किया था ? (देखें उत्पत्ति 19:14) । खतरों के बारे में जानते हुए भी कुछ लोग क्यों बुरे प्रभावों से अपने आप को अलग नहीं करते हैं ?

- दूतों ने क्या सलाह दिया जब लूत और उसका परिवार नगर को छोड़ चुके थे ? (देखें उत्पत्ति 19:17) । संकेत करें कि उद्धारकर्ता ने अपने अनुसरण करनेवालों को समान सलाह दी है (लूका 9:62; 17:29...32; सि. और अनु. 133:14...15) । ''पीछे देखना'' किस चीज का प्रतिनिधित्व करता है ? (अनिच्छा से छोड़ देना जिसे हमसे करने के लिए कहा गया है; मसीह का अनुसरण करने के लिए संपूर्ण समर्पण से कम करना) । किस तरह से हम कभी कभी ''पीछे देखते'' हैं ?

- लूत की पत्नी के साथ क्या हुआ था जब उसने मुड़कर सदोम की तरफ देखा था ? (देखें उत्पत्ति 19:26) । लूत की पत्नी की कहानी हमें पश्चाताप के बारे में क्या सीखाती है ? (पश्चाताप के लिए हमें अपने हृदयों और व्यवहारों को बदलना होगा । इसे करने के लिए कभी कभी हमें एक नये वातावरण और सहयोगियों का चुनाव करना होगा) ।

- अपने तम्बू को सदोम के तरफ खड़ा करने के कारण लूत ने क्या खोया था ? क्या चीजें संभव है कि हम खो दें जब हम अपने आपको उस स्थिति में रखते हैं जहाँ हमें पता है कि हम लालच में पड़ जाएंगे ? हम किस तरह से प्रभावित होते हैं जब हम अपने आपको बुराई द्वारा घिरे जाने की अनुमति देते है, तब भी जब हम सीधी तरह से पापपूर्ण कार्य में भाग नहीं लेते हैं ?

- उत्पत्ति 19:29 कौन से कारण का सुझाव देता है जिससे लूत को छोड़ दिया गया था जब सदोम और अमोरा को नष्ट किया गया था ? (प्रभु ने इब्राहीम की धार्मिकता को याद रखा था) । हमारा धार्मिक व्यवहार कैसे दूसरों को फायदा पहुँचा सकता है ?

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कहा थाः ''अभी भी हमारा संसार अधिकतर उन्हीं दिनों के समान है जैसा कि नफायटी भविष्यवक्ता के समय था जिसने कहा थाः 'यदि यह धार्मिक की प्रार्थनाएं नहीं होतीं...इस समय तुम भी संपूर्ण विनाश का सामना कर सकते थे...' (अलमा 10:22) । अवश्य, कई सच्चे और विश्वासी लोग हैं जो कि सारी आज्ञाओं को जीते हैं और जिन के जीवन और प्रार्थनाएं संसार को विनाशता से दूर रखते हैं'' (Conference Report में, अप्रैल 1971, 7; या *Ensign,* जुन 1971, 16) ।

निष्कर्ष

अपने आपको पाप से दूर रखने की महत्वपूर्णता की गवाही दें, तब भी जब हमारे आस-पास बुराई हो । सांसारिक चीजों का उन पर प्रभाव डालने की अनुमति देने की बजाय कक्षा के सदस्यों को संसार में एक धार्मिक प्रभाव बनने के संघर्ष के लिए प्रोत्साहित करें ।

एल्डर एम. रसल बलार्ड के निम्नलिखित वक्तव्य से आप समाप्ति करना चाहेंगेः

''गिरजाघर में, हम अक्सर वक्तव्य के दो भागों को दोहराते हैं, 'संसार में रहना परन्तु संसार का नहीं बनना' । जैसे जैसे हम टेलिविजन कार्यक्रमों का आंकलन करते हैं जिसमें अपवित्र, हिंसा, और नास्तिकता जो साधारण दिखाई देता है, और यहाँ तक कि मोहक बनाता है, हम अक्सर ऐसी आशा करते हैं कि किसी भी तरीके से हम संसार से बाहर आ सकें और अपने परिवारों को इन सबसे अलग कर सकें...

''शायद हमें दोहरे वक्तव्य को दो अलग अलग चेतावनियों के रूप में बताना चाहिए जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है । पहला, *'संसार में रहना'* । उसमें शामिल होना, उसके बारे में जानकारी होना । समझदार और सहनशील बनने की कोशिश करें और लोगों के विभिन्न समुदायों, उनकी सोच और उनके रहने के तौर-तरीकों की प्रशंसा करने की कोशिश करें । सेवकाई और उसमें सम्मिलित होने के द्वारा समाज के लिए अर्थपूर्ण योगदान दें । दूसरा, *'संसार का नहीं बनना'* । गलत रास्तों को अनुसरण न करें, या उसमें सम्मिलित करने के लिए अपने सिद्धांतों को न बनाएं, या उसे स्वीकार करें जो सही न हो...

''गिरजाघर के सदस्यों को आवश्यकता है कि वे लोगों के द्वारा प्रभावित होने की बजाय अपनी अच्छाई के द्वारा लोगों को प्रभावित करें । पाप और बुराई को रोकने के लिए बिना किसी कोशिश को करने की बजाय हमें पाप और बुराई की लगातार बढ़त को रोकने के लिए काम करना चाहिए । उसे अनदेखा और उसकी उपेक्षा करने की बजाय परेशानी को हल करने के लिए हममें से प्रत्येक को सहायता की आवश्यकता है'' (Conference Report में, अप्रैल 1989, 100...101; या *Ensign,* मई 1989, 80) ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. सदोम और अमोरा के पाप

जैसा कि उत्पत्ति 19:4...11 और उत्पत्ति 19:9...15 के जोसफ स्मिथ अनुवाद में सुझावित किया गया है, सदोम और अमोरा के लोग भयंकर यौन पापों में घिरे हुए थे । परन्तु ये पाप भयानक होते हुए भी, केवल उन्हों के कारण नगरों को नष्ट नहीं किया गया था । कक्षा के एक सदस्य से यहेजकेल 16:49...50 को जोर से पढ़ने दें, और कक्षा के सदस्यों के साथ अन्य पापों पर चर्चा करें जिसमें सदोम और अमोरा के लोग अपराधी थे । कक्षा के सदस्यों को समझने में सहायता करें कि हम उन पापों के द्वारा नष्ट हो सकते हैं जो देखने में छोटा हो या फिर बड़े पापों के द्वारा भी ।

2. उदाहरण द्वारा मार्गदर्शन करना

एक तरह के उदाहरण के रूप में अन्तिम दिनों के सन्त, संसार के द्वारा प्रभावित होने की बजाय अच्छे के लिए एक प्रभाव हो सकते हैं, आप पुराने नियम के विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) के एक सात मिनट का खण्ड ''उदाहरण द्वारा मार्गदर्शन करना'' दिखाना चाहें । इस खण्ड में, एक युवा स्त्री का धार्मिक उदाहरण एक दोस्त को यीशु मसीह के सुसमाचार के लिए धर्मपरिवर्तित करता है ।

''परमेश्वर स्वयं एक मेमने को उपलब्ध कराएगा''

पाठ
9

इब्राहीम 1; उत्पत्ति 15...17; 21...22

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की, स्वर्गीय पिता का उसके पुत्र के बलिदान को अच्छी तरह से समझने में सहायता करना जब वे इसहाक के बलिदान की इब्राहीम की इच्छा को सीखते हैं ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें । सूचनाः उत्पत्ति 17 प्रभु द्वारा अब्राम नाम को बदलकर इब्राहीम और सारै नाम को बदलकर सारा करने के बारे में बताता है (देखें आयत 5, 15) । इस पूरे पाठ में *इब्राहीम* और *सारा* नाम का उपयोग किया गया है ।

   क. इब्राहीम 1:1, 5...20 । एक युवा पुरूष के नाते, इब्राहीम फिरौन के झुठे याजकों के द्वारा सताया गया था । उन्होंने उसका बलिदान करने की कोशिश की, परन्तु वह यहोवा द्वारा बचाया गया ।

   ख. उत्पत्ति 15...17; 21 । बाद में उसके जीवन में, इब्राहीम इच्छा करता है और उससे वंश की प्रतिज्ञा की जाती है (15:1...6) । सारा हाजिरा को इब्राहीम की पत्नी के रूप में उसे देती है; हाजिरा गर्भवती होती है और एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम इश्माएल रखा जाता है (16:1...16) । परमेश्वर फिर से इब्राहीम के साथ अपनी वाचा को बताता है, प्रतिज्ञा करते हुए कि वह कई जातियों का मूलपिता होगा (17:1...14; देखें पाठ 7) । इसहाक का जन्म, जिसके द्वारा वाचा जारी रह सकती है, की उद्घोषणा (17:16...22) में की गई है । सारा गर्भवती होती है और एक पुत्र को जन्म देती है जिसका नाम इसहाक रखा जाता है (21:1...12) ।

   ग. उत्पत्ति 22 । परमेश्वर इब्राहीम को इसहाक का बलिदान करने के लिए कहता है (22:1...2) । इब्राहीम इसहाक का बलिदान करने की तैयारी करता है, परन्तु उसकी जगह बलिदान करने के लिए परमेश्वर एक मेढ़े को प्रदान करता है (22:3...19) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः इब्रानियों 11:8...19; याकूब 2:21...23; याकूब 4:5; सिद्धांत और अनुबंध 132:34...36 ।

3. यदि आप दूसरे ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, इस पाठ को प्रस्तुत करने के कम से कम एक सप्ताह पहले कक्षा के कुछ सदस्यों से एक समय के बारे में बताने की तैयारी के लिए कहें जब वे बलिदान करने की इच्छा के कारण आशीषित हुए थे ।

4. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहेंः

   ख. चित्र-एक स्वर्गदूत इब्राहीम को बचाता हुआ (62607; सुसमाचार कला चित्र किट 104) और बलिदान करने के लिए इब्राहीम इसहाक को ले जाते हुए (62054; सुसमाचार कला चित्र किट 105) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. कक्षा के सदस्यों से एक व्यक्ति के बारे में सोचने के लिए कहें जिससे वे बहुत प्रेम करता हैं या एक संपत्ति के बारे में जिसका मूल्य उनके लिए बहुत है ।

   - आप कैसा महसूस करेंगे यदि परमेश्वर आपसे उस व्यक्ति या संपत्ति का बलिदान करने के लिए कहता है ? आप क्या करेंगे ?

2. कक्षा के कुछ सदस्यों को एक समय के बारे में बताने के लिए आमंत्रित करें जब वे बलिदान करने की इच्छा के कारण आशीषित हुए थे ।

इन गतिविधियों में से किसी को भी करने के पश्चात, समझाएं कि परमेश्वर ने इब्राहीम को उसके पुत्र इसहाक का बलिदान करने की आज्ञा दी थी जिससे इब्राहीम बहुत प्रेम करता था । यद्यपि इस बलिदान को करने के लिए आखिरकार इब्राहीम की आवश्यकता नहीं थी, इसे करने की उसकी इच्छा ''धार्मिकता के लिए जिम्मेदार'' थी (सि. और अनु. 132:36) । इब्राहीम की धार्मिकता के कारण, वह और उसके वंशज बहुतायत में आशीषित हुए थे ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. फिरौन के झुठे याजकों के द्वारा इब्राहीम का बलिदान लगभग हो ही गया था

इब्राहीम 1:1, 5...20 की शिक्षा दें और चर्चा करें । इस पाठ का कुछ हिस्सा, इब्राहीम के लिए इसहाक के बलिदान की परमेश्वर की आज्ञा पर प्रकाश डालता है । इस आज्ञा की सार्थकता और इब्राहीम के विश्वास की गहराई को समझने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करने के लिए, इब्राहीम के अनुभव के एक संक्षिप्त चर्चा के साथ पाठ का आरंभ होता है जब एक युवा लड़के के रूप में, फिरौन के झुठे याजकों के द्वारा उसका बलिदान लगभग हो ही गया था ।

- कसदियों में कौन से प्रतिबंध थे जब इब्राहीम वहाँ पर रहता था ? (देखें इब्राहीम 1:1, 5...8) । फिरौन के झुठे याजकों ने इब्राहीम के साथ क्या करने की कोशिश की थी ? (देखें इब्राहीम 1:7, 12) । इन झुठे याजकों से इब्राहीम को कैसे बचाया गया था ? (देखें इब्राहीम 1:15...16, 20) ।
- झुठे याजकों की बेदी के इब्राहीम का अनुभव, भविष्य की परिक्षाओं की तैयारी में उसकी कैसे सहायता कर सकता था ? भविष्य की कठिनाइयों की तैयारी में हमारी परिक्षाएं कैसे हमारी सहायता कर सकती हैं ?

2. हाजिरा और सारा के द्वारा इब्राहीम के बच्चे होते हैं।

उत्पत्ति 15...17; 21 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- प्रभु, बच्चों से संबंधित इब्राहीम से कौन सी प्रतिज्ञा करता है ? (देखें उत्पत्ति 15:1...6) । सारा ने हाजिरा को इब्राहीम की पत्नी के रूप में उसे क्यों दिया ? (देखें उत्पत्ति 16:1...3; सि. और अनु. 132:34...35) । प्रभु हाजिरा से कौन सी प्रतिज्ञा करता है ? (देखें उत्पत्ति 16:10...11) ।
- उत्पत्ति 17:15...16, 19 और 21 में परमेश्वर ने इब्राहीम के लिए क्या प्रकट किया ? इब्राहीम ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई ? (देखें उत्पत्ति 17:17 । इब्राहीम ''हँसा'' जब उसने सुना कि सारा एक पुत्र जनेगी, इसका वैकल्पिक अनुवाद इब्रानी शब्द ''आनंदित'' है । बाइबिल का जोसफ स्मिथ अनुवाद कहता है कि इस समाचार पर इब्राहीम ''आनंदित'' हुआ) ।
- प्रकटीकरण कि इब्राहीम और सारा को एक पुत्र होगा, हमें इस बारे में कैसे सीखाता है कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है ? (परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा, यद्यपि यह आवश्यक नहीं कि उसी तरीके में और उसी समय जैसा कि हम आशा करते हैं । संकेत करें कि उन प्रतिज्ञा की गई आशीषों को देने के पहले इब्राहीम और धर्मशास्त्र में कई अन्यों को विश्वासी रहते हुए कई वर्षों तक इंतजार करना पड़ा था) ।
- प्रतिज्ञाएं जो परमेश्वर ने इसहाक के संबंध में की थीं, उससे भिन्न कैसे है जो इश्माएल के संबंध में की गई थीं ? (देखें उत्पत्ति 17:19...21) ।

3. परमेश्वर इब्राहीम को इसहाक का बलिदान करने की आज्ञा देता है।

उत्पत्ति 22 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- परमेश्वर ने इब्राहीम से इसहाक का बलिदान करने के लिए क्यों कहा था ? (देखें उत्पत्ति 22:1) । इब्राहीम के लिए यह एक कठिन परीक्षा क्यों हो सकती थी ? (इसहाक केवल उसका पुत्र ही नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किया था कि इब्राहीम की वाचा इसहाक और उसके वंशजों के द्वारा जारी रहेगी (उत्पत्ति 17:19) । दूसरा कारण जिससे यह कठिन हो सकता था वह यह है कि एक युवा पुरूष के नाते, इब्राहीम स्वयं फिरौन के झुठे याजकों के द्वारा लगभग बलिदान हो चुका था (इब्राहीम 1:1, 5...20) ।
- इसहाक के बलिदान के लिए परमेश्वर की आज्ञा के प्रति इब्राहीम ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (देखें उत्पत्ति 22:2...3) । विश्वास और आज्ञाकारिता के बारे में हम इब्राहीम से क्या सीख सकते हैं ? (देखें इब्रानियों 11:17...19; याकूब 2:21...23) ।
- इस परिस्थिति के लिए इसहाक ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (देखें उत्पत्ति 22:3...10 । इसहाक को बलिदान करने के इब्राहीम की इच्छा के विरोध में यहाँ पर कोई भी चिन्ह नहीं था) ।

  एल्डर डैलिन एच. ओक्स ने समझाया थाः ''जब वे वर्णित किए गए स्थान पर पहुँचे, इब्राहीम ने एक वेदी बनाई और उसके ऊपर लकड़ियों को रखा । फिर, बाइबिल कहती है, 'इब्राहीम ने...अपने पुत्र इसहाक को बाँधा, और उसे लकड़ियों पर वेदी के ऊपर रख दिया' (उत्पत्ति 22:9) । जब इब्राहीम ने इतना अद्‌भूत काम किया तब इसहाक ने क्या सोचा ? बाइबिल बताती है कि ना ही उसने संघर्ष किया और ना ही विरोध । इसहाक के मौन को, अपने पिता में भरोसे और आज्ञाकारिता के रूप में समझाया जा सकता है'' (Conference Report में, अक्टू. 1992, 51; या *Ensign,* नव. 1992, 37) ।

- इसहाक का बलिदान करने की इब्राहीम की इच्छा बिल्कुल उसी तरह थी जिस तरह कि अपने इकलौते पुत्र का बलिदान करने की स्वर्गीय पिता की इच्छा थी । (याकूब 4:5; उत्पत्ति 22:8, 13) । इब्राहीम और स्वर्गीय पिता के अनुभव के बीच कौन सी कुछ समानताएं हैं ? सबसे बड़ा अन्तर कौन सा है ?

- किन तरीकों में हमारी तुलना इसहाक के साथ हो सकती है ? यदि इसहाक हमारा प्रतिनिधित्व करता है, झाड़ी में मेढ़ा किसका प्रतिनिधित्व करता है ? ये तुलनाएं आपके लिए अपने पुत्र का बलिदान करने में स्वर्गीय पिता के प्रेम को अच्छी तरह समझने में कैसे सहायता करती हैं ?

  एल्डर डैलिन एच. ओक्स ने कहा थाः ''यह कहानी...इसहाक को बचाने में और उसके स्थान पर एक कुछ प्रदान कराने में परमेश्वर की अच्छाई को व्यक्त करता है ताकि उसे मरना न पड़े । हमारे पाप और हमारी नश्वरता के कारण, इसहाक की तरह हमें मृत्यु के लिए दोषी ठहराया गया है । जब सारी अन्य आशाएं जा चुकी हों, हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर के मेमने को प्रदान करता है, और हम उसके बलिदान के द्वारा बचाये जाते हैं'' (Conference Report में, अक्टू. 1992, 51; या *Ensign,* नव. 1992, 37) ।

- इस परीक्षा के द्वारा इब्राहीम ने क्या सिद्ध किया था ? (देखें उत्पत्ति 22:11...12) । कक्षा के सदस्यों को अन्य परिस्थितियों, धर्मशास्त्र या व्यक्तिगत तौर पर, के बारे में बताने के लिए आमंत्रित करें, जहाँ प्रत्येक की परीक्षा ली गई हो उनके विश्वासपूर्णता को सिद्ध करने के एक अवसर के रूप में । कक्षा के सदस्यों से प्रसन्नता और आशीषों के बारे में भी बताने के लिए कहें जो विश्वासपूर्ण सिद्ध होने के द्वारा आई हों ।

- उत्पत्ति 22:16 में इसहाक को इब्राहीम का इकलौता पुत्र क्यों बताया गया है ? (इसहाक वह पुत्र था जिसके द्वारा वाचा जारी रह सकती थी । यह उद्धरण इसहाक और हमारे उद्धारकर्ता, स्वर्गीय पिता के इकलौता पुत्र के बीच की समानता पर जोर देता है) । इब्राहीम के लिए उसकी विश्वसनीयता के कारण कौन सी आशीषें निश्चित थीं ? (देखें उत्पत्ति 22:15...18) । इब्राहीम के वाचा के द्वारा हमारे प्रति कौन सी आशीषें की गई हैं ? (देखें पाठ 7) । इब्राहीम के वाचा के उत्तराधिकारियों के रूप में हमारी क्या जिम्मेदारियाँ हैं ?

निष्कर्ष

इब्राहीम द्वारा प्रदान की गई विश्वास और आज्ञाकारिता के उदाहरण के लिए अपनी प्रशंसा को व्यक्त करें । गवाही दें कि इसहाक का बलिदान करने की इब्राहीम की इच्छा बिल्कुल उसी तरह थी जिस तरह कि अपने इकलौते पुत्र का बलिदान करने की स्वर्गीय पिता की इच्छा थी । कक्षा के सदस्यों को पश्चाताप के बारे में और उस महान प्रेम के अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें जो कि स्वर्गीय पिता और यीशु मसीह के पास हमारे लिए है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. कठिनाइयों से सीखना

- अध्यक्ष ह्यूग बी. ब्राउन ने कहा था कि परमेश्वर ने इब्राहीम को इसहाक का बलिदान करने के लिए कहा था क्योंकि ''इब्राहीम को, इब्राहीम के बारे में कुछ सीखने की आवश्यकता थी'' (Truman G. Madsen में, *The Highest in Us,* (1978), 49) । इस अनुभव से इब्राहीम ने स्वयं के बारे में क्या सीखा होगा ? आपने अपनी कठिनाइयों से क्या सीखा है ?

- प्रभु ने प्रकट किया था कि हमें कोशिश करने वाला बनना होगा ''इब्राहीम की तरह'' (सि. और अनु. 101:4) । आपके विचार से यह महत्वपूर्ण क्यों है ? (देखें सि. और अनु. 101:5, 35...38; 122:5...7) । इस समय हम बलिदानों के लिए स्वयं को कैसे तैयार कर सकते हैं जिसे प्रभु हमसे शायद करने के लिए कह सकता है ?

2. परमेश्वर के साथ एक मजबूत संबंध बनाना

इब्राहीम 1 और 2, इब्राहीम और उसके पिता के परमेश्वर के साथ संबंध पर वर्णन करता है । कठिनाई के समय में इब्राहीम का पिता परमेश्वर को खोजता था, परन्तु जब उसके जीवन में सब कुछ ठीक चल रहा था तब वह मूर्ति पूजक बन गया था (इब्राहीम 1:5; 30; 2:5) । दूसरी तरफ इब्राहीम, सदैव परमेश्वर की चाह में रहता था (इब्राहीम 1:2, 4; 2:12) ।

- हम परमेश्वर को कैसे खोज सकते हैं, उसके साथ अपने संबंध को हमेशा के लिए बनाकर या आवश्यकतानुसार बनाकर ? हम परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण को अधिक संगतपूर्ण कैसे बना सकते हैं, ताकि हम उसे शान्ति और सांत्वना के समय और परीक्षा के समय भी खोज सकें ।

पाठ
10

जन्मसिद्ध आशीषें; अनुबंध में विवाह

उत्पत्ति 24...29

उद्देश्य

अपने जन्मसिद्ध आशीषों और अनन्त विवाह को योग्यता से जीने में कक्षा के सदस्यों की इच्छाओं को मजबूत करना है ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. उत्पत्ति 24 । इब्राहीम, इसहाक के लिए एक योग्य पत्नी के चुनाव के द्वारा अनुबंध में विवाह की महत्वपूर्णता पर जोर देता है (अनन्त विवाह) ।

   ख. उत्पत्ति 25:20...34 । रिबका अपने बिना जन्मे जुड़वा पुत्रों के बारे में एक प्रकटीकरण को प्राप्त करती है (25:22...23) । जब ये पुत्र बड़े हो जाते हैं, एसाव अपने पहिलौठे के अधिकार को याकूब को बेचता है (25:29...34) ।

   ग. उत्पत्ति 26...29 । इसहाक और उसके वंशजों से इब्राहीम के वाचा की आशीषों की प्रतिज्ञा की जाती है (26:1...5) । एसाव वाचा के बाहर जाकर विवाह करता है और माता-पिता के लिए खेद लाता है (26:34...35) । इसहाक लोगों और जातियों पर राज करने के लिए याकूब को आशीष देता है (27:1...46) । इसहाक याकूब के लिए इब्राहीम के वाचा की आशीषों की घोषणा करता है और उसे एक योग्य पत्नी की तलाश में भेज देता है (28:1...10) । याकूब लिआ और राहेल से अनुबंध में विवाह करता है (29:1...30) ।

2. यदि आप पहली ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, एक छोटा कटोरा या फुले हुए लावा का एक थैला या फल का एक टुकड़ा लाएं ।

3. यदि आप किशोरों या छोटे वयस्कों को शिक्षा देते हैं जो अकेले हैं, दूसरे अतिरिक्त शिक्षा सुझाव, ''सही विवाह का आरंभ सही डेटिंग से होता है'' का उपयोग करना चुनें ।

4. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहें:

   क. ''अनुबंध में विवाह'', पुराने नियम विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) से एक चार मिनट का खण्ड ।
   ग. चित्र, कुएं पर रिबका (62160) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. एक छोटा कटोरा या पोप कॉर्न थैला या फल का एक टुकड़ा दिखाएं, तब कक्षा के सदस्यों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- यदि अभी तुरन्त ही आपको एक कटोरे या पोप कॉर्न (या फल के एक टुकड़े) के बीच चुनाव करना पड़े या बाद में प्रतिज्ञा की गई बहुत सारे पोप कॉर्न (या फलों को) चुनना पड़े, आपके दाना (या फल) के रोपण, जुताई, और कटनी के पश्चात, आप किसका चुनाव करेंगे ? क्यों ?

  समझाएं कि अक्सर हम सामना करते हैं उन दो चीजों के बीच चुनाव का जिन्हें हम अभी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं या जिनके लिए हमें काम और इंतजार करना होगा । कभी कभी हम उसे चुनते हैं जो तुरन्त संतो जनक होगा (आनंद या संतोष), यहाँ तक कि यदि हम काम और इंतजार करना चुनते हैं तो अंत में वह भी हमें महान आशीष प्रदान करता है । पोप कॉर्न या (फल) को अभी या बाद में चुनना एक महत्वपूर्ण निर्णय नहीं है, फिर भी, हम जीवन में अन्य चुनावों का सामना करते हैं...जैसे कि किससे और कहाँ विवाह करने के बारे में निर्णय...जहाँ तुरन्त तुष्टीकरण का चुनाव, हमारे प्रति महिमापूर्ण और अनन्त आशीषों को इन्कार करेगा ।

2. कक्षा के सदस्यों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- क्या कभी भी आपने किसी चीज को प्राप्त करने के लिए पैसे या समय खर्च किया है, इस चीज का पता करने के लिए कि क्या जिस पर आपने खर्च किया है वह इसके योग्य था ?

कक्षा के कुछ सदस्यों को उन समयों के बारे में बताने के लिए आमंत्रित करें जब उन्होंने किसी चीज के लिए अधिक भुगतान किया हो जिसे उन्होंने पाना चाहा हो (आप अपने स्वयं का एक अनुभव बताना चाहें) ।

समझाएं कि वही चीज आत्मिकता में भी हो सकती है । अधार्मिक चुनावों को करने के द्वारा, हम अनन्त आशीषों को उन चीजों के बदले खरीद सकते हैं जोकि बहुत ही कम कीमत की हैं । धार्मिकता से जीन के द्वारा, फिर भी, हम सारी आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं जिसे स्वर्गीय पिता ने हमारे लिए बनाया है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. अनुबंध में विवाह के महत्व पर इब्राहीम जोर देता है (अनन्त विवाह)।

उत्पत्ति 24 की शिक्षा दें और चर्चा करें । जब आप अनन्त विवाह के महत्व पर चर्चा करते हैं, कक्षा के उन सदस्यों के अहसासों का ध्यान रखें जिन्होंने मंदिर में विवाह नहीं किया या जिनके माता-पिता का विवाह मंदिर में न हुआ हो ।

- इब्राहीम इतना आग्रही क्यों था कि इसहाक एक ऐसी स्त्री से विवाह करे जो कि कनाननियों की बजाय उसकी सजातीय की हो, जिसकी धरती पर इब्राहीम और इसहाक रहे थे ? (इब्राहीम चाहता था कि इसहाक किसी ऐसे से विवाह करे जो कि उसके विश्वास की हो ताकि वह अनुबंध में विवाह कर सके । यह महत्वपूर्ण था ताकि इब्राहीम के वाचा की आशीषों को इब्राहीम के वंशजों को दिया जा सके) । यह महत्वपूर्ण क्यों है कि हम अनुबंध में विवाह करें ? (यदि आवश्यक हो, समझाएं कि हमारे दिन में वाक्यांश अनुबंध में विवाह, अनन्त विवाह, और मंदिर में विवाह को अक्सर अदल-बदल कर उपयोग किया जाता है) ।

- कितने समय तक के लिए अनुबंध में विवाह परमेश्वर की एक आज्ञा है ? (यह एक अनन्त धर्मविधि है जो सारे उम्र के लोगों के लिए प्रभु का आदेश है जब पूर्ण सुसमाचार पृथ्वी पर होगा । पृथ्वी पर आदम और हव्वा इस धर्मविधि में प्रवेश करने वाले प्रथम थे) ।

- इब्राहीम ने अपने सेवक को इसहाक के लिए, एक पत्नी खोजने के लिए भेजा (उत्पत्ति 24:4) । इब्राहीम के सेवक के बारे में आपको क्या प्रभावित करता है ? (देखें उत्पत्ति 24 । उत्तर विभिन्न हो सकते हैं, परन्तु सम्मिलित हो सकता है कि वह भरोसे के योग्य, निष्ठावान, प्रार्थना से भरा हुआ, और विश्वासी था । यहाँ तक कि एक लम्बी यात्रा के पश्चात भी, उसने तब तक नहीं खाया जब तक कि इब्राहीम के लिए अपने लक्ष्य को पूरा नहीं कर लिया । 10 दिनों के एक उत्सव के लिए रूकने की बजाय, वह रिबका को लेकर तुरन्त इब्राहीम के पास वापस जाना चाहता था) । इब्राहीम के सेवक से हम क्या सीख सकते हैं जो कि हमारे प्रति दी गई प्रभु की जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से पूरा करने में हमारी सहायता कर सके ?

- कैसे इब्राहीम का सेवक बता सकता है कि रिबका इसहाक के लिए एक अच्छी पत्नी होगी ? (देखें उत्पत्ति 24:15...20, 58) । रिबका दयालु थी और दूसरों के प्रति सेवा की इच्छुक थी, जैसा कि इब्राहीम के सेवक और उसके ऊँटों के लिए पानी निकालने के द्वारा दिखाया गया है । आप संकेत करना चाहें कि एक दिन में एक ऊँट 114 लीटर पानी पी सकता है, इसलिए रिबका ने 10 ऊँटों को संतुष्ट करने के लिए एक भारी मात्रा में पानी निकाला होगा । रिबका इसहाक से विवाह करने के लिए अपने परिवार को छोड़ने की इच्छुक भी थी, शायद इसलिए क्योंकि उसे बहुत विश्वास था और जानती थी कि यह प्रभु की इच्छा थी कि वह इसहाक से विवाह करे) ।

- एक पति या पत्नी में आप किन गुणों को चाहते हैं ? बाहरी दिखावे से अधिक आत्मिक गुण क्यों महत्वपूर्ण हैं ? हममें से प्रत्येक को किन गुणों का विकास करना चाहिए (हम चाहे विवाहित हों या ना हों) जो हमें एक अच्छा पति या पत्नी बनाएगा ?

- कब एक व्यक्ति को अनन्त विवाह के लिए तैयारी को आरंभ कर देना चाहिए ? क्या कुछ चीजें हैं जिसकी तैयारी बच्चे और युवा अनन्त विवाह के लिए कर सकते हैं ? किस तरह से माता-पिता और अन्य वयस्क बच्चे और युवाओं की मंदिर में विवाह की तैयारी में सहायता कर सकते हैं ?

  अध्यक्ष हावर्ड डबल्यु. हंटर ने कहा थाः ''चलो योजना बनाएं और अपने बच्चों को शिक्षा दें और उनसे प्रभु के घर में विवाह करने की याचना करें । चलो पहले से भी अधिक उत्साह के साथ अधिक सुनिश्चित करें कि यह महत्व रखता है कि आप कहाँ विवाह करें और किस अधिकारी के द्वारा आपको पति और पत्नी पुकारा जाए'' (Conference Report में, अक्टू. 1994, 118; या *Ensign,* नव. 1994, 88) ।

2. एसाव अपने पहिलौठे का अधिकार याकूब को बेचता है।

उत्पत्ति 25:20...34 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- अपने जुड़वा बच्चों के बारे में जिन्होंने अभी जन्म भी नहीं लिया था, रिबका ने किस प्रकार का प्रकटीकरण को प्राप्त किया था ? (देखें उत्पत्ति 25:22...23) । प्रभु का वक्तव्य कि ''बड़ा बेटा छोटे के अधिन होगा'', क्यों एक असाधारण प्रकटीकरण है ? (पहिलौठे का अधिकार अक्सर पिता के बाद बड़े पुत्र के पास जाता था । इस पहिलौठे के अधिकार को प्राप्त करने का मतलब यह होता था कि बड़ा पुत्र परिवार की संपत्ति में से दुगुने का उत्तराधिकारी होगा, और इसके बदले में वह परिवार का संचालन करेगा और अपने पिता की मृत्यु के पश्चात अपनी माता और बहनों की देखभाल करेगा । प्रभु के प्रकटीकरण में रिबका के लिए वक्तव्य कि ''बड़ा बेटा छोटे के अधिन होगा'', का मतलब था कि इस परिस्थिति में छोटा पुत्र पहिलौठे के अधिकार को प्राप्त करेगा और उसके वंशज अनुबंधित लोग होंगे) ।

- बड़ा पुत्र एसाव, अनुबंध के लिए उसके पहिलौठे के अधिकार के बारे में कैसा महसूस करता है जोकि उसके दादा इब्राहीम और प्रभु के बीच बनाया गया था ? (देखें उत्पत्ति 25:29...34 । पहिलौठे के अधिकार को इच्छापूर्वक देना, उसके अल्पकालिक शारीरिक भूख को संतुष्ट करना यह व्यक्त करता है कि उसने पहिलौठे के अधिकार को छोटा समझा था) ।

- गिरजाघर का अध्यक्ष होने पर, हममें से प्रत्येक हमारे स्वर्गीय माता-पिता से एक आत्मिक जन्मसिद्ध अधिकार के उत्तराधिकारी हैं । हमारे जन्मसिद्ध अधिकार में किन आशीषों को सम्मिलित किया गया है ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है पौरोहित्य, मंदिर की आशीषें, धर्मविधियाँ, प्रकटीकरण, और उत्कर्ष के लिए क्षमता) ।

- हम जहाँ विवाह करते हैं वह हमारे जन्मसिद्ध की आशीषों को प्राप्त करने की हमारी योग्यता को कैसे प्रभावित करता है ? (हम इब्राहीम के वाचा के हिस्से में प्रवेश करते हैं जोकि मंदिर इंडोवमेंट के अनुबंधों और अनन्त विवाह को बनाने और रखने के द्वारा उत्कर्ष और अनन्त बढ़त के लिए उपयुक्त है) ।

- हमारा शब्द और कार्य कैसे व्यक्त करता है कि हमें अपने जन्मसिद्ध अधिकार को दिया गया है ? किस तरह से हममें से कुछ एसाव के समान चीजों का चुनाव करने में गलतियाँ करते हैं जोकि अनन्त मूल्य की चीजों की बजाय तुरन्त संतुष्टिकरण होता है ?

- अनुबंध के उत्तराधिकारी को निर्धारित करने में, प्रभु ने इसहाक को उसके बड़े भाई इश्माएल (गलतियों 4:22...23), याकूब को उसके बड़े भाई एसाव, यूसुफ को उसके बड़े भाई रूबेन (1 इतिहास 5:1...2), और एप्रैम को उसके बड़े भाई मनसा (उत्पत्ति 48:17...20) के ऊपर चुना । यह इसके बारे में क्या सुझाव देता है कि हम कैसे परमेश्वर की बुलाहटों और आशीषों के प्रति योग्य बनते हैं ?

3. याकूब लिआ और राहेल से अनुबंध में विवाह करता है, और उसके द्वारा इब्राहीम की वाचा जारी रहती है।

उत्पत्ति 26...29 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- एसाव का पत्नियों का चुनाव उसकी प्राथमिकताओं के बारे में क्या बताता है ? (देखें उत्पत्ति 26:34...35; 28:6...9) । हम याकूब से अनुबंध में विवाह करने की उसकी मेहनत के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (देखें उत्पत्ति 28:1...5; 29:1...28 । एक चीज हम सीख सकते हैं कि अनुबंध में विवाह करना याकूब के लिए बहुत महत्वपूर्ण था । विवाह के योग्य एक विश्वासी स्त्री को खोजने के लिए उसने एक लम्बी यात्री की थी । राहेल से विवाह करने के सात वर्ष पहले तक उसने लबान के लिए काम किया था और उसके पश्चात भी काम करना जारी रखा था) । हम कैसे व्यक्त कर सकते हैं कि अनुबंध में विवाह करना हमारे लिए महत्वपूर्ण है ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने एक परिवार के बारे में बताया था जो ऑस्ट्रेलिया में गिरजाघर से जुड़े थे और फिर अपनी सारी संपत्तियों को बेच दिया था ताकि वे एक परिवार के रूप में मुहरबंद होने के लिए न्युजिलैंड की यात्रा कर सकें । इस परिवार के पिता ने कहा थाः ''हम (मंदिर) में आने का खर्च नहीं उठा सकते थे । हमारे सांसारिक संपत्तियों में एक पुरानी मोटर गाड़ी, हमारी सज्जा-सामग्रियाँ, और हमारे बर्तन थे । मैंने अपने परिवार स कहा था, 'हम जाने का खर्च *नहीं* उठा सकते हैं । यदि प्रभु मुझे बल देगा, मैं काम कर सकता हूं और दूसरी गाड़ी और सज्जा-सामग्रियों और बर्तनों के लिए पर्याप्त धन कमा सकता हूं, परन्तु यदि मैं अपने इन प्यारों को खो दूँगा, अवश्य ही मैं दोनों, जीवन और अनन्त जीवन में गरीब हो जाऊँगा''' (*Be Thou an Example* (1981), 138) ।

- दो लोगों के मंदिर में विवाह करने के पश्चात, उन्हें क्या करना होगा यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनका विवाह एक सच्चा अनन्त विवाह है ? एक पति और पत्नी वैवाहिक संबंध को कैसे बनाकर रख सकते हैं और उसका विकास कर सकते हैं ताकि मंदिर में प्रतिज्ञा किए गए अनुबंध और आशीषें पूरी होंगी ? (आप कक्षा के कुछ सदस्यों को किसी चीज के एक उदाहरण को बाँटने के लिए आमंत्रित करना चाहें जिसे उनके पति या पत्नी या माता-पिता ने विवाह के लिए एक सिलेस्टियल आत्मा को बुलाने में किया हो) ।

निष्कर्ष

अनुबंध में विवाह करने और जन्मसिद्ध आशीषों के योग्य जीने की महत्वपूर्णता पर जोर दें । कक्षा के सदस्यों को अस्थाई आनंद और संतुष्टिकरण के लिए सही चुनावों को करने और अनन्त आशीषों को न खरीदने की चुनौती दें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. रिबका को इसहाक की पत्नी के रूप में चुना गया।

अलग से कागज के टुकड़ों पर उत्पत्ति 24 से निम्नलिखित उद्धरणों में से प्रत्येक को लिखें और कक्षा के प्रत्येक सदस्य को एक या अधिक दें । कक्षा के सदस्यों को खोजने के लिए धर्मशास्त्रों का उपयोग करने दें कि इन वक्तव्यों को किसने कहा है और किन किन आयतों में इन वक्तव्यों को अभिलेखित किया गया है । जब कक्षा के सदस्य पूरा कर चुके हों, वक्तव्यों और उसके संदर्भ में जिसके प्रति उन्हें बनाया गया हो, पर चर्चा करें । अनुबंध में विवाह, इब्राहीम के सेवक का विश्वास और निष्ठा, और रिबका के उन गुणों के महत्व को संकेत करें जिसके कारण उसने एक अनन्त साथी के लिए एक अच्छे चुनाव को किया था ।

क. ''तू मेरे पुत्र के लिए कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूं, किसी को न ले आएगा ।''
ख. ''तू मेरे देश में मेरी ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र के लिए एक पत्नी ले आएगा ।''
ग. ''स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा...वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा ।''
घ. ''इसी रीति मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करूणा की है ।''
च. ''मैं तेरे ऊँटों के लिए भी तब तक पानी भर लाऊँगी, जब तक वे पी न चुकें ।''
छ. ''मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं ।''
ज. ''धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, जिसने ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाई बन्धुओं के घर पर पहुँचा दिया है ।''
झ. ''और वह मुझसे कहे, पी ले और मैं तेरे ऊँटों के पीने के लिए भी पानी भर दूँगीः वह वही स्त्री हो जिसको तूने मेरे स्वामी के पुत्र के लिए ठहराया हो ।''
ट. ''सो अब, यदि तुम मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझसे कहो, और यदि नहीं चाहते हो, तौभी मुझ से कह दो ।''
ठ. ''देख, रिबका तेरे सामने है, उसको ले जा, और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए ।''
ड. ''हाँ मैं जाऊँगी ।''
ढ. ''हमारी बहिन, तू हजारों लाखों की आदिमाता हो ।''

उत्तरः क-इब्राहीम (अ. 3); ख-इब्राहीम (अ. 4); ग-इब्राहीम (अ. 7); घ-सेवक (अ. 14); च-रिबका (अ. 19); छ-पत्नी (अ. 24); ज-सेवक (अ. 27); झ-सेवक (अ. 44); ट-सेवक (अ. 49); ठ-लबान और बतूएल (अ. 51); ड-रिबका (अ. 58); ढ-रिबका का परिवार (अ. 60) ।

2. ''सही विवाह सही डेटिंग के साथ आरंभ होता है''।

- दोनों इसहाक और याकूब को उनके पिताओं के द्वारा उनके स्वयं के विश्वास की स्त्रियों से विवाह करने का निर्देश मिला था । एसाव अपने माता-पिता के प्रति दुःख लाया, उन पत्नियों से विवाह करने के द्वारा जो इब्राहीम के परमेश्वर में विश्वास नहीं करती थीं । एक व्यक्ति से विवाह करना जोकि हमारे स्वयं के विश्वास का हो, क्यों महत्वपूर्ण है ?

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने इस सुझाव को दिया थाः ''पौलुस ने कुरिन्थियों से कहा था, 'अविश्वासियों के साथ आसमान जूए में न जुतो...' शायद पौलुस चाहता था कि वे देखें कि धार्मिक विभिन्नताएं मूल विभिन्नताएं हैं । विवाद के अन्य अतिरिक्त क्षेत्रों पर धार्मिक विभिन्नताएं लागू होती हैं । गिरजाघर के प्रति निष्ठा और परिवार के प्रति निष्ठा एक दूसरे के विपरित हो सकते हैं । अक्सर बच्चे अपने जीवनें में कुण्ठा का अनुभव करते हैं । असदस्य उतने ही बुद्धिमान हो सकते हैं, अच्छी तरह से प्रशिक्षित और आकर्षक, और उसका व्यक्तित्व बहुत मनोहर हो सकता है, परन्तु बिना सामान्य विश्वास के, विवाह के सामने कठिनाइयाँ उपस्थित होती हैं । कुछ परिस्थितियों में यह सच नहीं होता परन्तु साधारण रूप से परिणाम दुःखद ही होता है'' (The Miracle of Forgiveness (1969), 240) ।

- आप सुनिश्चित करने में सहायता के लिए क्या कर सकते हैं कि जिस व्यक्ति से आप विवाह करें उसके साथ आप एक अनन्त विवाह कर सकें ? आपके मौजूदा सहचारी और दोस्त किस तरह से आपके बाकी के जीवन और अनन्तता पर प्रभाव डालेंगे ?

  अध्यक्ष किम्बल जारी रहेः ''अच्छी तरह से, सही विवाह सही और ठीक-ठाक सहचारिता के साथ आरंभ होता है । साधारणतः एक व्यक्ति उनमें से किसी एक के साथ विवाह करता है जिनके साथ वह...मेल-जोल रखता है । इसलिए, यह चेतावनी बहुत

मजबूती के साथ आती है । असदस्यों के साथ डेटिंग पर जाने का खतरा ना मोल लें, या उन सदस्यों के साथ जो अप्रशिक्षित या अविश्वासी हैं । एक लड़की कह सकती है, ओ, मेरा इरादा इस व्यक्ति से विवाह करने का नहीं था । यह सिर्फ एक साथ बाहर घुमना या मौज करना था । परन्तु किसी को भी प्रेम में पड़ने का खतरा मोल नहीं लेना चाहिए जो कभी भी सुसमाचार को स्वीकार नहीं करेगा या करेगी । सच, गिरजाघर के सदस्यों के साथ विवाह करने के पश्चात एक छोटी प्रतिशत में लोगों ने बपतिस्मा लिया है...वे हमारे आशीषित अल्पसंख्यक हैं...परन्तु अधिकांश लोग गिरजाघर से नहीं जुड़े...कई लोगों के विवाह मनमुटाव, कुण्ठा और तलाक के परिणाम होते हैं'' (*The Miracle of Forgiveness,* 241...42).

3. परमेश्वर स्त्रियों को और यहाँ तक कि पुरूषों को प्रकटीकरण देता है

प्रकटीकरण के धर्मशास्त्र के लेखा अधिकतर परमेश्वर का उसके पौरोहित्य मार्गदर्शकों के साथ क्रिया को बताते हैं, जो पुरूष थे । फिर भी, परमेश्वर द्वारा एक स्त्री को दिए गए प्रकटीकरण का एक लेखा उत्पत्ति 25:22...23 में पाया जाता है ।

रिबका के प्रार्थना से संबंधित, एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा थाः ''क्या अब मैं हमारे सामान्य पूर्वज, रिबका को, एक उदाहरण के रूप में ला सकता हूं कि आज गिरजाघर में उसकी बेटियाँ क्या कर सकती हैं ? ....जब रिबका परेशानी में थी और उसे ईश्वरीय सहायता की आवश्यकता थी तब उसने परमेश्वर से प्रार्थना किया था, और उसके बदले में उसने उससे बात की थी । प्रभु उन स्त्रियों को प्रकटीकरण देता है जो उससे विश्वास में प्रार्थना करती हैं'' (Conference Report में, तहीटी क्षेत्र सम्मेलन 1976, 16) ।

- व्यक्तिगत प्रकटीकरण को प्राप्त करने के लिए पुरूष और स्त्री स्वयं के लिए कैसे सामान्य तैयारी कर सकते हैं ?

4. याकूब का स्वर्ग के तरफ जाते हुए एक सीढ़ी का दिव्यदर्शन

- जब याकूब कनान से अपनी सजातीय की भूमि की यात्रा, एक पत्नी को खोजने के लिए और एसाव के क्रोध से बचने के लिए कर रहा था, वह एक रात के विश्राम के लिए रूक गया और एक असाधारण सपने को देखा (उत्पत्ति 28:10...19) । इस सपने में याकूब ने क्या देखा ? प्रभु ने उससे किन आशीषों की प्रतिज्ञा की थी ? (देखें उत्पत्ति 28:13...15 । ये इब्राहीम के वाचा की आशीषें थीं, इस दिव्यदर्शन में जिनका याकूब के साथ नवीनीकरण किया गया था, देखें पाठ 7) । सीढ़ी किसका प्रतीक है ?

  एल्डर मेरियन जी. रोमनी ने इस सपने के बारे में बतया थाः ''याकूब ने जाना कि अनुबंध जिसे उसने प्रभु के साथ बनाए हैं...सीढ़ी के डंडे हैं जिसपर से उसे स्वयं ही कूदना होगा उन प्रतिज्ञा की गई आशीषों को प्राप्त करने के लिए...आशीषें जो उसे स्वर्ग में प्रवेश करने और प्रभु के साथ रहने का अधिकार देंगी'' ("Temples ... The Gates of Heaven," *Ensign,* मार्च 1971, 16) ।

''इस महान दुष्टता को मैं कैसे कर सकता हूं''

पाठ
11

उत्पत्ति 34; 37...39

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की (1) सभी अनुभवों और परिस्थितियों के साथ मिलकर उनकी भलाई के लिए कैसे काम करना है को सीखने और (2) यौन नैतिकता के प्रभु के स्तर की आज्ञा के प्रति उनके समर्पण को मजबूत करने में सहायता करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. उत्पत्ति 37 । यूसुफ, याकूब का ग्यारहवाँ पुत्र, अपने भाइयों के द्वारा नफरत का पात्र होता है और बंधकों में बेच दिया जाता है ।

   ख. उत्पत्ति 39 । एक बंधक के रूप में यूसुफ की उन्नति होती है परन्तु अनैतिकता के कारण उसपर दोष लगता है और उसे जेल में भेज दिया ताजा है (39:1...20) । जेल का अधिकारी, यूसुफ को अन्य कैदियों की जिम्मेदारी देता है (39:21...23) ।

   ग. उत्पत्ति 34:1...12; 35:22; 38:1...30 । अनैतिकता के पाप के कारण याकूब के परिवार पर नकारात्मक परिणाम हुए...दीना, उसकी बेटी (34:1...12); रूबेन, उसका बड़ा पुत्र (35:22); और यहूदा, उसका दूसरा बेटा (38:1...30) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः उत्पत्ति 34:13...31 ।

3. यदि निम्नलिखित आडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहें:

   क. चित्र, यूसुफ उसके भाइयों के द्वारा बेचा गया था (62565; सुसमाचार कला चित्र किट 109) और यूसुफ पोतिपर की पत्नी के विरूद्ध (62548; सुसमाचार कला चित्र किट 110) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा से कुछ चलचित्रों, टेलिविजन कार्यक्रमों, पुस्तकें या पत्रिकाओं के नाम बताने के लिए कहें जो वर्तमान में आपके क्षेत्र में प्रसिद्ध हों ।

- यौन नैतिकता के कौन से स्तर को इन प्रसिद्ध चलचित्रों, टेलिविजन कार्यक्रमों, पुस्तकों, या पत्रिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है ? ये स्तर प्रभु के स्तर से कैसे भिन्न हैं जैसा कि धर्मशास्त्रों में और गिरजाघर के मार्गदर्शकों के द्वारा सीखाया गया है ?

समझाएं कि संसार के लोगों का नैतिक व्यवहार अक्सर उन नैतिक स्तरों से भिन्न होता है जिन्हें प्रभु ने स्थापित किया है । जबकि समाज के स्तर बदल सकते हैं, प्रभु के स्तर एक समान होते हैं ।

यह पाठ उन व्यक्तियों के अनुभवों पर चर्चा करता है जिसमें से एक ने प्रभु के नैतिकता के स्तर का अनुसरण किया और दूसरे ने नहीं किया । पाठ प्रभु का अनुसरण करने के और न करने के परिणामों पर भी चर्चा करता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यूसुफ बंधकों में अपने भाइयों के द्वारा बेचा गया।

उत्पत्ति 37 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

याकूब ने लिआ और राहेल से विवाह किया था जोकि उसके मामा की बेटियाँ थीं, और उनकी नौकरानियाँ जिल्पा और बिल्हा से भी विवाह किया था । याकूब की पत्नियों ने उसे बारह पुत्र दिए, जिनसे इस्राएल की बारह जातियों का आरंभ हुआ (प्रभु ने याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखा; देखें उत्पत्ति 32:28) । यूसुफ याकूब का ग्यारहवाँ पुत्र था; याकूब और राहेल का बड़ा पुत्र होने के नाते, यूसुफ ने पहिलौठे के अधिकार को प्राप्त किया था जबकि रूबेन, याकूब और लिआ का बड़ा पुत्र, उसे अधार्मिकता के कारण खो दिया था (1 इतिहास 5:1...2) ।

- यूसुफ के भाई उससे ईर्ष्या क्यों रखते थे ? (देखें उत्पत्ति 37:3...8) । आपकी कैसा प्रतिक्रिया होगी जब आपके परिवार के सदस्य आपका अपमान करते हैं या उनके साथ आपसे अच्छा बर्ताव किया जाता है ? पारिवारिक सदस्यों या दोस्तों के प्रति ईर्ष्या या क्रोध की भावनाओं से हम ऊपर कैसे उठ सकते हैं ?

- यूसुफ ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब उसके पिता ने उससे शकेम जाने के लिए और यह देखने के लिए कहा कि उसके भाई क्या कर रहे थे ? (देखें उत्पत्ति 37:13...14 । ध्यान दें कि शकेम लगभग 72 किलो मीटर की दूरी पर था) । यूसुफ ने क्या किया जब वह शकेम में अपने भाइयों को न पा सका ? (देखे उत्पत्ति 37:15...17 । ध्यान दें कि दोतान लगभग और 19 किलो मीटर की दूरी पर था) । इस विवरण से हम युवा यूसुफ के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है कि वह अपने पिता के प्रति आज्ञाकारी था और वह करने में अटल था जो उसके पिता ने कहा था) ।

- यूसुफ के भाइयों ने क्या करने का षडयंत्र बनाया जब यूसुफ उन खेतों में आया जहाँ वे भेड़ों को चरा रहे थे ? (देखें उत्पत्ति 37:12...18) । यूसुफ को छोड़ देने के लिए रूबेन का कारण यहूदा के कारण से अलग कैसे था ? (देखें उत्पत्ति 37:21...22, 26...27) । अंततः भाइयों ने यूसुफ को मारने की बजाय उसके साथ क्या किया ? (देखें उत्पत्ति 37:28, 31...33) ।

2. यूसुफ ''परमेश्वर का अपराधी'' होने से मना करता है।

उत्पत्ति 39 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- प्रभु यूसुफ को एक बंधक के रूप में बेचे जाने के पश्चात कैसे आशीष देता है ? (देखें उत्पत्ति 39:1...4) । पोतीपर जो फिरौन का एक धनी प्रधान था, एक बंधक यूसुफ में भरोसा क्यों रखता है ? (देखें उत्पत्ति 39:5...6)

- यूसुफ ने क्या किया जब पोतीपर की पत्नी ने गलत करने के लिए उसे लालच देने की कोशिश की ? (देखें उत्पत्ति 39:11...12 । संकेत करें कि तुरन्त ही यूसुफ ने अपने आप को परिस्थिति से बाहर निकाल लिया) । जब हमें लालच दिया जाता है तब हम यूसुफ के उदाहरण का अनुसरण कैसे कर सकते हैं ?

- यूसुफ किन बहनों को दे सकता था यदि वह देना चाहता जब पोतीपर की पत्नी ने उससे कुछ करने के लिए कहा था ?नैतिक उल्लंघन की सफाई देने की कोशिश के लिए आज लोग किन बहानों को करते हैं ? क्यों ये बहाने सही कारण नहीं होते हैं ?

- नेक होने के कारण यूसुफ को कैसे सजा दी गई जब पोतीपर की पत्नी ने उसे प्रस्ताव दिया था ? (देखें उत्पत्ति 39:12...20 । पोतीपर के सामानों की तरह उसे एक कैदी बनाकर बंदीगृह में डाल दिया गया) । आज संसार में, जो लोग नेक हैं, उनके साथ दूसरे लोग कैसा व्यवहार करते हैं ? (उत्तर भिन्न भी हो सकते हैं । लोग जो नेक हैं उनका कभी कभी उपहास उड़ाया जाता है और सामाजिक तौर पर निकाल दिया जाता है, परन्तु अक्सर उन्हें सम्मानित किया जाता है) । सांसारिक दबाव अनैतिक है जिसका आज युवा लोग सामना करते हैं और इस दबाव का युवा कैसे सामना कर सकता है, उसपर आप चर्चा करना चाहें ।

- धर्मशास्त्र जोर देते हैं कि जब यूसुफ कैद में था, प्रभु उसके साथ था (उत्पत्ति 39:21...23) । यह यूसुफ के बारे में क्या प्रकट करता है ? (उस का विश्वासी रहना जारी रहा बजाय उसके कि वह बंदीगृह के लिए परमेश्वर से प्रश्न करता या उसपर दोष लगाता जोकि उसकी नेकता का परिणाम था) । हम यूसफ से बुरे अनुभवों से अच्छी परिस्थितियों में बदलने के विषय में क्या सीख सकते हैं ? (इस चर्चा के दौरान आप रोमियों 8:28 को पढ़ना चाहें) ।

  छोटे एल्डर हार्टमैन रेक्टर ने समझाया था: ''प्रत्येक चीज को कुछ अच्छी चीजों में बदलने की क्षमता, एक ईश्वरीय गुण के रूप में प्रतीत होती है । हमारा स्वर्गीय पिता सदैव इसे करने में समर्थ प्रतीत होता रहा । प्रत्येक चीज, चाहे वह कितनी ही बुरी या भयानक क्यों न हो, प्रभु के लिए एक विजय होती है । यूसुफ, यद्यपि एक बंधक था और पूरी तरह से इस परिणाम के लायक नहीं था, फिर भी, प्रभु के लिए विश्वासी बना रहा और आज्ञाओं को मानता रहा और अपनी निम्नीकरण परिस्थितियों से कुछ अच्छा किया । इस तरह के लोग कभी भी हराये नहीं जा सकते'' (Conference Report में, अक्टू. 1972, 170; या *Ensign,* जनवरी 1973, 130) ।

3. शकेम, रूबेन, और यहूदा गंभीर नश्वर पापों को करते हैं।

उत्पत्ति 34:1...12; 35:22; और 38:1...30 की शिक्षा दें और चर्चा करें । इन पुरूषों के पापों पर पूरी तरह से चर्चा न करें; उनका उयोग यूसुफ के विश्वासपूर्णता के विरूद्ध करें ।

- संकेत करें कि लालच का सामना करते समय यूसुफ के परिवार के सारे सदस्य और जान-पहचान वाले इतने साहसी नहीं थे जितना यूसुफ था । यौन बुराइयों के प्रति शकेम, रूबेन और यहूदा ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी ?

- उत्पत्ति 34:3 में भाषा पर ध्यान दें जो दीना के प्रति शकेम के अहसासों को वर्णन करता है: ''और तब उसका मन दीना से लग गया...और उसने उस कन्या से प्रेम की बाते कीं, और उससे प्रेम करने लगा ।'' यह वर्णन शकेम के कर्मों के साथ परस्पर-विरोधी क्यों है ? (यदि शकेम ने वास्तव में दीना से प्रेम किया होता, उसने उसे अपवित्र नहीं किया होता । कक्षा के सदस्यों की

समझने में सहायता करें कि अक्सर लोग बहानों का उपयोग करते हैं कि ''हम प्रेम में पड़ गए हैं'', अनैतिक गतिविधि को न्यायसंगत बताने के लिए, परन्तु लोग जो वास्तव में एक दूसरे से प्रेम करते हैं वे एक दूसरे के प्रति शारीरिक उत्तेजना के संतोष और इच्छा के लिए अपराध नहीं करेंगे और तकलीफ नहीं देंगे । व्यवहार जो प्रार्थना करने के लिए मुश्किल बनाता है, लोगों को मंदिर में प्रेवश को अयोग्य बनाता है, या उन परिवारों को तोड़ता है जो प्रेम के द्वारा प्रेरित नहीं होते हैं) ।

- जब याकूब ने अपने जीवन के अंत में अपने पुत्रों में से प्रत्येक को आशीर्वाद दिया था, उसने रूबेन के नश्वर उल्लंघन को बताया था और रूबेन का वर्णन ''जल की नाई उबलनेवाला'' के रूप में किया था (उत्पत्ति 49:3...4) । यह एक सही तुलना कैसे हो सकता है ? याकूब क्या कहता है कि ''जल की नाई उबलनेवाला'' होने के कारण रूबेन का परिणाम क्या होगा ?
- यूसुफ ने नेकता के कारण क्या कीमत चुकाई थी, की तुलना रूबेन ने अनैतिक होने के कारण क्या कीमत चुकाई से करें । अपने अनैतिकता के कारण रूबेन ने क्या खोया था ? (देखें 1 इतिहास 5:1...2) । आज यौन पाप के क्या आत्मिक और लौकिक परिणाम हैं ? नैतिक रूप से स्वच्छता को प्रभु इतना महत्व क्यों देता है ?
- गिरजाघर के अध्यक्षों ने हमेशा इन बातों को सीखाया है कि परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी होना वास्तवीकता में सच्ची स्वतंत्रता है । इसे हम यूसुफ के जीवन में किस तरह से देखते हैं ? थोड़ी स्वतंत्रता में शकेम, रूबेन और यहूदा के लिए आज्ञाकारी न होने का परिणाम कैसा था ? आज्ञाओं को मानने का चुनाव करना कैसे हमें अधिक स्वतंत्रता देता है बजाय उन्हें तोड़ने का चुनाव करने के ? (देखें यूहन्ना 8:31...36) ।

निष्कर्ष

गवाही दें कि प्रभु की सहायता के साथ, हमारे सारे अनुभव और परिस्थितियाँ हमारे अच्छे के लिए एक साथ मिलकर काम कर सकती हैं । विचार और कार्यों में नैतिक स्वच्छता बनाए रखने के मूल्य की भी गवाही दें । कक्षा के सदस्यों को चलचित्रों, पत्रिकाओं, और टेलिवजिन कार्यक्रमों और अन्य किताबों का मूल्यांकन करने और केवल उन्हीं का उपयोग करने की चुनौती दें जो प्रभु के यौन नैतिकता के स्तर को दर्शाता हो । कक्षा के सदस्यों को उतना ही समर्पित होने के लिए उत्साहित करें जितना कि शुद्धता के कानून के आज्ञा-पालन में यूसुफ था ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. बेतेल...परमेश्वर का भवन

- जब याकूब कनान से अपनी प्रजातियों की भूमि की यात्रा कर रहा था, वह एक रात आराम करने के लिए रूका और स्वर्ग के तरफ जाती हुई एक सीढ़ी के एक असाधारण सपने को देखा (उत्पत्ति 28:10...19; पाठ 10 में चौथे अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को देखें) । याकूब ने इस स्थान का नाम *बेतेल* रखा, जिसका मतलब है ''परमेश्वर का भवन'' (उत्पत्ति 28:19) । आज किस स्थान का नाम वही नाम है ? (मंदिर, जिसे प्रभु का घर कहा जाता है) ।

  एल्डर मेरियन जी. रोमनी ने बताया था, ''हम सभी के लिए मंदिर वही हैं जो याकूब के लिए बेतेल था'' ("Temples ... The Gates to Heaven," *Ensign,* मार्च 1971, 16) ।

- उत्पत्ति 35:1...15 में, याकूब अपने परिवार को फिर से इस पवित्र स्थान पर ले गया । याकूब ने अपने परिवार को, बेतेल, ''परमेश्वर के भवन'' में वापस जाने की तैयारी के लिए क्या करने को कहा ? (देखें उत्पत्ति 35:2) । इन चीजों की तुलना हम उन तैयारियों से कैसे कर सकते हैं जिन्हें हम प्रभु के घर में जाने के लिए करते हैं ? हमारे बीच में ''अजनबी परमेश्वर'' कौन हैं ?

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कहा था:

  ''समय जो बीत गया है उसमें प्रभु ने हमें लोगों के रूप में एक असमान पीढ़ी के साथ आशीषित किया है । साधन जोकि हमारी शक्ति में हैं वह अच्छे हैं, और पृथ्वी पर हमारे काम के महत्वपूर्ण हैं । परन्तु मैं डरता हूं कि हममें से कई लोगों के पास भारी मात्रा में सांसारिक संपत्तियाँ, जानवर और जमीन है और धन है जिसे उन्होंने झुठे परमेश्वर के रूप में पूजना आरंभ कर दिया है, और हमारे ऊपर वे अधिकार करते हैं । हमारे विश्वास के अलावा क्या इनमें से और अच्छी चीजें हमारे पास हैं जो अंत तक साथ रहेंगी ?

  ''अपने आपको आधुनिक के रूप में बताने में हमारे आनंद की बजाय, और सोचने की धारणा कि हमारे पास संसार का ज्ञान और संसार की समझ है जोकि बीते दिनों में किसी भी व्यक्ति के पास नहीं था...इन चीजों के अलावा, साधारणतः हम लोग, एक मूर्तिपूजक लोग...प्रभु के लिए एक स्थिति जोकि अत्याधिक घृणास्पद है'' ("The False Gods We Worship," *Ensign,* जुन 1976, 4, 6) ।

- कैसे हम (अपने) अजनबी परमेश्वरों को दूर रख सकते हैं...और स्वच्छ हो सकते हैं'' और मंदिर में उपस्थिति के योग्य हो सकते हैं ? (देखें उत्पत्ति 35:2; भजन संहिता 24:3...4; 2 कुरिन्थियों 7:1; मरोनी 10:30, 32) ।

2. याकूब और एसाव फिर से एक हो जाते हैं

- कनान की भूमि के लिए वापस आते समय, याकूब जानता था कि वह अपने भाई एसाव से फिर से मिलेगा (उत्पत्ति 32:3...23; 33:1...17) । एसाव को देखने के लिए याकूब क्यों डर रहा था ? (देखें उत्पत्ति 32:11) । याकूब एसाव से मिलने की तैयारी कैसे करता है ? (देखें उत्पत्ति 32:13...20) । जब वे फिर से मिलते हैं तब एसाव याकूब के प्रति कैसी प्रक्रिया दिखाता है ? (देखें उत्पत्ति 33:4; 8...11) । पारिवारिक झगड़ों का समाधान करने के बारे में हम याकूब और एसाव से क्या सीख सकते हैं ?

3. पुराने नियम के समय में रखैलें

उत्पत्ति 35:22 में, बिल्हा, राहेल की एक नौकरानी, को याकूब की रखैल के रूप में बताया गया है । एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने पुराने नियम में शब्द *रखैल* के उपयोग का निम्नलिखित स्पष्टीकरण प्रदान किया है:

''इतिहास के सारे समय में परमेश्वर का उसके लोगों के साथ संबंध के दौरान, इस्राएल के घराने के लोगों को भी सम्मिलित करते हुए, नये और विवाह के अनन्त अनुबंध में, उनके पतियों से विवाहित रखैलें कानूनन पत्नियाँ मानी जाती थीं...प्राचीनता में उन्हें *दूसरी पत्नियों* के रूप में माना जाता था, इसका मतलब यह है कि, उस समय के जाति नियमों में उनका अधिकार समान नहीं होता था जैसा कि उन पत्नियों का होता था जिन्हें रखैल नहीं कहा जाता था'' (Mormon Doctrine, दूसरा संस्करण, [1966], 154) ।

''मेरी विपत्ति की जमीन में फलवान होना''

पाठ
12

उत्पत्ति 40...45

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की समझने में सहायता करना कि यदि हम विश्वासी और आज्ञाकारी हैं, परमेश्वर हमारे कष्टों को हमारे लाभ के लिए प्रतिष्ठित करेगा ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. उत्पत्ति 40...41 । बंदीगृह में, यूसुफ फिरौन के हाकिमों के सपनों का सही सही मतलब बताता है । तब वह फिरौन के गायों और बालों के सपनों का मतलब बताता है । यूसुफ को फिरौन के नीचे सारे मिस्र पर प्रधान मंत्री बनाया गया और लोगों को आने वाले अकाल से बचने की तैयारी करवाता है ।

   ख. उत्पत्ति 42...45 । याकूब अपने पुत्रों को अन्न खरीदने के लिए दो बार मिस्र भेजता है । यूसुफ अपने भाइयों को पहचानता है और उन्हें क्षमा करता है, और वे एक साथ आनंद मनाते हैं ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: 2 नफी 2:2; सिद्धांत और अनुबंध 64:8...11; 122:5...9 ।

3. आप कक्षा के एक सदस्य से उत्पत्ति 42...43 का एक संक्षिप्त सार प्रस्तुत करने की तैयारी के लिए पूछना चाहेंगे ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के सदस्यों से कल्पना करने के लिए कहें कि उनकी मृत्यु हो गई है और उन्होंने आत्मिक दुनिया में प्रवेश किया है और अब नश्वरता में अपने अनुभवों की समीक्षा कर रहे हैं । समझाएं कि कैसे तंगहाली ने उन के जीवन को प्रभावित किया है, को सोचने में सहायता के लिए आप उनसे चार प्रश्न पूछेंगे । सभी चार प्रश्नों को पूछने के पश्चात, कक्षा के सदस्यों को उन प्रश्नों पर टिप्पणी करने के लिए आमंत्रित करें जिसपर वे चाहते हों ।

- कौन सी कुछ परिक्षाएं हैं जिनका आप नश्वर जीवन में सामना करते हैं ?
- जीवन की परिक्षाओं से आप क्या पाठ सीखते हैं ?
- यदि आपने अपना जीवन जी लिया होता, आप किन तरीकों को बदलाव करते जिनसे आपने अपनी कठिनाइयों का सामना किया था ?
- आपने जीवन के अनुभवों से कैसे आप अच्छी तरह से फायदा उठाते ?

समझाएं कि यह पाठ यूसुफ के बारे में है जा याकूब का पुत्र था, और कैसे वह बड़ी कठिनाइयों के दौरान विश्वासी और आज्ञाकारी बना रहा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यूसुफ पिलानेहारा, पकानेहारा, और फिरौन के सपनों का अर्थ बताता है। फिरौन यूसुफ को सारे मिस्र पर राज्य करने वाला बनाता है।

उत्पत्ति 40...41 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

यूसुफ के कुछ कठिनाइयों को बताने के द्वारा जिसका अनुभव उसने अपने जीवन के आरंभिक दिनों में किया था, कक्षा के सदस्यों को पहले के पाठ की समीक्षा करने दें (उत्पत्ति 37; 39) । कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को आप चॉकबोर्ड पर सूचिबद्ध करना चाहें । उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है:

क. उसके भाई उससे ईर्ष्या करते थे (उत्पत्ति 37:4) ।

ख. उसके भाइयों ने उसे मारने का षडयंत्र किया, फिर उसकी बजाय उसे बंधक के रूप में बेच दिया था (उत्पत्ति 37:18...28) ।
ग. बुराई करने से मना करने के पश्चात अन्यायपूर्ण तरीके से उसे बंदीगृद में डाल दिया (उत्पत्ति 39:20) ।

- यूसुफ ने अपनी परिक्षाओं का कैसे जवाब दिया ? परिक्षा की घड़ी में भी धार्मिक बने रहने के कारण प्रभु ने यूसुफ को कैसे आशीषित किया ?

- बंदीगृह में यूसुफ के साथ पिलानेहारा और पकानेहारा भी थे, जिसमें से दोनों ने सपनों को देखा था जिसे वे समझ नहीं पाए थे । जब यूसुफ ने पिलानेहारा के सपनों का मतलब बताया था तब उसने पिलानेहारा से बदले में क्या पूछा था ? (देखें उत्पत्ति 40:14...15) । क्या हुआ था जब पिलानेहारा को बंदीगृह से छोड़ दिया गया था ? (देखें उत्पत्ति 40:21, 23) । यह यूसुफ के लिए दूसरी परिक्षा क्यों थी ? (देखें उत्पत्ति 41:1, 14 । उसे और दो वर्षों के लिए बंदीगृह में डाल दिया गया था) ।

- अंततः यूसुफ को बंदीगृह से क्यों छोड़ दिया गया था ? (देखें उत्पत्ति 41:1, 8...15) । यूसुफ का जवाब क्या था जब फिरौन ने कहा था कि उसने सुना था कि यूसुफ सपनों का मतलब बता सकता है ? (देखें उत्पत्ति 41:16) । अपनी योग्यताओं और उपहारों के प्रति हम प्रभु के लिए सही आभार कैसे व्यक्त कर सकते हैं ? (हम उनका उपयोग परमेश्वर की महिमा और अन्यों को आशीष देने में कर सकते हैं, अपने स्वयं की महिमा के लिए नहीं) ।

- फिरौन ने क्या सपना देखा था ? (देखें उत्पत्ति 41:1...7; 17...24) । फिरौन के सपने का क्या अर्थ था ? (देखें उत्पत्ति 41:25...32) । यूसुफ द्वारा अर्थ बताने के पश्चात, उसने फिरौन को क्या करने का सुझाव दिया था ? (देखें उत्पत्ति 41:33...36; दूसरे अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को भी देखें) । यूसुफ के अकाल की तैयारी के सुझाव के जवाब में कि फिरौन ने क्या उत्तर दिया था ? (देखें उत्पत्ति 41:37...43) ।

2. यूसुफ अपनी पहचान अपने भाइयों को देता है और उन्हें क्षमा करता है।

उत्पत्ति 42...45 की शिक्षा दें और चर्चा करें । आप चाह सकते हैं कि कक्षा का एक नियुक्त सदस्य उत्पत्ति 42...43 का संक्षिप्त सार दे ।

- पहली बार यूसुफ के भाई मिस्र में क्यों आए थे ? (देखें उत्पत्ति 42:1...3) । वे दूसरी बार वापस मिस्र में क्यों आए थे ? (देखें उत्पत्ति 42:33...34; 43:2) । याकूब बिन्यामिन का उसके भाइयों के साथ मिस्र जाने देने के लिए अनिच्छुक क्यों था ? (देखें 42:36, 38) । अंततः वह बिन्यामिन को जाने देने के लिए क्यों मान गया था ? (देखें उत्पत्ति 43:3...5, 11...14) ।

- बिन्यमिन को उसके भाइयों के साथ मिस्र भेजने में, याकूब ने महसूस किया था कि वह एक और पुत्र को खो देगा (उत्पत्ति 42:36) । याकूब जिसे एक परिक्षा समझता था उसे प्रभु ने उसके लिए एक आशीष में कैसे बदल दिया था ?

- जब यूसुफ जवान था, उसने एक सपना देखा जिसे उसने पहले ही बता दिया था कि आखिर में उसके भाई उसके आगे झुकेंगे (उत्पत्ति 37:5...11) । यह सपना कैसे पूरा हुआ ? (देखें उत्पत्ति 42:6; 43:26...28) । यह पूर्ति, जिसे भाइयों ने सोचा था कि उनके लिए एक बहुत बड़ी परिक्षा है, एक आशीष के रूप में कैसे बदल गई ?

- यूसुफ को बन्धक के रूप में बेचे जाने के 20 से भी अधिक वर्षों के पश्चात, उसके भाई तब भी अपने कर्मों के कारण अपराधी महसूस करते थे (उत्पत्ति 42:21) । हमारे जीवन में अपराध कैसे एक सकारात्मक प्रभाव हो सकता है ? कैसे यह एक नकारात्मक प्रभाव हो सकता है ? पूरी तरह से पश्चाताप कैसे अपराध के अहसासों को प्रभावित करता है ?(एनोस 1:4–6 ।)

- यूसुफ के भाई यहूदा ने कैसे दिखाया कि वह तब से एक दयालु व्यक्ति बन गया था जब उसने आखिरी बार यूसुफ को देखा था ? (देखें उत्पत्ति 44:18, 30...34 । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि यूसुफ को एक बन्धक के रूप में बेचने का सुझाव यहूदा का ही था) ।

- आपके विचार से यूसुफ के भाई भयभीत क्यों हो गए जब यूसुफ ने उन्हें अपनी पहचान बताई ? (देखें उत्पत्ति 45:1...3) । यूसुफ ने कैसे दिखाया कि उसने अपने भाइयों को क्षमा कर दिया है ? (देखें उत्पत्ति 45:4...11, 14...15) । आपके विचार से कैसे यूसुफ के क्षमादान ने उसके भाइयों को आत्मिकता में ऊपर उठने में सहायता किया था ?

- संसार हमसे क्या करने के लिए कहता है जब किसी ने हमारे साथ गलत किया हो, जैसा कि यूसुफ के भाइयों ने उसके साथ किया था ? प्रभु हमसे क्या करने के लिए कहता है ? (देखें सि. और अनु. 64:8...11) । आप कैसे आशीषित हुए थे जब आपने उनके प्रति उदारता से व्यवहार किया था जिन्होंने आपके साथ दुर्व्यवहार किया था ? हम कैसे अधिक क्षमा करने वाले बन सकते हैं ?

- कैसे मिस्र में यूसुफ का कारावास, जोकि उसके लिए एक परिक्षा था, उसके लिए, उसके परिवार के लिए, और सारे मिस्र के लिए एक आशीष बन गया था ? (देखें उत्पत्ति 45:4...8) । अपने स्वयं की चुनौतियों और परिक्षाओं का सामना करने में हम कैसे यूसुफ के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं ?
- नये नियम में, प्रेरित पौलुस ने रोमियों से कहा था कि ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं'' (रोमियों 8:28) । आपके जीवन में यह कैसे सच हुआ है ? कक्षा के सदस्यों को व्यक्तिगत अनुभवों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें जिसमें एक ऐसी घटना हुई हो जो पहले तो नकारात्मक प्रतीत हुई थी और बाद में एक आशीष बन गई थी ।

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि उसकी परिक्षाओं के सारे समय के दौरान, यूसुफ विश्वासी बना रहा । यहाँ तक उसने अपने भाइयों को उसे बंधक के रूप में बेचे जाने को भी क्षमा कर दिया । अपनी धार्मिकता के कारण, यूसुफ बहुतायत में आशीषित हुआ था । गवाही दें कि यदि हम विश्वासी होते हैं, सारी भलाई की बातों को एक साथ मिलाने के द्वारा परमेश्वर हमें आशीष देगा ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अन्तिम दिन का महान युसूफ

उत्पत्ति 50:24...38 के जोसफ स्मिथ अनुवाद में भविष्यवाणियाँ पाई जाती हैं जिसे यूसुफ ने अपने वंशजों में से एक के लिए किया था जो एक ''भविष्यदर्शी'' बनेगा । मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता लेही ने इन भविष्यवाणियों को 2 नफी 3:5...15 में फिर से बताया है । इन भविष्यवाणियों में जिस वंशज को बताया गया है वह भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ है ।

चर्चा करें कि कैसे मिस्र के यूसुफ द्वारा की गई निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ जोसफ स्मिथ के जीवन में पूरी हुई थीं:

क. यूसुफ का एक वंशज एक ''भविष्यदर्शी'' होगा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:26; 2 नफी 3:6) ।
ख. यह भविष्यदर्शी यूसुफ के दूसरे वंशजों के द्वारा बहुतायत में सम्मानित होगी (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:27; 2 नफी 3:7) ।
ग. वह उन्हें उन अनुबंधों की शिक्षा देगा जिन्हें परमेश्वर ने उनके पूर्वजों के साथ बनाया था (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:28; 2 नफी 3:7) ।
घ. वह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होगा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:28; 2 नफी 3:8) ।
च. मूसा की तरह वह महान भविष्यवक्ता होगा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:29; 2 नफी 3:9) ।
छ. वह नये धर्मशास्त्र को लाने का जरिया होगा (मॉरमन की पुस्तक) जो विद्यमान धर्मशास्त्र को सहारा देगा और उसके साथ काम करेगा (बाइबिल) (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:30...31; 2 नफी 3:11...12) ।
ज. यद्यपि वह निर्बल होगा, प्रभु उसे बलवान बनाएगा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:32; 2 नफी 3:13) ।
झ. दोनों का, उसका और उसके पिता का नाम जोसफ होगा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, उत्पत्ति 50:33; 2 नफी 3:15) ।

2. अकाल के लिए तैयारी

- यूसुफ फिरौन को सात वर्षों की बहुतायत उपज का उपयोग करने की सलाह देता है, मिस्र के लिए उस तैयारी में जिसमें आने वाले सात वर्षों तक अकाल आएगा (उत्पत्ति 41:29...30, 34...36) । अकाल और अन्य कठिन परिस्थितियों की तैयारी के बारे में हमारे गिरजाघर के मार्गदर्शक क्या सलाह देते हैं ?

  एल्डर एल. टॉम पेरी ने सीखाया था:

  ''जितना अपने आपको आत्मिक रूप से तैयार करना महत्वपूर्ण है, उतने महत्व से हमें अपने आपको हमारे लौकिक आवश्यकताओं के लिए भी तैयार करना होगा...हमें वर्षों से कम से कम चार आवश्यकताओं की तैयारी करने का आदेश दिया गया है उसके लिए जो आने वाला है ।

  ''पहला, पर्याप्त शिक्षा लें । एक व्यापार या एक व्यवसाय की शिक्षा लें ताकि आपके पास एक स्थिर रोजगार हो जिससे आप अपने और अपने परिवार की देखभाल के लिए पर्याप्त धन कमा सकें...

''दूसरा, अपनी आय के अनुसार ही खर्च करें और कठिन समय के लिए कुछ बचाकर रखें । अपने जीवन में कैसे उपयोग किया जाए, की योजना बनाएं जिससे प्रभु ने आपको आशीषित किया है । जैसा कि सदैव आप अपने दसमांश का भुगतान करते हैं, उसी तरह भविष्य की पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए आवश्यक रकम को बचाकर रख दें...

''तीसरा, अत्याधिक कर्ज से बचें । ध्यानपूर्वक और विचारशील प्रार्थना के पश्चात, अच्छे से अच्छे संभव राय को प्राप्त करने के पश्चात ही आवश्यक कर्ज को लेना चाहिए । भुगतान करने की अपनी समर्थता के अन्दर हमें अपने आपको नियंत्रित रखने की आवश्यकता है...

''चौथा, खाद्य पदार्थ और सामग्रियों का भण्डार रखें जो कि जीवन जीने में सहायता करेगा (यदि स्थानीय कानून इस तरह के भण्डार की अनुमति देता हो) । सोचे समझे तरीके से कपड़े और बचत खाते बनाएं, पूरी तरह से योजना के आधार पर जिससे आपातकालिन परिस्थितियों में अच्छी तरह से सहायता हो सके । जहाँ तक मैं याद कर सकता हूं, हमें भविष्य की तैयारी के लिए और जरूरत के समय के लिए एक वर्ष की सामग्रियों को रखने की शिक्षा दी गई है । मैं सोच सकता हूं कि बहुतायत के वर्ष हम सभी के लिए इस सलाह की उपेक्षा का कारण है । मैं विश्वास करता हूं कि इस सलाह की उपेक्षा का समय खत्म हो गया है । आज संसार में जो कुछ भी हो रहा है उसे ध्यान में रखते हुए, खाद्य पदार्थों और अन्य आवश्यक चीजों के भण्डार को गंभीरता से लेना चाहिए'' (Conference Report में, अक्टू. 1995, 46...47; या *Ensign,* नव. 1995, 36) ।

- अकाल के दौरान, अन्न मोल लेने के लिए ''सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में यूसुफ के पास आए'' क्योंकि मिस्र ही एक ऐसा देश था जिसने अकाल से बचने के लिए तैयारी किया था (उत्पत्ति 41:54...57) । तैयार रहना कैसे हमें दूसरों की सेवा करने के अवसरों को प्रदान करता है ?

3. यूसुफ के पुत्र

- फिरौन द्वारा मिस्र के ऊपर उसे राज्य करने वाला बनाने के पश्चात, यूसुफ ने एक आसनत नामक स्त्री से विवाह किया, और उनके दो पुत्र हुए (उत्पत्ति 41:45, 50) । यूसुफ और आसनत ने अपने पुत्रों को क्या नाम रखा था ? (देखें उत्पत्ति 41:51...52) । यूसुफ के पुत्रों के लिए ये नाम क्यों उपयुक्त थे ? (आपको कक्षा के सदस्यों को बताने की आवश्यकता हो सकती है कि मनश्शै जिसक मतलब है ''भूलने वाला'' और एप्रैम जिसका मतलब है ''फलवान'' ।

दासता, पर्ब्ब, और निर्गमन

पाठ
13

निर्गमन 1...3; 5...6; 11...14

उद्देश्य

(1) उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा होने के लिए प्रभु में विश्वास रखने, (2) उद्धारकर्ता के प्रायश्चित भरे बलिदान के लिए उनकी प्रशंसा को बढ़ाने, और (3) उनके जीवन में प्रभुभोज को और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहन देना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें ।

   क. निर्गमन 1...3 । इस्राएल के बच्चे मिस्रियों के द्वारा बंधक बनाए गए थे (1:1...14) । फिरौन आदेश देता है कि इस्राएलियों के जन्मे बेटों को मार दिया जाए (1:15...22) । मूसा का जन्म होता है और उसका पालन-पोषण फिरौन की बेटी के द्वारा होता है (2:1...10) । मूसा एक मिस्री को मार डालता है और मिद्यान के लिए चला जाता है, जहाँ वह सिप्पोरा से विवाह करता है (2:11...22) । प्रभु जलती हुई झाड़ी के पास मूसा को दिखाई देता है और उसे इस्राएल को दासता से छुड़ाने के लिए कहता है (3:1...22; ध्यान दें कि बाइबिल के जोसफ स्मिथ अनुवाद में, निर्गमन 3:2 में के शब्द ''दूत'' को बदलकर ''उपस्थिति'' कर दिया गया था ।

   ख. निर्गमन 5...6 । मूसा और हारून फिरौन से इस्राएल को आजाद करने के लिए कहते हैं, परन्तु फिरौन मना कर देता है और लोगों पर और भारी बोझ डाल देता है (5:1...23) । प्रभु इब्राहीम के साथ की गई वाचा को पूरा करने की प्रतिज्ञा करता है (6:1...8) । (सूचनाः अध्याय 7...10, मूसा का फिरौन से कई बार के मुलाकात को बताता है, उससे इस्राएल को आजाद करने के लिए कहते हुए । कई चिन्हों, आश्चर्यों, और विपत्तियों के बावजूद फिरौन मना कर देता है । इन अध्यायों का जोसफ स्मिथ अनुवाद समझाता है कि फिरौन ने अपने हृदय को कठोर कर लिया था) ।

   ग. निर्गमन 11...13 । प्रभु मिस्र पर एक और विपत्ति को भेजता है जिसमें प्रत्येक घर का पहिलौठा बच्चा मर जाएगा (11:1...10) । प्रभु मूसा को पर्ब्ब की तैयारी के लिए आदेश देता है, जोकि इस्राएल की विपत्ति से सुरक्षा करेगा (12:1...20) ।मिस्र के पहिलौठे मारे जाते हैं (12:29...30) । फिरौन मूसा से उसके लोगों को मिस्र से ले जाने के लिए कहता है, और इस्राएली चले जाते हैं (12:31...42) । मूसा इस्राएल के बच्चों से भविष्य में, उनके छुड़ाए जाने की याद में बिना खमीर की रोटी का पर्ब्ब मनाने के लिए कहता है (13:1...16) । प्रभु इस्राएलियों को मार्ग दिखाने के लिए दिन को मेघ के खम्भे और रात को उजियाला देने के लिए आग के खम्भे में होकर जाता है (13:17...22) । (ध्यान दें कि शीर्षक ''पर्ब्ब को मनाना'' और ''बिना खमीर की रोटी के पर्ब्ब को मनाना'' का उपयोग अक्सर समानता में किया जाता है; पर्ब्ब, बिना खमीर की रोटी के पर्ब्ब का पहला दिन है) ।

   घ. निर्गमन 14 । फिरौन और उसकी सेना इस्राएल के बच्चों का पीछा करते हैं (14:1...9) । लोग डर जाते हैं, और मूसा प्रभु से सहायता के लिए याचना करता है(14:10...18) । इस्राएल के बच्चों को सेना से छुड़ाया जाता है और वे सूखी भूमि पर चलकर लाल समुद्र को पार करते हैं; फिरौन के लोग उनका पीछा करते और डूब जाते हैं (14:19...31) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः निर्गमन 4; 7...10; 15 ।

3. कक्षा के एक सदस्य से निर्गमन 1 और 2 के एक संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करने की तैयारी के लिए पूछें ।

4. *पर्ब्ब* और *प्रभुभोज* के शब्दों की शब्दपट्टियाँ तैयार करें ।

5. यदि निम्नलिखित ऑडियो दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप इनमें से कुछ का उपयोग करना चाहेंः

   क. ''जानवर का बलिदान और प्रायश्चित,'' पुराने नियम के विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) से एक नौ-मिनट का खण्ड ।

   ख. चित्र, यीशु ही मसीह (62572; सुसमाचार कला चित्र किट 240); कांस की झाड़ियों में मूसा (62063; सुसमाचार कला चित्र किट 106); मूसा और जलती हुई झाड़ियाँ (62239; सुसमाचार कला चित्र किट 107); और लाल समुद्र को पार करते हुए (62100) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के सदस्यों से पूछें यदि वे कभी भी एक खतरनाक स्थिति से बचाए गए हों । संक्षिप्त में उनके अनुभवों को बाँटने के लिए उनमें से एक या दो को आमंत्रित करें, या अपने स्वयं का एक बताएं । कक्षा के सदस्यों से पूछें कि उन्होंने उसके प्रति कैसे महसूस किया था जिसने उन्हें बचाया था ।

समझाएं कि यह पाठ एक बहुत ही नाटकीय बचाव के बारे में है जोकि पहले कभी नहीं घटा होगा...इस्राएल के बच्चों को मृत्यु की विपत्ति और मिस्रियों के बंधन से छड़ाने का । यह भी समझाएं कि कई तरीकों में यह बचाव का एक प्रतीक है और यहाँ तक कि बड़े बचाव का भी...पाप और मृत्यु से उद्धारकर्ता के प्रायश्चित बलिदान के द्वारा छुटकारा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

याकूब और उसके परिवार का मिस्र में चले जाने के पश्चात, इस्राएली वहाँ पर 430 वर्षों तक रहे । उस समय के दौरान, एक फिरौन उत्पन्न हुआ जिसने उनपर भारी बोझ डाल दिया था । जैसा कि यूसुफ ने भविष्यवाणी किया था, प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को छुड़ाने के लिए मूसा को उत्पन्न किया था (2 नफी 3:10) ।

1. इस्राएलियों को दासता से छुड़ाने के लिए प्रभु मूसा को बुलाता है।

कक्षा के नियुक्त सदस्यों को निर्गमन 1 और 2 का एक संक्षिप्त समीक्षा देने दें; तब निर्गमन 3 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- प्रभु ने दासता से इस्राएल को छुड़ाने के लिए मूसा को कैसे बुलाया था ? (देखें निर्गमन 3:1...4) । मूसा को बुलाते समय प्रभु ने उससे क्या कहा था ? (देखें निर्गमन 3:5...10) । प्रभु द्वारा मूसा को बुलाने से हम क्या सीख सकते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है कि प्रभु अपने लोगों को जानता है, उनपर दया करता है, उन्हें आशीष देना चाहता है, और उनके प्रति की गई अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है) ।
- कक्षा के सदस्यों से कल्पना करने को कहें कि वे इस्राएल के बच्चे हैं और मिस्र में रहते हैं । पीढ़ियों से उन्हें सीखाया गया है कि वे परमेश्वर के अनुबंधित लोग हैं और कि वह अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा जिसे उसने इब्राहीम के साथ बनाया था । अभी भी वे बंधक हैं, उत्पीड़न और दासता में रहते हुए । इस परिस्थिति से हम क्या सीख सकते हैं जो हमारी सहायता कर सकता है जब हम दुर्दशा का अनुभव करते हैं ? (परमेश्वर हमें हमारी दुर्दशा में नहीं भूलता है, जैसा कि उसने मूसा को बुलाने और अंततः इस्राएलियों को छुड़ाने के द्वारा दिखाया है । परन्तु वह हमेशा हमें परिक्षाओं से तुरन्त नहीं बचाता है । इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि परिक्षा कितनी लम्बी है, हमें उससे प्रार्थना करना जारी रखना चाहिए, विश्वास करते हुए कि वह हमसे प्रेम करता है और सारी बातें एक साथ मिलकर भलाई का काम करेंगी यदि हम उसकी आज्ञा का पालन करते हैं । देखें सि. और अनु. 90:24; 98:3; मुसायाह 24:14...15) । दुर्दशा के समय में आपने प्रभु से सांत्वना और सहायता को कैसे प्राप्त किया है ?
- मूसा ने क्या कहा जब प्रभु ने उसे इस्राएल को छुड़ाने के लिए बुलाया था ? (देखें. निर्गमन 3:11; 4:1, 10) । किन तरीकों में मूसा ने अपर्याप्त महसूस किया ? प्रभु ने उसे कौन से आश्वासनों को दिया ? (देखें निर्गमन 3:12; 4:11...12) । आप कैसा महसूस करते हैं जब आप प्रभु से एक बुलाहट को प्राप्त करते हैं ? अपर्याप्तता के कुछ अहसास अच्छे क्यों हो सकते हैं ? प्रभु ने उन बुलाहटों में आपकी कैसे सहायता की है जिनमें आपने अपर्याप्तता को महसूस किया है ?
- अपने लोगों के मार्गदर्शन की बुलाहट को स्वीकार करने के द्वारा मूसा ने क्या बलिदान किया ? (देखें इब्रानियों 11:24...26) । प्रभु की सेवकाई की बुलाहटों को स्वीकार करने के द्वारा हम क्या बलिदान करते हैं ? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम प्रभु के प्रति बलिदान के लिए इच्छुक हों ?

2. प्रभु मिस्र पर विपत्ति भेजता है।

निर्गमन 5...6 की शिक्षा दें और चर्चा करें । आप निर्गमन 7...10 का एक संक्षिप्त समीक्षा देना चाहें यह समझाते हुए कि मूसा ने फिरौन से कई बार आग्रह किया और उससे इस्राएल को आजाद करने के लिए कहा था । बावजूद चिन्हों, आश्चर्यों, और विपत्तियों के फिरौन ने मना कर दिया । संभवतः आपको प्रत्येक चिन्ह, आश्चर्य, और विपत्ति की समीक्षा के लिए कक्षा का समय नहीं लेना चाहिए ।

- फिरौन ने पहली बार कैसे जवाब दिया जब मूसा और हारून ने उससे इस्राएल के बच्चों को जाने देने के लिए कहा ? (देखें निर्गमन 5:1...9) । इस परिक्षा के लिए इस्राएल के बच्चों का जवाब कैसा था ? (देखें निर्गमन 5:15...21) । इसके लिए मूसा का जवाब कैसा था ? (देखें निगर्मन 5:22...23) । इस विवरण से हम क्या सीख सकते हैं ? (एक बात हम सीख सकते हैं कि दुर्दशा में धैर्य की आवश्यकता होती है । प्रभु अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा, यद्यपि वह उसी समय या उस तरीके में नहीं कर सकता जिस तरह से हम आशा करते हैं) ।

- फिरौन का इस्राएल पर बोझ बढ़ाने के पश्चात, प्रभु अपनी प्रतिज्ञाओं को मूसा के लिए दोहराता है । ये प्रतिज्ञाएं क्या थीं ? (देखें निर्गमन 6:4...8) । इस्राएल के बच्चों ने कैसे जवाब दिया था जब मूसा ने इन प्रतिज्ञाओं को उन्हें याद दिलाया था ? (देखें निर्गमन 6:9) । परिक्षा के समय में हममें से कुछ क्यों भविष्यवक्ताओं को सुनना और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना क्यों रोक देते हैं ? दुर्दशा के दौरान हम कैसे परमेश्वर में विश्वास को बनाए रख सकते हैं ?

- मूसा ने कैसे जवाब दिया था जब प्रभु ने मूसा से दूसरी बार इस्राएल को आजाद करने की याचना करने के लिए फिरौन के समक्ष जाने के लिए कहा था ? (देखें निर्गमन 6:10...12) । संकेत करें कि, डर या हमारे विचार से यह संभव नहीं है, के कारण कभी कभी हम भी अनिच्छुक महसूस कर सकते हैं उसे करने के लिए जिसे प्रभु करने के लिए कहता है । जब आपने शंका या डर को महसूस किया था तब प्रभु ने आपकी सहायता कैसे की थी ?

3. पर्ब्ब की तैयारी के लिए प्रभु मूसा को आदेश देता है।

निर्गमन 11...13 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- पहले पर्ब्ब का उद्देश्य क्या था ? (देखें निर्गमन 12:12...13, 22...23) । प्रभु क्यों चाहता है कि भविष्य में इस्राएल पर्ब्ब के त्योहार को मनाना जारी रखे ? (देखें निर्गमन 12:24...27, 42; 13:1...10) ।

- समझाएं कि इस्राएल को याद दिलाने के अलावा परमेश्वर ने उनकी मृत्यु की विपत्ति से सुरक्षा की थी और मिस्रियों से उन्हें छुड़ाया था, पर्ब्ब को एक महत्वपूर्ण घटना का भी प्रतीक माना गया है । यह घटना क्या थी ? (यीशु मसीह का प्रायश्चित बलिदान, परमेश्वर का मेम्ना, जो हमें पाप और मृत्यु से छुटकारा दिलाता है । देखें 1 कुरिन्थियों 5:7) । पर्ब्ब कैसे प्रायश्चित का प्रतीक है ?

  आप पर्ब्ब और यीशु मसीह के प्रायश्चित बलिदान के बीच निम्नलिखित समानताओं को दिखाना चाहें:

  क. इस्राएल के बच्चे, पर्ब्ब में पहले वर्ष के निर्दोष नर मेम्ने का उपयोग करते थे (निर्गमन 12:5) । उद्धारकर्ता परमेश्वर का पहला जन्मा पुत्र है, परमेश्वर का मेम्ना बिना किसी धब्बे या दोष के (1 पतरस 1:19) ।

  ख. इस्राएल के बच्चे अपने चौखटों पर, अपने पहले जन्मे को मृत्यु से बचाने के लिए मेम्ने के लहू को छिड़कते थे (निर्गमन 12:7, 22...23) । उद्धारकर्ता का लहू, जिसे उसने क्रूस पर गतसमनी में बहाया था, विश्वासियों को स्वच्छ करता है और उन्हें आत्मिक मृत्यु से बचाता है (मुसायाह 4:2) ।

  ग. इस्राएल के बच्चों को बिना खमीर की रोटी को खाना था (निर्गमन 12:8; 15...20) । ''खमीर, या यीस्ट, प्राचीन में भ्रष्टाचार का एक प्रतीक प्रतीत होता था क्योंकि वह बड़ी आसानी से खराब हो जाता था और मुड़े हुए आकार में बदल जाता था...इस्राएलियों के लिए, बिना खमीर की रोटी को खाना इस बात का प्रतीक था कि वे उस रोटी का सेवन कर रहें हैं जिसमें कोई भ्रष्टाचार या अपवित्रता नहीं थी, अर्थात, जीवन की रोटी, जोकि यीशु मसीह है (देखें यूहन्ना 6:35)'' (*Old Testament Student Manual: Genesis-2 Samuel* [1981], 119) । खमीर को हटाना सुझावित पश्चाताप, या एक व्यक्ति के जीवन से पाप को हटाना है ।

  घ. जल्दीबाजी में इस्राएल के बच्चों को पर्ब्ब के भोजन को खाना था (निर्गमन 12:11) । इस्राएलियों की तरह ही, हमें उस छुटकारे के लिए जिसे उद्धारकर्ता हमें देता है, उत्सुकतापूर्वक और तुरन्त ही जवाब देने की आवश्यकता है ।

- आखिरी भोज पर, उद्धारकर्ता ने पर्ब्ब के स्थान पर प्रभुभोज को स्थापित किया था (मत्ती 26:19, 26...28) । उद्धारकर्ता के चित्र को दिखाएं, *पर्ब्ब* की शब्दपट्टी को बाएं तरफ रखते हुए और *प्रभुभोज* की शब्दपट्टी को दाएं तरफ रखते हुए । पर्ब्ब और प्रभुभोज के बीच क्या समानताएं हैं ? (देखें निर्गमन 12:14; 13:9...10; सि. और अनु. 20:75...79) ।

  एल्डर हावर्ड डबल्यु. हन्टर ने सीखाया था कि पर्ब्ब के भोजन पर जिसे अब आखिरी भोज के रूप में जाना जाता है, ''रोटी और दाखरस, जानवरों और औषधियों की बजाय, महान मेम्ने के शरीर और लहू का प्रतीक [बन] गया, श्रद्धापूर्वक और हमेशा उसकी याद में प्रतीकों को खाने और पीने के लिए ।

  ''साधारण परन्तु प्रभावित तरीके में उद्धारकर्ता ने धर्मविधि को स्थापित किया था जिसे अब प्रभु के आखिरी भोज को प्रभुभोज के रूप में जाना जाता है । 'गतसमनी में मसीह के अंत तक सहने, बलिदान जो उसने खोपड़ी पर किया था, और एक बाग की कब्र से उसका पुनरूत्थान होने के साथ' । गतसमनीः देखें मत्ती 26:36, खोपड़ीः देखें लूका 23:33, बलिदान के कानून को एक उच्च, पवित्र समझ के आधार पर यीशु ने प्राचीन नियम को पूरा किया था और एक नए प्रबंध को घोषित किया था

। किसी भी पुरूष को उसके चरवाहे से पहिलौठे मेम्ने के बलिदान की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि परमेश्वर का पहिलौठा स्वयं के बलिदान, एक 'अपरिमित और असीम अनन्त बलिदान' के लिए आया था'' (Conference Report में, अप्रैल 1985, 22; या *Ensign,* मई 1985, 19) ।

- एल्डर हावर्ड डबल्यु. हन्टर ने कहा था, जैसा कि पर्व्ब प्राचीन इस्राएल की सुरक्षा के लिए एक अनुबंध था, बिल्कुल वैसा ही प्रभुभोज हमारे लिए एक ''सुरक्षा का नया अनुबंध'' है (Conference Report में, अप्रैल 1974, 24; या *Ensign,* मई 1974, 18) । हमारे लिए प्रभुभोज एक सुरक्षा का अनुबंध कैसे है ? (प्रभुभोज हमें उद्धारकर्ता के प्रायश्चित बलिदान को याद दिलाता है, जो पाप और मृत्यु के बंधन से आजाद करने के द्वारा अनन्त सुरक्षा लाता है । अनुबंध जिसका हम नवीनीकरण करते हैं जब हम प्रभुभोज को लेते हैं, हमारे लिए अनन्त सुरक्षा को प्रदान करने में सहायता करता है) ।

एल्डर जेफ्री आर. हॉलैंड ने पूछा था:

''क्या हम [प्रभुभोज] को *हमारे* पर्व्ब के रूप में, *हमारी* सुरक्षा की यादों और छुटकारा और पुनरूत्थान के रूप देखते हैं ?

''खोने या पाने के साथ, जिसे अंधकार के दूत से हमारे बचाव को यह धर्मविधि स्मरण कराता है उसे पहले से भी अधिक गंभीरता से लेना चाहिए । यह एक शक्तिशाली, श्रद्धापूर्ण, गहन विचार का क्षण होना चाहिए । इसे आत्मिक अहसासों और प्रभावों को उत्साहित करने वाला होना चाहिए'' (Conference Report में, अप्रैल 1995, 89; या *Ensign,* मई 1995, 68)

- पर्व्ब के बारे में उसके आदेशों में, प्रभु माता-पिता की उनके बच्चों को उसके महत्व की शिक्षा पर जोर देता है (निर्गमन 12:26...27; 13:8, 14) । यह क्यों महत्वपूर्ण था कि इस्राएल के माता पिता इसे करें ? हमारे दिनों में यह किस तरह से लागू हो सकता है ? (प्राचीन इस्राएल की तरह, हमें अपने बच्चों को प्रभुभोज और अन्य धर्मविधियों की के महत्व की शिक्षा देनी चाहिए जो हमें पाप और मृत्यु से छुटकारे में प्रभु ने क्या किया है उसकी याद दिलाता है) ।

4. इस्राएल के बच्चे लाल समुद्र को पार करते हैं।

निर्गमन 14 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- फिरौन द्वारा इस्राएल के बच्चों को मिस्र जाने देने के पश्चात, वह उनके विरूद्ध हो गया और अपनी सेना को उनके पीछे भेजा दिया (निर्गमन 14:5...9) । इस्राएल के बच्चों ने क्या किया जब उन्होंने उनकी तरफ बढ़ती हुई सेना को देखा ? (देखें निर्गमन 14:10...12) । मूसा ने इस्राएल के बच्चों को क्या बताया था जब उनका विश्वास डगमगाने लगा था ? (देखें निर्गमन 14:13...14) । हम उस विश्वास को कैसे बढ़ा सकते हैं जो हमारे समर्थन के लिए पर्याप्त मात्रा में मजबूत हो जब हम डर से भरे हुए हों ?
- प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को उनकी तरफ बढ़ती हुई मिस्रियों की सेना से कैसे बचाया था ? (देखें निर्गमन 14:21...31) । परिक्षा के समय में यह कहानी कैसे हमारी सहायता कर सकती है ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि जैसे प्रभु ने इस्राएलियों को दासता से अपनी छुड़ाने की प्रतिज्ञा को पूरा किया था, वह हमसे की गई प्रतिज्ञाओं को भी पूरा करेगा । कक्षा के सदस्यों को, उद्धारकर्ता के प्रायश्चित बलिदान के प्रति उनकी प्रशंसा को बढ़ाने के लिए और प्रभुभोज को योग्यता और विचारशीलता से लेने के लिए प्रोत्साहन करें, ''उसे सदैव याद रखना'' (सि. और अनु. 20:77) के अनुबंध को रखते हुए ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. शैतान परमेश्वर की शक्ति का झुठा अनुकरण करता है

- फिरौन क्या करता है जब मूसा और हारून उसे परमेश्वर की शक्ति के चिन्हों को दिखाते हैं ? (देखें निर्गमन 7:8...12, 17...22) । इन आयतों से हम शैतान के बारे में क्या सीख सकते हैं ?
- कौन से कुछ तरीके हैं जिससे आज शैतान परमेश्वर की शक्ति का झुठा अनुकरण करता है ? अच्छे और बुरे के बीच पहचान में हमारी सहायता के लिए प्रभु ने कौन से उपहार हमें दिए हैं ? अच्छे और बुरे के बीच पहचानने की हमारी समर्थता को हम कैसे बढ़ा सकते हैं ?

2. विपत्ति

- प्रभु ने मिस्र के ऊपर विपत्तियों को क्यों भेजा ? (देखें निर्गमन 7:5, 17; 8:10; 9:14, 29; 10:2; 14:4) । विपत्तियों के प्रति फिरौन की क्या प्रतिक्रिया थी ? (देखें, उदाहरण के तौर पर, निर्गमन 8:8, 15, 25, 28, 32) । विपत्तियों ने इस्राएल के बच्चों को नुकसान क्यों नहीं पहुँचाया था ? (देखें निर्गमन 9:4...6, 23...26; 10:22...23; 11:4...7) ।

3. पर्व्व

जब आप शिक्षा दें कि कैसे यीशु मसीह का प्रायश्चित पर्व्व का एक प्रतीक है, पर्व्व के प्रतीकों के रूप में उदाहरण के लिए आप निम्नलिखित चीजों को प्राप्त करना चाहें:

क. एक मेम्ने और एक दरवाजे का चित्र

ख. गोलाकार और पतली बिना खमीर की रोटी जो भुट्टे या गेहूँ के आटा द्वारा बनाई गई हो, बिना खमीर की रोटी जो पतली और कुरकरी हो, या मैटजू (चिपटे हुए बिना खमीर की रोटी का प्रतिनिधित्व करने के लिए) ।

ग. सहिजन की जड़ों के द्वारा बनाया गया एक मसाला या लम्बी कुरकुरी पत्तियों के द्वारा बनाया गया सलाद (कड़वी औषधि के लिए) ।

घ. एक जोड़ी जुते या चप्पल (इस्राएलियों ने अपने जुतों को पहनकर खाना खाया था, जल्दीबाजी का प्रतीक है जिसमें उन्होंने मिस्र को छोड़ा था) ।

4. ''सबका बपतिस्मा हुआ...बादल में और समुद्र में'' (1 कुरिन्थियों 10:2)

आप 1 कुरिन्थियों 10:1...4 को पढ़ना चाहें, जहाँ पौलुस शिक्षा देता है कि इस्राएल के बच्चों को बादल और समुद्र में बपतिस्मा दिया जाएगा । इसकी के महत्व को समझाते हुए, एलडर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा था, ''''[पौलुस] कहता है, यहाँ तक कि इस्राएल, जब वे लाल समुद्र पार कर चुके थे, मिस्र के सांसारिकता से चले गए थे, ताकि उनके ईसाई वंशज, बपतिस्मा के द्वारा, मांस के लोभ का परित्याग करें और ईश्वरीय जीवनों को जाएं'' (*Doctrinal New Testament Commentary,* तीसरा संस्करण (1966...73), 2:355) ।

पाठ
14 ''तुम मेरे लिए एक असाधारण खजाना हो सकते हो''

निर्गमन 15...20; 32...34

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को प्रभु के आत्मिक पानी और रोटी को लेने, उसके चुने हुए मार्गदर्शकों का समर्थन करने, और उसकी आज्ञाओं का पालने करने के लिए प्रोत्साहन दें ताकि वह उन्हें एक ''पवित्र जाति'' बना सके (निर्गमन 19:6) ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. निर्गमन 15:22...27; 16:1...31; 17:1...7 । इस्राएल के बच्चे बड़बड़ाते हैं क्योंकि वे प्यासे और भूखे हैं, और प्रभु पानी, मन्ना, और बटेर प्रदान करता है ।

   ख. निर्गमन 17:8...13; 13...26 । अमालेकी इस्राएल से लड़ने के लिए आता है । जब मूसा अपने हाथों को ऊपर करता है तब इस्राएल विजयी होता है, परन्तु जब मूसा थक जाता है और अपने हाथों को नीचे करता है तब अमालेकी विजयी हो ता है । हारून और हूर मूसा के हाथों को पकड़कर ऊपर करते हैं, और और इस्राएल युद्ध जीत जाता है (17:8...13) । प्रधानों को नियुक्त करने और उन्हें अधिकार देने के लिए मूसा यित्रो के सलाह का अनुसरण करता है (18:13...26) ।

   ग. निर्गमन 19...20 । प्रभु मूसा से सीनै पर्वत पर मिलता है और इस्राएल को दस आज्ञाएं देता है ।

   घ. निर्गमन 32...34 । मूसा पत्थर की तख्तियों को प्राप्त करता है जिसपर प्रभु के आदेश होते हैं परन्तु तख्तियों को तोड़ देता है जब वह सीनै से वापस आता है और लोगों को एक सोने के बछड़े की उपासना करते हुए देखता है (31:18; 32:1...24) । प्रभु मसकिसिदक पौरोहित्य की धर्मविधियाँ इस्राएल से ले लेता है और उन्हें उससे छोटी आज्ञा देता है, मूसा की आज्ञा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, निर्गमन 34:1...2) । मूसा पत्थर की नई तख्तियों को काटता है उसकी जगह पर दिखाने के लिए जिसे उसने तोड़ा होता है, परन्तु नई तख्तियों पर पवित्र पौरोहित्य के अनन्त अनुबंध के शब्द नहीं होते हैं । (देखें निर्गमन 34:1...5; जोसफ स्मिथ अनुवाद, व्यवस्थाविवरण 10:2) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः भजन संहिता 78; 1 कुरिन्थियों 10:1...11; सिद्धांत और अनुबंध 84:19...27 ।

3. यदि आप पृष्ठ 64...65 के वस्तु पाठ का उपयोग करते हैं, कक्षा के लिए कई पुस्तकों या भारी वस्तुएं लाएं ।

4. यदि पुराना नियम विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) उपलब्ध हो, पाठ के हिस्से के रूप में आप ''आधुनिक मूर्तिपूजा'' एक सात मिनट के खण्ड को दिखाना चाहें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

- कल्पना करें कि आपको एक जंगल की यात्रा करनी होगी जहाँ आप कभी भी नहीं गए हैं और जिसका मानचित्र भी नहीं बनाया गया है । इस यात्रा की तैयारी आप कैसे करेंगे ? (उत्तर विभिन्न हो सकते हैं, परन्तु एक मार्गदर्शक को खोजना एक सहायक तैयारी होगा) ।
- किन योग्यताओं को आप चाहेंगे कि एक मार्गदर्शक में हो जो एक जंगल के क्षेत्र में जाने के लिए आपका मार्गदर्शन कर रहा है ? (उत्तर विभिन्न हो सकते हैं, परन्तु मार्गदर्शक को उस क्षेत्र की पहचान होनी चाहिए और वह विश्वासयोग्य होना चाहिए) ।
- उनके मिस्र में चले जाने और जंगल में प्रवेश करने के पश्चात कौन मूसा और इस्राएल के बच्चों को मार्गदर्शक था ? (प्रभु) ।

संकेत करें कि इस्राएलियों के वे अनुभव जिसे उन्होंने जंगल की यात्रा करते वक्त किया था वह हमें महत्वपूर्ण पाठों की शिक्षा दे सकते हैं जब हम नश्वरता की यात्रा करते हैं । एक महत्वपूर्ण पाठ यह है कि हमें हमारे लिए मार्गदर्शन और देखभाल के लिए परमेश्वर पर विश्वास कर सकते हैं जैसा कि उसने इस्राएलियों के साथ किया था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों । क्योंकि प्रत्येक प्रश्न को पूछना या पाठ में प्रत्येक बात को पूरा करना कठिन होगा, प्रार्थनापूर्वक उनका चुनाव करें जो कक्षा की आवश्यकताओं को अच्छी तरह पूरा करता हो ।

1. प्रभु इस्राएल के बच्चों के लिए पानी, मन्ना, और बटेर प्रदान करता है।

निर्गमन 15:22...27; 16:1...31; और 17:1...7 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

इस्राएलियों के लाल समुद्र को पार करने के पश्चात, प्रभु ने मूसा को प्रतिज्ञा की गई भूमि के लिए उनका मार्गदर्शन करने का आदेश दिया । परन्तु पहले प्रभु ने जंगल में इस्राएलियों के विश्वास की परिक्षा ली । कई लोगों के पास विश्वास की कमी थी, बजाय प्रभु के तरफ जाने के वे उसके प्रति बड़बड़ाने लगे थे । फिर भी, प्रभु ने उनकी प्यास के लिए पानी और उनकी भूखे के लिए मन्ना और बटेर को प्रदान किया था ।

- निर्गमन 15:22...24 और 17:1...3 में इस्राएलियों ने किस समस्या का सामना किया था ? मूसा ने कैसे जवाब दिया जब लोग उसके विरूद्ध बड़बड़ाने लगे ? (देखें निर्गमन 15:25; 17:4 । वह प्रभु के पास सहायता के लिए गया) । मूसा के जवाब से हम क्या सीख सकते हैं ? सहायता के लिए मूसा की प्रार्थना के प्रति प्रभु ने कैसे जवाब दिया ? (देखें निर्गमन 15:25...26; 17:5...7) ।

- इस्राएल के बच्चों के लिए प्रभु ने भौतिक और आत्मिक पानी को प्रदान किया था । भौतिक पानी उस पत्थर से आया था जिसपर मूसा ने प्रहार किया था; ''आत्मिक पानी'' ''आत्मिक पत्थर'' से आया, जोकि मसीह है (1 कुरिन्थियों 10:4) । आत्मिक पानी क्या है जो मसीह से आता है ? (देखें 1 नफी 11:25) । हम उस पानी को कैसे पी सकते हैं ? उनके प्रति क्या प्रतिज्ञा की गई है जो उस पानी को पीते हैं ? (देखें यूहन्ना 4:14; सि. और अनु. 63:23) ।

- निर्गमन 16:2...3 में इस्राएलियों ने किस समस्या का सामना किया था ? प्रभु ने कैसे जवाब दिया था ? (देखें निर्गमन 16:4, 11...15) । लोगों की भूख मिटाने के अतिरिक्त, मन्ना को भेजने के कुछ अन्य उद्देश्य क्या थे ?

  क. यह प्रभु को दिखाएगा कि उसके लोग उसका आज्ञापालन करेंगे (निर्गमन 16:4, 16...31) ।
  ख. यह लोगों को हमेशा प्रभु की शक्ति और उसके प्रेम की याद दिलाएगा (निर्गमन 16:12) ।
  ग. यह लोगों को सीखाएगा कि ''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीवित रहता, परन्तु जो वचन यहोवा के मुँह से निकलते हैं उन ही से वह जीवित रहता है'' (व्यवस्थाविवरण 8:3) ।
  घ. यह लोगों को नम्र बनाएगा और उन्हें उद्धार को प्राप्त करने में सहायता करेगा (व्यवस्थाविवरण 8:16) ।

- आपके विचार से इन उद्देश्यों में से प्रत्येक को पूरा करने में भेजे गए मन्ना ने कैसे सहायता किया था ? हमारे जीवन में इन उद्देश्यों में से प्रत्येक को प्रभु कैसे पूरा करता है ?

- मन्ना कैसे मसीह का एक प्रतिनिधि है ? (देखें यूहन्ना 6:35) । मसीह की जीवन देने वाली रोटी मन्ना से कैसे भिन्न है ? (देखें यूहन्ना 6:48...51) । कैसे हम हमेशा मसीह के जीवन देने वाली रोटी को लेते हैं ?

- शारीरिक बल को बनाए रखने के लिए इस्राएलियों को प्रति दिन मन्ना इकट्ठा करने की आवश्यकता थी । यह किस तरह से वैसे हो सकता था जैसे कि हमें आत्मिक बल को बनाए रखने के लिए क्या करना होगा ? (जैसा हमें शारीरिक बल को बनाए रखने के लिए हमेशा पोषण की आवश्यकता होती है, बिल्कुल वैसे ही आत्मिक बल को बनाए रखने के लिए हमेशा हमें पोषण की आवश्यकता होती है । हम आत्मिक पोषण की प्रत्याशा नहीं कर सकते यदि हम धर्मशास्त्रों का अध्ययन और प्रार्थना कभी कभी करते हों) ।

- अक्सर क्या होता था जब इस्राएली मन्ना को रात भर के लिए रख देते थे ? (देखें निर्गमन 16:19...20) । क्या हुआ था जब सब्त की तैयारी के लिए उन्होंने मन्ना को रात भर के लिए रख दिया था ? (देखें निर्गमन 16:22...25) । यह सिद्धांत हमारे सब्त की साप्ताहिक तैयारी के लिए कैसे लागू हो सकता है ?

- इस्राएलियों के साथ क्या हुआ होता यदि उन्होंने बिना प्रभु की सहायता के जंगल पार करने की यात्रा की कोशिश की होती ? हमारे साथ क्या होगा यदि हम बिना प्रभु की सहायता के नश्वरता की यात्रा करने की कोशिश करें ?

2. हारून और हूर मूसा के हाथों को पकड़ते हैं इसलिए इस्राएल अमालेकी के विरूद्ध युद्ध जीत जाता है। प्रधानों को नियुक्त करने और उन्हें अधिकार देने के लिए मूसा यित्रो के सलाह का अनुसरण करता है।

निर्गमन 17:8...13 और 18:13...26 की शिक्षा दें और चर्चा करें । संकेत करें कि ये दोनों विवरण हमें गिरजाघर के मार्गदर्शकों के प्रति सहायता और समर्थन के महत्व की शिक्षा देते हैं ।

- अमालेकियों ने इस्राएल के बच्चों के साथ कई वर्षों तक युद्ध किया था, मूसा के समय से आरंभ करते हुए । निर्गमन 17:8...13 में किए गए वर्णन में इस्राएली युद्ध में अमालेकी के लोगों को हराने में कैसे समर्थ हुए थे ? (जब हारून और हूर ने मूसा के हाथों को पकड़ने के द्वारा उसका समर्थन किया था, इस्राएल युद्ध में विजयी हुआ था) । आज हम किस तरह के आत्मिक युद्धों को लड़ते हैं ? भविष्यवक्ता का समर्थन करना कैसे इन युद्धों में विजयी होने में हमारी सहायता करता है ?

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था: ''मुझे स्मरण कराया जाता है कि कैसे इस्राएल की सेना के विजयी होने के लिए मूसा ने पहाड़ी पर अपने हाथों को ऊपर उठा रखा था । जब तक उसके हाथ ऊपर उठे रहे, इस्राएल जीत गया, परन्तु जब थकान से वे नीचे गिर गए, तब शत्रु जीत गया । और इसलिए हारून और हूर ने 'उसके हाथों को खड़ा रखा था, एक तरफ एक ने, और दूसरी तरफ दूसरे ने', और इस्राएल विजयी हुआ था (निर्गमन 17:12) । इसी तरह हम भी विजयी होंगे जब हम प्रभु के नियुक्त सेवकों के हाथों को पकड़ेंगे'' (Conference Report में, 1986, 98; या *Ensign,* मई 1986,77) ।

- यित्रो को किस बात की चिन्ता होने लगी थी जब वह लोगों को सारे दिन और शाम को मूसा के पास आते देखता थे ? (देखें निर्गमन 18:13...18) । यित्रो ने मूसा को क्या करने की सलाह दी ? (देखें निर्गमन 18:19...23) ।

- निर्गमन 18:16...20 में एक भविष्यवक्ता की किन जिम्मेदारियों का वर्णन किया गया है ?

  आप इच्छा कर सकते हैं कि कक्षा के सदस्य इन आयतों में जिम्मेदारियों को देखें, फिर चॉकबोर्ड पर उत्तरों को सूचिबद्ध करें । आप निम्नलिखित वस्तु पाठ का उपयोग करने की इच्छा भी कर सकते हैं: कक्षा के एक सदस्य को उसकी बाहों को बाहर के तरफ करने के लिए आमंत्रित करें । जैसे ही पहली जिम्मेदारी की पहचान हो जाए, कक्षा के सदस्य के हाथों पर एक किताब या अन्य भारी वस्तु रखें । दूसरी किताब या भारी वस्तु एक एक करके रखते जाएं जैसे जैसे अन्य जिम्मेदारियों की पहचान होती जाएगी ।

  क. लोगों के लिए एक न्यायधीश बनना (निर्गमन 18:16) ।
  ख. परमेश्वर के समक्ष लोगों का प्रतिनिधि बनना (निर्गमन 18:19) ।
  ग. ''उन्हें धर्मविधियों और आज्ञाओं की शिक्षा देना'' (निर्गमन 18:20) ।
  घ. ''उन्हें वह मार्ग [दिखाना] जिसपर उन्हें चलना होगा'' (निर्गमन 18:20) ।
  च. ''उन्हें वह काम [दिखाना] जिसको उन्हें करना होगा'' (निर्गमन 18:20) ।

- आज हम कैसे हाथों को पकड़ सकते हैं और हमारे भविष्यवक्ता और प्रेरितों के बोझों को कम कर सकते हैं ? (देखें सि. और अनु. 21:4...5; 107:22 । जब कक्षा के सदस्य सुझावों को बताएं, कक्षा के उस सदस्य की बाहों से कुछ पुस्तकों या अन्य वस्तुओं को लेते जाएं जिसने उन्हें पकड़ रखा है) ।

- हम हमारे स्थानीय गिरजाघर के मार्गदर्शकों को कैसे सहारा और समर्थन देते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है: उनसे अच्छे से बात करना, हमारी गिरजाघर की बुलाहटों में श्रद्धापूर्वक सेवा करना, और अच्छे घर के शिक्षक या भेंट करने वाली शिक्षिका बनना) ।

- आप कैसे आशीषित हुए हैं जब आपने गिरजाघर के मार्गदर्शकों को सहारा दिया है ? (इस चर्चा में आप सि. और अनु. 21:6 का उपयोग करना चाहें) ।

3. प्रभु पर्वत सीनै पर मूसा से मिलता है और इस्राएल को दस आज्ञाएं देता है।

निर्गमन 19...20 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- इस्राएल का जंगल में प्रवेश करने के तीन महीनों के अन्दर, प्रभु उनके साथ अपने अनुबंध को स्थापित करना चाहता था (निर्गमन 19:5...6) । इस अनुबंध के हिस्से के रूप में उसने मूसा के लिए दस आज्ञाओं का प्रकटीकरण किया ।

- जब इस्राएल के बच्चों ने पर्वत सीनै पर छावनी डाल रखी थी, प्रभु ने क्या प्रतिज्ञा किया था यदि वे उसकी आज्ञा का पालन करेंगे ? (देखें निर्गमन 19:3...6 । वह उन्हें ''एक उसकी निजी धन,...याजकों का राज्य, और एक पवित्र जाति'' बनाएगा) । इन प्रतिज्ञाओं का क्या मतलब है ? आज ये प्रतिज्ञाएं हमपर कैसे लागू होती हैं ?

  इन प्रतिज्ञाओं का मतलब है कि इस्राएल प्रभु के अनुबंधित लोग बनेगा, सारे लोगों के ऊपर कृपादृष्टि पाया हुआ और चुना हुआ, सारे लोगों के लिए पौरोहित्य और सुसमाचार को बताने के लिए (व्यवस्थाविवरण 7:6; 14:1...2; 1 पतरस 2:9 को भी देखें) ।

- प्रभु कौन से अनुभव को चाहता है कि उसके लोग पर्वत सीनै पर करें ? (देखें निर्गमन 19:9, 11, 16...17; सि. और अनु. 84:23) । प्रभु क्या चाहता है कि उसके लोग, उससे मिलने के पहले करें ? (देखें निर्गमन 19:10, 14)

- पर्वत सीनै एक पवित्र स्थान था जहाँ प्रभु उसके लोगों के साथ बात करना चाहता था और उन्हें स्वयं को दिखाना चाहता था । किन पवित्र स्थानों को उसने प्रदान किया है जहाँ पर हम इन आशीषों को प्राप्त कर सकते हैं ? (मंदिर; देखें सि. और अनु. 97:15...16; 109:12...13) । कक्षा के सदस्यों को बताने के लिए आमंत्रित करें कि कैसे मंदिर ने प्रभु की आवाज को सुनने और उसकी उपस्थिति को महसूस करने में उनकी सहायता की है ।

- निर्गमन 20 में दी गई पहली चार आज्ञाएं, हमारे और परमेश्वर के बीच के सही संबंध की शिक्षा देती हैं (निर्गमन 20:3...11) । कैसे आज, केवल प्रभु को छोड़ किसी और परमेश्वर की आराधना न करने की आज्ञा प्रासंगिक है ? आज कुछ लोग किन झुठे परमेश्वरों की आराधना करते हैं ? (देखें 1 शमूएल 15:23; इफिसियों 5:5; सि. और अनु. 1:15...16) ।

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कहा थाः

  ''मूर्तिपूजा पापों में सबसे गंभीर पाप है...आधुनिक मूर्तियाँ या परमेश्वर, कपड़े, घर, व्यापार, मशीने, मोटर कार, आनंददायक जहाजें, और अन्य सांसारिक चीजें या संपत्तियां जो हमें परमेश्वरत्व के मार्ग से दूर करता है, के रूप में हो सकते हैं...

  स्पर्शागम्य चीजें आसानी से हमारे लिए झुठे परमेश्वर या झुठी मूर्तियाँ बन जाती हैं । विश्वविद्यालय की उपाधियाँ और दौड़ में पाया गया पुरस्कार और मुख्य स्थान या कार्यालयों में दिए गए खिताब मूर्तियाँ बन सकते हैं ।

  ''कई लोग पहले एक घर बनाते हैं, उसे व्यवस्थित करते हैं और मोटर गाड़ी खरीदते हैं...और तब उनके पास दसमांश देने के लिए पर्याप्त रकम नहीं होती है । वे किसकी आराधना करते हैं ? निश्चय ही स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु का नहीं...

  ''कई लोग एक बन्दुक के साथ हिरन, बतक इत्यादि की आराधना करते हैं, मछली पकड़ते हैं, बाहर घुमने जाते हैं, सप्ताह के अंत में पिकनिक या बाहर जाते हैं । अन्यों के पास उनकी मूर्तियों के रूप में खेल-कूद, बेजबॉल, फूटबॉल, बैलों के झगड़े, या गोल्फ होते हैं...

  ''एक और अन्य चीज की लोग आराधना करते हैं और वह है बल और प्रतिष्ठा की...परमेश्वर के ये बल, धन, और प्रभाव हमारे बहुत से समय को ले लेते हैं और उतनी ही वास्तविक है जितना कि जंगल में इस्राएल के बच्चों के लिए सुनहरा व्याना था'' (*The Miracle of Forgiveness* [1969], 40–42).

- कौन से कुछ तरीके हैं जिससे लोग परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेते हैं ? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम उसके नाम व्यर्थ में न लें ?

- हमारे लिए सब्त के दिन को पवित्र रखना क्यों महत्वपूर्ण है ? (देखें निर्गमन 20:8; 31:16...17; यशायाह 58:13...14; सि. और अनु. 59:9...10) । हमें कैसे निर्धारित करना चाहिए कि कौन सी गतिविधियाँ सब्त के लिए उपयुक्त हैं ? आप कैसे आशीषित हुए हैं जब आपने इस दिन को पवित्र रखा है ?

- छः आज्ञाओं की समीक्षा करें जो दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों से संबंधित हो (निर्गमन 20:12...17) । इन आज्ञाओं का पालन करना कैसे दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों को सुधारता है ? (आप व्यक्तिगत आज्ञाओं पर प्रकाश डालना चाहें, उनका मतलब बताते हुए और उपयुक्तता के अनुसार उनपर चर्चा करते हुए) ।

4. प्रभु मूसा के नियम से परिचित करता है।

निर्गमन 32...34 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

जब प्रभु ने पर्वत सीनै पर मूसा के साथ बात किया था, उसने एक नियम का प्रकटीकरण किया था जिसमें मलकिसिदक पौरोहित्य की धर्मविधियाँ सम्मिलित थीं (सि. और अनु. 84:19...23) । फिर भी, इस्राएलियों का मूर्ती पूजा का व्यवहार दिखाता था कि वे सुसमाचार की संपूर्णता को जीने के लिए तैयारी नहीं थे (निर्गमन 32:1...9; सि. और अनु. 84:24) । क्योंकि वे प्रभु को शीघ्र ही भूल गए थे, उसने उनसे मलकिसिदक पौरोहित्य वापस ले लिया था और उससे छोटे नियम का प्रकटीकरण किया था...मूसा की आज्ञा (जोसफ स्मिथ अनुवाद, निर्गमन 34:1...2; सि. और अनु. 84:25...27) ।

मूसा की आज्ञा, सुसमाचार की आज्ञाओं, अनुबंधों, या सिद्धांतों के स्थान के बदले नहीं थीं । इसकी बजाय, उनको एक धार्मिक व्यवहार का नियम दिया गया जिसे उन्हें दिन प्रतिदिन परमेश्वर और उसके प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने की याद में दृढ़ता के साथ पालन करना था (मुसायाह 13:30) । मूसा का नियम लोगों को उनके पापों का पश्चाताप करने और उनका भुगतान करने के लिए, जानवरों के बलिदान में कठिन नियमों का पालन करने के लिए, उनके शरीरों को स्वस्थ रखने के लिए, प्रभु के कार्य में सहारा देने के लिए, धन्यवाद देने के लिए, और परमेश्वर के साथ मेल के लिए शिक्षा देता था ।

- प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को मूसा के नियम को क्यों दिया था ? (देखें गलतियों 3:23...24; मुसायाह 13:29; अलमा 25:15...16; सि. और अनु. 84:19...27) । इन नियम ने इस्राएल को पवित्र बनाने और उन्हें मसीह के पास लाने में कैसे सहायता किया होगा ? (देखें मुसायाह 13:30; अलमा 34:14...15) ।

- मूसा का नियम कब पूरा हुआ था ? (देखें 3 नफी 15:4...10) । अब जब प्रभु को जानवरों के बलिदान की आवश्यकता नहीं रही, मूसा के नियम का एक महत्वपूर्ण भाग कौन सा था, कौन सा बलिदान वह हमसे करने के लिए कहता है ? (देखें 3 नफी 9:19...22) । एक टूटा हुआ हृदय और एक पश्चातापी आत्मा का क्या मतलब है ?

एल्डर एम. रसल बलार्ड ने सीखाया हैः

''यद्यपि मूसा की आज्ञाएं पूरी हुई थीं, बलिदान की आज्ञा का नियम गिरजाघर के सिद्धांत के एक भाग के रूप में जारी रहा ।

''जबकि बलिदान के नियम का प्राथमिक उद्देश्य, मसीह के पास आने के लिए हमारी परीक्षा और सहायता के लिए जारी रहा, मसीह के आखिरी बलिदान के पश्चात दो समझौते किए गए थे । पहला, प्रभुभोज की धर्मविधि को [जानवर] के बलिदान की धर्मविधि के स्थान पर रखा गया; और दूसरा, इस बदलाव को एक व्यक्ति के जानवर के बलिदान से उसके स्वयं के बलिदान पर प्रकाश डाला । एक समझ में, बलिदान को भेंट के बदले भेंट चढ़ाने वाले में बदल दिया गया था...

''...उसकी नश्वर सेवकाई के पश्चात, मसीह ने बलिदान के नियम को एक नए स्तर के लिए निकाल दिया था...बजाय कि प्रभु की आवश्यकता के लिए एक व्यक्ति के जानवर या अनाज के, अब प्रभु चाहता है कि हम वह सब उसे दे दें जोकि अधार्मिक हो । यह बलिदान के नियम का एक उच्च प्रथा है; यह एक व्यक्ति की अंतरात्मा में पहुँचता है'' (*The Law of Sacrifice* [address delivered at the Church Educational System Symposium, 13 Aug. 1996], 5).

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को गवाही दें कि यदि वे प्रभु के आत्मिक पानी और रोटी को लेंगे, उसके चुने हुए मार्गदर्शकों का समर्थन करेंगे, और उसकी आज्ञाओं का पालन करेंगे, वह उन्हें उसके पवित्र पर्वत पर आमंत्रित करेगा...मंदिर । वहाँ वे उसके साथ मिल सकते हैं, उसकी आज्ञाओं को प्राप्त कर सकते हैं, उसकी महिमा को देख सकते हैं, और उसकी तरह बनने के लिए प्रेरित हो सकते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. दस आज्ञाएं

ध्यान दें कि व्यवस्थाविवरण 5:5...21, मुसायाह 12:33...36 और 13:12...24, और सि. और अनु. 42:18...27 और 59:5...16 में दस आज्ञाएं दोहराई गई हैं । दस आज्ञाओं पर और प्रकाश डालने के लिए इन उद्धरणों की समीक्षा करें ।

2. सोने का बछड़ा

आप सोने के बछड़े को बनाने और उसकी आराधना करने की कहानी पर चर्चा करना चाहें जैसा कि निर्गमन 32 में अभिलेखित किया गया है । कई सिद्धांतों को इस कहानी से बनाया जा सकता है, नीचे दी गई दो को सम्मिलित करते हुएः

क. पुरानी आदतों और विश्वास और व्यवहार के तरीकों को तोड़ना कठिन होता है । यहाँ तक कि इस्राएलियों ने भी मिस्र को शारीरिक तौर पर छोड़ दिया था, तब भी उसके प्रभाव से वे आत्मिक तौर पर आजाद नहीं हुए थे । सीनै पर्वत से परमेश्वर का दस आज्ञाओं की घोषणा की आवाज को सुनने के पश्चात, उन्होंने बहुत जल्दी ही पहले की दो आज्ञाओं को तोड़ा था ।

ख. नकारात्मक दिखाई देने वाले प्रभाव को रोकना महत्वपूर्ण है । हारून इस्राएलियों की अधार्मिक इच्छाओं को मान गया था । एक समय पर, मार्गदर्शकों और माता-पिता को कहना होगा ''नहीं'', यहाँ तक कि उनके प्रति नफरत की भावना को जगाने के लिए जिसके लिए वे जिम्मेदार हैं ।

''परमेश्वर के तरफ देखो और जीओ''

पाठ
15

गिनती 11...14; 21:1...9

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सांसारिक इच्छाओं से ऊपर उठने और डरने और मार्गदर्शन के लिए उद्धारकर्ता और उसके भविष्यवक्ताओं के तरफ देखने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. गिनती 11 । इस्राएली मन्ना के बारे में शिकायत करते हैं और मांस खाने की इच्छा करते हैं ।(11:1...9) । मूसा प्रभु से सहायता के लिए पूछता है और उसके बोझ को ढोने में उसकी सहायता के लिए (11:10...15) । जैसा कि प्रभु द्वारा आदेश दिया गया था, मूसा ने अपनी सहायता के लिए 70 पुरनियों को एकत्रित किया (11:16...17; 24...30) । बहुत अधिकतार मात्रा में बटेरों को भेजने के द्वारा प्रभु ने इस्राएलियों का मांस खाने की इच्छा का उत्तर दिया और उनके लालच और दण्डमोचन के कारण उन्हें एक विपत्ति के साथ मारा (11:18...23, 31...35) ।

   ख. गिनती 12 । मरियम और हारून मूसा के विरूद्ध में बातें करते हैं, एक कूशी स्त्री से उसके विवाह की शिकायत करते हुए और उसे उनके सभापति अधिकारी के रूप में चुनौती देते हुए (12:1...3) । प्रभु मरियम और हारून को उनकी बड़बड़ाहट के लिए परिष्कृत करता है और दण्ड देता है (12:4...16) ।

   ग. गिनती 13...14 । मूसा बारह पुरूषों को कनान की धरती को खोजने के लिए आदेश देता है (13:1...20; ध्यान दें कि आयत 16 में ''होशे'' का ही नाम यहोशू है) । वे धरती के साधनों के अनूकुल रिर्पोट के साथ लौटे, परन्तु यहोशू और कालेब के अलावा सारे लोग प्रजातियों से डरते थे और वापस मिस्र लौट जाना चाहते थे (13:21...14:10) । प्रभु मूसा को बताता है कि विश्वासरहित और शिकायत करने वाले इस्राएली 40 वर्षों तक जंगल में भटकेंगे, जब तक कि यहोशू और कालेब के अलावा सारी युवा पीढ़ी खत्म नहीं हो जाती (14:11...39) ।

   घ. गिनती 21:1...9 । इस्राएली कनानियों का विनाश कर देते हैं जोकि उनके विरूद्ध आते हैं (21:1...3) । प्रभु तेज विष वाले सांपों को दण्ड के रूप में इस्राएलियों के निरन्तर शिकायतों के लिए भेजता है (21:4...6) । मूसा एक पीतल का सांप बनाता है, उसे एक खम्भे पर लटका देता है, और लोगों को बताता है कि यदि वे उसकी तरफ देखते हैं तो वे बच जाएंगे (21:7...9) ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: यूहन्ना 3:14...16; 1 नफी 17:41; अलमा 33:18...22; 37:46...47; इलामन 8:13...15 ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, शब्द *प्रतिज्ञा की भूमि* का एक पोस्टर बनाएं ।

4. यदि मूसा और पीतल के साँप का चित्र उपलब्ध हो, आप उसका उपयोग पाठ के दौरान करना चाहें (62202) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

चॉकबोर्ड पर शब्द *मिस्र* लिखें । कमरे के दूसरे तरफ एक पोस्टर रखें जिसपर शब्द *प्रतिज्ञा की भूमि* लिखा हो । कक्षा के एक सदस्य को, उसके कंधे के ऊपर से शब्द *मिस्र* को देखते हुए चॉकबोर्ड से पोस्टर के पास चलने की चुनौती दें ।

यदि कक्षा के सदस्य को पोस्टर तक पहुँचने में कठिनाई होती हो, निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- जब आप पीछे देखते हैं तब आपके लिए सीधा आगे जाना मुश्किल क्यों होता है ?

यदि कक्षा का सदस्य पोस्टर तक आसानी से पहुँच जाता है, निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- आपके विचार से सीधे पंक्ति का बिना खयाल किए आप कहाँ तक चल सकते हैं ? सीधा आगे जाना कठिन क्यों होता है जब आप पीछे देखते हैं ?

समझाएं कि इस प्रमाण की तुलना इस्राएलियों की मिस्र की यात्रा के साथ किया जा सकता है । इस्राएलियों का प्रभु से आशीषों को प्राप्त करने की बजाय, उनका डर और विश्वास की कमी अक्सर उन्हें अहसास दिलाता कि काश उनको मिस्र को नहीं छोड़ना होता । मिस्र के प्रति उनके लालच ने प्रतिज्ञा की गई भूमि की उनकी यात्रा में विलम्ब किया और उसे जटिल बनाया ।

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों । क्योंकि कक्षा में प्रत्येक प्रश्न को पूछना या प्रत्येक चीज को पूरा करना कठिन हो सकता है, प्रार्थनापूर्वक उनका चुनाव करें जो कक्षा की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से पूरा करता हो । कक्षा के सदस्यों की परिस्थितियों के अनुसार आपको कुछ प्रश्नों को बनाने की आवश्यकता हो सकती है ।

1. प्रभु बटेर को भेजने के द्वारा इस्राएलियों के लिए मांस की इच्छा का उत्तर देता है और उन्हें एक विपत्ति के साथ मार डालता है।

गिनती 11 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- यहाँ तक मन्ना भी प्रभु के तरफ से एक महान आशीष थी, इस्राएली उसके बारे में शिकायत करने लगे थे (गिनती 11:6) । उनकी शिकायत ने क्या प्रेरित किया था ? (देखें गिनती 11:4...5; उन्होंने मांस और अन्य खाद्य पदार्थों की इच्छा के बारे में सोचना आरंभ कर दिया था जिसे उन्होंने मिस्र में खाया होता) । हमार पास जितना है उससे अधिक चाहने का क्या खतरनाक परिणाम है ?

- मांस के लिए इस्राएली इतने लालायित हो गए थे कि उन्होंने प्रतिज्ञा की गई भूमि पर ध्यान देना छोड़ दिया था और आशा करने लगे थे कि काश उन्होंने मिस्र को नहीं छोड़ा होता (गिनती 11:4...6) । इच्छा को तुरन्त संतुष्ट करने के लिए, महान आशीषों को खोने के आधुनिक दिन के लोगों के कुछ कौन से उदाहरण हैं ? लोग यह क्यों करते हैं ? इस तरह के लालचों से हम कैसे बाहर आ सकते हैं ?

- प्रभु मांस के लिए इस्राएलियों की इच्छा का उत्तर कैसे देता है ? (देखें गिनती 11:18...20; 31...33) ।

- इस्राएलियों के पापों के द्वारा मूसा पर इतना भार था कि उसने प्रभु से उसके जीवन को समाप्त करने के लिए पूछा (गिनती 11:14...15) । प्रभु ने उसे कैसे समाधान दिया था ? (देखें गिनती 11:16...17 । मूसा की सहायता के लिए 70 लोगों की बुलाहट हुई थी) । इन लोगों ने किन महान आशीषों को प्राप्त किया था ? (देखें गिनती 11:24...29) ।

2. प्रभु ने मरियम और हारून को मूसा के विरूद्ध बोलने के लिए परिष्कृत किया।

गिनती 12 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- मूसा का उनके संचालक अधिकारी होने के विरूद्ध मरियम और हारून उसके विरूद्ध बोले थे, संकेत करते हुए कि उन्होंने भी प्रकटीकरण प्राप्त किया था (गिनती 12:2) । उनकी शिकायत के लिए प्रभु का उत्तर क्या था ? (देखें गिनती 12:5...9) । प्रकटीकरण प्राप्त करने के हमारे अधिकार के लिए क्या सीमाएं हो सकती हैं ?

  एल्डर जेम्स ई. फॉस्ट ने कहा था: ''भविष्यवक्ता, दिव्यदर्शी, और प्रकटीकरणकर्ता के पास, संसार के लिए परमेश्वर के शब्द को प्राप्त करने और उसकी घोषणा करने की जिम्मेदारी और अवसर पहले भी था और अब भी है । प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्य, माता-पिता, और मार्गदर्शकों के पास उनकी स्वयं की जिम्मेदारी के लिए प्रकटीकरण प्राप्त करने का अधिकार है परन्तु उनकी स्वयं की जिम्मेदारी की सीमाओं से आगे परमेश्वर के शब्द को घोषित करने का ना तो काम है और ना ही अधिकार'' (Conference Report में, अक्टू. 1989, 9; या *Ensign,* नव. 1989, 8) ।

- मूसा के एक कूशी स्त्री से विवाह करने के बारे में शिकायत के लिए प्रभु ने मरियम और हारून को परिष्कृत और दण्डित किया था (गिनती 12:1, 9...10) । हम कैसे प्रभावित होते हैं जब हम गिरजाघर के मार्गदर्शकों की आलोचना करते हैं ? कैसे गिरजाघर के मार्गदर्शकों के प्रति हमारा आलोचन हमारे परिवार और दोस्तों को प्रभावित करता है ?

- गिनती 12:3 कहता है कि ''मूसा बहुत नम्र था'' । नम्र होने का क्या मतलब है ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था, ''विनम्रता में एक आभार की आत्मा समाविष्ट होती है इसके विरूद्ध कि आत्मनिर्भरता में एक व्यवहार का, किसी एक से आगे एक महान शक्ति के आभार का, परमेश्वर की एक पहचान का, और उसकी आज्ञाओं को स्वीकार ने का समावेश होता है'' ("With All Thy Getting Get Understanding," *Ensign,* अगस्त 1988, 3...4) ।

- मूसा ने अपनी विनम्रता को कैसे दिखाया जब मरियम को उसके विरूद्ध हो जाने पर दण्डित किया गया था ? (देखें गिनती 12:13...15 । बजाय अपनी बहन के ऊपर अपने अधिकार के साथ प्रसन्न होने के, उसने प्रभु से उसे चंगा करने की याचना की । उसने और उसके लोगों ने अपनी यात्रा को उसके चंगा होने तक स्थगित कर दिया) । हम कैसे विनम्र हो सकते हैं, यहाँ तक कि जब लोग हमारी आलोचना करते हैं या हमारे विरूद्ध हो जाते हैं ? विनम्रता के साथ आलोचन का जवाब देने में यह हमारी कैसे सहायता करता है ?

3. मूसा 12 पुरूषों को कनान की भूमि को खोजने का आदेश देता है।

गिनती 13...14 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- जब इस्राएली कनान की भूमि की सीमा पर पहुँचे, मूसा ने 12 पुरूषों को भूमि, उसके साधनों, और उसके लोगों की खोज के लिए भेजा था (गिनती 13:17...20) । धरती के साधनों के किन रिपोर्ट को वे लाए थे ? (देखें गिनती 13:23...27) । कालेब और यहोशू के अलावा बाकी बचे दस पुरूषों ने उन लोगों के बारे में क्या रिपोर्ट दी थी जो कनान में रहते थे ? (देखें गिनती 13:28...33) । हममें से कुछ कैसे समान गलती को करते हैं जैसा कि इन 10 पुरूषों ने किया था ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः

  ''दस जासूस अपने स्वयं के संदेह और डर के कारण अपराधी थे । उन्होंने कनानियों की संख्या और बनावट के बारे में एक नकारात्मक रिपोर्ट दिया था...उन्होंने अपनी तुलना राक्षसों के सामने टिड्डों के रूप में किया जिन्हें उन्होंने भूमि पर देखा था...

  ''इस कार्य के भविष्य से संबंधित हम कुछ विभिन्न लोगों को अपने आस-पास देखते हैं, जो उदासीन होते हैं, जो सीमा में रहकर बात करते हैं, जो डरते हैं, जो अपना समय बाहर खोजने और लिखने में व्यतीत करते हैं जिसे वे कमजोरी समझते हैं जिसका वास्तव में कोई परिणाम नहीं होता । भविष्य के गिरजाघर के या भूमि पर परमेश्वर के राज्य के कार्य से संबंधित संदेह के साथ, उसके भविष्य से संबंधित उनके पास कोई कल्पनाशक्ति नहीं होती है'' (Conference Report में, अक्टू. 1995, 93...94; या *Ensign,* नव. 1995, 71) ।

- कालेब और यहोशू का रिपोर्ट अन्य दस पुरूषों के रिपोर्ट से भिन्न कैसे था ? (देखें गिनती 13:30; 14:6...9) । कालेब और यहोशू कनान की प्रजातियों से क्यों नहीं डरे थे ? (देखें गिनती 14:9) । कौन से कुछ तरीके हैं जिससे हम कालेब और यहोशू के उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं जब हम कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः

  ''इस कार्य में उनके लिए कोई स्थान नहीं है जो केवल पराजय या अप्रसन्नता या निराशा के सुसमाचार में विश्वास करते हैं । सुसमाचार एक खुशखबर है । यह एक विजय का संदेश है । यह एक कारण है जिसे जोश के साथ स्वीकार करना होगा ।

  ''प्रभु ने कभी नहीं कहा है कि कोई परेशानी नहीं होगी । हमारे लोगों ने हर समय कठिनाइयों का सामना किया है जब इस कार्य के विरूद्ध में लोगों ने उन पर शारीरिक तौर पर या शब्दों से वार किया है । परन्तु इन सारे दुःखों में विश्वास ने उनकी सहायता की है । यह कार्य ने अपने प्रारंभ से लगातार आगे बढ़ता रहा है और कभी भी पीछे नहीं मुड़ा है...

  ''इस समय संसार में बहुत निराशावाद है । हमारा मिशन एक विश्वास का है । मेरे भाइयों और बहनों, आप जहाँ कहीं भी हों, मैं आपसे आपके विश्वास को मजबूत करने, इस कार्य को संसार में चारों तरफ आगे बढ़ाने के लिए कहता हूं । आप इस कार्य को उस तरीके के द्वारा मजबूत कर सकते हैं जिसे तरीके से आप जीते हैं'' (Conference Report में, अक्टू. 1995, 94...95; या *Ensign,* नव. 1995, 71..72) ।

- कालेब और यहोशू के शब्दों के प्रति भीड़ ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई थी ? (देखें गिनती 14:10) । उनकी लगातार बड़बड़ाहट और मिस्र वापस जाने की उनकी इच्छा के लिए प्रभु ने इस्राएलियों को कैसे दण्डित किया था ? (देखें गिनती 14:22...23, 26...35) । उसने उन दस पुरूषों को कैसे दण्डित किया था जिन्होंने कनान के बारे में नकारात्मक रिपोर्ट दिया था ? (देखें गिनती 14:36...37) । कालेब और यहोशू के विश्वासपूर्णता के लिए उसने उन्हें कैसे आशीषित किया था ? (गिनती 14:24, 38) ।

4. मूसा एक पीतल का साँप बनाता है और लोगों से कहता है कि यदि वे इसकी तरफ देखें, वे चंगे होंगे।

गिनती 21:1...9 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- यद्यपि प्रभु ने कनानियों को हराने में इस्राएलियों की सहायता की थी, इस्राएलियों ने बड़बड़ाना जारी रखा था । प्रभु ने उन्हें कैसे दण्डित किया था ? (देखें गिनती 21:6) । इस दण्ड के प्रति इस्राएलियों ने कैसे जवाब दिया ? (देखें गिनती 21:7) ।

- प्रभु ने मूसा से क्या करने के लिए कहा था जब मूसा ने उससे विष वाले सांपों को दूर ले जाने के लिए कहा ? (देखें गिनती 21:8...9) । प्रत्येक व्यक्ति को विष वाले सांपों के काटने से बचने के लिए क्या करने की आवश्यकता थी ?

- नफी और अलमा, मॉरमन की पुस्तक के दो भविष्यवक्ता, ने सीखाया था कि कई इस्राएली मर गए थे क्योंकि उन्होंने पीतल के सांप के तरफ नहीं देखा था । उन्होंने क्यों नहीं देखा था ? (देखें 1 नफी 17:41; अलमा 33:18...20) ।

- पीतल का सांप किसका प्रतीक था ? (देखें यूहन्ना 3:14...16; इलामन 8:13...14) ।

- जिस तरह इस्राएल के बच्चों को जीने के लिए पीतल के सांप के तरफ देखने की आवश्यकता थी, उसी तरह अनन्त जीवन को प्राप्त करने के लिए हमें यीशु मसीह के ओर देखने की आवश्यकता है (अलमा 37:46...47; इलामन 8:15) । मसीह के ओर देखने का क्या मतलब है ? किस तरह से आज भी कुछ लोग वही गलती करते हैं जिसे इस्राएलियों ने किया था जिन्होंने पीतल के सांप के तरफ नहीं देखा था ? (देखें अलमा 33:20 । वे यीशु मसीह के ओर नहीं देखते हैं क्योंकि वे विश्वास नहीं करते हैं कि ऐसा करने से वे बचाये जाएंगे) ।

  एल्डर कार्लोस ई. एसे ने कहा थाः ''हमें, पुराने इस्राएल की तरह, अपनी आँखों और मनों को लगाना होगा...मसीह पर यदि हम अनन्त जीवन प्राप्त करने की आशा करते हैं...हमारी दृष्टि को रास्ते के आस-पास भटकने की अनुमति नहीं होनी चाहिए या संसार की बिगड़नेवाली चीजों के ऊपर स्थिर नहीं होना चाहिए । आँखों को...ऊपर के तरफ देखने के लिए प्रशिक्षित करना होगा । हमें परमेश्वर के तरफ देखना और जीना होगा'' (Conference Report में, अक्टू. 1978, 81; या *Ensign,* नव. 1978, 54) ।

- अलमा ने सीखाया था कि जिस तरह से विष वाले सांपों के काटने से चंगा होने का तरीका आसान था, उसी तरह से अनन्त जीवन का तरीका भी आसान है (अलमा 37:46) । किस तरह से अनन्त जीवन का रास्ता आसान है ? कैसे कुछ लोग अनन्त जीवन के रास्ते को जटिल बनाने की कोशिश करते हैं ? (देखें याकूब 4:14 । वे यीशु मसीह में विश्वास, पश्चाताप, और आज्ञाकारिता के साधारण और बचाने वाले नियमों को देखते हैं) । यीशु मसीह में विश्वास पर, हम अपना प्रकाश कैसे रख सकते हैं ?

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को संसार की भविष्य की चीजों के तरफ देखने के लिए और ''राक्षसों'' से न डरने के लिए प्रोत्साहित करें जोकि हमारा ध्यान उन बातों से हटाते हैं जो अत्याधिक महत्वपूर्ण हैं । गवाही दें कि यदि हम ''परमेश्वर के सूर्य के तरफ विश्वास के साथ'' देखेंगे (इलामन 8:15) और उसके भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करेंगे, हम इस जीवन में और आने वाले जीवन में आशीषित होंगे ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''आओ मिस्र को लौट जाएं'' (गिनती 14:4)।

- इस्राएलियों का उत्तर क्या था जबः

  क. वे मिस्रियों और लाल समुद्र के बीच फँस गए थे ? (देखें निर्गमन 14:10...12) ।
  ख. उन्हें मन्ना को छोड़ कुछ भी खाने के लिए नहीं दिया गया था ? (देखें गिनती 11:4...6, 18...20) ।
  ग. उन्हें कनान की भूमि के अधिकार के लिए काम की चुनौती दी गई थी ? (देखें गिनती 14:1...4) ।
  घ. वे जंगल की कठिन यात्रा के द्वारा हतोत्साहित हुए थे ? (देखें गिनती 21:4...5) ।

- आपके विचार से इस्राएलियों के लिए मिस्र को छोड़ना क्यों कठिन था ? छोड़ने के लिए आज हमारे लिए कौन सी चीजें कठिन हैं ? हम एक दूसरे को कैसे मजबूत कर सकते हैं जब हम पुरानी आदतों या सांसारिक व्यवहारों को छोड़ने की कोशिश करते हैं ?

2. मार्गदर्शन के लिए कहाँ देखें

गिनती की पुस्तक हमें शिक्षा देती है कि मार्गदर्शन के लिए हमें कहाँ देखना चाहिए । चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित नियमों को लिखने के द्वारा आप इन शिक्षाओं पर जोर देना चाहें जब आप धर्मशास्त्र विवरणों की शिक्षा दें ।

क. भविष्यवक्ता के तरफ देखो (गिनती 12) ।
ख. प्रतिज्ञा की गई भूमि के तरफ देखो...हमारे लिए, सिलेस्टियल राज्य (गिनती 13...14) ।
ग. उद्धारकर्ता के तरफ देखो (गिनती 21:4...9) ।

''मैं प्रभु के शब्द के आगे नहीं जा सकता''

पाठ
16

गिनती 22...24; 31:1...16

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को बिना हिचकिचाहट के परमेश्वर की इच्छा को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. गिनती 22:1...21 । बालाक, मोआब का राजा, इस्राएलियों के आगमन द्वारा डर गया था । वह बिलाम को पुरस्कार देने का प्रस्ताव देता है यदि वह मोआब आएगा और इस्राएलियों को शाप देगा । परमेश्वर ने बिलाम को इन्कार करने की आज्ञा दी, और बिलाम ने आज्ञापालन किया (22:1...14) । बालाक ने बिलाम को अतिरिक्त सम्मान और धन देने के लिए कहा यदि वह मोआब आएगा और इस्राएलियों को शाप देगा । परमेश्वर ने बिलाम से कहा कि यदि उसकी इच्छा हो तो वह जा सकता है परन्तु उसे उन्हीं शब्दों को बोलना होगा जो परमेश्वर उसे देता है (22:15...21) । बिलाम जाने का निश्चय करता है ।

   ख. गिनती 22:22...35 । मोआब जाने के लिए परमेश्वर बिलाम से क्रोधित होता है, जानते हुए कि वह बालाक से कुछ पुरस्कार की आशा करता है । अपने रास्ते में, बिलाम परमेश्वर को अप्रसन्न करने के खतरों के बारे में जानता है जब उसकी गदही और एक दूत उससे बातें करते हैं ।

   ग. गिनती 22:36...24:25 । बिलाम बालाक से मिलता है (22:36...23:2) । तीन बार बालाक उससे इस्राएल को शाप देने के लिए कहता है, परन्तु बिलाम परमेश्वर का आज्ञापालन करता है और प्रत्येक बार इस्राएल को आशीर्वाद देता है (23:3...24:9) । तब वह मोआब को शाप देता है और यीशु मसीह की भविष्यवाणी करता है (24:10...25) ।

   घ. गिनती 31:1...16 । इस्राएलियों ने मिद्यानियों का विनाश किया और बिलाम को को बंधक बना लिया । मूसा समझाता है कि बिलाम ने मिद्यानियों को, इस्राएलियों को पाप में लुभाने का सलाह दिया था । (बिलाम के सलाह के परिणामों का गिनती 25:1...3 में वर्णन किया गया है । यद्यपि बिलाम इस्राएल को सीधे तौर पर शाप नहीं देता है, प्रत्यक्ष रूप से वह बालाक से एक पुरस्कार किसी भी तरीके से चाहता था कि उसने इस्राएल को पाप करने के लालच का सुझाव दे डाला, उनके प्रति परमेश्वर की सुरक्षा को खोते हुए) ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः 2 पतरस 2:15...16, यहूदा 1:11; प्रकाशितवाक्य 2:14 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के सदस्यों को निम्नलिखित वक्तव्यों को ध्यान से सुनने के लिए कहें और एक तरह के व्यक्ति के बारे में सोचने के लिए कहें जो उन्हें बना सकता है:

''कि चाहे बालाक अपने घर को सोने चांदी से भरकर मुझे दे दे, तौभी मैं अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को पलट नहीं सकता, कि उसे घटाकर वा बढ़ाकर मानूं'' (गिनती 22:18) ।

''जो कुछ यहोवा मुझसे कहेगा, वही मुझे करना पड़ेगा ?'' (गिनती 23:26) ।

''मैं यहोवा की आज्ञा तोड़कर अपने मन से न तो भला कर सकता हूं और न तो बुरा; जो कुछ यहोवा कहेगा वही मैं करूँगा'' (गिनती 24:13) ।

- एक व्यक्ति की क्या कुछ योग्यताएं हैं जोकि इन बातों को कह सकता है ? (इस तरह का वक्तव्य सुझाव देता है कि एक व्यक्ति आज्ञाकारी, विश्वासी, और नम्र है) ।

समझाएं कि ये वक्तव्य एक बिलाम नामक व्यक्ति के द्वारा दिए गए थे, जिसने खुले आम कठिन आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया था परन्तु उसके हृदय में सांसारिक पुरस्कारों और सम्मानों की इच्छा थी । यह पाठ, सांसारिक पुरस्कारों और सम्मानों की इच्छा के लिए अपने तरीके से काम करने की आग्रही जिद्द के परिणामों को दिखाता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. बिलाम इस्राएल को शाप देने के बदले में बालाक द्वारा पुरस्कारों को इन्कार करता है।

गिनती 22:1...21 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- इस्राएलियों के आगमन के द्वारा डरा हुआ, बालाक, मोआब का राजा, बिलाम के लिए पुरस्कार देने की इच्छा के साथ संदेशवाहकों को भेजता है कि वह मोआब आए और इस्राएल को शाप देगा (गिनती 22:5...7) । इस प्रस्ताव के प्रति बिलाम कैसे जवाब देता है ? (देखें गिनती 22:8...14) । परमेश्वर की आज्ञा न मानने के बदले में कभी कभी हमें कौन से पुरस्कारों के प्रस्ताव दिए जाते हैं ?

- बिलाम द्वारा मोआब आने के लिए इन्कार करने के पश्चात, बालाक लोगों के दूसरे दल को भेजता है, पहले की अपेक्षा अधिक प्रभावी, उसे राजी कराने की कोशिश के लिए । बालाक बिलाम को क्या प्रस्ताव देता है ? (देखें गिनती 22:15...17) । बिलाम कैसे जवाब देता है ? (देखें गिनती 22:18...19) । आपके विचार से वह प्रभु से दुबारा क्यों पूछना चाहता था ? (बिलाम ने आशा किया होगा कि प्रभु उसके मन को बदल देगा और उसे बालाक द्वारा दिए गए पुरस्कार के प्रस्ताव को मानने की अनुमति देगा) । परमेश्वर की आज्ञाओं और सलाह के विरूद्ध जाने के क्या खतरे होते हैं ?

- प्रभु ने बिलाम को बालाक के संदेशवाहकों के साथ जाने की अनुमति दे दी यदि वह जाना चाहे तो । परन्तु तब प्रभु बिलाम के जाने से क्रोधित हुआ था (गिनती 22:20...22) । बिलाम के हृदय में क्या था, के बारे में प्रभु का क्रोध क्या सुझाव देता है ? (2पतरस 2:15,यशायाह 29:13 ।)

2. बिलाम जो चाहता था उसे करने की उसकी आग्रही जिद्द के खतरों को प्रभु दिखाता है।

गिनती 22:22...35 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- मोआब जाने के उसके रास्ते पर, बिलाम ने तीन बार अपनी गदही को आगे बढ़ने के लिए बाध्य करने की कोशिश की (गिनती 22:22...30) । यह किन तरीकों में प्रभु के साथ बिलाम के संबंध के समान था ? (बिलाम चाहता था कि प्रभु और गदही वही करें जो वह चाहता है । आप यह भी संकेत कर सकते हैं कि गदही ने दूत को देखा, परन्तु बिलाम ने नहीं देखा । उसी तरह, प्रभु ने कई चीजों को देखा था जिसे बिलाम ने नहीं देखा) ।

- वह करना जो परमेश्वर चाहता है या माता-पिता या मार्गदर्शकों के धार्मिक सलाहों का अनुसरण करने की बजाय जो वे चाहते हैं उसे करने की व्यक्तिगत तौर पर और दल के रूप में, हठी कोशिश के कुछ आधुनिक समरूप क्या हैं ?

आप निम्नलिखित उदाहरणों में से कुछ पर चर्चा करना चाहें:

क. एक बच्चा, एक माता-पिता के उत्तर से अप्रसन्न, दूसरे माता-पिता के पास जाता है, भिन्न उत्तर की आशा करते हुए ।
ख. गिरजाघर का एक सदस्य, एक पौरोहित्य मार्गदर्शक की सलाह से असंतुष्ट हो कर, दूसरे पौरोहित्य मार्गदर्शक के पास जाता है ।
ग. गिरजाघर का एक सदस्य कारण बताता है कि क्यों एक आज्ञा उसपर लागू नहीं होती जैसा कि वह अन्य सदस्यों पर लागू होती है ।

- प्रभु बिलाम को दूत और गदही के द्वारा अनुशासित करता है । बिलाम दूत के अनुशासित शब्दों के प्रति कैसे जवाब देता है ? (देखें गिनती 22:31...35) । परमेश्वर अपने बच्चों को क्यों अनुशासित करता है ? (देखें सि. और अनु. 95:1) । परमेश्वर का अनुशासन, हमारे लिए एक आशीष कैसे हो सकता है ?

3. बिलाम इस्राएल को शाप देने से इन्कार करता है।

गिनती 22:36...24:25 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- बिलाम के मोआब में पहुँचने के पश्चात, बालाक ने उसे तीन बार इस्राएल को शाप देने के लिए कहा । प्रत्येक बार प्रभु ने बिलाम को इस्राएल को आशीष देने के लिए कहा, और बिलाम ने आज्ञापालन किया । इस विवरण में बिलाम ने किन बलों को दिखाया था ? (देखें गिनती 22:38; 23:8, 19...20; 24:1, 12...13) । तब भी बिलाम में किन कमजोरियों को व्यक्त किया गया था ? (देखें गिनती 22:41; 23:1...3, 13...15, 27...30 । यद्यपि बिलाम ने इस्राएल को शाप देने के लिए बालाक के अनुरोध को इन्कार किया था, वह एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए बालाक का अनुसरण करने और उसके अनुरोधों को सुनने का इच्छुक था जब कि वह जानता था कि वह सब गलत था) । अधार्मिक सुझावों को सुनने के क्या खतरे हैं (उदाहरण के लिए दोस्तों से या टेलिविजन, रेडियो, चलचित्रों, और किताबों से) जबकि हम जानते हैं कि वे गलत हैं ?

4. इस्राएली मिद्यानियों का विनाश करते हैं और बिलाम का वध करते हैं।

गिनती 31:1...16 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- इस्राएली मिद्यानियों के विरूद्ध युद्ध के लिए क्यों गए ? (देखें गिनती 31:1...3; मिद्यानियों द्वारा इस्राएलियों को पाप में पड़ने का लालच देने के कारण प्रभु उनसे क्रोधित था, जैसा गिनती 25:1...3 में अभिलेखित किया गया है) । इस्राएल के बच्चों को मूर्तिपूजा और अमरत्व में हिस्सा लेने के लालच को देने के लिए मिद्यानियों को किसने सलाह दिया था ? (देखें गिनती 31:16) । बिलाम ने यह सलाह क्यों दिया था ? (यद्यपि बिलाम ने इस्राएलियों को शाप देने की बजाय उन्हें आशीष देने की प्रभु की आज्ञा का पालन किया था, उसके हृदय में वह सांसारिक सम्मानों और पुरस्कारों को चाहता था । इन पुरस्कारों को प्राप्त करने के लिए, उसने पाप के लिए इस्राएल को लालच देने का सुझाव दिया, ताकि वे परमेश्वर की सुरक्षा को खो दें) । मिद्यानियों के साथ इस्राएलियों के युद्ध के दौरान बिलाम का क्या हुआ था ? (देखें गिनती 31:8) ।
- नये नियम में तीन लेखकों ने बिलाम के बारे में बताया है (2 पतरस 2:15...16; यहूदा 1:11; प्रकाशितवाक्य 2:14) । उसके बारे में उनके क्या विचार हैं ?
- इस कहानी से हम क्या पाठ सीख सकते हैं ? (गिरजाघर के सदस्य जो सांसारिक पुरस्कारों और सम्मानों को खोजते हैं, वे जो उस कारण को खोजते हैं जो परमेश्वर की सलाह और आज्ञा के विरूद्ध होता है, या वे जो गिरजाघर में सांसारिक विचारों, प्रथाओं, या स्तरों का परिचय कराते हैं, बिलाम के अधार्मिक उदाहरण का अनुसरण करते हैं । इसे प्रकाशितवाक्य 2:14 में ''बिलाम का सिद्धांत'' कहा जाता है) ।

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने कहा थाः

  ''वाह क्या कहानी है यह! यहाँ पर एक परमेश्वर का भविष्यवक्ता है जो पूरी तरह से केवल उसे घोषित करने के लिए समर्पित है जिसका निर्देश स्वर्ग का प्रभु देता है । ऐसा प्रतित होता है कि उसके मन में जरा सा भी संदेह इसके बारे में नहीं है कि उसे किसके अनुसार काम करना चाहिए । वह प्रभु का प्रतिनिधि है, और ना ही राजा के द्वारा प्रस्ताव दिए गए सोने या चांदी से भरे हुए एक घर को लेता है और ना ही उच्च सम्मानों को लेता है जो उसे उसके सुनिश्चित कार्य को करने से मना कर सकते हैं...

  ''परन्तु धन की लालच और सम्मान की ललक ने उसे ललचाया था । [उसके लिए] धनवान और शक्तिशाली होना कितना अद्‌भूत हो सकता था...शायद प्रभु उसके स्तर को उसे बदलने की अनुमति दे सकता था, कुछ सांसारिक समृद्धि और बल के लिए...मैं आश्चर्यचकित हूं कि गिरजाघर से हमारी दिशा को प्राप्त करने के लिए अक्सर हममें से कुछ कैसे प्राप्त करते हैं और तब, बिलाम की तरह, कुछ सांसारिक पुरस्कारों के लिए याचना करते हैं...

  ''बिलाम,...प्रेरित और शक्तिशाली जैसा कि वह एक बार था, अन्त में अपनी आत्मा को खो देता है क्योंकि उसने अनन्तता के धन को प्राप्त करने की बजाय इस संसार की चीजों की इच्छा की थी (“The Story of a Prophet’s Madness,” *New Era,* अप्रैल 1972, 7) ।
- ध्यान गतिविधि में वक्तव्यों के लिए फिर से देखें । संकेत करें कि यद्यपि बिलाम बहुत ही आज्ञाकारी प्रतित होता था, उसके हृदय में सांसारिक पुरस्कारों और सम्मानों को पाने की इच्छा थी । अपने हृदयों की इच्छाओं को पवित्र रखने के महत्व के बारे में यह कहानी क्या शिक्षा देता है ? हम अपने हृदयों की इच्छाओं को कैसे पवित्र रख सकते हैं ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि यदि बिलाम ने वही किया होता जो परमेश्वर चाहता था कि वह करे, उसके लिए और इस्राएल के लिए अधिक पाप और संकट को टाला जा सकता था । कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें कि वे लगातार वही करें जिसे प्रभु चाहता है कि वे करें बजाय उसके कि वे वही करें जो वे चाहते हैं...उसे टालने या बदलने की कोशिश के बिना वे उसी को खोजें और करें जो प्रभु चाहता है कि वे करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. प्रभु का आज्ञापालन करना

बिलाम से हम प्रभु के आज्ञापालन के महत्व को सीख सकते हैं । इसे हम धर्मशास्त्रों के कई अन्य पुरूषों और स्त्रियों के अच्छे उदाहरण से भी सीख सकते हैं । आप शायद निम्नलिखित उदाहरणों पर ध्यान दिलाना चाहेंः

क. उद्धारकर्ता, गतसमनी में और क्रूस पर जो दुःख उसके समक्ष आने वाला था उसे वह जानता था, ''घुटने टेका, और प्रार्थना किया, कहते हुए, कि हे पिता यदि तू चाहे तो इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले, तौभी मेरी नहीं परन्तु तेरी ही इच्छा पूरी हो'' (लूका 22:41...42) ।

ख. जब इब्राहीम को उसके पुत्र इसहाक का बलिदान करने की आज्ञा दी गई थी, वह मोरिय्याह पहाड़ की यात्रा को आरंभ करने के लिए ''बिहान को तड़के उठा'' (उत्पत्ति 22:3) ।

ग. जब मरियम को बताया गया कि वह परमेश्वर के पुत्र की माता होगी, उसने उत्तर दिया, ''देख, मैं प्रभु की दासी हूं मुझे, तेरे वचन के अनुसार हो'' (लूका 1:38) ।

घ. जब नफी को लबान से पीतल की पट्टियों को प्राप्त करने के लिए यरूशलेम वापस जाने का आदेश दिया गया था, उसने तुरन्त उत्तर दिया था, ''मैं जाऊँगा और वह काम करूँगा जिसकी आज्ञा प्रभु ने दी है'' (1 नफी 3:7) ।

च. युद्ध में इलामन के दो सहस्र युवकों की सेना जीत गई थी क्योंकि ''उन्होंने आज्ञा के प्रत्येक शब्द पर ध्यान दिया और अच्छी तरह उनका पालन किया'' (अलमा 57:21) ।

2. ''यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है'' (गिनती 24:11)

- जब बिलाम इस्राएल को शाप देने से इन्कार करता है और बालाक के पुरस्कारों और सम्मान को प्राप्त करता है, बालाक उससे कहता है, ''यहोवा ने तुझे प्रतिष्ठा पाने से रोक रखा है'' (गिनती 24:11) । प्रभु का अनुसरण करना, कैसे कभी कभी हमें सांसारिक पुरस्कारों और सम्मानों को प्राप्त करने से रोकता है ? सांसारिक पुरस्कारों के बदले प्रभु ने हमसे क्या प्रतिज्ञा की है ? (देखें सि. और अनु. 81:6) ।

''सावधान हो जाओ इससे पहले कि तुम भूल जाओ''

पाठ
17

व्यवस्थाविवरण 6; 8; 11; 32

उद्देश्य

(1) प्रभु और उन अनुबंधों को याद रखने के लिए जो उन्होंने उसके साथ बनाए थे और (2) एक वातावरण का निर्माण करने के लिए जो उन्हें ऐसा करने में सहायता करेगा, कक्षा के सदस्यों को प्रोत्साहित करें ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. व्यवस्थाविवरण 6:1...9, 11:18...21 । मूसा इस्राएलियों को आदेश देता है, उन्हें उनके अनुबंधों को याद रखने में सहायता के लिए । वह माता-पिता को उसके शब्दों की शिक्षा देने के लिए आदेश देता है ।

   ख. व्यवस्थाविवरण 6:10...12; 8:1...20 । मूसा इस्राएलियों को उनके प्रति परमेश्वर की आशीषों को याद दिलाता है । वह उन्हें चेतावनी देता है कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं और उसे याद नहीं करते हैं, उनका नाश होगा ।

   ग. व्यवस्थाविवरण 32:1...4, 15...18, 30...40, 45...47 । मूसा इस्राएलियों का उनके उद्धारमूल चट्टान (यीशु मसीह) के प्रति सचेत रहने की सलाह देता है ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः व्यवस्थाविवरण 4; 7:1...4; 13:1...8; 34 ।

3. यदि आप पहली ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, अपने घर से वस्तुएं लाएं जैसा कि नीचे दी गई ''ध्यान गतिविधि'' में वर्णन किया गया है ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. अपने घर से लाए हुए वस्तुओं का प्रदर्शन करें जो आपको प्रभु और उन अनुबंधों को याद दिलाता है जिसे आपने उसके साथ बनाया था । (इस तरह के वस्तुओं में सम्मिलित हो सकते हैं, धर्मशास्त्र, चित्र, किताबें और संगीतमय रिकार्डिंग) । कक्षा के सदस्यों को बताएं कि क्यों ये वस्तुएं आपके लिए महत्वपूर्ण हैं । इस पाठ के उस हिस्से को समझाएं जो भौतिक वस्तुओं के बारे में है जिसका प्राचीन इस्राएली, प्रभु और उसके साथ उनके अनुबंधों को स्वयं के प्रति याद कराने के लिए उपयोग करते थे । संकेत करें कि भौतिक वस्तुएं हमारे लिए भी शक्तिशाली स्मरणपत्र हो सकते हैं ।

2. चॉकबोर्ड पर निम्नलिखित शब्दों को लिखें:

   भरमाना, लुभाना, फँसाना, ठगना, खा जाना, फुसलाना, बहकाना, शान्त करना, जलजलाहट, अन्धा, झुठ बोलना, चापलुसी करना, नष्ट करना ।

- इन शब्दो में सामान्य क्या हैं ? (एक सामान्य विशिष्टता यह है कि ये सभी हमें प्रभु से दूर करने की शैतान की मेहनत के दाँव पेच का वर्णन करते हैं) ।

- कक्षा के एक सदस्य को सि. और अनु. 76:28...29 पढ़ने दें । समझाएं कि ये आयतें जोसफ स्मिथ और सिडनी रिग्डन को दिए गए एक दिव्यदर्शन में से हैं । शैतान के प्रभावों से सुरक्षा के लिए हम क्या कर सकते हैं ? (शैतान के लालचों से स्वयं के प्रति ढाल के लिए हम कौन सी कुछ चीजें कर सकते हैं, का उदाहरण देने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करना चाहें) ।

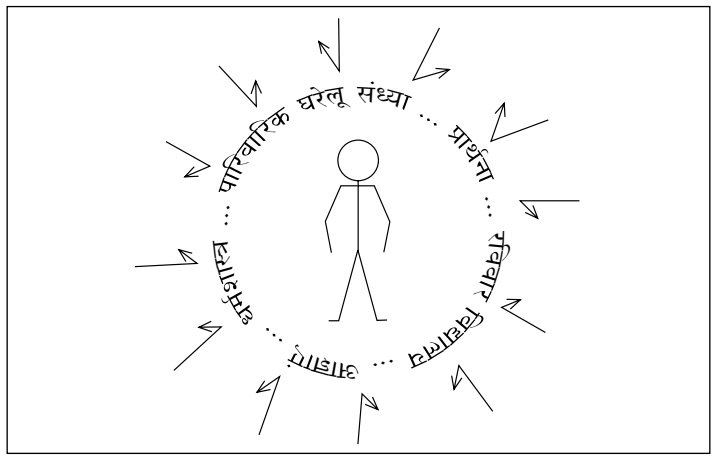

समझाएं कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में, मूसा इस्राएलियों को शिक्षा देता है कि कैसे एक वातावरण का निर्माण करें जो शैतान की लालचों का सामना करने में उनकी सहायता करेगा । यह पाठ मूसा की सलाह और चर्चाओं पर समीक्षा करता है कि आज हम कैसे इसका प्रयोग कर सकते हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

40 वर्षों के लिए जंगल में इस्राएलियों की परीक्षा लेने, उन्हें परिष्कृत करने, और उन्हें शिक्षा देने के पश्चात, प्रभु ने कहा था कि वे प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश करने के लिए तैयार थे । परन्तु पहले उसके पास उनके लिए कुछ महत्वपूर्ण आदेश थे । मूसा ने उन्हें इन आदेशों को तीन उपदेशों में दिया था जैसा कि व्यवस्थाविवरण में अभिलेखित किया गया है ।

इन उपदेशों में मूसा ने इस्राएलियों के उन 40 वर्षों की समीक्षा की है जिसमें वे जंगल में रहे थे, उनकी मुक्ति में परमेश्वर की सहायता को पहचानते हुए । परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में मूसा ने इस्राएलियों की जिम्मेदारियों पर भी चर्चा की है । उसने इस बात पर जोर दिया था कि उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना होगा, खासकर उसे याद करने और मूर्तिपूजा से दूर रहने की आज्ञा पर । मूसा ने चेतावनी दी थी कि यद्यपि इस्राएल के बच्चे प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश करने के लिए तैयार थे, यदि वे दुष्टता में वापस आते हैं तो वे अपनी संपत्तियों को खो देंगे और तितर-बितर हो जाएंगे ।

1. मूसा इस्राएलियों को उन्हें उनके अनुबंधों को याद करने में सहायता के लिए आदेश देता है।

व्यवस्थाविवरण 6:1...9 और 11:18...21 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- व्यवस्थाविवरण में इस्राएलियों के प्रति मूसा के आखिरी शब्दों का समावेश है । यदि आपको अपने परिवार और दोस्तों को एक आखिरी संदेश देना होता, वह क्या हो सकता था ?
- व्यवस्थाविवरण 6:5...7 में प्रभु इस्राएलियों को क्या करने की आज्ञा देता है ? हम अपने हृदयों में धर्मशास्त्रों के शब्दों को कैसे प्राप्त कर सकते हैं ? कैसे माता-पिता, धर्मशास्त्र को प्रेम करना सीखने में अपने बच्चों की सहायता के लिए उन्हें सुसमाचार की प्रभावपूर्ण शिक्षा कैसे दे सकते हैं ?
- व्यवस्थाविवरण 6:8...9 और 11:18...20 में मूसा ने इस्राएलियों को क्या करने की सलाह दी थी ? (ध्यान दें कि सरबन्द ही वह ''चर्मपत्र थे जिसपर धर्मशास्त्र के चार उद्धरणों को लिखा गया था...और जिसे लपेटा गया था और चमड़ को फाड़कर उसके फीते के साथ बाँधा गया था...माथे या बाहों के आस-पास'' [Bible Dictionary, "Frontlets," 676]).
- आपके विचार से मूसा ने लोगों को क्यों धर्मशास्त्र के उद्धरणों को उनकी आँखों के मध्य में, उनके हाथों पर, उनके घरों के चौखटों पर, और उनके फाटकों पर रखने के लिए कहा था ? इस तरह के समान स्मरणपत्र कैसे हमारे कार्यें पर प्रभाव डाल सकते हैं ? प्रभु, उसके शब्दों, और उसके साथ हमारे अनुबंधों को हमारे प्रति याद दिलाने के लिए हम अपने घरों में क्या कर सकते हैं ? हमारी दीवारों पर चित्र, किताबें जिसे हम पढ़ते हैं, और चलचित्रों और टेलिविजन कार्यक्रम जिन्हें हम देखते हैं, क्या हमें प्रभु की याद दिलाते हैं, या वे संसार की लालसा का सुझाव देते हैं ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था कि लोग जो ''यीशु मसीह के द्वारा निर्देशित किए जाते हैं वो यीशु मसीह के साथ रहेंगे...अपने घरों में प्रवेश करते हैं, उनकी दीवारों पर चित्र, उनकी अलमारियों की किताबें, हवा में संगीत, उनके शब्द दिखाते हैं कि वे ईसाई हैं'' (Conference Report में, अक्टू. 1985, 6; या *Ensign*, नव. 1985, 6...7) ।

2. मूसा इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने और उसे याद करने की सलाह देता है।

व्यवस्थाविवरण 6:10...12 और 8:1...20 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- व्यवस्थाविवरण 6:10...12 और 8:1...20 में मूसा के कौन से मुख्य संदेश हैं ? प्रभु को भूलने का क्या मतलब है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:11) ? उसके भूलने के क्या परिणाम होते हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:19) । हम कैसे सुनिश्चित हो सकते हैं कि हम परमेश्वर को नहीं भूले हैं ?

- कौन सी परिस्थितियाँ या चुनौतियाँ हैं जिसका नाम मूसा ने लिया था जो शायद लोगों के लिए परमेश्वर को भूलने के कारण हो सकते हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 6:10...12; 8:10...20) । कुछ लोग प्रभु द्वारा प्रचुरता में आशीषित होने के पश्चात क्यों उसे भूल जाते हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8—17 ।)

  अध्यक्ष ब्रिग्हम यंग ने कहा थाः ''(गिरजाघर के सदस्यों) के बारे में अत्याधिक डर जो मुझे है वह यह है कि इस देश में वे धनवान होंगे, परमेश्वर और उसके लोगों को भूल जाएंगे, समृद्धि बढ़ेगी, और उन्हें गिरजाघर से बाहर धकेल देगी और नरक में चले जाएंगे । ये लोग भीड़ में खड़े होंगे, लूटे-मारे जाएंगे, गरीबी होगी, और अत्याचार के सारे तरीके होंगे, और सच्चे रहेंगे । परन्तु इनके लिए मेरा सबसे बड़ा डर यह है कि वे धन के साथ खड़े नहीं हो सकते; और तब भी उन्हें संपत्तियों के साथ कोशिश करना होगा, क्योंकि वे इस पृथ्वी पर सबसे धनी लोग बन जाएंगे'' (in Preston Nibley, *Brigham Young: The Man and His Work* [1936], 128) ।

- किसी भी समृद्धि के लिए कौन साधन है जैसा कि हमारे पास है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:18) । प्रभु के काम को आगे बढ़ाने के लिए हम अपनी समृद्धि का उपयोग कैसे कर सकते हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 8:18; याकूब 2:18...19) ।

3. मूसा इस्राएलियों का उनके उद्धार मूल चट्टान (यीशु मसीह) के प्रति सचेत रहने की सलाह देता है।

व्यवस्थाविवरण 32:1...4, 15...18, 30...40, 45...47 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- व्यवस्थाविवरण 32:3...4 में बोली गई चट्टान कौन है ? (यीशु मसीह; आयतें 15, 18, और 30...31 को भी देखें) । आपके विचार से कभी कभी यीशु मसीह को चट्टान क्यों पुकारा जाता है ? (देखें इलामन 5:12) ।

- मूसा ने घोषित किया कि ''जैसी हमारी चट्टान है वैसी उनकी चट्टान नहीं है'' (व्यवस्थाविवरण 32:31) । ''उनकी चट्टान'' ''हमारे चट्टान'' से विभिन्न कैसे है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 32:37...40) ।

- चट्टान पर बनाने का क्या मतलब है ? (देखें व्यवस्थाविवरण 32:46...47; मत्ती 7:24...27; सि. और अनु. 50:44) । हम यह कैसे कर सकते हैं ? (देखें व्यवस्थाविवरण 18:18...19, जोकि, मसीह के आगमन की भविष्यवाणी में, उसके शब्दों को सुनने की आवश्यकता के बारे में बताता है) ।

निष्कर्ष

उद्धारकर्ता की अपनी गवाही दें और अनुबंधों के लिए जिन्हें आपने उसके साथ बनाया है, के लिए आभार व्यक्त करें । परमेश्वर को स्मरण रखना और उसके साथ बनाए गए अनुबंधों को रखने के महत्व पर जोर दें । गवाही दें कि चीजें जिसे हम अपने आस-पास रखते हैं...जैसे कि चित्र, किताबें, और संगीत...प्रभु और उसके साथ बनाए गए हमारे अनुबंध के लिए शक्तिशाली स्मरणपत्र हो सकते हैं । संकेत करें कि इन चीजों का हमारे आस-पास होने का वही समान उद्देश्य है जैसे कि प्राचीन इस्राएलियों के लिए सरबन्दों का बाँधने का उद्देश्य थाः हमें चट्टान पर निर्माण करने में सहायता के लिए...प्रभु को स्मरण रखने और हमारी सहायता के लिए ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''इन्हें अपने घर के चौखट की बाजुओं पर लिखना'' (व्यवस्थाविवरण 6:9)

चित्र, पोस्टर, सांगितिक रिकार्डिंग, और उनके घरों के अन्य वस्तुओं की सूची बनाने के लिए कक्षा के सदस्यों को आमंत्रित करें । उन्हें प्रत्येक चीज पर एक ''+'' (संकेत देते हुए कि वस्तु हमें प्रभु के स्मरण के प्रति मार्गदर्शन की तरह है) या एक ''–'' (संकेत देते हुए कि यह अधिकतर हमारे हृदयों को प्रभु से दूर ले जाने के प्रति मार्गदर्शन की तरह है) । आप यह भी सुझाव देना चाहें कि इसे कक्षा के सदस्य अपने परिवारों के साथ पारिवारिक घरेलू संध्या के दौरान करें ।

2. ''वह तुमको नहीं छोड़ेगा'' (व्यवस्थाविवरण 4:31)

- भविष्यवाणी करने के पश्चात कि इस्राएली अन्य परमेश्वरों की आराधना करेंगे और तितर-बितर हो जाएंगे (व्यवस्थाविवरण 4:25...28), मूसा ने आशा के शब्दों का प्रस्ताव रखा । उनके प्रति उसने क्या प्रतिज्ञा की जो अपने पूरे हृदयों के साथ प्रभु को खोजेंगे ? (देखें व्यवस्थाविवरण 4:29...31; यशायाह 49:14...16) । आपके जीवन में यह प्रतिज्ञा कैसे पूरी हुई ? प्रभु को अपने पूरे मन और आत्मा से खोजने के लिए हमें क्या करना होगा ?

3. अन्यों के नकारात्मक प्रभावों के साथ खड़े रहना

- व्यवस्थाविवरण 13:6...8 में मूसा ने किस खतरे के विरूद्ध चेतावनी दी थी ? हम कैसे पहचान सकते हैं जब कोई हमें प्रभु से दूर करने की कोशिश करता है ? इस तरह के व्यक्ति का हमें कैसे जवाब देना चाहिए ?

4. ''छुछे हाथ यहोवा के सामने कोई न जाए'' (व्यवस्थाविवरण 16:16)

- व्यवस्थाविवरण 16:2, 11, और 16 में वर्णन किया गया स्थान मंडप है, जोकि इस्राएलियों के लिए एक अस्थाई मंदिर था । मंडप पर एक पर्व्व की तैयारी में, मूसा ने लोगो को ''यहोवा के सामने छुछे हाथ'' न आने का आदेश दिया था (व्यवस्थाविवरण 16:16) । यह कैसे हमारे मंदिर उपस्थिति पर लागू हो सकता है ? मंदिर उपस्थिति के लिए हम अपने आपको कैसे तैयार कर सकते हैं ताकि हम मंदिर में ''छुछे'' प्रवेश ना करें ? यह तैयारी कैसे हमारी मंदिर में ''परमेश्वर के सामने आनंद मनाने'' में हमारी सहायता करेगा ? (व्यवस्थाविवरण 16:11) ।

- अध्यक्ष हावर्ड डबल्यु. हन्टर ने सलाह दिया था: ''चलो हम मंदिर में उपस्थिति होने वाले लोग बनें । मंदिर उतनी बार जाएं जितनी बार व्यक्तिगत परिस्थतियाँ अनुमति देती हों । एक मंदिर का चित्र अपने घर में रखें जिसे आपके बच्चे देख सके'' (Conference Report में, अक्टू. 1994, 8; या *Ensign,* नव. 1994, 8) । जितनी बार संभव हो सके उतनी बार मंदिर में जाना हमारे लिए महत्वपूर्ण क्यों है ? अपने घरों में एक मंदिर का चित्र रखना क्यों महत्वपूर्ण है ?

5. ''कोई नहीं जानता कि उसकी कब्र कहाँ है'' (व्यवस्थाविवरण 34:6)

लेखक जिसने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पूरी की थी वह केवल यही जानता था कि मूसा चला गया था और इसलिए सोचा कि वह मर चुका था, कि प्रभु ने उसे दफना दिया था, और कोई नहीं जानता था कि उसकी कब्र कहाँ थी । फिर भी, हम जानते हैं कि मूसा अमरत्व में परिवर्तित हो गया था । (अमरता में परिवर्तित मनुष्य की अवस्था के स्पष्टिकरण के लिए, देखें 3 नफी 28:7...9, 37...40) । मूसा के अमरत्व में परिवर्तित होने का निम्नलिखित स्पष्टिकरण बाइबिल शब्दकोष प्रदान करता है:

''जैसा कि कई प्राचीन भविष्यवक्ताओं के साथ हुआ था, मूसा का कार्य उसके स्वयं के नश्वर जीवन से आगे बढ़ गया था । एलिय्याह के साथ, वह रूपांतरण के पर्वत पर आया और पतरस, याकूब, और यूहन्ना को पौरोहित्य की कुंजियों को प्रदान किया था (मत्ती 17:3...4; मरकुस 9:4...9; लूका 9:30; सि. और अनु. 63:21; *History of the church,* 3:387) । इस घटना से, जोकि यीशु के पुनरूत्थान के पहले हुआ था, हम समझते हैं कि मूसा एक अमरत्व में परिवर्तित मनुष्य था और उसकी मृत्यु नहीं हुई थी जैसा कि व्यवस्थाविवरण 34 में बताया गया है (अलमा 45:19) । यह आवश्यक था कि उसे अमरत्व में परिवर्तित किया जाए, रूपांतरण के समय एक मांस और हड्डी का शरीर प्राप्त करने के लिए, क्योंकि तब तक पुनरूत्थान नहीं हुआ था । वह केवल एक आत्मा ही रहा था, वह नश्वर पतरस, याकूब, और यूहन्ना को कुंजियों को देने का कार्य नहीं कर सकता था (सि. और अनु. 129 की तुलना करें)'' (Bible Dictionary, "Moses," 735) ।

''मजबूत और अच्छाई के लिए साहसी बनो''

पाठ
18

यहोशू 1...6; 23...24

उद्देश्य

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को यीशु मसीह के सुसमाचार को जीने में मजबूत और साहसी बनने के लिए प्रोत्साहित करें ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. यहोशू 1 । प्रभु मूसा का उत्तराधिकारी होने के लिए यहोशू को बुलाता है और उसे मजबूत बनने, साहसी बनने, धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने, और नियमों को मानने की आज्ञा देता है । यहोशू इस्राएलियों को भूमि पर अधिकार करने की तैयारी करवाता है जिसे प्रभु ने उनके लिए प्रतिज्ञा की थी ।

   ख. यहोशू 3...4; 6 । इस्राएली सूखी भूमि पर यर्दन नदी को पार करते हैं और 12 चट्टानों को उनके पार करने की यादगार के रूप में रखते हैं । इस्राएलियों के विश्वास के द्वारा, यरीहो का विनाश हुआ है ।

   ग. यहोशू 23; 24:14...31 । यहोशू और उसके लोग प्रभु की सेवा करने का अनुबंध करते हैं ।

2. अतिरिक्त अध्ययनः यहोशू 7; 14 ।

3. कक्षा के एक सदस्य से यरीहो के युद्ध के विवरण को बताने की तैयारी के लिए पूछें जैसे कि उसने स्वयं अपने ही आँखों से देखा हो (यहोशू 6) । कक्षा के अन्य एक या दो सदस्यों से एक अनुभव को बाँटने की तैयारी के लिए पूछें जो उन्हें परमेश्वर की शक्ति और प्रेम की याद दिलाता हो ।

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, कागज की एक चद्दर, टेप या एक रबर, और एक किताब को प्राप्त करें । यदि आप जालों और फन्दों पर प्रश्नों का उपयोग करते हैं, आप शायद एक छोटा सा जाल लाना चाहें, जैसे कि एक चुहेदानी, चर्चा को समझाने के लिए ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

समझाएं कि यह पाठ यहोशू के बारे में है, भविष्यवक्ता जिसने इस्राएल के बच्चों की उनके प्रतिज्ञा की भूमि के प्रति विजयी होने के लिए मार्गदर्शित किया था । जब यहोशू को एक भविष्यवक्ता के रूप में बुलाया गया, प्रभु ने उसे ''मजबूत और अच्छाई के लिए साहसी बनने'' की सलाह दी (यहोशू 1:6) । चॉकबोर्ड पर इस वाक्यांश को लिखें । कागज की एक चद्दर और एक किताब को दिखाएं । कक्षा के एक सदस्य से कागज को उसके किनारे से खड़ा करने और उसके ऊपर किताब का संतुलन बनाकर रखने की कोशिश करने के लिए कहें ।

इसे कक्षा के सदस्य के कोशिश करने के पश्चात, समझाएं कि किताब को सहारा देने के लिए कागज को पर्याप्त मात्रा में मजबूत बनाने का एक रास्ता है । कागज को एक नली की तरह लपेटें और उसे मजबूत करने के लिए एक रबर या टेप से चिपकाएं । नली के आखिरी हिस्से को एक समतल सतह पर खड़ा करें । ध्यानपूर्वक उसके ऊपरी हिस्से पर किताब को रखें । (शायद इसका अभ्यास आप कक्षा से पहले करना चाहें) ।

समझाएं कि यहोशू मजबूत बन गया था जब उसने अपने चरित्र का सुधार करने की अनुमति परमेश्वर की दी थी । इसी तरह, जब हम अपने चरित्र को सुधारने के लिए परमेश्वर को अनुमति देते हैं, हम मजबूत बन सकते हैं और उन चीजों को प्राप्त कर सकते हैं जो प्रभु हमसे चाहता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

इस्राएलियों के 40 वर्ष जंगल में रहने के दौरान, मूसा ने उन्हें परमेश्वर की आज्ञा को दिया था, परमेश्वर के वक्ता के रूप में काम किया था, और उनकी मार्गदर्शक के रूप में सेवा की थी । वह इकलौता मार्गदर्शक था उस पूरे इस्राएलियों की पीढ़ी का जिसे

जाना गया था । परन्तु उनके 40 वर्ष जंगल में रहने के पश्चात प्रभु ने उसे ले लिया...तभी जब उन्होंने एक बड़े परीक्षा का सामना किया था । इस्राएल के प्रति उसकी प्रतिज्ञाओं को याद दिलाते हुए, प्रभु ने एक मार्गदर्शक को उत्पन्न किया था, यहोशू, जिसने समर्थता से प्रतिज्ञा की भूमि को विजयी करने और स्थिर करने में निर्देशित किया था ।

1. प्रभु यहोशू को बुलाता है।

यहोशू 1 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- आपके विचार से यहोशू ने किन चुनौतियों का सामना किया था जब प्रभु ने उसे इस्राएलियों के मार्गदर्शन में मूसा के उत्तराधिकारी होने के लिए बुलाया था ? (उसे विजयी होने और कनान में स्थिर होने में इस्राएल का मार्गदर्शन करना था, जोकि एक शक्तिशाली का काम था । उसे एक महान मार्गदर्शक का स्थान भी लेना था) । प्रभु ने यहोशू को क्या आश्वासन दिया जब यहोशू ने प्रतिज्ञा की गई भूमि में प्रवेश करने की तैयारी की थी ? (देखें यहोशू) । ये आश्वासन कैसे नई बुलाहटों या चुनौतियों में हमारी सहायता कर सकता है ? इस तरह की परिस्थितियों में प्रभु ने आपकी कैसे सहायता की है ?

- यहोशू 1:6...9 में प्रभु ने किस आज्ञा को तीन बार दोहराया है ? प्रभु ने क्या कहा था कि यहोशू को साहस और बल की आवश्यकता क्या करने के लिए होगी ? (देखें यहोशू 1:7 । संकेत करें कि यद्यपि यहोशू को कई सैनिक युद्धों को लड़ने के लिए साहस की आवश्यकता होगी, उसे नैकित साहस की भी आवश्यकता होगी...जो सही है उसे करने का साहस) । आज हम कौन सी चुनौतियों का सामना करते हैं जिसमें बल और नैतिक साहस की जरूरत है ? आपने नैतिक साहस के किन उदाहरणों का आंकलन किया है ?

- ''अच्छी सफलता को पाने'' के लिए प्रभु ने यहोशू से क्या करने के लिए कहा ? (देखें यहोशू 1:8 । समझाएं कि नियम की किताब धर्मशास्त्र है) । आपके विचार से धर्मशास्त्र का अध्ययन यहोशू की उसकी बुलाहट में सफलता के लिए क्यों महत्वपूर्ण रही होगी ? निरंतर धर्मशास्त्र का अध्ययन कैसे हमारी सहायता करता है ?

2. इस्राएली सूखी भूमि पर यर्दन की नदी को पार करते हैं; उनके विश्वास के द्वारा, यरीहो का विनाश होता है।

यहोशू 3...4 और 6 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- जब इस्राएलियों को यर्दन नदी पार करने की आवश्यकता थी, उसके किनारे उमड़ रहे थे । प्रभु ने इस्राएल के बच्चों को कैसे दिखाया था कि वह यहोशू के साथ उसी तरह था जैसे वह मूसा के साथ रहा था ? (देखें यहोशू 3:7...8, 14...17; 4:14 । यदि आवश्यक हो, समझाएं कि अनुबंध की सन्दूक एक अस्थाई बेदी थी जिसमें पवित्र लेखन का समावेश था, मूसा के लेखन और दस आज्ञाओं की तख्तियों को सम्मिलित करते हुए) । प्रभु हमें कैसे दिखाता है कि वह निर्देशन देता है और जीवित भविष्यवक्ता को प्रेरित करता है जैसा उसने पहले के भविष्यवक्ताओं को किया था ?

- यर्दन नदी के पानी के रूकने से पहले उन पुरोहितों को क्या करना था जिन्होंने नाव को ले रखा था ? (देखें यहोशू 3:13...17 । उन्हें सन्दूक को उठाकर उमड़ रहे नदी में जाना था) । कभी-कभी प्रभु हमें इसी तरह का काम करने के लिए कैसे कहता है ?

  एल्डर बॉएड के पैकर ने कहा थाः

  ''मुझे एक जनरल अधिकारी के रूप में बुलाए जाने के तुरन्त पश्चात, सलाह के लिए मैं एल्डर हेरोल्ड बी. ली के पास गया । उन्होंने बड़े ध्यानपूर्वक मेरी समस्या को सुना और सुझाव दिया कि मुझे अध्यक्ष डेविड ओ. मैके से मिलना चाहिए । अध्यक्ष मैके ने सलाह दिया कि मुझे किस रास्ते पर चलना चाहिए । मैं आज्ञाकारी होने के लिए बहुत इच्छुक था परन्तु मुझे ऐसा कोई भी संभव रास्ता दिखाई नहीं देता था जैसे उन्होंने मुझे करने के लिए कहा था ।

  ''मैं एल्डर ली के पास वापस गया और उनसे कहा कि मुझे कोई भी रास्ता दिखाई नहीं देता जिसपर मुझे चलने की सलाह दी गई थी । उन्होंने कहा, 'तुम्हारे साथ समस्या यह है कि तुम इसे आरंभ करने से पहले इसका परिणाम जानना चाहते हो ।' मैंने उत्तर दिया कि कम से कम मैं एक या दो कदम आगे जरूर देखना चाहूँगा । तब उन्होंने मुझे मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पाठ सीखायाः 'तुम्हें प्रकाश के किनारे पर चलना सीखना होगा, और तब कुछ कदम अन्धेरे में; तब प्रकाश दिखाई देगा और तुम्हारे समक्ष रास्ते को दिखाएगा''' ("The Edge of the Light," *BYU Today,* मार्च 1991, 22...23) ।

- यर्दन नदी को पार करने के पश्चात इस्राएल ने यादगार के लिए 12 चट्टानों को क्यों रखा था ? (देखें यहोशू 4:1...9 । भावी पीढ़ियों के लिए यह प्रभु की शक्ति की एक गवाही थी, उन्हें याद दिलाते हुए कि प्रभु उन्हें भी आशीषित करेगा जैसा उसने उनके पिताओं को किया था) । आपके जीवन में कौन से व्यक्तिगत यादगार आपको परमेश्वर की शक्ति को याद दिलाते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है प्रभुभोज; यीशु के चित्र, मंदिर, और भविष्यवक्ता; धर्मशास्त्र; और दैनिकी में अभिलेखित आत्मिक अनुभव) । ये यादगार कैसे दूसरों के जीवन को आशीषित कर सकते हैं ? (देखें यहोशू 4:21...24) ।

गवाही दें कि प्रभु प्रार्थनाओं का उत्तर देगा, आशीषें देगा, प्रकटीकरण देगा, और प्रत्येक नई पीढ़ी के लिए अद्‌भूत कार्यों को करेगा । पहले से नियुक्त कक्षा के सदस्यों से उन अनुभवों को बाँटने के लिए कहें जो उन्हें परमेश्वर की शक्ति और प्रेम की याद दिलाता हो ।

- पहले से नियुक्त कक्षा के एक सदस्य से यरीहो के शहरपनाह का वर्णन करने के लिए कहें जैसे कि उसने उसे स्वयं देखा हो (यहोशू 6) । किस कारण से यरीहो का शहरपनाह गिर गया ? (देखे इब्रानियों 11:30) । इस्राएलियों का व्यवहार क्यों एक विश्वास का कार्य था ?

- यरीहो की इकलौती प्रजातियाँ कौन सी थीं जिन्हें बचा लिया गया था ? (देखें यहोशू 6:17, 22...25; यहोशू 2:1...15 को भी देखें) । राहाब और उसके परिवार को बचाए जाने से हम क्या सीख सकते हैं ?

3. यहोशू और उसके लोग प्रभु की सेवा का अनुबंध करते हैं।

यहोशू 23 और 24:14...31 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- अपने जीवन के अन्त के तरफ बढ़ते हुए, यहोशू ने इस्राएलियों को याद दिलाया था कि परमेश्वर ने उनके लिए क्या किया था । यहोशू ने उन्हें जालों और फन्दों से दूर रहने की सलाह भी दी थी । यदि आप एक छोटा सा जाल लाए हैं, दिखाएं कि यह कैसे काम करता है । यदि आप एक जाल नहीं लाए हैं, वर्णन करें कि वह कैसे काम करता है । एक जाल में फँसने से बचने के लिए हमें कौन सी कुछ चीजें करनी होगी ? (सबसे पहले हमें पहचानना होगा कि यह एक जाल है और फिर उससे दूर रहना है) ।

- अपने आखिरी सलाह में, यहोशू ने इस्राएल को ''जातियों (कनानियों) की भक्ति में लवलीन'' रहने की बजाय ''प्रभु की भक्ति में लवलीन'' रहने का उपदेश दिया था'' (यहोशू 23:8, 12 । ध्यान दें कि इस घटना में, शब्द *लवलीन* का मतलब है उनके साथ जुड़े रहना) । हम कैसे संसार की भक्ति में लवलीन रहने की बजाय ''प्रभु की भक्ति में लवलीन'' रह सकते हैं ? कनानी जातियों की भक्ति में लवलीन रहना, इस्राएलियों के लिए कैसे एक फन्दा या जाल हो सकता था ? संसार के कुछ कौन से फन्दे या जाल हैं जिनका आज हम सामना करते हैं ?

- अपने जीवन के अन्त में यहोशू ने क्या महत्वपूर्ण सलाह दिया था ? (देखें यहोशू 24:14...15) । यहोशू और इस्राएल ने किसकी सेवा करने का अनुबंध किया था ? (देखें यहोशू 24:15...18, 21...25, 31) । एक ही समय में एक व्यक्ति सच्चे परमेश्वर और सांसारिक परमेश्वरों की सेवा क्यों नहीं कर सकता ?

- प्रभु की सेवा करने के लिए *आज* का चुनाव करना क्यों महत्वपूर्ण है ? हम कैसे दिखा सकते हैं कि हमने उसकी सेवा करने का चुनाव किया है ?

  एल्डर मारवीन जे. ऐस्टन ने कहा था: ''यहोशू हमें तत्काल निर्णय लेने के महत्व को याद दिलाता है: 'आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे;...परन्तु मैं तो मेरे घराना समेत यहोवा की ही सेवा नित करूँगा' (यहोशू 24:15) । कल नहीं, तब भी नहीं जब हम तैयार होते हैं, तब भी नहीं जब यह सुविधाजनक हो...परन्तु 'आज के दिन', तत्काल, चुनो जिसकी तुम सेवा करोगे । वह जो हमें अनुसरण करने के लिए आमंत्रित करता है, सदैव उसकी आत्मा के साथ हमारे समक्ष होगा और रास्ते का मार्गदर्शन करने के लिए प्रभाव डालेगा । उसने समय की सारणी को बनाया है और चिन्हित किया है, फाटकों को खोला है, और रास्ते को दिखाया है । उसने हमें अपने पास आने का निमंत्रण दिया है, और उसके साथ का आनंद लेने का तत्काल अच्छा समय होगा । हम यीशु के समान कार्य करने के द्वारा कार्य को अच्छे से कर सकते हैं और उसपर टिके रह सकते हैं...उसके पिता की इच्छा के प्रति पूरी तरह से समर्पण को बनाना'' (Conference Report में, अप्रैल 1983, 41; या *Ensign,* मई 1983, 30...31) ।

निष्कर्ष

इस्राएलियों के प्रति यहोशू के आखिरी सलाह में वही उत्तरदायित्व सम्मिलित था जिसे कि प्रभु ने उसे एक भविष्यवक्ता के रूप में बुलाते समय दिया था...मजबूत बनना और साहसी रहना (यहोशू 23:1...6) । उत्तरदायित्व आज भी उतना ही लागू होता है जितना कि तब हुआ था क्योंकि हम सारे अच्छाई और बुराई के बीच के महत्वपूर्ण आत्मिक युद्ध से जुड़े हुए हैं ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था कि सुरक्षा और शान्ति के लिए दो सिद्धांत जरूरी हैं: ''पहला, परमेश्वर में भरोसा; और दूसरा, आज्ञाओं को मानने, प्रभु की सेवा करने, वही करना जो सही है, के लिए एक संकल्प...प्रकटीकरणों में प्रभु ने इसे बहुत स्पष्ट किया है कि यद्यपि समय संकटपूर्ण बन गया है, यद्यपि हम लालच और पाप द्वारा घिरे हुए हैं, यद्यपि असुरक्षा की एक भावना है, यद्यपि व्यक्तियों के हृदय उन्हें पराजित करते हैं और चिन्ता उनकी आत्माओं में भर जाता है, यदि परमेश्वर में भरोसा रखते हैं और उसकी आज्ञाओं को मानते हैं तो हमें डरने की आवश्यकता नहीं है'' (Conference Report में, अक्टू. 1950, 146) ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. एक सफल मार्गदर्शक का स्थान लेना

- कई लोग, जैसे यहोशू और ब्रिग्हम यंग को महान मार्गदर्शकों का स्थान ग्रहण करने के लिए बुलाया गया था । उनकी कुछ चुनौतियाँ क्या रही होंगी ? आपके विचार से उन्हें सफल बनाने में किसने सहायता किया ? सफल बनने में सहायता के लिए हम क्या कर सकते हैं जब हम किसी ऐसे के स्थान को ग्रहण करते हैं जो, चाहे कार्य पर, गिरजाघर में, विद्यालय में या घर में श्रेष्ठ रहा हो ?

2. अन्य लोगों पर व्यक्तिगत पापों के परिणाम

- यहोशू 7 में आकान के विवरण की शिक्षा दें । आकान के आज्ञाकारी न होने के कारण, इस्राएली के लोगों के द्वारा पराजित हुए थे (यहोशू 7:1...5) । इसे उत्पन्न करने के लिए आकान ने क्या किया था ? (देखें यहोशू 7:20...21 । यरीहो से कपड़े और पैसे लेने में उसकी आज्ञा का पालन न करने के द्वारा वह इस्राएल पर प्रभु की असहमति को लाया था) ।

- हमारे व्यक्तिगत पापों का दूसरे लोगों पर कैसे प्रभाव पड़ता है, के बारे में आकान के पाप का प्रभाव क्या सुझाव देता है ? सोचने में अविश्वसनीयता क्या है कि हम सिर्फ अपने काम से मतलब रखते हैं और किसी अन्य को कोई तकलीफ नहीं होगा ? (आप एक व्यक्ति के कार्यों और दूसरों पर उसके प्रभाव के उदाहणों का उपयोग करना चाहें: एक शराब का सेवन किए हुए वाहन-चालक के द्वारा उत्पन्न दुर्घटना मासूम लोगों के जीवनों पर प्रभाव डालता है जो घायल हुए हैं । एक व्यक्ति जो रविवार विद्यालय कक्षा को भंग करता है और दूसरों को ध्यान लगाने और आत्मा को महसूस करने में कठिनाई पैदा करता है । एक व्यक्ति जो यौन पापों को करता है या ज्ञान के शब्द का पालन नहीं करता है, दूसरों के लिए दर्द और तकलीफ लाता है । एक पति या पत्नी जो अविश्वासी है वह एक परिवार को तोड़ सकता या सकती है और मासूम पारिवारिक सदस्यों के प्रति महान दर्द को उत्पन्न करता या करती है । व्यक्तिगत गिरजाघर के सदस्य जो प्रभु का अनुसरण नहीं करते हैं, प्रभु के आशीषों से पूरे गिरजाघर को वंचित रखते हैं) ।

  एल्डर जेम्स ई. फॉस्ट ने कहा था: ''निजी चुनाव निजी नहीं हैं; वे सारे सार्वजनिक परिणाम हैं...हमारा समाज उस पूरे का जोड़ है जिसे लाखों व्यक्तिगत लोग अपने निजी जीवन में करते हैं । व्यक्तिगत व्यवहारों का पूरा जोड़, सारे संसार में भारी महत्व के सार्वजनिक परिणाम हैं । पूरी तरह से कोई भी चुनाव निजी नहीं है'' (Conference Report में, अप्रैल 1987, 101; या *Ensign,* मई 1987, 80) ।

3. कालेब हेब्रोन की भूमि को प्राप्त करता है

- यहोशू 14 दुबारा बताता है कि कैसे कालेब ने यहोशू से हेब्रोन की भूमि को प्राप्त किया था । कालेब ने हेब्रोन की भूमि को क्यों प्राप्त किया था ? (देखें यहोशू 14:6...14 । ध्यान दें कि वाक्यांश ''यहोवा का पूरी रीति से अनुगामी होना'' आयतें 8, 9, और 14 में दोहराया गया है) ।

  अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कालेब के प्रति अपनी श्रद्धा को बताया है और सुझाव दिया है कि हम उससे कुछ पाठ सीख सकते हैं:

  ''कालेब के उदाहरण से हम बहुत महत्वपूर्ण पाठ सीखते हैं । बिल्कुल उसी तरह जैसे कि कालेब ने संघर्ष किया था और अपनी संपत्तियों को प्राप्त करने के लिए सच्चा और विश्वासी रहा था, उसी तरह हमें याद रखना होगा कि, जब प्रभु ने उसके राज्य में हमारे लिए एक स्थान की प्रतिज्ञा की थी, हमें लगातार प्रयास करना होगा और विश्वासी रहना होगा ताकि पुरस्कार को प्राप्त करने के लिए योग्य हो सकें ।

  ''कालेब ने उसके चल रहे घोषणा को एक अनुरोध और एक चुनौती के साथ खत्म किया जिसमें मैं पूरी तरह से सहमत हूं । अनाकवंशी और बड़े बड़े गढ़वाले नगर तब भी प्रतिज्ञा की गई भूमि की प्रजातियाँ थीं, और उन्हें बाहर आना था । कालेब ने कहा, अब 85 वर्ष पर, 'यह पहाड़ी मुझे दे' (यहोशू 14:12) ।

  ''इस क्षण के कार्य के लिए यह मेरा अनुभव है । हमारे सामने बड़ी-बड़ी चुनौतियाँ हैं, बड़े बड़े अवसर जिससे मिलना है । मैं उस उत्तेजक परिदृश्य का स्वागत करता हूं और प्रभु को कहने के लिए महसूस करता हूं, विनम्रता से, 'यह पहाड़ी मुझे दे', ये चुनौतियाँ मुझे दे'' (Conference Report में, अक्टू. 1979, 115; या *Ensign,* नव. 1979, 79) ।

4. ''चुन लो कि आज तुम किसकी सेवा करोगे''

यदि पुराने नियम प्रस्तुतिकरण (53224) उपलब्ध हो, भूख और प्यास के एक समय में एक अरबी सेटैलियन की परिक्षा के बारे में एक छः मिनट का खण्ड ''चुन लो कि आज तुम किस की सेवा करोगे'', को शायद आप दिखाना चाहें ।

न्यायधीशों का राज्य

पाठ
19

न्यायियों 2; 4; 6...7; 13...16

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उन प्रभावों को खोजने के लिए प्रोत्साहित करें जो उन्हें एक चुनौती भरे संसार में सुसमाचार को जीने में मजबूत करेगा ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें:

   क. न्यायियों 2:6...23 । धर्मत्याग का चक्र उसी तरह आरंभ होता है जैसे कि अपने आस-पास के लोगों के परमेश्वरों की सेवा के लिए इस्राएल के बच्चों की उठ रही पीढ़ी ने प्रभु को छोड़ दिया था ।

   ख. न्यायियों 4:1...16 । बाराक को याबीन, कनान के राजा से इस्राएल को आजाद कराने की आज्ञा मिली थी (4:1...7) । वह जाने के लिए मान जाता है यदि दाबोरा उसके साथ जाएगी (4:8...9) । दाबोरा और बाराक इस्राएल को कनानियों से छुड़ाते हैं (4:10...16) ।

   ग. न्यायियों 6...7 । इस्राएल को मिद्यानियों से छुड़ाने की आज्ञा गिदोन को दी जाती है (6:1...24) । वह और दस अन्य पुरूष रात में बाल की बेदी का नाश करते हैं (6:25...35) । प्रभु गिदोन को दो चिन्ह देने के द्वारा सहायता का आश्वासन देता है (6:36...40) । गिदोन और 300 अन्य पुरूष इस्राएल को मिद्यानियों से छुड़ाते हैं (7:1...25) ।

   घ. न्यायियों 13...16 । एक दूत शिमशोन के माता-पिता को उसे एक नाजीर के रूप में बड़ा करने का आदेश देता है (13:1...25) । शिमशोन बल के कई साहसी कार्यों को करता है परन्तु नाजिरियों के कई वचनों को तोड़ता है (14...15) । शिमशोन दलीला के सम्मोहन में पड़ जाता है; उसके बाल काटे जाते हैं, और वह कमजोर हो जाता है, पलिश्तियों के द्वारा बंधक बनाया जाता है, और उनके घरों को जब नीचे खींचा जा रहा था वह मर जाता है (16:1...31) ।

3. इस पाठ में धर्मशास्त्र विवरणों के लिए एक या अधिक सार की तैयारी के लिए आप कक्षा के सदस्यों से शायद पूछना चाहें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने एक समय के बारे में बताया था जब उन्होंने अपने अहाते में एक छोटा सा पेड़ लगाया था परन्तु उसे सीधा बढ़ने में सहायता के लिए एक सहारा देने वाले खूँटे के उपयोग के प्रति लापरवाही की थी । समय में, हवा के कारण वह एक तरफ से बुरी तरह झुक गया था । अध्यक्ष हिंकली ने जाना कि यदि उन्होंने पेड़ को खूँटे से बाँधा होता, उसने उसे तब तक सहारा दिया होता जब तक कि वह स्वयं हवा का सामना करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मजबूत न हो जाता । (Conference Report में, अक्टू. 1993, 77...78; या *Ensign,* नव. 1993, 59) ।

समझाएं कि कभी-कभी हम उस छोटे से पेड़ की तरह हो सकते हैं, हम स्वयं हवा का सामना करने में असमर्थ (शैतान के लालच) हो सकते हैं । न्यायियों की पुस्तक में हम कुछ ''खूँटों'' के बारे में सीखते हैं जो हमें सहारा दे सकते हैं । चॉकबोर्ड पर चार सहारा देने वाले खूँटों से बँधे हुए एक छोटे से पेड़ को बनाएं । जैसे-जैसे आप इस पाठ में चार धर्मशास्त्र की सीखते जाते हैं, प्रत्येक खूँटे पर निम्नलिखित पर्चा लगाएं:

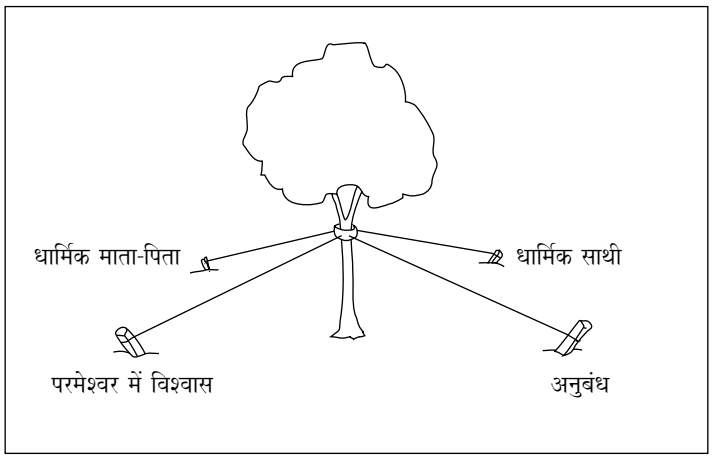

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

यहोशू द्वारा मार्गदर्शित, प्रतिज्ञा की गई भूमि का काफी हिस्सा इस्राएलियों ने जीत लिया था । यहोशू के मरने के पश्चात, इस्राएल एक अकेले नेता के अधिन संयुक्त नहीं था, भविष्यवक्ता शमूएल और राजा शाऊल के दिन तक । इस अन्तराल के दौरान, 12 न्यायधीशों ने इस्राएल के राजा और सैनिक मार्गदर्शक के रूप में सेवा की थी । उनके राज्य अधिकतर दुःखान्त रहे थे क्योंकि इस्राएल कई बार के लिए धर्मत्याग, दासता, पश्चाताप, और सुपुर्द हुआ था ।

इस इतिहास के दुःखान्त हिस्से की भरपाई, उन लोगों की कहानियाँ हैं जो सच्चे रहे थे, एक धर्मत्याग के संसार में विश्वास और साहस के कार्य को कैसे करना है, के शक्तिशाली उदाहरणों को रखा था । दोनों दबोरा और गिदोन धार्मिक न्यायधीश रहे थे जिन्हें प्रभु ने इस्राएल को छुड़ाने के लिए उठाया था । दबोरा का विश्वास बड़ी संख्या में कनानी सैनिकों से इस्राएल को छुड़ाने के लिए जिम्मेदार था । प्रभु पर गिदोन का भरोसा उसके 300 पुरूषों की सेना को मिद्यानियों को चमत्कारिक तरीके से पराजित करने की अनुमति को दिया था ।

1. धार्मिक माता-पिता के बल और उनके रास्ते का परित्याग करने के परिणाम

न्यायियों 2:6...23 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- न्यायियों की पुस्तक में, इस्राएल के बच्चों ने धार्मिकता और धर्मत्याग के कई चक्रों का अनुभव किया था (पृष्ठ 89 पर दिए गए आरेख ''न्यायियों में धर्मत्याग का चक्र'' को देखें) । इस्राएलियों की नई पीढ़ी ने धर्मत्याग के चक्र को कैसे आरंभ किया ? (विशेषकर न्यायियों 2:10, 12, 17, 20 और 22 को देखें । सुझाव दें कि कक्षा के सदस्य इन आयतों के मुख्य शब्दों पर चिन्ह लगाएं । संकेत करें कि इस्राएल के बच्चों ने परमेश्वर को छोड़ दिया था और रास्तों को छोड़ दिया था और उनके माता-पिता के अनुबंधों को छोड़ दिया था) ।
- कभी-कभी बच्चे क्यों धार्मिक शिक्षाओं और अपने माता-पिता के रास्तों का परित्याग करते हैं ? माता-पिता अपने बच्चों की विश्वासी बनने में कैसे सहायता कर सकते हैं ? धार्मिकता से जीने में आपके माता-पिता और अन्य पारिवारिक सदस्यों ने आपको कैसे मजबूत किया है ?
- हम धर्मत्याग के आरंभिक चिन्हों को कैसे पहचान सकते हैं ? व्यक्तिगत तौर पर कोई धर्मत्याग के चक्र को कैसे तोड़ सकता है ? उपयुक्त तरीके से हम परिवार के एक सदस्य या दोस्त की कैसे सहायता कर सकते हैं जो सच्चाई से दूर जाता हुआ प्रतीत होता है ?

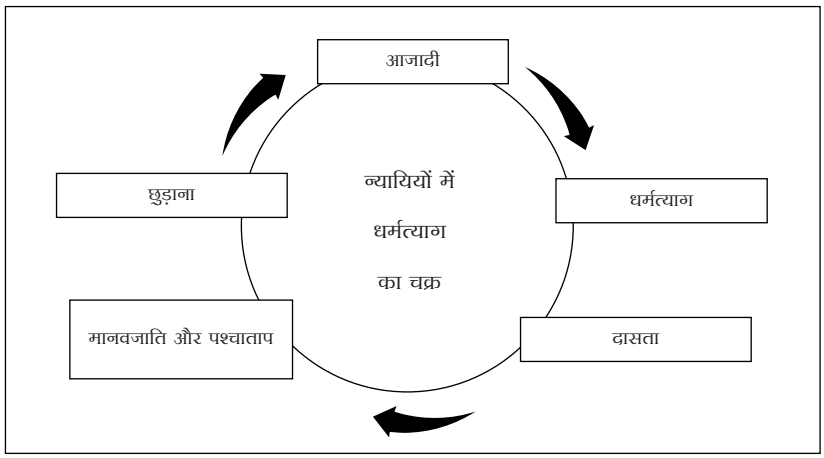

2. दबोरा...एक धार्मिक साथी का बल

न्यायियों 4:1...16 से दबोरा और बाराक की कहानी पर संक्षिप्त समीक्षा दें, या कक्षा के एक नियुक्त सदस्य को ऐसा करने दें ।

- प्रभु ने बाराक को क्या करने की आज्ञा दी ? (देखें न्यायियों 4:6...7) । इस काम के बारे में बाराक ने कैसा अनुभव किया ? किस शर्त पर बाराक सीसरा और उसके 900 रथों के विरूद्ध युद्ध में जाने का इच्छुक था ? (देखें न्यायियों 4:8) । आपके विचार से बाराक सीसरा का सामना करने के लिए क्यों इच्छुक था यदि दबोरा उसके साथ जाएगी ?

- दबोरा के बारे में आपको क्या प्रभावित करता है ? उसके पास कौन से गुण थे जो बाराक के पास नहीं हो सकते थे ? (देखें न्यायियों 4:4...9, 14) ।

- एक सच्चा साथी होने के बारे में हम दबोरा से क्या सीख सकते हैं ? (एक बात हम सीख सकते हैं कि एक सच्चा साथी हमें प्रभु की आज्ञाओं को मानने और जो सही है उसे करने के लिए हमें बल को प्राप्त करने में प्रेरित करता या करती है) । आपके साथियों ने कठिन चुनौतियों का सामना करने या प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने में आपकी सहायता कैसे की है ? दूसरों के लिए हम अच्छे साथी कैसे हो सकते हैं ?

  सुझाव दें कि कक्षा के सदस्य अपने दोस्तों का नाम लिखें और उनसे पूछें (1) यदि वे इन दोस्तों के लिए दबोरा की तरह हैं और (2) यदि ये दोस्त दबोरा की तरह हैं ।

3. गिदोन — परमेश्वर में विश्वास का बल

न्यायियों 6...7 से गिदोन की कहानी पर संक्षिप्त समीक्षा दें, या कक्षा के एक नियुक्त सदस्य को ऐसा करने दें ।

- प्रभु ने गिदोन को क्या करने की आज्ञा दी ? (देखें न्यायियों 6:14) । गिदोन का सबसे पहला जवाब क्या था ? (देखें न्यायियों 6:15) ।

- प्रभु ने गिदोन को कैसे आश्वासन दिया कि उसने उसे इस्राएल को छुड़ाने की आज्ञा दी थी और कि वह उसके साथ होगा और उसकी सहायता करेगा ? (देखें न्यायियों 6:16...23, 36...40; 7:9...15) ।

- जब गिदोन ने विश्वास कर लिया कि प्रभु ने सच में उसे इस्राएल को छुड़ाने की आज्ञा दी थी, वह विश्वास के साथ आगे बढ़ा था । प्रभु क्यों चाहता था कि मिद्यानियों से लड़ने के लिए गिदोन की सेना के 32,000 पुरूषों से घटकर 300 की हो जाए ? (देखें न्यायियों 7:2 । प्रभु चाहता था कि इस्राएली उसने भरोसा रखें और उसके बल को पहचानें, ना कि अपने बल को) । प्रभु आज उसमें विश्वास करने और उसकी शक्ति को पहचानने के लिए हमें कैसे शिक्षा देता है ?

- क्या हुआ था जब गिदोन और उसके 300 पुरूषों ने मिद्यानियों का सामना किया था ? (देखें न्यायियों 7:16...23) । आपके विचार से गिदोन ने क्यों अपने लोगों को ''यहोवा की तलवार और गिदोन की तलवार'' को चिल्लाने दिया था ? (देख न्यायियों 7:20 । गिदोन जानता था...और चाहता था कि उसके लोग जानें...कि प्रभु उनके साथ था) ।

- गिदोन से हम क्या सीख सकते हैं ? प्रभु ने आपसे कुछ करने के लिए कहा हो जो कठिन हो तब उसने आपकी सहायता कैसे की थी ? (कक्षा के सदस्य होने के नाते अनुभवों को बाँटें, गवाही दें कि जब प्रभु आपको कुछ करने की आज्ञा देता है, उसे प्राप्त करने में वह आपकी सहायता करेगा) ।

4. शिमशोन...अनुबंधों का बल और उन्हें तोड़ने के परिणाम

न्यायियों 13...16 से शिमशोन की कहानी पर संक्षिप्त समीक्षा दें, या कक्षा के एक नियुक्त सदस्य को ऐसा करने दें ।

- शिमशोन की माता, जोकि एक बाँझ थी, ने कैसे जाना कि वह एक बेटे को जन्म देगी ? (देखें न्यायियों 13:2...3) । दूत ने शिमशोन की माता से उस बेटे के बारे में क्या कहा जिसे वह जन्म देगी ? (देखें न्यायियों 13:4...5 । समझाएं कि नाजिरियों ने प्रभु के साथ उन्हें सांसारिक चीजों से अलग होने का और उसके प्रति पवित्र बनने का अनुबंध किया था । नाजिरियों की प्रतिज्ञा गिनती 6:2...6, 8 में दिया गया है) ।

- इस्राएलियों को पलिश्तियों से छुड़ाने के उसे कार्य को पूरा करने में सहायता के लिए प्रभु ने शिमशोन को किन आशीषों को दिया था ? (देखें न्यायियों 13:24...25; 14:5...6, 19; 15:14...15 । प्रभु ने उसे आत्मिक और शारीरिक बल को दिया था) ।

- एक नाजिरी और इस्राएल के घराने का एक सदस्य होने के नाते, शिमशोन ने प्रभु के साथ अनुबंध किया था । फिर भी, उसने शीघ्र ही अपनी प्रतिज्ञा को और इस्राएल के घराने का एक सदस्य होने के नाते अपने अनुबंधों को तोड़ा था । किन प्रतिज्ञाओं और अनुबंधों को उसने तोड़ा था ? (कुछ अनुबंध जिसे शिमशोन ने तोड़ा था उसकी सूचि नीचे दी गई है) ।

  क. उसने इस्राएल के अनुबंधित घराने से बाहर विवाह किया था (न्यायियों 14:1...3) ।
  ख. वह एक वेश्या के साथ अनैतिकता में था (न्यायियों 16:1) ।
  ग. उसके बालों को काटा गया था (न्यायियों 16:4...20) ।

- शिमशोन का उसके अनुबंधों को तोड़ने के क्या परिणाम थे ? (देखें न्यायियों 16:17...21 । उसने अपने आत्मिक और शारीरिक बल को खो दिया था, और पलिश्तियों ने उसे अन्धा करने उसे बान्ध दिया था । यदि आवश्यक हो, समझाएं कि शिमशोन के बाल उसके शारीरिक बल के साधन नहीं थे । बजाय उसके, उसके बाल प्रभु के साथ उसके अनुबंध के चिन्ह थे, और जब उसके बाल काटे गए, प्रभु ने उसके शारीरिक बल को वापस ले लिया क्योंकि अनुबंध को तोड़ा गया था) । क्या होता है जब हम अपने अनुबंधों को तोड़ते हैं ? प्रभु के साथ हमारे अनुबंध के क्या चिन्ह हैं ?

- अनुबंध जिसे हम प्रभु के साथ बनाते हैं, वह बल, सहायता, और समर्पण का एक साधन होना चाहिए । प्रभु के साथ हम किन अनुबंधों को बनाते हैं ? इन अनुबंधों ने आपको कैसे मजबूत किया है ?(एक तरीका जिससे हमें अनुबंध मजबूत बनाते हैं वह है कि हमें भटकाने या अपने अधिन करने के शैतान की मेहनत का सामना करने में सहायता करने के द्वारा) ।

- शिमशोन के पास बहुत क्षमता थी । दूत जिसने उसके जन्म की घोषणा की थी कि वह इस्राएलियों को पलिश्तियों से छुड़ाने के लिए आरंभ करेगा । प्रभु ने उसे कई उपहारों से आशीषित किया था, महान शारीरिक बल को सम्मिलित करते हुए । कौन सी आंतरिक कमजोरी उसके गिरने का कारण थी ? (देखें न्यायियों 15:7; 16:1; सि. और अनु. 3:4) । उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है असंयम, अमरत्व, बदला लेना, और अनुबंधों का उल्लंघन करना) ।

निष्कर्ष

समझाएं कि यहोशू की पुस्तक में कनानियों के विरूद्ध इस्राएलियों ने कई भौतिक युद्धों को लड़ा था और जीते थे । फिर भी, न्यायियों की पुस्तक में इस्राएलियों ने आत्मिक युद्धों को हारना आरंभ कर दिया था, अपने आपको कनानियों के सांसारिक प्रथाओं और झुठे परमेश्वरों के प्रभाव में पड़ने देने के द्वारा । हम उसी तरह के आत्मिक युद्धों का सामना करते हैं । गवाही दें कि हम इन युद्धों में जीत सकते हैं जब हम (1) धार्मिक माता-पिता और पूर्वजों के रास्ते का अनुसरण करते हैं, (2) अच्छे दोस्त बनाते हैं, (3) प्रभु में अपने विश्वास को बढ़ाते हैं, और (4) अपने अनुबंधों को रखते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. माता-पिता का अपने बच्चों के सांसारिकता के लिए योगदान (न्यायियों 1:28)

- विश्वासी बने रहने की इस्राएलियों की नई पीढ़ी की असफलता पूरी तरह से उनकी ही गलती का परिणाम नहीं था । न्यायियों 1:21, 27...33, और 2:1...4 के अनुसार, बच्चों की असफलता के लिए कैसी नींव रखी गई थी ? (यह कनानियों को भगाने की माता-पिता की असफलता के द्वारा रखी गई थी । यहाँ तक माता-पिता उनके आस-पास के संसार के प्रभावों का सामना करने के लिए पर्याप्त मात्रा में मजबूत थे, परन्तु उनके बच्चे नहीं थे) ।

- आज कुछ माता-पिता कैसे अपने बच्चों को सांसारिक प्रभावों के सामने लाते हैं, वही गलती करते हुए जैसा कि इस्राएलियों की नई पीढ़ी के माता-पिता ने किया था ? (विशेष उत्तरों के लिए प्रोत्साहित करें) ।

2. हमारे दिनों में चमत्कार

- गिदोन की तरह, कुछ लोग क्यों महसूस करते हैं कि प्रभु ने उनके समय की बजाय पहले की पीढ़ियों में अधिक चमत्कारिक तरीके से काम किया था ? (देखें न्यायियों 6:13) । चमत्कारों के काम करने में हमारी क्या भूमिका है ? (देखें मरोनी 7:35...38) । आप कैसे जानते हैं कि आज भी परमेश्वर ने चमत्कार के काम को जारी रखा है ? हम अपने जीवन में छोट या साधारण चमत्कारों को कैसे अच्छी तरह से पहचान सकते हैं ?

3. ''इस्राएल मेरे विरूद्ध अपनी बड़ाई मारने लगे'' (न्यायियों 7:2)

- मिद्यानियों का सामना करने से पहले प्रभु ने गिदोन को उसकी सेना में से अधिकतर लोगों को वापस घर भेजने की आज्ञा क्यों दी थी ? (देखें न्यायियों 7:2) । आज हममें से कुछ कैसे ''[अपने] आपकी बड़ाई करते हैं'' ? (बजाय पहचानने के कि हमारी आशीषें और बल प्रभु के तरफ से आती हैं, हममें से कुछ दावा करते हैं कि जो कुछ भी हमारे पास है वह हमारी मेहनत की नतीजा है) । हम इस समस्या से बाहर कैसे आ सकते हैं ?

4. लालच का सामना करना

- क्यों, शिमशोन के जानने के पश्चात कि दलीला ने उसके साथ तीन बार विश्वासघात करने की कोशिश की थी, उसने उसे अपने बल के भेद को बता दिया था ? (देखें न्यायियों 16:15...17) । युसूफ का पोतिपर की पत्नी के जवाब के विषमता में शिमशोन का दलीला के प्रति जवाब (उत्पत्ति 39:7...12) । हम दृढ़ लालचों का सामना कैसे कर सकते हैं या उससे कैसे बाहर आ सकते हैं ?

पाठ
20

''सारा शहर...जानता है कि तुम एक सद्‌गुणी स्त्री हो''

रूत; 1 शमूएल 1

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को रूत, नाओमी, और हन्ना के धार्मिक गुणों की बराबरी करने के लिए प्रोत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. रूत 1...2 । उसके पति के मरने के पश्चात, रूत नाओमी के साथ बेतलेहेम में जाने के लिए अपने घर को छोड़ती है । बेतलेहेम में, रूत बोअज के खेतों में काम करती है, जा उससे उदारता का व्यवहार करता है ।

   ख. रूत 3...4 । रूत बोअज के पैरों पर लेटती है, और वह उससे विवाह करने की प्रतिज्ञा करता है । वे विवाह करते हैं और एक बच्चा पैदा होता है । उनके वंशजों में राजा दाऊद और यीशु मसीह सम्मिलित हैं ।

   ग. 1 शमूएल 1; 2:1...2, 20...21 । हन्ना एक बेटे द्वारा आशीषित होती है, जिसे वह अपनी प्रतिज्ञानुसार प्रभु को दे देती है । बाद में वह और बच्चों द्वारा आशीषित होती है ।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, कक्षा के प्रत्येक सदस्य के लिए कागज का एक टुकड़ा और एक पेन या एक पेन्सिल लाएं ।

3. यदि पुराने नियम का विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) उपलब्ध हो, पाठ के हिस्से के रूप में आप शायद ''हन्ना का विश्वास'' के एक तीन मिनट का खण्ड दिखाना चाहें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन या पेन्सिल दें ।

समझाएं कि यद्यपि रूत की पुस्तक संक्षिप्त है, यह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि रूत एक धार्मिक स्त्री थी । तब निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें और कक्षा के प्रत्येक सदस्य को उनके कागज के टुकड़े पर उत्तरों को लिखने दें:

- यदि आपके पात्र का वर्णन केवल कुछ ही शब्दों में करना हो, आप किन शब्दों का होना पसन्द करेंगे ? उस बताए गए इच्छुक पात्र की तरह बनने के लिए आप इस सप्ताह कौन सी एक चीज कर सकते हैं ?

समझाएं कि यह पाठ रूत और दो अन्य स्त्रियाँ, नाओमी और हन्ना के नेक गुणों पर चर्चा करेगा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. रूत नाओमी के साथ बेतलेहेम में जाने के लिए अपने घर को छोड़ती है।

रूत 1...2 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- नाओमी और उसका परिवार मोआब में रहने के लिए क्यों जाता है ? (देखें रूत 1:1...2) । नाओमी अपने पति और बेटों की मृत्यु के पश्चात वह बेतलेहेम वापस क्यों आती है ? (देखें रूत 1:6 । बेतलेहेम में उसका घर था, और वहां का अकाल खत्म हो गया था) ।

- मोआब में रहने के दौरान, नाओमी के बेटों ने ओर्पाह और रूत से विवाह किया था, जोकि मोआब की स्त्रियाँ थीं (रूत 1:4) । नाओमी ने अपनी बहुओं के प्रति प्रेम और चिन्ता को कैसे व्यक्त किया था जब उन्होंने उसके साथ बेतलेहेम जाने के लिए कहा था ? (देखें रूत 1:7...13) । नाओमी की उसके बहुओं के प्रति चिन्ता से हम क्या सीख सकते हैं जो हमारे पारिवारिक संबंधों में हमारी सहायता कर सकता है ?

- नाओमी की बहुओं में से एक, ओर्पाह, अपने परिवार के पास वापस चली गई, परन्तु दूसरी, रूत ने, नाओमी के साथ बेतलेहेम जाने का आग्रह किया था । रूत 1:16...17 में नाओमी के प्रति रूत की प्रतिज्ञा के बारे में हम क्या सीख सकते हैं ? (वह प्रेमी, निष्ठावान, और बलिदान की इच्छुक थी) । अपने परिवारों में हम महान निष्ठावान को कैसे दिखा सकते हैं ? हम महान अस्वार्थीपन को कैसे दिखा सकते हैं जैसा कि रूत ने दिखाया था ?

- नाओमी के साथ बेतलेहेम जाने के द्वारा रूत ने किन चीजों को छोड़ा था ? (उत्तरों में सम्मिलित उसकी जन्मभूमि, उसका परिवार, उसके दोस्त, और धर्म सम्मिलित हो सकते हैं) । नाओमी के साथ जाने के द्वारा रूत ने क्या प्राप्त किया था ? (यीशु मसीह का सुसमाचार; पहले अतिरिक्त शिक्षा सुझाव को देखें) । सुसमाचार के लिए बलिदान के बारे में हम रूत से क्या सीख सकते हैं ?

- बेतलेहेम जाने के पश्चात, नाओमी और अपने स्वयं के प्रति भोजन को प्राप्त करने के लिए रूत ने क्या किया ? (देखें रूत 2:2 । आपको शायद समझाने की आवश्यकता हो कि एक अनाज बटोरने वाला वह व्यक्ति था जिसने कटनी के पश्चात खेतों में बचे हुए अनाज को इकट्ठा करने और रखने की अनुमति दी थी) । रूत ने किसके खेतों में अनाज इकट्ठा किया ? (देखें रूत 2:1, 3) । बोअज रूत द्वारा क्यों प्रभावित हुआ था ? (देखें रूत 2:5...7, 11 । बोअज ने देखा कि रूत एक परिश्रमी स्त्री थी । वह उन सभी चीजों को भी जानता था जिसे रूत ने नाओमी के लिए किया था) । बोअज ने रूत के प्रति उदारता कैसे दिखाई थी ? (देखें रूत 2:8...9, 14...16) ।

- रूत ने अपने निःस्वार्थपन को कैसे दिखाया था जब वह अनाज इकट्ठा करके वापस आई थी ? (देखें रूत 2:14, 17...18 । रूत वह अनाज घर ले आई थी जिसे उसने इकट्ठा किया था, और वह नाओमी के लिए कुछ भोजन भी लाई थी जिसे उसने अपने दोपहर के खाने में से बचाया था) । दूसरे लोगों के निःस्वार्थपन के कार्यों के द्वारा आप कैसे आशीषित हुए हैं ?

2. रूत और बोअज विवाह करते हैं और उन्हें एक बच्चा होता है।

रूत 3...4 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- नाओमी ने रूत को एक धर्मविधि करने की सलाह दी जिससे वह आशा करती थी कि उसका परिणाम रूत और बोअज का विवाह होगा (रूत 3:1...5) । बोअज के पैरों पर लेटने के द्वारा, उसके प्रभाव में, रूत उसे विवाह करने का प्रस्ताव देती है । नाओमी की सलाह के प्रति रूत की आज्ञाकारिता, नाओमी के प्रति उसके अनुभवों के बारे में क्या प्रकट करता है ?

- बोअज ने कैसी प्रतिक्रिया दिखाई जब वह जागा और रूत को अपने पैरों पर लिटा हुआ पाया था ? (देखें रूत 3:8...15 । ध्यान दें कि जब रूत ने कहा था, ''तू अपनी दासी को अपनी चद्दर ओढ़ा दे'', उसका मतलब था ''मेरी रखवाली करो, मेरी सुरक्षा करो, मेरी देखभाल करो'') । किस परिस्थिति में बोअज रूत से विवाह करने के लिए मान गया ? (देखें रूत 3:11...13 । समझाएं कि जब रूत का पति मर गया था, उसके नजदीक के पुरूष रिश्तेदार को रूत से विवाह करना चाहिए था । बोअज नजदीक का पुरूष रिश्तेदार नहीं था, परन्तु वह रूत से विवाह करने के लिए मान गया यदि नजदीक का रिश्तेदार उससे विवाह नहीं करना चाहता हो तो) ।

- बेतलेहेम के लोगों के बीच रूत की क्या प्रतिष्ठा थी ? (देखें रूत 3:11) । बोअज के साथ उसके संबंध में इस प्रतिष्ठा से उसे कैसा फायदा हुआ ? यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हमारे पारिवारिक सदस्य, दोस्त, और पड़ोसी जानें कि हम किसमें विश्वास करते हैं और उसे संभाले रखने के लिए हममें कौन से गुण हैं ?

- रूत से विवाह करने की प्रतिज्ञा करने के पश्चात बोअज ने क्या किया ? (देखें रूत 3:15; 4:1...8) । बोअज ने कैसे दिखाया कि वह एक ईमानदार का पुरूष था ? (देखें रूत 4:9...10, 13 । उसने रूत के प्रति अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया था और एक पुरूष रिश्तेदार होने के नाते उसके मरे हुए पति के प्रति भी अपने दायित्व को पूरा किया था) ।

- इस्राएल का कौन सा प्रसिद्ध राजा रूत और बोअज का एक वंशज था ? (राजा दाऊद उनके पर-पोतों में से एक था; देखें रूत 4:17, 21...22) । और कौन सा रूत और बोअज का एक वंशज था ? (यीशु मसीह; देखें मत्ती 1:5...16; यूहन्ना 7:42) ।

- एल्डर थॉमस एस. मॉनसन रूत को एक नायिका कहते हैं (Conference Report में, अक्टू. 1974, 156; या *Ensign,* नव. 1974, 108) । आपके विचार से किस तरह से रूत एक नायिका है ? (एल्डर मॉनसन ने कहा था कि रूत कर्तव्य परायणता और निष्ठा का एक उदाहरण है । कक्षा के सदस्य शायद अतिरिक्त तरीकों का सुझाव देना चाहें जिससे रूत एक नायिका है) ।

3. हन्ना एक बेटे के द्वारा आशीषित होती है, जिसे वह अपनी प्रतिज्ञानुसार प्रभु को दे देती है।

1 शमूएल 1 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- हन्ना, एल्काना की पत्नी, की कोई संतान नहीं थी । प्रत्येक वर्ष वह मंदिर पर रोती और एक बेटे के लिए प्रार्थना करती थी (1 शमूएल 1:1...7) । 1 शमूएल 1:11 में हन्ना ने प्रभु से क्या प्रतिज्ञा की थी ? इस प्रतिज्ञा से हम हन्ना के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (वह एक अत्यंत विश्वासी स्त्री थी; कक्षा के सदस्य शायद अतिरिक्त उत्तरों का सुझाव कर सकते हैं) ।

- मंदिर में प्रार्थना करती हुई हन्ना की साक्षी किसने दी थी ? (देखें 1 शमूएल 1:9...12) । हन्ना ने एली को प्रभु के प्रति अपनी प्रतिज्ञा के बारे में क्या बताया ? (देखें 1 शमूएल 1:17) । एली के शब्दों को सुनने के पश्चात हन्ना ने कैसा अनुभव किया था ? (देखें 1 शमूएल 1:18) । जब हम परेशानी में होते हैं तब गिरजाघर के मार्गदर्शक हमारी सहायता कैसे कर सकते हैं ?

- हन्ना ने एली से कहा कि ''उसने अपने मन की बात खोलकर यहोवा से कही है'' (1 शमूएल 1:15) । हम अपनी प्रार्थनाओं को अधिक सच्चा और अर्थपूर्ण बनाने के लिए क्या कर सकते हैं ?

- प्रभु के प्रति हन्ना की प्रतिज्ञा के जवाब में क्या हुआ था ? (देखें 1 शमूएल 1:19...20) । शमूएल के जन्म के पश्चात हन्ना के कैसे अपनी प्रतिज्ञा को रखा था ? (देखें 1 शमूएल 1:21...28) । प्रभु के प्रति हम किन प्रतिज्ञाओं को करते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है, बपतिस्मा पर और मंदिर में अनुबंध जिन्हें हम उसके साथ बनाते हैं) । इन प्रतिज्ञाओं को रखने में निष्ठावान होने में हमारी सहायता के लिए हम हन्ना से क्या सीख सकते हैं ?

- आपके विचार से प्रभु की सेवा के लिए शमूएल को देने के बारे में हन्ना ने कैसा अनुभव किया था ? प्रभु हमें उसे क्या देने के लिए कहता है ? उसको देने के बारे में हमारा आभार क्या होना चाहिए ? (हमें इच्छापूर्वक, याद रखते हुए देना चाहिए कि प्रत्येक चीज जो हमारे पास आती है वह प्रभु से आती है) ।

- जब हन्ना शमूएल को मंदिर पर ले आई, उसने भेंट चढ़ाए और प्रभु की बड़ाई में गाया (1 शमूएल 1:24...25, 28; 2:1...2) । उन आशीषों के लिए जो प्रभु हमें देता है, उसका धन्यवाद देने के लिए याद रखना क्यों महत्वपूर्ण है ?

- बच्चों के द्वारा आशीषित होने से पहले हन्ना ने कई वर्षों तक इन्तजार किया था (1 शमूएल 1:2; 2:21) । धैर्यपूर्वक यहोवा की बाट जोहने के कारण बाइबिल के कौन से अन्य पात्र आशीषित हुए थे ? संसार उन चीजों के संबंधों के बारे में क्या कहता है कि हमें उन्हें कब प्राप्त करना चाहिए जिनके हम इच्छुक हैं ? प्रभु क्या कहता है ? उन आशीषों के लिए धैर्यपूर्वक इन्तजार करने के लिए हम कैसे सीख सकते हैं जो प्रभु के समय में आएंगी ?

निष्कर्ष

- रूत, नाओमी, और हन्ना के द्वारा किन नेक गुणों का उदाहरण दिया गया है ? (इन गुणों को चॉकबोर्ड पर सूचीबद्ध करें) ।

कक्षा के सदस्यों को रूत, नाओमी, और हन्ना के द्वारा प्रदर्शित नेक गुणों का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करें । गवाही दें कि इन गुणों को बढ़ाना हमें उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के नजदीक लाएगा ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. इब्राहीम के अनुबंध में धर्मपरिवर्तित प्रजातियों की स्वीकृति

समझाएं कि रूत जन्म से एक इस्राएली नहीं थी । जब उसने नाओमी के साथ बेतलेहेम जाने के लिए मोआब को छोड़ा था, उसने अपने धर्म को छोड़ दिया था, इस्राएल के परमेश्वर का अनुसरण किया था, नाओमी को बताते हुए, ''तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा'' (रूत 1:16) । बोअज से विवाह करने के द्वारा, रूत इस्राएल के राज्य घराने का हिस्सा बन गई थी, राजा दाऊद और यीशु मसीह की एक पूर्वज ।

- रूत का धर्मपरिवर्तन और इस्राएल के घराने में स्वीकृति उन लोगों के प्रति मसीह के व्यवहार को कैसे प्रतिबिंबित करता है जो उसके गिरजाघर से जुड़ना चाहते हैं ? (देखें 2 नफी 26:33; अलमा 19:36; 3 नफी 21:6) । गिरजाघर में स्वागत महसूस करने के लिए नये धर्मपरिवर्तितों की हम कैसे सहायता कर सकते हैं ?

2. उपयुक्तता में न्याय करना

- जैसा कि एली पुरोहित ने हन्ना को मंदिर में प्रार्थना करते हुए देखा था, उसने उसे गलत समझा था, सोचते हुए, ''वह नशे में है'' (1 शमूएल 1:13) । केवल प्रकटन के आधार पर लोगों का न्याय करना क्यों खतरनाक होता है ? इस तरह के न्याय को हम कैसे दूर कर सकते हैं ?

- मैं गलती करता हूं मैं उन्हें दया के तरफ रखना चाहता हूं'' (यूजीन ई. केंपबेल और रीचर्ड डी. पोल में, Hugh B. Brown: His Life and Thought [1975], 225) । इस सिद्धांत को हम कैसे लागू कर सकते हैं ?

3. मंदिर में जाने के द्वारा चिन्ताएं और परेशानियों को सुलझाना

- हन्ना ने प्रभु के साथ अपनी प्रतिज्ञा कहाँ की थी ? (देखें 1 शमूएल 1:9...11) । मंदिर जाना हमें हमारी चिन्ताओं और परेशानियों के साथ कैसे सहायता कर सकते है ?

  एल्डर जॉन ए. विडसो ने कहा थाः ''मैं विश्वास करता तुष्टीकरण कि व्यस्त व्यक्ति...जिसके पास उसकी चिन्ताएं और परेशानियाँ हों, कहीं और की बजाय, प्रभु के घर में वह अपनी परेशानियों को अच्छी तरह से और शीघ्रता से सुलझा सकता है । यदि वह स्वयं और अपने मरे हुए लोगों के लिए मंदिर कार्य को करेगा, जो उसके समक्ष जा चुके हैं उनके ऊपर वह एक शक्तिशाली आशीष को प्रदान करता है, और...उसके प्रति एक आशीष आएगी, अत्याधिक अप्रत्याशित क्षणों में, मंदिर के अन्दर या बाहर उसके प्रति आएगी, एक प्रकटीकरण के रूप में, परेशानियों का हल जो उसे तकलीफ देगी । यह उपहार उनके लिए है जो मंदिर में योग्यता से प्रवेश करते हैं'' (डेविड बी. हेट द्वारा उद्धरित, Conference Report में, अक्टू. 1990, 76; या *Ensign,* नव. 1990, 61) ।

पाठ
21

परमेश्वर उनका सम्मान करेगा जो उसका सम्मान करते हैं

1 शमूएल 2...3; 8

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की उनके स्वयं, अन्यों, और संसार से बढ़कर आशीषों का सम्मान करने और प्रभु को प्रसन्न करने के लिए समझने में सहायता करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 1 शमूएल 2:12...17, 22...25 । एली के पुत्र उल्लंघन करते हैं और उनका पिता उन्हें सलाह देता है ।
   ख. 1 शमूएल 2:27...36; 3:12...14 । परमेश्वर का एक पुरूष एली को उसके परिवार में दुष्टता के परिणामों के बारे में चेतावनी देता है ।
   ग. 1 शमूएल 3 । प्रभु शमूएल को बुलाता है, और वह उत्तर देता है ।
   ग. 1 शमूएल 8 । इस्राएली एक राजा चाहते थे ताकि उनका भी सारी जातियों की तरह न्याय हो सके । इस तरह के चुनाव के खतरों के बारे में शमूएल उन्हें चेतावनी देता है ।

2. आप कक्षा के एक सदस्य को शमूएल की बुलाहट के विवरण की संक्षिप्त तैयारी के लिए (1 शमूएल 3) और कक्षा के दूसरे सदस्य को एक राजा के लिए इस्राएल की चाहत के विवरण की संक्षिप्त तैयारी के लिए पूछना चाहेंगे (1 शमूएल 8) ।

3. इस पाठ में यदि आपने पुस्तिका *युवा के बल के लिए* (34285) की चर्चा का निर्णय लिया हो, कक्षा के लिए आप इसकी एक प्रति लाएं ।

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, उद्धारकर्ता का एक चित्र लाएं (62572; कला चित्र किट 240) । चॉकबोर्ड पर यदि आप चित्रों की रूपरेखा नहीं बनाना चाहेंते है, एक शीशा लाएं, दूसरे लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक वस्तु, और संसार का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मानचित्र, भूमण्डल, या कोई दूसरा वस्तु लाएं ।

5. यदि लड़का शमूएल प्रभु द्वारा बुलाया जाता है, का चित्र उपलब्ध हो, आप शायद उसका उपयोग पाठ के दौरान करना चाहेंगे (62498; सुसमाचार कला चित्र किट 111) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के पहले, उद्धारकर्ता के एक चित्र को प्रदर्शन के लिए रखें और ढँक दें । उदाहरण के लिए चॉकबोर्ड पर पृष्ठ 97 की तीन आकृतियों की रूपरेखा बनाएं और उन्हें ढँक दें (या ''तैयारी'' के समय सूचीबद्ध किए गए तीन वस्तुओं को प्रदर्शन के लिए रखें और ढँक दें) । समझाएं कि प्रत्येक छुपी हुई चीज का उसके साथ कुछ न कुछ मतलब है जिसका हम सम्मान करते हैं और जिसे हम प्रसन्न करने की कोशिश करते हैं ।

- 1 शमूएल 2:30 के अनुसार, प्रभु किसका सम्मान करेगा ?

कक्षा के सदस्यों को बताएं कि यह पाठ उन आशीषों पर चर्चा करेगा जो प्रभु का सम्मान करने से आता है । समझाएं कि पाठ के दौरान उपयुक्त समयों पर आप छुपी हुई चीजों पर से पर्दा हटाएंगे ।

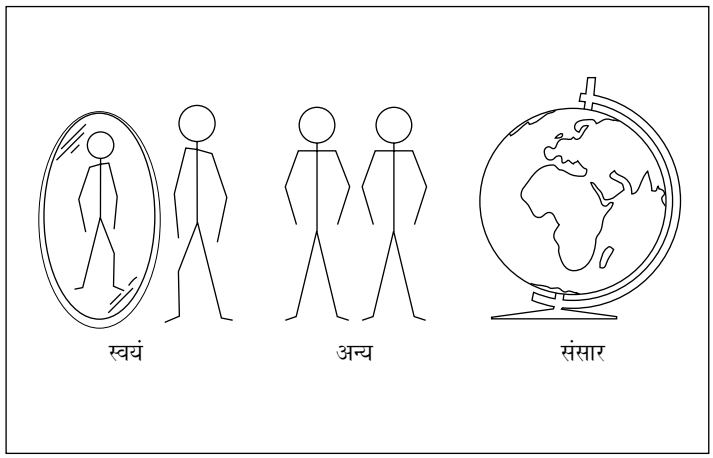

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र उद्धरणों की शिक्षा देते हैं, चर्चा करें कि वे दैनिक जीवन में कैसे उपयोग होती हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जो धर्मशास्त्र के सिद्धांतों से संबंधित हों ।

1. एली के पुत्र अपने आपको प्रभु से बढ़कर सम्मान देते हैं।

1 शमूएल 2:12...17, 22...25 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

होप्नी और पीनहास एली के पुत्र थे, उच्च याजक के, और वे स्वयं भी याजक थे । फिर भी, वे दुष्ट थे । जब इस्राएली मंडप में बलिदानों का भेंट चढ़ाने के लिए आते थे, होप्नी और पीनहास, बलि चढ़ाए गए जानवरों के चर्बी वाले हिस्सों को वेदी पर जलाने के पहले ही बलपूर्वक मांस को ले लेते थे । वे उस मांस में से भी कुछ ले लेते थे जिसे बलि करने वाले बलिदान के बाद भोजन के लिए उबालते थे (1शमूएल 2:12...17) । ये परमेश्वर के नियमों के गंभीर उल्लंघन थे, परमेश्वर को लूटने के बराबर था । एली के पुत्रों ने उन स्त्रियों के साथ कुकर्म के अत्याधिक गंभीर पाप को किया था जो मंडप के दरवाजे पर सेवा करने के लिए एकत्रित होती थीं (1 शमूएल 2:22) ।

- इस्राएल में दूसरे लोगों पर एली के पुत्रों के कार्यों का क्या प्रभाव होता था ? (देखें 1 शमूएल 2:17, 24) ।
- एली के पुत्रों के कार्य किसके बारे में सुझाव देते हैं जिसका चुनाव उन्होंने सम्मान देने के लिए किया था ? (पहली रूपरेखा या वास्तविक शीशे पर से पर्दा हटाएं) । हमारे जीवनों में किन क्षेत्रों में हम कभी-कभी प्रभु की बजाय अपने आपको सम्मान देते हैं और अपने आपको प्रसन्न करते हैं ? कक्षा के सदस्य निम्नलिखित क्षेत्रों का सुझाव दे सकते हैं:

  क. मनोरंजन जिसे लोगा अपनी प्रसन्नता के लिए करते हैं । जैसे कि चलचित्र और टेलिविजन कार्यक्रम जिसे वे देखते हैं, किताबें और पत्रिकाएं जिसे वे पढ़ते हैं, गतिविधियाँ जिनसे वे अपने आपको जोड़ते हैं इत्यादि ।
  ख. सब्त का अनुपालन
  ग. विपरित लिगं के दो लोगों के बीच सामाजिक तौर पर मेल-जोल और नश्वरता
  घ. उपवास
  च. गिरजाघर की बुलाहटें

- आपके विचार से कभी-कभी हम परमेश्वर की बजाय अपने आपको प्रसन्न करना क्यो चुनते हैं ? परमेश्वर से अधिक अपने आपको सम्मान देने के क्या परिणाम होते हैं ?

2. एली अपने पुत्रों को प्रभु से बढ़कर सम्मान देता है।

1 शमूएल 2:27...36; 3:12...14 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- एली के पास कौन सी जिम्मेदारी थी जब उसने अपने पुत्रों की दुष्टता को जाना ? उसने क्या किया ? (देखें 1 शमूएल 2:22...25) । उनका जवाब क्या था ? (देखें 1 शमूएल 2:25) ।
- अपने पुत्रों को फटकारने के पश्चात, आगे एली ने अपने परिवार में और मंडप में भयानक पापों को सही करने के लिए कुछ नहीं किया । परिणामस्वरूप, परमेश्वर का एक व्यक्ति आया और उसे दण्डित किया, उसे बताते हुए कि वह अपने बेटों का सम्मान परमेश्वर से अधिक करता है (1 शमूएल 2:27...29) । किन तरीकों में एली ने अपने पुत्रों का सम्मान परमेश्वर से अधिक किया था ? परमेश्वर के व्यक्ति ने क्या कहा कि एली के घराने को क्या होगा ? (देखें 1 शमूएल 2:30...35) ।

- कभी-कभी हम किस तरह से परमेश्वर से अधिक अन्य लोगों का सम्मान करते हैं ? (दूसरी रूपरेखा पर से या दूसरे वस्तु पर से पर्दा हटाएं जो अन्य लोगों का प्रतिनिधित्व करता हो) । कक्षा के सदस्य शायद निम्नलिखित तरीकों का सुझाव देना चाहें:

  क. हम अपने दोस्तों को और उन लोगों को जो हमारे आस-पास में होते हैं, उन्हें अनुमति देते हैं कि वह हमसे वे चीजें करवाएं जो हम जानते है कि गलत है ।

  ख. हम बेईमानी का काम करते हैं क्योंकि हम डरते हैं कि दूसरे लोग हमारे विषय में क्या सोचेंगे ।

  ग. हम अपने पारिवारिक सदस्यों और दोस्तों के गलत कार्यों को सही करने में असमर्थ होते हैं क्योंकि हम उनके साथ अच्छों संबंधों को बनाए रखना चाहते हैं ।

  अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने सीखाया थाः ''अपने बच्चों के प्रति हममें से किसी को भी सीमाओं और प्रतिबंधों को निर्धारित करने में इतना मूर्ख [नहीं] होना चाहिए, इतना लापरवाह और इतना कम प्रेमी नहीं होना चाहिए कि उनके जिद्दी कार्यों में, उनके गलत कार्यों में और नेकता की चीजों से अधिक संसार की चीजों के प्रति उनके मूर्खतापूर्ण प्रेम में उनको रोकने की हिम्मत ही न हो, क्योंकि हम डरते हैं कि हम उन्हें नाराज न कर देंगे'' (Gospel Doctrine, 5वाँ संस्करण (1939), 286) ।

- बच्चों के जिद्दी कार्यों के प्रति प्रेम की आत्मा में रहते हुए कैसे माता-पिता अपनी जिम्मेदारियों को पूरा कर सकते है ? बच्चों की क्या जिम्मेदारी होती है जब अनके माता-पिता उनके लिए नेकता में मार्गदर्शन का प्रयास करते हैं ?

3. शमूएल प्रभु का सम्मान करता है।

1 शमूएल 3 की शिक्षा दें और चर्चा करें । इस अध्याय का संक्षिप्त विवरण देने के लिए आप शायद कक्षा के एक सदस्य को नियुक्त करना चाहें । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि लड़का शमूएल अपनी माँ के पश्चात मंदिर में सेवा करता था, हन्ना ने उसे प्रभु की सेवा के लिए दे दिया था, जैसा कि उसने प्रतिज्ञा की थी (1 शमूएल 1) ।

- रात में शमूएल से किसने बात की थी ? (देखें 1 शमूएल 3:4) । शमूएल ने पहले क्या सोचा कि उसे कौन बुला रहा था ? (देखें 1 शमूएल 3:5...6, 8) । शमूएल ने कैसे जाना कि वह प्रभु की बुलाहट थी ? (देखें 1 शमूएल 3:8...9) ।

- प्रभु हमसे कैसे संपर्क करता है ? (अक्सर वह हमसे पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट के द्वारा संपर्क करता है । कक्षा के सदस्य शायद अतिरिक्त तरीकों का सुझाव दे सकते हैं जिससे वह हमसे संपर्क करता है) । परमेश्वर से संपर्कों को प्राप्त करने और समझने में हम अपनी तैयारी कैसे कर सकते हैं ?

- शमूएल ने किन तरीकों में प्रभु का सम्मान किया था ? (प्रभु के चित्र पर से पर्दा हटाएं) । अपनी चर्चा में आप शायद निम्नलिखित उद्धरणों को बताना चाहें:

  ''मैं अपने लिए एक विश्वासयोग्य याजक ठहराऊँगा, जो मेरे हृदय और मन की इच्छा के अनुसार किया करेगा'' (1 शमूएल 2:35) ।

  ''यहोवा ने शमूएल को पुकाराः और उस ने कहा, क्या आज्ञा'' (1 शमूएल 3:4) ।

  ''शमूएल ने कहा, कह; क्योंकि तेरा दास सुन रहा है'' (1 शमूएल 3:10) ।

- प्रभु ने प्रतिज्ञा किया कि जो मेरा आदर करेगा मैं उनका आदर करूँगा (1 शमूएल 2:30) । प्रभु ने शमूएल का सम्मान कैसे किया ? (देखें 1 शमूएल 3:19) । आपके विचार से प्रभु हमारा सम्मान कैसे करेगा यदि हम उसका सम्मान करते हैं जैसा कि शमूएल ने किया था ?

4. इस्राएली संसार का सम्मान करते हैं।

1 शमूएल 8 की शिक्षा दें और चर्चा करें । इस अध्याय का संक्षिप्त विवरण देने के लिए आप शायद कक्षा के एक सदस्य को नियुक्त करना चाहें ।

- शमूएल की सेवकाई के दौरान किस प्रकार का राज्य था ? (देखें 1 शमूएल 8:1) । इस्राएलियों पर न्यायियों के द्वारा राज्य हुआ था) । इस्राएल को उनके राजा के रूप में किसे मानना चाहिए था ? (देखें 1 शमूएल 12:12) ।

- इस्राएल के बच्चे एक राजा क्यों चाहते थे ? (देखें 1 शमूएल 8:5, 20) । एक राजा को पूछने में, ''सारी जातियों की तरह'', इस्राएल किसे अस्वीकार करता है ? (देखें 1 शमूएल 8:7) । एक राजा के होने की समस्या के बारे में क्या कहने के लिए प्रभु शमूएल को आदेश देता है ? (देखें 1 शमूएल 8:9...18) । शमूएल की चेतावनी के प्रति इस्राएलियों का क्या उत्तर था ? (देखें 1 शमूएल 8:19...22) ।

- एक राजा के लिए पूछने में, इस्राएली किसका सम्मान करते हैं ? (तीसरी रूपरेखा या वस्तु पर से पर्दा हटाएं जो संसार का प्रतिनिधित्व करता हो) ।

- कभी-कभी हम किन तरीकों में ''सारी जातियों की तरह'' होने की इच्छा करते हैं'' ? (देखें 1 शमूएल 8:5) ।

  परमेश्वर की उस स्तर की चर्चा के लिए आप शायद पुस्तिका *युवा के बल के लिए* (34285) का उपयोग करना चाहें जिसे उसने हमारे लिए निर्धारित किया है ताकि हम संसार के दुष्ट तरीकों में हिस्सा नहीं लेंगे । समझाएं कि ये स्तर वयस्कों और युवाओं दोनों के लिए लागू होता है ।

- प्रभु यीशु मसीह हमारा सच्चा राजा है, बिल्कुल वैसे ही जैसे वह इस्राएलियों के लिए सच्चा राजा था (भजन संहिता 47:7; 89:18; 149:2) । यह ज्ञान संसार के लिए तरीकों के प्रति हमारे व्यवहारों को कैसे प्रभावित करता है ? कभी-कभी हम कैसे प्रभु को हमारे राजा के रूप में अस्वीकार करते हैं ?

निष्कर्ष

चार वस्तुओं पर ध्यान आकर्षित करें जिसका कक्षा के दौरान प्रदर्शन किया गया था । समझाएं कि हममें से सभी को एक दिन चुनना होगा कि हम किसका सम्मान करेंगे । आशीषों और आनंद की गवाही दें जिसे आपने प्राप्त किया हो जब आपने प्रभु का सम्मान किया था । कक्षा के सदस्यों को उनके स्वयं के अनुभवों और गवाहियों को बाँटने के लिए आमंत्रित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. चीजों का मूल्य जिसे हम चुनते हैं।

- कभी-कभी हम बड़े मूल्य की चीजों को छोटी मूल्य की चीजों से बदलते हैं । अपने चुनावों के कारण एली और उसके बेटों ने क्या छोड़ दिया था ? शमूएल इस्राएलियों को क्या छोड़ने के लिए कहता है यदि वे एक राजा चाहते हैं ? (देखें 1 शमूएल 8:11...17) । कभी-कभी कम मूल्य की चीजों के लिए हम कौन सी बड़ी मूल्य की चीजों को छोड़ देते हैं ?

2. ''प्रभु जिसे बुलाता है, उसे प्रभु आवश्यक योग्यताओं से आशीषित करता है''

प्रभु उनका सम्मान करता है जो उसका सम्मान करते हैं, का दिखाने के लिए अध्यक्ष थॉमस एस. मॉनसन ने निम्नलिखित वक्तव्य को बनाया थाः

आप में कई शार्मिले स्वभाव के हो सकते हैं या अपने आपको किसी सेवा की बुलाहट में अपर्याप्त समझ सकते हैं । याद रखें कि यह काम केवल आपका और मेरा नहीं है । यह प्रभु का काम है, और जब हम लक्ष्य पर होते हैं, हम प्रभु की सहायता के अधिकारी हो जाते हैं । याद रखें कि जिसे प्रभु बुलाता है, उसे प्रभु आवश्यक योग्यताओं से आशीषित करता है'' (Conference Report में, अप्रैल 1996, 62; या *Ensign,* मई 1996, 44) ।

तब अध्यक्ष मॉनसन ने निम्नलिखित कहानी बताईः

''क्या हमें एक काम को बहुत कठिन या अत्याधिक समय लेने वाला महसूस करना चाहिए, मुझे आप लोगों के साथ एक विश्वासी घर शिक्षा और उसके साथी के एक अनुभव को बाँटने दें जो तब पूर्व जर्मनी में थे ।

''भाई जोहान डेनडोरफर जर्मनी के गिरजाघर में धर्मपरिवर्तित हुए थे, और दूसरे विश्व यूद्ध के बाद असल में अपने स्वयं की भूमि में अपने आपको एक कैदी की तरह पाया था...डेबरीसेन के शहर में हंगरी की भूमि पर । वह बहुत चाहता था कि मंदिर का दौरा करे! कैसे वह आत्मिक आशीषों को प्राप्त करने का इच्छुक था! स्वीटजरलैंड में मंदिर की यात्रा करने के निवेदन के बाद निवेदन के पश्चात मना कर दिया गया था, और वह लगभग निराश हो गया था । तब उसके घर शिक्षक ने दौरा किया था । भाई वॉल्टर क्राउज जर्मनी के उत्तर पूर्वी से होते हुए हंगरी के लिए गया था । उसने अपने घर शिक्षक साथी से कहा था, 'इस सप्ताह क्या तुम मेरे साथ घर शिक्षा के लिए जाना पसन्द करोगे ?'

''उसके साथी ने कहा था, 'हम कब चलेंगे ?'

'''कल,' भाई क्राउज ने उत्तर दिया था ।

'''हम वापस कब आएंगे ?' साथी ने पूछा ।

'''ओ, लगभग एक सप्ताह में...यदि हम तब तक आने के लिए प्रबंध कर सके!'

''और वे भाई डेनडोरफर से मिलने के लिए चले गए । युद्ध के पहले से ही उसके पास कोई घर शिक्षक नहीं गया था । अब, जब उसने प्रभु के सेवकों को देखा, वह अभिभूत हो गया था । उसने उनके साथ हाथ नहीं मिलाया; बजाय उसके, वह अपने सोने के कमरे में गया और एक छुपी हुई जगह से अपने दसमांश को निकाला जिसे उसने उस दिन से बचाया था जिस दिन से वह

गिरजाघर का एक सदस्य बना था और हंगरी के लिए वापस आ गया था । उसने दसमांश अपने घर शिक्षकों को दिया और कहाः 'अब मैं प्रभु के साथ वर्तमान में हूं । अब मैं प्रभु के सेवकों के साथ हाथ मिलाने के योग्य महसूस करता हूं!'

''भाई क्राउज ने स्वीटजरलैंड में मंदिर की उपस्थिति के लिए अपनी इच्छा के बारे में उनसे पूछा था । ? भाई डेनडोरफर ने कहाः 'यह असंभव है । मैंने कोशिश पर कोशिश की । यहाँ तक कि सरकार ने गिरजाघर की मेरी किताबों को जब्त कर लिया था, मेरे महान खजाने को ।'

''भाई क्राउज, एक कुलपति, भाई डेनडोरफर को एक कुलपति की आशीष को प्रदान किया था । आशीष के अंत में, उन्होंने भाई डेनडोरफर से कहा था, 'स्वीटजरलैंड जाने के बारे में एक बार फिर से सरकार से मिलो' । और फिर डेनडोरफर ने एक बार फिर से निवेदन-पत्र अधिकारियों को दिया था । इस बार स्वीकृति आई, और खुशी के साथ भाई डेनडोरफर स्वीस मंदिर के लिए गया और एक महीने तक रहा था । उसने अपने स्वयं के लिए इन्डोवमेंट को प्राप्त किया, उसकी मरी हुई पत्नी उसके साथ मुहरबंद हुई थी, और वह अपने सैकड़ों पूर्वजों के लिए काम को पूरा करने में समर्थ हुआ था । वह शरीर और आत्मा में नया होकर घर आया था'' (Conference Report में, अप्रैल 1996, 64...65; या *Ensign,* मई 1996, 45...46) ।

''प्रभु हृदय को देखता है''

पाठ
22

1 शमूएल 9...11; 13; 15...17

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को अपने स्वयं की समझ की बजाय प्रभु में भरोसे के लिए प्रोत्साहित करें ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 1 शमूएल 9...11 । शाऊल भविष्यवक्ता शमूएल से मार्गदर्शन को खोजता है (9:1...14, 18...24) । प्रभु शमूएल को प्रकट करता है कि शाऊल को राजा होना चाहिए (9:15...17) । शमूएल शाऊल को सलाह देता है और इस्राएल के प्रथम राजा के रूप में उसे अभिषिक्त करता है (9:25...27, 10:1...8) । आत्मिक तौर पर शाऊल का फिर से जन्म होता है, और वह भविष्यवाणी करता है (10:9...13) । शमूएल शाऊल को लोगों के लिए देता है (10:17...27) । अम्मोनियों के साथ युद्ध में शाऊल इस्राएल को विजय के तरफ ले जाता है (11:1...11) । वह उन लोगों को दण्डित करने से मना करता है जिन्होंने लोगों का मार्गदर्शन करने की उसकी योग्यता पर संदेह किया था (11:12...15) ।

   ख. 1 शमूएल 13:1...14 । शाऊल बिना उपयुक्त अधिकार के एक ज्वलंत होमबलि का भेंट चढ़ाता है ।

   ग. 1 शमूएल 15 । शाऊल को अमालेकियों और उनकी संपत्तियों का नाश करने की आज्ञा दी गई थी, परन्तु वह एक बलिदान के लिए उनके जानवरों को बचाता है (15:1...9) । प्रभु शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार करता है, और शमूएल शाऊल को बताता है कि आज्ञाकारिता बलिदान से अच्छा है (15:10...35) ।

   घ. 1 शमूएल 16 । प्रभु दाऊद को चुनता है, एक युवा चरवाहे लड़के को, एक राजा के रूप में शाऊल का उत्तराधिकारी होने के लिए (16:1...13) । पवित्र आत्मा शाऊल से अलग हो जाती है, और उसमें एक बुरी आत्मा का वास हो जाता है (16:14...16; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद इन आयतों को यह दिखाने के लिए सही करता है कि बुरी आत्मा परमेश्वर के तरफ से *नहीं* थी) । शाऊल दाऊद को अपने लिए वीणा बजाने के लिए और उसके हथियार को ढोनेवाला बनाने के लिए चुनता है (16:17...23) ।

   च. 1 शमूएल 17 । दाऊद प्रभु के पराक्रम में गोलियत को मार डालता है ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: 1 शमूएल 12; 14 ।

3. राजा के रूप में प्रभु द्वारा दाऊद को चुनने के विवरण की संक्षिप्त तैयारी के लिए आप शायद कक्षा के एक सदस्य से पूछना चाहें (1 शमूएल 16:1...13) और दाऊद द्वारा गोलियत को मारने के विवरण की संक्षिप्त तैयारी के लिए कक्षा के दूसरे सदस्य से पूछना चाहें (1 शमूएल 17:1...54) ।

4. यदि आप ध्यान गतिविधियों में से किसी का भी उपयोग करते हों, निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को चॉकबोर्ड या पोस्टर पर लिखें: ''तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना । उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा'' (नीतिवचन 3:5...6) । यदि आप पहली ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, शब्दावली से एक शब्द का चयन करें जो शायद कक्षा के लिए अपरिचित हो, जैसा कि *डियासपोरा, हाईसोप, या लेवर।* इस शब्द को चॉकबोर्ड या एक पोस्टर पर लिखें ।

5. यदि निम्नलिखित दृष्टिगत सामग्रियाँ उपलब्ध हों, पाठ के हिस्से के रूप में आप शायद उनका उपयोग करना चाहें:

   क. '''प्रभु...मुझे छुड़ाएगा,''' पुराने नियम विडियो प्रस्तुतिकरण (53224) से दाऊद के बारे में एक चार-मिनट का खण्ड ।

   ख. दाऊद गोलियत को मार डालता है, का चित्र (62073; सुसमाचार कला चित्र किट 112) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो । उस गतिविधि को चुनें जो कक्षा के लिए अत्याधिक उपयुक्त हो सकती है ।

1. कक्षा के सदस्यों से अपरिचित शब्द के लिए पूछें जिसे आपने चॉकबोर्ड या एक पोस्टर पर लिखा हो (ऊपर दी गई ''तैयारी'' को देखें) । कक्षा के सदस्यों से शब्द के स्पष्टिकरण के लिए अनुमान लगाने के लिए कहें । कुछ अनुमानों के पश्चात, कक्षा के सदस्यों को सही स्पष्टिकरण के लिए शब्दावली देखने दें ।

समझाएं कि एक अपरिचित शब्द के स्पष्टिकरण का अनुमान लगाना बिल्कुल उसी तरह है जैसा कि अपनी स्वयं की समझ के आधार पर निर्णय को बनाना । नीतिवचन 3:5...6 के विषय को दिखाएं । जोर दें कि जैसे ही हमने शब्द के सही स्पष्टिकरण को जानने के लिए एक भरोसे के साधन को खोजा था, हमें प्रभु के ऊपर विश्वास करने और अपनी जीवनों में सही निर्णय करने के लिए उसकी इच्छा को खोजने की आवश्यकता है । यह पाठ दो व्यक्तियों के अनुभवों को दिखलाता है, शाऊल और दाऊद, प्रभु पर विश्वास करने की और जब हम निर्णय करते हैं तब उसकी सहायता को खोजने की महत्वपूर्णता की शिक्षा देते हुए ।

2. कक्षा के सदस्यों को कुछ महत्वपूर्ण निर्णयों के बारे में बताने के लिए कहें जिसे उन्होंने हाल ही में लिया हो । उनसे पूछें कि उन निर्णयों को करने के लिए किसने सहायता की थी ।

   नीतिवचन 3:5...6 के विषय को दिखाएं (आप शायद चाहें कि कक्षा के सदस्य इस धर्मशास्त्र को कठस्थ करें) । समझाएं कि यह पाठ दो व्यक्तियों के अनुभवों को दिखलाता है, शाऊल और दाऊद, प्रभु पर विश्वास करने की और जब हम निर्णय करते हैं तब उसकी सहायता को खोजने की महत्वपूर्णता की शिक्षा देते हुए ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों । क्योंकि प्रत्येक प्रश्न को पूछना या पाठ में प्रत्येक चीज को पूरा करना कठिन हो सकता है, प्रार्थनापूर्वक उसका चुनाव करें जो कक्षा की आवश्यकता को अच्छी तरह पूरा करता हो । उदाहरण के तौर पर यदि आप दाऊद और गोलियत पर प्रकाश डालना चाहते हैं, आप शाऊल के जीवन पर चर्चा करके समय को कम खर्च कर सकते हैं ।

१. शाऊल शमूएल से सहायता को खोजता है और राजा होने के लिए अभिषिक्त होता है।

1 शमूएल 9...11 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- इस्राएली उनकी आस-पास की जातियों की तरह का एक राजा चाहते थे । इस्राएलियों के निवेदन को मानने के लिए, प्रभु ने शमूएल से शाऊल का इस्राएल के प्रथम राजा के रूप में अभिषेक करने के लिए कहा । ''शाऊल एक जवान पुत्र था जो सुन्दर था,...और इस्राएलियों में कोई उससे बढ़कर सुन्दर न था'' (1 शमूएल 9:2) । शाऊल ने उससे पहले क्या किया जब उसका राज्याभिषेक हुआ था और उसके तुरन्त पश्चात क्या किया जब उसके अच्छे गुणों का प्रदर्शन किया गया था ?

  क. अपने पिता की गदहियों की खोज में वह निष्ठावान था (1 शमूएल 9:3...4) ।
  ख. वह अपने पिता के सेवकों को सुनने और उनके बुद्धिमान सलाहों को मानने का इच्छुक था (1 शमूएल 9:5...10) ।
  ग. उसने भविष्यवक्ता शमूएल पर विश्वास किया और उसके साथ समुदाय को बनाया (1 शमूएल 9:18...25) ।
  घ. वह नम्र था (1 शमूएल 9:20...21) ।
  च. आत्मिक रूप से उसका फिर से जन्म हुआ था, और उसने भविष्यवाणी की थी (1 शमूएल 10:6...10) ।
  छ. उसने उसके आलोचकों को क्षमा किया था (1 शमूएल 11:11...13) ।
  ज. उसने अम्मोनियों के ऊपर इस्राएल के विजय में प्रभु की सहायता को जाना था (1 शमूएल 11:13) ।

2. शाऊल बिना उपयुक्त अधिकार के एक बलिदान का चढ़ावा करता है।

1 शमूएल 13:1...14 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- शाऊल के राज्याभिषेक के दो वर्षों के पश्चात, इस्राएल के विरूद्ध लड़ने के लिए पलिश्तियों ने एक भारी सेना को एकत्रित किया था । शाऊल के लोग इतने डर गए थे कि उनमें से कई छुप गए और तितर-बितर हो गए । इस समय पर शाऊल क्यों चाहता था कि भविष्यवक्ता शमूएल उसके पास आए ? (देखें 1 शमूएल 13:7...8 । शाऊल चाहता था कि शमूएल लोगों की ओर से प्रभु के लिए बलिदानों को चढ़ाए) । शाऊल ने क्या किया जब शमूएल निर्धारित समय पर नहीं आया ? (देखें 1 शमूएल 13:9 । शाऊल ने स्वयं ही बलिदानों को चढ़ाया यद्यपि उसके पास इसे करने के लिए पौरोहित्य अधिकार नहीं था) ।

  एल्डर जेम्स ई. टालमेज ने लिखा था, ''शाऊल ने बलिदान को चढ़ाने की तैयारी स्वयं ही की थी, यह भूलते हुए कि यद्यपि उसे गद्दी मिल गई थी, उसने मुकुट पहन लिया था, और उसके पास राजसत्ता थी, उसके पास पद पर कार्य करने का अधिकार [नहीं था]...परमेश्वर के पौरोहित्य में; और इस कारण और उसके अन्य अधार्मिक धृष्टता के कामों के कारण वह परमेश्वर के द्वारा अस्वीकारा गया था और उसके स्थान पर दूसरे को राजा बनाया गया था'' (विश्वास के अनुच्छेद, 12वां संस्करण (1924), 185) ।

- शाऊल के एक अवैध बलिदान के लिए शमूएल का जवाब क्या था ? (देखें 1 शमूएल 13:10...14) ।

- शाऊल का एक अवैध बलिदान उसके बारे में क्या प्रकट करता है ? (''अब वह [प्रभु के] मन के अनुसार नहीं रहा था'' [1 शमूएल 13:14] । वह व्यग्र हो गया था, प्रभु में विश्वास के लिए असफल हो गया था, और उसने आज्ञा का पालन नहीं किया था । इसके अतिरिक्त, बलिदान करने के लिए उसके अधिकार की धृष्टता सुझाव देती है कि उसने सोचा था कि वह पहले से भी अधिक महत्वपूर्ण और शक्तिशाली हो गया था) । कभी-कभी किन तरीकों में हम प्रभु और उसके सेवकों के साथ व्यग्र हो जाते हैं ? इस तरह की व्यग्रता के क्या परिणाम हो सकते हैं ? हम प्रभु पर पूरी तरह से विश्वास कैसे कर सकते हैं ?

3. अमालेकियों के विरूद्ध युद्ध में शाऊल प्रभु की आज्ञा का पालन नहीं करता है और राजा के रूप में अस्वीकारा जाता है।

1 शमूएल 15 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- प्रभु शाऊल को अमालेकियों के प्रति क्या करने की आज्ञा देता है ? (देखें 1 शमूएल 15:1...3) । उसकी बजाय शाऊल क्या करता है ? (देखें 1 शमूएल 15:4...9) । शाऊल के कार्य उसके बारे में क्या प्रकट करते हैं ? (देखें 1 शमूएल 15:11 । उसने प्रभु की इच्छानुसार करने की बजाय अपने स्वयं के फैसलों का अनुसरण किया था) ।

- अमालेकियों के अच्छे से अच्छे जानवरों को बचाने में शाऊल ने अपने अवज्ञाकारिता की सफाई देने की कोशिश कैसे की ? (देखें 1 शमूएल 15:13...15, 20...21, 24 । उसने अपने लोगों पर जानवरों को बचाने की उनकी चाहत के लिए दोष लगाया था) । शाऊल के अनुसार, उसके लोग अमालेकियों के अच्छे से अच्छे जानवरों को क्यों बचाना चाहते थे ? (देखें 1 शमूएल 15:15, 21) । कभी-कभी हम किन तरीकों में प्रभु के प्रति अवज्ञाकारिता की सफाई देने की कोशिश करते हैं ? (हम अपने आप से कह सकते हैं, ''यह केवल एक छोटा सा पाप है,'' ''मैं शब्द के कानून की बजाय आत्मा के कानून का पालन कर रहा हूं,'' ''यह किसी को नुकसान नहीं पहुँचाएगा,'' ''मैं इसे केवल एक बार करना चाहता हूं,'' ''इसे दूसरे लोग भी करते हैं,'' या ''वह आज्ञा मुझपर लागू नहीं होती'') । पाप से छुटकारा या सफाई की धारणा से हम कैसे ऊपर उठ सकते हैं ?

- अमालेकियों के जानवरों को बचाने के स्पष्टिकरण के प्रति शमूएल ने कैसे जवाब दिया था ? (देखें 1 शमूएल 15:22) । शमूएल के शब्द हमपर कैसे लागू होते हैं ?

- जब शाऊल को हट्ठी होने और प्रभु के शब्द को अस्वीकार करने के लिए फटकारा जा रहा था, शमूएल ने उससे कहा, ''हठ करना...मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है'' (1 शमूएल 15:23) । हट्ठीपना मूर्तिपूजा की तरह कैसे है ? शाऊल के हट्ठी और विरोधी होने के क्या परिणाम थे ? (देखें 1 शमूएल 15:23, 26, 28) । कभी-कभी हम कैसे हट्ठी और विरोधी हो जाते हैं ? हमारे हट्ठी और विरोधी होने के क्या परिणाम होते हैं ? इन व्यवहारों को हम कैसे पहचान सकते हैं और इनसे कैसे बाहर आ सकते हैं ?

4. प्रभु दाऊद को राजा के रूप में चुनता है।

1 शमूएल 16 की शिक्षा दें और चर्चा करें । आप शायद कक्षा के एक नियुक्त सदस्य से इस विवरण का संक्षिप्त सार दिलवाना चाहें । समझाएं कि यद्यपि शमूएल ने दाऊद को राजा होने के लिए अभिषिक्त किया था, दाऊद राजा नहीं बना जब तक कि कई वर्ष के पश्चात शाऊल की मृत्यु न हुई ।

- यिशै के कौन से पुत्र को अगला राजा होना चाहिए, यह निर्धारित करने की कोशिश में शमूएल ने क्या जाना ? (देखें 1 शमूएल 16:6...7) । प्रभु के दाऊद को चुनने के तरीके की तुलना हम आज उसके मार्गदर्शक चुनने के तरीके से कैसे कर सकते हैं ? प्रभु हमारा मूल्यांकन कैसे करता है के बारे में 1 शमूएल 16:7 क्या शिक्षा देता है ? प्रभु हमारे हृदयों में क्या देखता है ?

  एल्डर मारविन जे. ऐस्टन ने कहा थाः

  ''हम...दूसरों के मूल्यांकन के तरफ भौतिक, बाहरी दिखावाः उनके 'अच्छे बनावट'' उनके सामाजिक स्तर, उनके पारिवारिक वंशावली, उनके शैक्षणिक योग्यता, या उनके आर्थिक परिस्थितियों के आधार पर अभिमूख होते हैं ।

  ''फिर भी, प्रभु के पास, विभिन्न स्तर है जिसे द्वारा वह एक व्यक्ति को नापता है...वह एक नापने वाला टेप उस व्यक्ति के सिर के आस-पास उसके मानासिक समर्थता को नापने के लिए नहीं लेता है, ना ही उसके सीने को उसके पुरूषत्व को निर्धारित करने के लिए, परन्तु व्यक्ति की समर्थता और अन्यों को आशीष देने की क्षमता के लिए हृदय को एक सूचक के रूप में नापता है'' (Conference Report में, अक्टू. 1988, 17; या *Ensign,* नव. 1988, 15) ।

- यह क्यों महत्वपूर्ण है कि दूसरों के साथ हमारे संबंध में, हम बाहरी दिखावे से आगे देखें और हृदय को देखें ? इसे करने के लिए हम अपनी समर्थता और समर्पण को कैसे बढ़ा सकते हैं ?

- क्योंकि शाऊल अवज्ञाकारी रहा था, प्रभु की आत्मा उससे अलग हो गई थी (1 शमूएल 16:14) । बुरी आत्मा से राहत को खोजने के लिए शाऊल ने क्या किया जो उसपर आई थी ? (देखें 1 शमूएल 16:15...23) । आज कभी-कभी लोग किन बाहरी साधनों के तरफ मुड़ जाते हैं जब वे अपने पापों से राहत पाने की कोशिश करते हैं ? हमारे लिए अपने पापों से राहत पाने का प्रभु का कौन सा रास्ता है ? (देखें मत्ती 11:28...30; सि. और अनु. 58:42) ।

- दाऊद के पास कौन सी विशिष्टताएं हैं जो उसे एक मार्गदर्शक बनने के योग्य बनाती हैं ? (देखें 1 शमूएल 16:18) ।

5. दाऊद प्रभु के पराक्रम में गोलियत का वध करता है।

1 शमूएल 17 की शिक्षा दें और चर्चा करें । आप शायद कक्षा के एक नियुक्त सदस्य से इस विवरण का संक्षिप्त सार दिलवाना चाहें ।

- गोलियत के साथ लड़ाई में इस्राएली क्या पा या खो सकते थे ? (देखें 1 शमूएल 17:8...9) । गोलियत से लड़ाई के लिए शाऊल और उसकी सेना क्यों डर गए थे ? (देखें 1 शमूएल 17:4...11 । उन्होंने नहीं सोचा था कि वे गोलियत को उसके आकार, बल, कवच, और हथियारों के कारण उसे पराजित कर सकते थे) ।

- गोलियत से लड़ने के लिए दाऊद ने कैसे साहस पाया था ? (देखें 1 शमूएल 17:32...37, 45...47 । दाऊद ने जाना था कि प्रभु ने उसे एक सिंह और एक भालू से बचाया उसके पिता के भेड़ों को चराते समय, और उसने गोलियत से लड़ने में सहायता के लिए प्रभु में विश्वास किया था) ।

- गोलियत ने क्या कहा जब उसने दाऊद को लड़ने के लिए आते देखा था ? (देखें 1 शमूएल 17:42...44) । उसके जवाब में दाऊद ने क्या कहा ? (देखें 1 शमूएल 17:45...47) । दाऊद का उत्तर याद रखना कैसे हमारी सहायता करता है जब लोग हमारा उपहास करते हैं या हमें धमकी देते हैं ?

- एक युवा होने के नाते, एक सिंह और एक भालू के ऊपर दाऊद की जीत ने, गोलियत की बड़ी चुनौती सा सामना करने में उसकी सहायता की थी । हम किन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं जो बड़ी चुनौतियों के लिए हमें तैयार करता है ? इन चुनौतियों के प्रति हमारा उत्तर, गोलियत से लड़ने की हमारी योग्यता पर कैसे प्रभाव डालता है जो बाद में आ सकता है ? गवाही दें कि जैसे हम अपने जीवन में सिंहों और भालूओं को पराजित करते हैं, अपने गोलियत को पराजित करने के लिए हम भरोसा, स्वभाव, और विश्वास को बढ़ाएंगे ।

- आज हम किन गोलियत का सामना करते हैं ? इनसे बाहर आने के बारे में दाऊद से हम क्या सीख सकते हैं ? (देखें 1 शमूएल 17:45; इफिसियों 6:11...18) । गोलियत से बाहर आने में प्रभु ने आपकी सहायता कैसे की है जिनका आप सामना करते हैं ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः

  ''आपके आस-पास गोलियत हैं, आपका नाश करने के लिए बुरे उद्देश्य के साथ बहुत बड़े राक्षस । ये 2.7 मीटर लम्बे व्यक्ति नहीं हैं, परन्तु ये व्यक्ति और संस्था हैं जो आकर्षक रूप से नियन्त्रण रखते हैं परन्तु बुरी चीजें जो चुनौती दे सकती हैं और कमजोर कर सकती हैं और आपका नाश कर सकती हैं । इनमें शराब और अन्य मादक पदार्थ और तम्बाकू सम्मिलित है । जो इन सामानों को बेचते हैं वो आपको इनके उपयोग के लिए फँसाना चाहेंगे । कई तरह के संवेदनमन्दक हैं जिसके बारे में मुझसे कहा गया है कि 14 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए इसे प्राप्त करना बड़ी आसानी है । जो इसे बेचते हैं, वह एक ऐसा उद्योग है जो कई करोड़ों के डॉलर कमाते हैं, बुराई का एक बहुत बड़ा जाल । अश्लील साहित्य हैं, सम्मोहक और रूचीकर और आमंत्रित करने वाले । यह एक बहुत बड़ा उद्योग बन गया है, आपके पैसों को लेने और आपको उन गतिविधियों के तरफ ले जाने के लिए जो आपका नाश करेंगी, के लिए पत्रिकाओं, फिल्मों, और अन्य सामग्रियों का निर्माण करते हुए और उनका उत्पादन करते हुए ।

  ''राक्षस जो इन प्रयासों के पीछे हैं वह भयानक और निपुण हैं । युद्ध जिसे वे लड़ रहे हैं उसमें उन्होंने भारी अनुभव को प्राप्त कर लिया है । वे आपको फँसाना चाहेंगे ।

  ''उनके सामानों के प्रदर्शन से पूरी तरह बचना लगभग असंभव है । आप इन सामग्रियों को हर जगह देखते हैं । परन्तु आपको डरने की आवश्यकता नहीं है यदि आपके हाथों में उनके विरूद्ध सच्चाई का हथियार है जो आपको कमजोर और आपका नाश करना चाहते हैं । आपको सलाह, शिक्षा, और राय दिया गया था । आपके पास इन शत्रुओं के विरूद्ध जो आपको अधिन करना चाहते हैं, उपयोग करने के लिए सद्गुण, और सम्मान और निष्ठा के चट्टान हैं । जब तक आप चिन्तित हैं, आप उन्हें बहुत प्रभावित कर सकते हैं या चिन्तित कर सकते हैं । उनसे बचने के लिए अपने आपको अनुशासित करने के द्वारा आप उनपर विजय प्राप्त कर सकते हैं । आप उनके पूरे गुट को कह सकते हैं जैसा कि दाऊद ने गोलियत से कहा था, 'तू तो

तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तूने ललकारा है' ।

''विजय आपका होगी...आपके समर्थन के लिए आपके अंदर उसकी शक्ति है । आपके पास, आपकी सुरक्षा के बारे में दूतों की सेवा का अधिकार है । गोलियत को आपको डराने न दें । कमजोर होने से मना करें और अपने स्थान पर डटे रहें, और आप विजयी होंगे'' (Conference Report में, अप्रैल 1983, 66; या *Ensign*, मई 1983, 46, 51) ।

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को प्रभु में विश्वास और उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करें । प्रतिज्ञा करें कि ऐसा करने से वे मजबूती में बढ़ेंगे और प्रभु के आश्वासन को प्राप्त करेंगे कि वह उन्हें व्यक्तिगत गोलियतों के विरूद्ध विजयी करेगा । कक्षा के सदस्यों को याद दिलाएं कि प्रभु हमारे हृदयों को देखता है, हमारे धन या स्थान या प्रसिद्ध स्तरों के लिए हमारे अनुपालन को नहीं देखता है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. पाप का न्यायसंगत व्याख्या करना

जब आप अमोलकियों के प्रति शाऊल की अवज्ञाकारिता पर चर्चा करें तब एल्डर स्पेंसर डबल्यु. किम्बल द्वारा निम्नलिखित उद्धरण शायद आपके लिए सहायक होः

''शाऊल की व्याख्या बुद्धिसंगत थी । राजाओं के प्रबन्ध के रूप में उसके लिए आज्ञापालन करना आसान था, किस उपयोग के लिए राजाओं को अधिन किया गया था ? परन्तु चर्बी वाले भेड़-बकरियों को रखने क्यों नहीं था ? साधारण शमूएल की बजाय क्या उसका राजकीय न्याय उत्तम नहीं था ?...

''आज इस्राएल में किस तरह से कई शाऊल हैं । स्वास्थ्य पर प्रभु के कुछ प्रकटीकरण के लिए कोई जिएगा बजाय इसके कि उसके पास अवसरानुसार कॉफी के प्याले को होना होगा; वह तम्बाकू या मादक पदार्थों का उपयोग नहीं करेगी जिसके लिए फिर भी उसके पास कोई ललक नहीं है परन्तु सांत्वना देने वाला एक चाय के प्याले को होना होगा ।

''गिरजाघर की एक स्थिति में वह सेवा करेगा, यहाँ पर गतिविधि है जिसे वह पसन्द करता है और उसका सम्मान करता है जिसके लिए वह याचना करता है...परन्तु दसमांश को देने के लिए एक बहाने को खोजना आसान है जिसे वह बहुत कठिन समझता है । वह इसे नहीं दे सकता है...वह निश्चित नहीं है कि इसका वितरण सदैव किया जाता है जैसा कि उसने इसे किया होता, और फिर भी उसकी असफलता को कौन जानता है ?

''अन्य लोग जो कुछ सभाओं में उपस्थित होंगे परन्तु बाकी के दिन के लिए शाऊल की तरह बहाने बनाते हैं । उसे क्यों एक गेंद का खेल, एक कार्यक्रम नहीं देखना चाहिए, उसके अहाते के अवश्यक काम को करना चाहिए, या रोज की तरह व्यवसाय को जारी रखना चाहिए ?

''दूसरा उसके बाहरी गिरजाघर के कार्यों में धार्मिकता से उपस्थित हो सकता है परन्तु किसी भी तरह के सुझावों का विरोध करता है जैसा कि उसके घर में पारिवारिक समस्याएं या पारिवारिक प्रार्थनाएं जब परिवार का एकत्रित होना बहुत कठिन हो ।

''शाऊल उसी तरह था । वह उन कार्यों को कर सकता था जो उसके फायदे की थीं परन्तु अपने स्वयं की इच्छा के लिए उन चीजों के प्रति बहाने कर सकता था जो उसके विरोध में होती थीं'' (Conference Report में, अक्टू. 1954, 51) ।

2. हमारे गालियत को पराजित करना

धागे का एक 9 1/2 फीट (3 मीटर) लम्बा टुकड़ा काटें, लगभग गोलियत की लम्बाई का । कक्षा के लिए धागा, कुछ पीछे के तरफ से चिपकने वाला टेप, कागज की कई चद्दरें, और चिन्ह लगाने के लिए एक मोटी लिखावट का पेन लें । दीवार पर धागे को लम्बाई में बाँधें, टेप के एक टुकड़े के साथ ऊपर और नीचे चिपकाएं (यदि दीवार पर्याप्त मात्रा में लम्बी न हो, धागे के आखिरी हिस्से को फर्श पर रखें) । कक्षा के सदस्यों को बताएं कि धागा गोलियत का प्रतिनिधित्व करता है । कक्षा के सदस्यों से उन चीजों का नाम बताने के लिए कहें जो उनके लिए खतरनाक हो सकते हैं (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है घमण्ड, अश्लील साहित्य, इर्ष्या, और संवेदनमन्दक) । कागज के एक टुकड़े पर प्रत्येक खतरे को लिखें और प्रत्येक कागज के टुकड़े को को टेप से दीवार और धागे पर चिपकाएं, धागे को ऊपर से नीचे तक ढँकते हुए ।

समझाएं कि गोलियत को पराजित करने के लिए हमें हथियारों की आवश्यकता है । कक्षा के सदस्यों से उन हथियारों का नाम बताने के लिए कहें जो गोलियत को पराजित कर सकता है (उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है प्रभु में विश्वास, प्रार्थना, धर्मशास्त्रों का अध्ययन, सच्चाई को सीखना, नैतिक रूप से शुद्ध बनना, और अच्छे मित्रों का चुनाव करना) । जब कक्षा के सदस्य प्रत्येक हथियार का वर्णन करें, एक कागज को निकालें । धागे के ऊपर से आरंभ करते हुए, कागज और टेप को दीवार से हटायें जिसने धागे को पकड़ रखा है । कागज के बगल में धागे को गिरने दें । सभी कागज और टेप को निकालने के पश्चात, धागा फर्श पर गिर जाएगा और गोलियत पराजित हो जाएगा ।

''प्रभु सदैव मेरे और तुम्हारे बीच में रहता है''

पाठ
23

1 शमूएल 18...20; 23...24

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उनके मित्रों के प्रति सच्चा रहने के लिए प्रोत्साहित करें, जैसे कि योनातन और दाऊद थे, और ईर्ष्या और नफरत के द्वारा ऊपर उठने से बचने के लिए प्रोत्साहित करें जैसा कि शाऊल था ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 1 शमूएल 18:1...16 । योनातन और दाऊद ने मित्रता के एक अनुबंध को बनाया था (18:1...4) । युद्ध में सफलता के लिए दाऊद का सम्मान इस्राएलियों के द्वारा किया गया था (18:5...7) । शाऊल दाऊद से ईर्ष्या करने लगता है और उसे एक भाला से मारने की कोशिश करता है (18:8...6; ध्यान दें कि 1 शमूएल 18:10 का जोसफ स्मिथ अनुवाद बताता है कि बुरी आत्मा जो शाऊल पर आती है वह परमेश्वर के तरफ से *नहीं* थी) ।

   ख. 1 शमूएल 18:17...30; 19:1...18 । शाऊल की बेटी से विवाह करने के अधिकार के बदले दाऊद पलिश्तियों से लड़ता है, अनजान होते हुए कि शाऊल आशा कर रहा होता है कि युद्धक्षेत्र में दाऊद मर जाएगा (18:17...25) । दाऊद पलिश्तियों के ऊपर विजयी होता है और शाऊल की बेटी मीकल से विवाह करता है (18:26...28) । योनातन दाऊद को छुपने और शाऊल को उसे न मारने को मनाने के लिए कहता है (19:1...7) । शाऊल एक भाले से दाऊद को मारने की दूसरी कोशिश में असफल हो जाता है (19:9...10) । मीकल दाऊद को उसके जीवन के प्रति शाऊल के अन्य कोशिशों से बचाती है (19:11...18) ।

   ग. 1 शमूएल 20 । योनातन और दाऊद मित्रता और शान्ति के उनके अनुबंध का नवीनीकरण करते हैं (ध्यान दें कि यह अनुबंध केवल योनातन और दाऊद के बीच नहीं था परन्तु उनके घरानों के बीच भी था) । जब शाऊल फिर से दाऊद को मारने की कोशिश करता है, योनातन दाऊद को भाग जाने की चेतावनी देता है ।

   घ. 1 शमूएल 23...24 । दाऊद पलिश्तियों के साथ युद्ध को जारी रखता है और शाऊल को भगा देता है । दाऊद शाऊल को खोजता है और उसके जीवन को छोड़ देता है ।

2. अतिरिक्त अध्ययन: 1 शमूएल 14:1...16; 2 शमूएल 1 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हो ।

कक्षा के सदस्यों से निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- कौन से कुछ गुण हैं जिसे आप अपने मित्र में देखना चाहते हैं ? (आप शायद कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहें । उत्तरों में सम्मिलित हो सकता है निष्ठावान, सत्यनिष्ठा, निःस्वार्थ, उदारता, और सद्भाव) ।

समझाएं कि इस पाठ का हिस्सा एक सच्चा मित्र होने की महत्वपूर्णता की शिक्षा देता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

१. योनातन और दाऊद मित्रता के एक अनुबंध को बनाते हैं। शाऊल दाऊद से ईर्ष्या करने लगता है और उसे मारने की कोशिश करता है।

1 शमूएल 18:1...16 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

गोलियत को मारने के तुरन्त पश्चात ही दाऊद नायक बन गया था । राजा शाऊल और पूरे राज्य ने उसका सम्मान किया था । फिर भी, शाऊल के पुत्र योनातन के अलावा कोई भी दाऊद के प्रति सच्चा नहीं था ।

- योनातन और दाऊद ने एक दूसरे के प्रति क्या अनुभव किया था ? (1 शमूएल 18:1, 3) । दाऊद के प्रति ईर्ष्या अनुभव करना योनातन के लिए आसान क्यों रहा होगा ?

क. शाऊल का पुत्र होने के नाते, राजा बनने की पंक्ति में योनातन ही अगल था। फिर भी, भविष्यवक्ता शमूएल ने अगला राजा बनने के लिए दाऊद को अभिषिक्त किया था (1 शमूएल 16:6...13)।

ख. जब युद्ध में दाऊद की सफलता के लिए लोगों द्वारा उसका बहुत सम्मान किया गया था, योनातन ने युद्ध क्षेट्टह्न पर उसके स्वयं की सफलता के लिए थोड़े से ध्यान को प्राप्त किया था (1 शमूएल 14:1...16)।

- आपके विचार से योनातन दाऊद से ईर्ष्या क्यों नहीं करता था या उसके द्वारा क्यों नहीं धमकाया गया था ? (1 शमूएल 18:1, 3)। योनातन ने दाऊद के प्रति अपने सहारे को कैसे व्यक्त किया था ? (देखें 1 शमूएल 18:4। उसने दाऊद को अपना राजकीय बागा और हथियार दे दिए थे)।

- गोलियत को मारने के पश्चात राजा शाऊल ने दाऊद के बारे में कैसा अनुभव किया ? (देखें 1 शमूएल 18:2, 5। शाऊल दाऊद को अपने घर ले गया और उसे अपने योद्धाओं का प्रधान बना दिया)। राजा शाऊल के प्रति दाऊद ने अपनी निष्ठा को कैसे व्यक्त किया ? (देखें 1 शमूएल 18:5)। किस चीज ने शाऊल को दाऊद के विरोध में जाने के लिए प्रेरित किया था ? (देखें 1 शमूएल 18:6...9)। कभी-कभी दूसरों की सफलता के बारे में प्रसन्न होना कठिन क्यों होता है ? ईर्ष्या और अहंकार कैसे हमारे आत्मिक भलाई को प्राभावित करता है ?

  अध्यक्षा एज़्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः

  ''घमण्ड के द्वारा शाऊल दाऊद का एक शत्रु बन गया था। वह ईर्ष्या करने लगा था क्योंकि इस्राएली स्त्रियों की भीड़ ने गाया था कि ''शाऊल ने तो हजारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है'' (1 शमूएल 18:7; 18:6, 8 को भी देखें)।

  ''परमेश्वर के न्याय की बजाय लोगों के न्याय की डर की अधिकता में अहंकार आता है...'लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे ?' उनके लिए अधिक महत्वपूर्ण है बजाय इसके कि 'परमेश्वर मेरे बारे में क्या सोचेगा ?'...

  ''लोगों के न्याय का डर, प्रतियोगिता में लोगों की अनुमति के लिए स्वयं प्रकट करता है। अहंकार को 'मनुष्यों की प्रशंसा परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक' प्रिये होती है (यूहन्ना 12:42...43)। चीजों को करने का इरादा जिसे हम करते हैं, वहीं होता है जहाँ हम अहंकार के पाप को दिखाते हैं। यीशु ने कहा कि वह सर्वदा वही काम करता है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है (यूहन्ना 8:29)। अपने भाइयों और दूसरे लोगों के ऊपर स्वयं का मूल्यांकन करने की कोशिश की बजाय क्या यह हमारे लिए अच्छा नहीं है कि हमारा इरादा परमेश्वर को प्रसन्न करना हो ?

  ''कुछ अहंकारी लोग इस चीज के लिए इतनी चिन्ता नहीं करते हैं कि उनकी आय किसी और की आय से अधिक है या नहीं, उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए। उनका पुरस्कार दूसरों की अपेक्षा थोड़ा अच्छा है...

  ''जब हमारे हृदय पर अहंकार का अधिकार होता है, हम संसार की अपनी स्वतंत्रता को खो देते हैं और अपनी स्वतंत्रता को लोगों के न्याय के अधिन कर देते हैं। संसार पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट से अधिक चिल्लाता है। उनके लिए परमेश्वर के प्रकटीकरणों से अधिक महत्वपूर्ण लोगों का तर्क होता है, और अहंकार लोहे की छड़ के ऊपर से चला जाता है'' (Conference Report में, अप्रैल 1989, 4...5; या *Ensign,* मई 1989, 5)।

- युद्ध क्षेत्र में सफलता के साथ प्रभु द्वारा आशीषित होने के पश्चात दाऊद ने कैसे व्यवहार किया था ? (देखें 1 शमूएल 18:5, 14...16)। इस उदाहरण से हम क्या सीख सकते हैं ? आपके विचार से इसका क्या मतलब है कि ''[अपने स्वयं] के प्रति बुद्धिमानी से व्यवहार करना चाहिए'' जब हम सफल होते हैं ?

2. दाऊद को मारने की तीन और कोशिशों में शाऊल असफल हो जाता है।

1 शमूएल 18:17...30; 19:1...18 की शिक्षा दें और चर्चा करें।

- शाऊल दाऊद से अपनी एक बेटी के विवाह का प्रस्ताव रखता है यदि दाऊद पलिश्तियों से लड़ेगा। इसे करने में शाऊल का असली इरादा क्या था ? (देखें 1 शमूएल 18:20...25। उसने आशा किया था कि दाऊद पलिश्तियों के द्वारा मारा जाएगा)।

- जब शाऊल दाऊद को मारना चाहता था तब योनातन एक सच्चा मित्र कैसे था ? (देखें 1 शमूएल 19:1...7)। एक सच्चा मित्र होने का क्या मतलब है ? किस तरह से आपके मित्र आपके प्रति सच्चे हैं ? आप अपने मित्रों के प्रति कैसे सच्चे हैं ?

- दाऊद के प्रति शाऊल के अहसासों को बदलने के प्रयासों के बावजूद, शाऊल ने दाऊद के जीवन को खत्म करने की कोशिशों को जारी रखा था (1 शमूएल 19:9...10)। दाऊद की पत्नी मीकल ने कैसे दिखाया कि वह अपने पति के प्रति सच्ची थी ? (देखें 1 शमूएल 19:11...18)।

3. दाऊद और योनातन मित्रता के अनुबंध का नवीनीकरण करते हैं, और योनातन दाऊद के जीवन को बचाता है।

1 शमूएल 20 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- दाऊद के प्रति नफरत और उसको मारने की शाऊल के प्रयासों के लिए दाऊद की क्या प्रतिक्रिया थी ? (देखें 1 शमूएल 20:1) । योनातन ने अपनी मित्रता को दिखाना कैसे जारी रखा जब शाऊल दाऊद के जीवन को खत्म कर देना चाहता था ? (देखें 1 शमूएल 20:2...4, 13...17, 23; 1 शमूएल 20:24...42 को भी देखें, जिसकी चर्चा नीचे की गई है) ।
- परमेश्वर में विश्वास ने कैसे योनातन और दाऊद की मित्रता को प्रभावित किया ? (देखें 1 शमूएल 20:23) । परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम कैसे दूसरों के प्रति हमारे प्रेम को प्रभावित करता है ?
- यदि हम अपने जीवनें में परमेश्वर के प्रति निष्ठा को प्रथम स्थान देते हैं, हम क्या करेंगे यदि हमारे मित्र उन चीजों को करते हैं जो गलत है ? (अपने मित्रों को बदलने की सहायता में हम प्रेम से प्रयास करेंगे) । हम क्या करेंगे यदि हमारे मित्र उन चीजों को करने के लिए कहते हैं जो गलत है ? (हम उन अधार्मिक चीजों को नहीं करेंगे जो हमारे मित्र हमसे करने के लिए कहते हैं, इसकी परवाह न करते हुए कि मित्र के साथ संबंधों पर इसका क्या प्रभाव होगा, और धार्मिक चुनावों को करने के द्वारा हम अपने मित्रों को प्रभावित करने की कोशिश करेंगे) ।
- योनातन को दाऊद को कैसे बताना था कि शाऊल के पास वापस आना सुरक्षित था ? (देखें 1 शमूएल 20:5...7, 18...22) । दाऊद की अनुपस्थिति और योनातन का उसके मित्र को बचाने के प्रति राजा शाऊल की क्या प्रतिक्रिया थी ? (देखें 1 शमूएल 20:24...33) । शाऊल से भाग जाने के लिए योनातन ने दाऊद को कैसे चेतावनी दी ? (देखें 1 शमूएल 20:35...42) ।

4. दाऊद के प्रति नफरत द्वारा शाऊल पराजित हो गया था। दाऊद शाऊल को जीवन दान देता है।

1 शमूएल 23...24 की शिक्षा दें और चर्चा करें ।

- युद्धक्षेत्र में लगातार सफलता के द्वारा दाऊद आशीषित हुआ था (1 शमूएल 23:1...5) । दाऊद को कीला के नगर को क्यों छोड़ना था, पलिश्तियों से उसके लोगों को बचाने के पश्चात ? (देखें 1 शमूएल 23:7...13) ।
- जब शाऊल ने जाना कि दाऊद कीला में है, पूरे नगर का नाश करने के लिए उसने अपनी सेना को तैयार किया था (1 शमूएल 23:10) । किस चीज ने शाऊल को एक नेक राजा से एक ऐसा व्यक्ति बना दिया जो एक व्यक्ति को मारने के लिए पूरे नगर का नाश करने का इच्छुक था ? ईर्ष्या और नफरत के कारण पराजय क्यों होती है ? हम अपने आपको ईर्ष्या और नफरत से कैसे दूर कर सकते हैं ?
- जब दाऊद शाऊल से छुप रहा था, योनातन दाऊद से मिलने गया और ''परमेश्वर की चर्चा करके उसको ढ़ाढ़स दिलाया'' (1 शमूएल 23:16) । आपके विचार से इसका क्या मतलब है ? हम अपने मित्रों को परमेश्वर में कैसे मजबूत कर सकते हैं ?
- दाऊद को खोजने और मारने की दूसरी कोशिश में, शाऊल एक गुफा में आराम करने के लिए रूका था ? (1 शमूएल 24:1...3) । दाऊद के लोगों ने क्या कहा जब उन्होंने शाऊल को पाया ? (देखें 1 शमूएल 24:4) । दाऊद ने क्या किया ? (देखें 1 शमूएल 24:4...5 । आयत 4अ की एक पाद टिप्पणी समझाती है कि दाऊद ने शाऊल के बागे की छोर को काट दिया...बागा का हिस्सा जो अधिकार को चिन्हित करता है) ।
- दाऊद ने शाऊल को नुकसान पहुँचाने से मना क्यों कर दिया ? (देखें 1 शमूएल 24:6...12) । दाऊद का उदाहरण हमें बदले की भावना के बारे में और उनके जवाबों के बारे में क्या शिक्षा देता है जो हमारे लिए बुरा करते हैं ? (देखें 1 शमूएल 24:12...15; मॉरमन 8:20 को भी देखें) । शाऊल ने क्या कहा जब दाऊद ने उसे जीवन दान दिया ? (देखें 1 शमूएल 24:16...19) ।

निष्कर्ष

संकेत करें कि योनातन और दाऊद की कहानी हमें याद दिलाती है कि सच्ची मित्रता और सच्चा प्रेम हमें अपने मित्रों और परमेश्वर के नजदीक लाता है । शाऊल की कहानी हमें याद दिलाती है कि ईर्ष्या और नफरत हमें पराजित कर सकता है और हमें अपने मित्रों और परमेश्वर से दूर ले जाता है । कक्षा के सदस्यों को उनके मित्रों के प्रति सच्चा रहने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे उनसे कह सकें, ''यहोवा तेरे और मेरे मध्य में सदा रहे'' (1 शमूएल 20:23) ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

मित्रता स्वयं-मूल्यांकन

निम्नलिखित गतिविधि का उपयोग करें यदि आप एक अच्छे मित्र होने की महत्वपूर्णता पर जोर देना चाहें ।

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को कागज का एक टुकड़ा और एक पेन या पेन्सिल दें । समझाएं कि आप उनसे कुछ प्रश्न पूछने जा रहे हैं जो निर्धारित करेगा कि वे सच्चे मित्र हैं या नहीं । कक्षा के सदस्यों को उसपर प्रश्नों को लिखने दें, उन्हें सुनिश्चित करते हुए कि उन्हें उनके उत्तरों को बताना नहीं होगा । तब निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

1. किसी और के लिए उदारता का कौन सा आखिरी काम आपने किया था ?
2. आप क्या करते हैं जब आप किसी को दूसरे व्यक्ति के प्रति कठोर बातें कहते हुए सुनते हैं ?
3. अपने मित्रों को अच्छे लोग बनने की सहायता के लिए आपने क्या किया है ?

''मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर''

पाठ
24

2 शमुएल 11...12; भजन संहिता 51

उद्देश्य

विचारों एंव कार्यों में शुद्ध होने और उनके पापों से पश्चाताप करने के लिए कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 2 शमुएल 11 । दाऊद ऊरिय्याह की पत्नी बतशेबा के साथ कुकर्म करता है । (11:1...5) । दाऊद अपने पापों को छुपाने के प्रयास में असफल रहता है (11:6...13) । वह ऊरिय्याह के युद्ध में मारे जाने की योजना बनाता है (11:14...17) । दाऊद बेतशेबा से विवाह करता है, और उनका एक पुत्र होता है (11:26...27) ।

   ख. 2 शमुएल 12:1...23 । भविष्यवक्ता नातान दाऊद को एक दृष्टान्त सुनाकर दाऊद के पापों की गम्भीरता को सीखाता है (12:1...6) । दाऊद को बताया जाता है कि उसके पापों के लिए उसको दण्डित किया जायेगा (12:7...14; ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद की आयत 13 में, नातान बताता है, ''प्रभु ने तेरे पापों को अस्वीकार किया कि तू नहीं मरेगा'') । दाऊद और और बेतशेबा का पहला पुत्र शिशुकाल में ही मर जाता है (12:15...23) ।

   ग. भजन संहिता 51 । पश्चतापी दाऊद क्षमा की याचना करता है ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: 2 शमुएल 2...10

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं तो एक धागे की रील और कैंची लाएं ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

किसी सदस्य को कक्षा के सम्मुख अपने हाथों को आगे करके खड़े होने को कहो । उस सदस्य के दोनों बाहों में धागे के टुकड़े को ढीले से बान्धे । यह समझाओ कि यह धागा एक अशुद्ध विचार के समान है । अब उस सदस्य से कहो कि वह झटके से अपनी बाहों से इस धागे को तोड़ दे ।

- जब हमारे मनों में अशुद्ध विचार आते हैं हमें क्या करना चाहिए ? (हमें तुरन्त उससे छुटकारा पाना चाहिए ।)

उस सदस्य से फिर से उसके हाथों को आगे करने को कहो । कक्षा सदस्य की बाहों में धागे को दो-तीन बार इस तरह लपेटो...कि उसे इसको तोड़ने में थोड़ा जोर लगाना पड़े । अब उस सदस्य से कहो कि वह इन धागों को तोड़ने की कोशिश करे । इस प्रक्रिया को तब तक दोहराओ जब तक कि सदस्य के लिए इन धागों को तोड़ना बिलकुल असंभव हो जाए ।

- क्या होता है जब हम अपने मनों में अशुद्ध विचारों को रहने देते हैं ?

कक्षा के उस सदस्य की बाहों में लिपटे धागों को कैंची से काट दें । समझायें कि इस पाठ का यह हिस्सा हमें अशुद्ध विचारों के हमारे मनों में रहने के परिणामों को बताता है । यह पाठ इस विषय में भी चर्चा करता है कि हम किस प्रकार अपने आप को अशुद्ध विचारों से मुक्त कर सकते हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र लेखांशो को पढ़ाते हो, चर्चा करें कि कैसे ये प्रतिदिन के जीवन में लागू होते हैं । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि वे धर्मशास्त्र सिद्धान्त से सम्बन्धित अनुभवों को बाटें । चूंकि पाठ के प्रत्येक प्रश्न पूछना या प्रत्येक दृष्टिकोण को शामिल करना मुश्किल होगा, इसलिए प्रार्थनापूर्वक उन हिस्सों का चुनाव करें जो आपकी कक्षा के सदस्यों की जरूरत को के हमारे पूरा करते हों । आप चाहें तो कक्षा के सदस्यों की परिस्थिति अनुसार कुछ प्रश्नों को अपनी तरफ से पूछ सकते हैं ।

1 शमुएल 25 से 2 शमुएल 10, इस पाठ की पृष्ठभूमि के लिए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सूचना उपलब्ध कराते हैं । हालांकि ये अध्याय इस पुस्तिका में शामिल नहीं किये गये हैं, आप इन को निम्न रूप से संक्षिप्त कर सकते हैं:

दाऊद द्वारा शाऊल को जीवनदान देने के तुरन्त बाद शाऊल ने दाऊद पर एक बार फिर जानलेवा हमला किया । दाऊद को एक बार फिर राजा की हत्या करने का अवसर मिला, लेकिन उसने ऐसा करने से मना कर दिया । यहूदा के लोगों और आस पास के राष्ट्रों के बीच युद्ध चलते रहे, और शाऊल एवं योनातन इन युद्धों में मारे गये । दाऊद शाऊल के स्थान पर राजा बना और इस्राएल

के इतिहास के महानतम राजाओं में से एक बना । उसने कई जातियों को मिलाकर एक राष्ट्र बनाया, उस राज्य पर कब्जा स्थापित किया जो कि उसके लोगों के लिए वादा किया गया था, और परमेश्वर के नियमों के अनुसार शासन स्थापित किया । हालांकि, उसके जीवन के अन्तिम 20 वर्ष उन पापपूर्ण निर्णयों के कारण विकृत हो गए थे जिनकी इस पाठ चर्चा में की गयी है ।

1. दाऊद बतशेबा के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करता है और बतशेबा के पति, ऊरिय्याह की युद्ध में मारे जाने की योजना बनाता है।

2 शमुएल 11 को पढ़ाएं एवं चर्चा करें ।

- दाऊद अपनी छत पर टहल रहा था जब उसने बतशेबा को देखा और उसके साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लालायित हुआ था (2 शमुएल 11:2) । जब दाऊद ने बतशेबा को देखा था उसे क्या करना चाहिए था ? दाऊद ने क्या किया था जिसके कारण वह उसके साथ पाप करने को मजबूर हुआ था ? (देखें 2 शमुएल 11:2...4) । कौन सी बात लोगों को यौन अपराध करने के लिए अग्रसर करती है ? यौन अपराध करने के लालच से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

  आप कक्षा के सदस्यों के उत्तर निम्न प्रकार से बताए गये चार्ट की तरह चॉकबोर्ड पर लिखना चाहोगे । उत्तरों में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

बातें जिनसे बचना चाहिए	*कैसे इन से छूटकारा पाएं*
अशुद्ध या अनैतिक विचार	अपने मनों को उच्च बनाने वाले विचारों से भरें ।
टेलीविजन के कार्यक्रम, फिल्म, पत्रिकाएं, पुस्तकें, और संगीत जो कि अश्लील या गन्दे विचारों को किसी भी प्रकार से बढ़ावा देता है ।	उस माध्यम का चुनाव करें जो आपको भला करने के लिए प्रेरित करें ।
अनैतिक रूप से किसी से मिलना	अन्तिम दिनों के भविष्यवक्ताओं द्वारा सीखाए गए और *युवा के बल के लिए* दर्शाये गये मित्रता के स्तरों का पालन करें ।
विवाह के बाद इश्कबाजी करना	अपनी पत्नी या पति से सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करें । अपनी पत्नी या पति से (अपने सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाते हुए) प्रेम करना जारी रखें ।
स्थान और गतिविधियां जो आपको पवित्रात्मा की निरन्तर सहभागिता के योग्य नहीं ठहराती हैं	सुनिश्चत करें कि आप उस स्थान पर जायें और ऐसी गतिविधि में भाग लें जो आपको पवित्रात्मा की निरन्तर सहभागिता के योग्य बनाए ।

  अशुद्ध विचारों से छूटकारा पाने के तरीकों पर चर्चा करने के लिए आप प्रथम अतिरिक्त शिक्षा सुझाव का प्रयोग करना चाहेंगे ।

- दाऊद ने क्या करने का प्रयास किया था जब उसे पता चला कि बतशेबा गर्भवती है ? (देखें 2 शमुएल 11:6...13 । उसने, बतशेबा के पति, ऊरिय्याह को पाने की कोशिश की, वह उसके पास वापस घर चले जाये । तब यह ऐसा लगेगा कि पैदा होने वाला बच्चा ऊरिय्याह का ही था ।) दाऊद की योजना क्यों असफल हो गई थी ? (देखें 2 शमुएल 11:11 । ऊरिय्याह घर वापस नहीं जाता है क्योंकि वह युद्ध के साथियों के प्रति सच्चा था और महसूस करता है कि उसे उनके साथ रहना चाहिए ।)

- अपनी अनैतिकता को छुपाने के प्रयास में दाऊद ने कौन सा गम्भीर पाप किया था ? (देखें 2 शमुएल 11:14...17 ।) आप क्या सोचते कि दाऊद किस से अपना पाप छिपाना चाहता था ? आज कैसे लोग अपने पाप छूपाने की कोशिश करते हैं ? क्या होता है जब हम अपने पापों को छिपाते हैं ?

  एल्डर रिर्चड जी. स्कॉट ने कहा था:

  ''इस भ्रम में नहीं रहना कि आप के पाप दूसरे लोग नहीं जानते । यह इस तरह है जैसे कि एक शर्तुमुर्ग अपने सिर को रेत में दबा देता है । वह अन्धकार देखता है और सोचता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है । वास्तव में वह सबको नजर आने वाला मुर्ख है । इसी प्रकार हमारे प्रत्येक कार्य स्वर्गीय पिता और उसके प्रिय पुत्र द्वारा देखे जाते हैं । वे हमारे विषय में सब कुछ जानते हैं ।....

''यदि आपने गम्भीर रूप से पाप किया है, तो आपने जो कुछ किया है उसमें आप बिलकुल भी स्थाई सन्तुष्टि या आराम प्राप्त नहीं करेंगे । उल्लंघन को छुपा कर रखने से लगता है कि समस्या का समाधान हो गया, लेकिन ऐसा नहीं है । परखने वाले की इच्छा है कि वह आपके अति शर्मिन्दगी के कामों को नाजुक समय पर सब लोगों को बताये । असत्य बोलना और अधिक कैद में डालता है तथा शैतान का जाल बन जाता है । शैतान आपको हानि पहुँचाने के लिए पकड़ता है । (in Conference Report, Apr. 1995, 103; or *Ensign,* May 1995, 77) ।

अपने पापों को छिपाने की कोशिश के खतरे को दर्शाने के लिए आप दूसरी अतिरिक्त शिक्षा के सुझाव का प्रयोग करना चाहेगें ।

2. दाऊद को बताया जाता है कि उसे उसके पापों के लिए दण्डित किया जायेगा ।

2 शमुएल 12:1...23 पढ़ाएं एवं चर्चा करें ।

- यह दर्शाने के लिए कि प्रभु दाऊद से कितना नाराज था भविष्यवक्ता नातन ने कौन सा दृष्टान्त सुनाया था ? (देखें 2 शमुएल 12:1...4 ।) दृष्टान्त में बताए गए निर्धन मनुष्य के विरूद्ध धनी व्यक्ति द्वारा किये कार्य के विषय में दाऊद ने क्या सोचा था ? (देखें 2 शमुएल 12:5...6 ।) कैसे दाऊद के काम भी धनी व्यक्ति के समान थे ? (देखें 2 शमुएल 12:7...9 ।) प्रभु की ताड़ना पर दाऊद ने कैसे प्रतिक्रिया की थी ? (देखें 2 शमुएल 12:13 ।)

- आपके विचार से क्यों दाऊद यह समझने में असफल हुआ था कि दृष्टान्त में धनी व्यक्ति वह था ? क्यों हम कभी कभी अपने पापों को पहचानने में असर्मथ होते हैं ?

- दाऊद के पापों के क्या परिणाम हुए थे ?(देखें 2 शमुएल 12:10...14 । इन भविष्यवाणियों का पूरा होना आयत 15...23 और 2 शमुएल एवं 1 राजा के आगे के अध्यायों में पाया जाता है; सि. और अनु. 132:39 भी देखें । ध्यान दें कि अशुद्धता एक गम्भीर पाप है, लेकिन दाऊद अपने उत्कर्ष से वंचित हो गया था क्योंकि प्रभु ने उसे ऊरिय्याह की हत्या के लिए उत्तरदायी ठहराया था ।)

  अध्यक्ष मेरियन जी. रोमनी ने कहा थाः ''दाऊद,... यद्यपि उस पर प्रभु की अत्याधिक कृपा दृष्टि थी (उसे, वास्तव में, परमेश्वर का मनपसंद व्यक्ति कहा जाता था), लालच के सामने झुक गया था । उसकी अशुद्धता ने उसे हत्या करने के लिए उकसाया; और परिणामस्वरूप, उसने अपने परिवार और अपने उत्कर्ष को खो दिया था'' (in Conference Report, Apr. 1979, 60; or *Ensign,* May 1979, 42) ।

- आज अनैतिकता के तुरन्त परिणाम क्या होते हैं ? पश्चाताप न करने वाले के लिए कौन से दीर्घ-कालीन प्रभाव हैं ?

3. पश्चतापी दाऊद क्षमा की खोज करता है ।

भजन संहिता 51 पढ़ाएं एवं चर्चा करें ।

प्रभु से अपने भजन में, दाऊद ने दूसरों को पश्चाताप करने में सहायता करने की इच्छा वयक्त की थी, उसने कहा था, ''मैं नियम का पालन न करने वालों को प्रभु के मार्गो को सिखाऊँगाः और पापी आपकी ओर फिरेंगे'' (भजन संहिता 51:13) । यद्यपि दाऊद ने ऊरिय्याह की मृत्यु की योजना बनाकर अपने उत्कर्ष को खो दिया था, हम उसके पश्चातापी होने से सीख सकते हैं जब उसने अशुद्धता के पाप से क्षमा की खोज की थी । भजन संहिता 51 में उसके शब्द सच्चे पश्चाताप के रूपों को सिखाते है । जब कक्षा में आप सदस्यों के साथ भजन संहिता का अध्ययन करते हैं, चर्चा करें कि किस प्रकार हम दाऊद के पश्चाताप करने के उदाहरणों को अपने जीवनें में लागू कर सकते हैं ।

- भजन संहिता 51 में, दाऊद पहले परमेश्वर और उसकी दया को स्वीकार करता है (भजन संहिता 51:1) । दाऊद स्वयं का पापी होना स्वीकार करता है (भजन संहिता 51:1...3) । यह क्यों महत्वपूर्ण है कि जब हम अपने पापों से पश्चाताप करते हैं तो हम परमेश्वर की महानता और अपना पापी होना स्वीकार करें ?

- अपने पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिए हमें क्या बलिदान करना चाहिए ? (देखें भजन संहिता 51:16...17 ।) आपके विचार से ''टुटा हुआ और संतापी मन'' होने का क्या अर्थ है ?

- कैसे हमारे पाप क्षमा किये जाने से पहले ''निरन्तर [हमारी] दृष्टि में रहते हैं'' ?(भजन संहिता 51:3) । क्षमा किये जाने के बाद यह कैसे बदल जाते हैं ? (भजन संहिता 51:10; अलमा 36:17...19 ।) जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है तो वह हमारे पिछले पापों पर किस प्रकार की दृष्टि रखता है ? (देखें भजन संहिता 51:9; यशायाह 43:25; सि.और अनु. 58:42 ।)

- दाऊद ने क्षमा को धोने वाला (भजन संहिता 51:1...2; 7, 9...10), फिर से उद्धार का हर्ष देनेवाला (भजन संहिता 51:12), और छुड़ाने वाला (भजन संहिता 51:14) बताया था । परमेश्वर की क्षमा की आशीष की यह व्याख्याएं उचित क्यों हैं ?

निष्कर्ष

समझाएं कि चाहे हम कितने भी सफल या समर्थ क्यों न हों हम लालच से नहीं बच सकते । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि वे अपने विचारों और कार्यों को शुद्ध करने के लिए जीवन में आवश्यक परिवर्तन करें । यीशु मसीह के प्रति अपना प्रेम एवं उसके प्रायश्चित के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें । गवाही दें कि प्रायश्चित के कारण, हमारे पाप क्षमा किये जा सकते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अशुद्ध विचारों को अपने मनों से निकालना

बिना बुलाये हमारे मनों में आ हुए अशुद्ध विचारों को कैसे निकालें के बारे में एल्डर बोयड के. पैकर के निम्नलिखित कथन को अपने शब्दों में बताएं:

''मन एक मंच की तरह है'' । जब तक हम सो न रहे हों इसका पर्दा हमेशा उठा रहता है । इस मंच पर हमेशा कुछ न कुछ होता रहता है । यह हास्य, दर्दभरा, रोचक या नीरस, अच्छा या बुरा कुछ भी हो सकता है; लेकिन हमेशा मन के इस मंच में कुछ न कुछ अवश्य होता रहता है ।

''क्या आपने ध्यान दिया है कि बिना आपकी वास्तविक इच्छा के, किसी भी प्रस्तुति के मध्य में मचं के पार्श्व भाग का छोटा सा बुरा विचार चुपके से अन्दर घुस आता है और आपका ध्यान आकर्षित करता है ? ये बुरे विचार कोशिश करते हैं कि सब को मंच से बाहर कर दें । अगर आप इन्हें जारी रहने की अनुमति देते हो तो सभी अच्छे विचार मंच छोड़कर चले जायेंगे । क्योंकि आपने सहमति दी थी इसलिए आप बुरे विचारों के प्रभाव में आ जाएगें ।

''अगर आप इन पर ध्यार देगें, वे आपकी बर्दाशत की हद तक आपके मन के मंच पर नाटक करेंगे । वे कड़वाहट, जलन, या घृणा के विषय पर नाटक करेंगे । ये अश्लील, अनैतिक, भ्रष्ट तक हो सकते हैं । जब तक वे मंच पर हैं, यदि आप उन्हें नहीं हटाते, वे बहुत चतुराई भरी धारणाओं से आपका ध्यान आकर्षित करने की योजना बनायेंगे । वे इन्हें रोचक बनायेंगे, आपको यहां प्रभावित करेंगे कि इसमें कोई पाप नहीं है— क्योंकि ये तो सिर्फ विचार हैं ।

''जब आपके मन का मंच बुरे विचार के दानवों के चुंगल में होता है, चाहे ये उतने बुरे न लगते हों या इतने गन्दे हों कि संदेह करने का प्रश्न ही नहीं हो, आप ऐसे समय पर क्या करते हैं ? यदि आप अपने विचारों पर काबू रख सकते है, आप अपनी आदतों पर विजय पा सकते है चाहे कितनी अनैतिक व्यक्तिगत आदतें क्यों न हों । यदि आप उन्हें काबू में करना सीख जाते हैं, तो आपका जीवन खुशियों से भरा होगा ।

''जो मैं आपको सीखाऊंगा वह इस प्रकार है । गिरजाघर के पवित्र संगीत में एक स्तुति गीत को चुने. जिसके शब्द ऊपर उठाने वाले एंव संगीत में श्रद्धा हो, ऐसा जिससे आप प्रेरणा पा सकें । सावधानी से अपने मन में इसकी जांच करें । इसे याद कर लें । बेशक आप संगीत में निपुण न हों, आप स्तुति गीत पर ध्यान लगा सकतें हैं ।

''अब इस स्तुति गीत का अपने विचारों को आगे बढ़ने के स्थान के रूप में प्रयोग करें । इसे अपना आपात कालीन चैनल बनाएं । जब कभी भी ये बुरी या अनुचित बातें आपके विचारों से फिसल कर आपके मन के मंच पर आ जाती हैं. इसे एक रिकॉड के रूप में प्रयोग करें । ज्यों ही संगीत शुरू होता है और आपके विचारों में शब्द आकार लेने लगते हैं. अनुचित विचार लज्जित होकर बाहर खिसक जायेंगे । क्योंकि यह ऊपर उठाने वाला और शुद्ध है, गन्दे विचार गायब हो जाएंगे । कुछ समय धार्मिकता, चुनाव के कारण. गन्दगी के साथ कोई सम्बन्ध नहीं रखेगी. बुराई प्रकाश की उपस्थिति को सहन नहीं कर सकती है ।

''कुछ समय पश्चात आप पायेंगे कि आप अक्सर भीतर ही भीतर संगीत को गुनगुना रहे हैं । आप जब अपने विचारों की जांच करते हैं, आप पाते हैं कि संसार का प्रभाव आपको उत्साहित कर ज्यों ही अनुचित विचार आपके मन के मंच पर भेजता है, और संगीत स्वयं आरम्भ हो जाता है ।

''एक बार जब आप अपने मन के मंच के बुरे विचारों को साफ करना सीख जाते हैं, इसे योग्य बातों को सीखते हुए व्यस्त रखना चाहिए । अपने वातावरण को बदलें ताकि आपके पास उन्नति करने के लिए अच्छे प्रेरणादायक और ऊपर उठाने वाले विचार हों । धार्मिक बातों में व्यस्त रहें'' (in Conference Report, Oct. 1976, 99...100) ।

2. आपने पापों को छुपाने के खतरे

अपने अशुद्धता के नियम के पाप को छुपाने के प्रयास में दाऊद ने अधिक भयंकर पाप किया । अपने पापों को छुपाने के खतरे पर चर्चा करने के लिए, पाप की धूल के ढेर से तुलना करें । इसको दर्शाने के लिए पृष्ठ 116 पर दिये प्रथम चित्र को चॉकबोर्ड पर बनायें ।

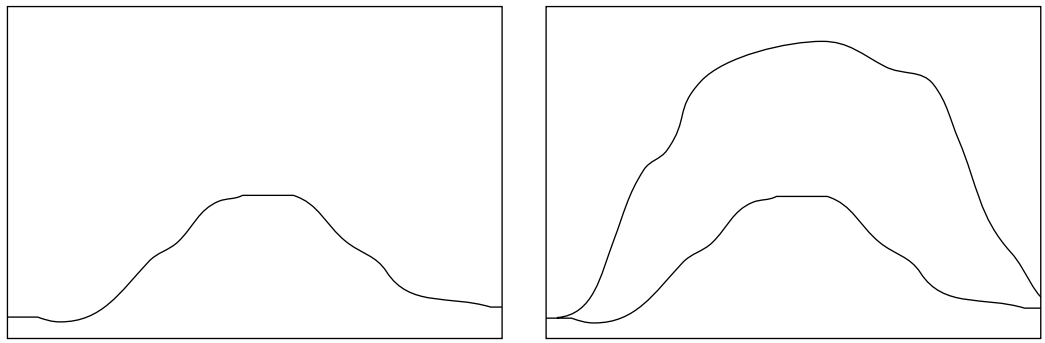

- क्या होगा यदि हम धूल के छोटे ढेर को छुपाने का प्रयास करेंगे ? (ढेर बड़ा हो जायेगा और अधिक नजर आयेगा । इसे ऊपर दिये द्वितीय चित्र द्वारा समझायें ।)
- किस प्रकार धूल का ढेर को छुपाना हमारे पापों को छुपाने के समान है ? (जब हम अपने पापों को छुपाने का प्रयास करते हैं वे अधिक बड़े और गम्भीर हो जाते हैं ।)
- यदि हम चाहते हैं कि लोग धूल के ढेर को न देखें तो हमें क्या करना चाहिए ?(हमें ढेर ढंकने की बजाय उसको हटाना होगा ।) हम अपने जीवन से पाप को कैसे हटा सकते हैं ?

3. ''अम्नोन ने उससे अत्याधिक घृणा की'' (2 शमूएल 13:15)

2 शमूएल 13 में दाऊद के पुत्र अम्नोन और उसकी पुत्री तामार की कहानी है । अम्नोन तामार पर मोहित हो गया था और उस पर दबाव डाला कि वह उसके साथ अनैतिक सम्बन्ध स्थापित करे ।

- 2 शमुएल 13:1 बताता है कि अम्नोन ने तामार से प्रेम किया था । उसके विरूद्ध पाप के करने पश्चात अम्नोन की भावनाएं तामार के प्रति कैसे बदल गई थी ? (देखें 2 शमुएल 13:15) जब लोग नैतिकता के सिद्धान्त का उल्लंघन करते हैं तो उनमें आपस में प्रेम के स्थान पर घृणा क्यों पैदा होती है ?

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली कहते हैं: ''मैंने एल्डर जोन ए. वीडसो यह कहते सुना है, 'यह मेरा अवलोकन है कि नवयुवक एवं नवयुवती जो नैतिकता के सिद्धान्त का उल्लंघन करते हैं अन्ततः आपस में घृणा करने लगते हैं ।' मैंने स्वयं भी यही देखा है । शुरू में प्यार भरे शब्द हो सकते हैं, लेकिन बाद में गुस्से और घृणा के शब्द होते हैं'' ("True to the Faith, " *Ensign,* June 1996, 5) ।

4. पश्चातापी के लिए आशा

यदि आप जोर दें कि कभी भी पश्चाताप कर सकते हैं, आप एल्डर बोएड के. पैकर के निम्नलिखित कथन को बांटना चाहेंगे:

''यह एक हतोत्साहित करने वाला विचार है कि गलती (या कभी कभी गलतियां) हमें क्षमा के अयोग्य बनाती हैं, प्रभु की ओर से नहीं आता है । उसने कहा है कि *यदि* हम पश्चाताप करेंगे, वह न केवल हमारे पापों को क्षमा करेगा बल्कि उन्हें याद भी नहीं रखेगा ।.... पश्चाताप एक साबुन के समान है; यह पाप को धो डालता है । गम्भीर पाप के दाग मिटाने के लिए शक्तिशाली साबुन रूपी अनुशासन की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन यह साफ आवश्य किया जा सकता है'' (in Conference Report, Apr. 1989, 72; or *Ensign,* May 1989, 59) ।

पाठ
25

''जितने प्राणी हैं सब के सब प्रभु की स्तुति करें''

भजन संहिता

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की सहायता करना कि वे उद्धारकर्ता के लिए एवं उन कई आशीषों के लिए जो वह और हमारा स्वर्गीय पिता हमें देता है के प्रति आपने आभार प्रकट करें ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक पाठ में बताये गये धर्मशास्त्रों और जितना ज्यादा आप भजन सहिंता का अध्ययन कर सकते हैं, उतना करें ।
2. पाठ का अध्ययन करें और प्रार्थनापूर्वक धर्मशास्त्रों, विषय, और प्रश्नों का चुनाव करें जो आपकी कक्षा के सदस्यों की जरूरतों को भली-भांति पूरा करते हों । यह पाठ भजन सहिंता की पूरी पुस्तक को शामिल नहीं करता है । वास्तव में, यह कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर विचार करता है जिसको पूरी पुस्तक में दर्शाया गया है ।
3. यदि आप पहली ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, अपने साथ उद्धारकता का चित्र और चार या पाँच ऐसी वस्तुएं लायें जिनके लिए आप आभारी हैं जैसे धर्मशास्त्र, एक प्रियजन की तस्वीर, एक ऐसी वस्तु जिससे आपकी प्रतिभा का पता चलता हो, या एक एक खाने की वस्तु । यदि आप दुसरी ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, कक्षा के एक या दो सदस्यों को उनके प्रिय भजन बताने के लिए तैयारी करने को कहें और यह उनके लिए क्यों महत्वपूर्ण है ।
4. एक या अधिक मन्दिर के चित्र लायें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

जैसे कक्षा आरम्भ होती है, आप निम्नलिखित गतिविधियों में से (अथवा स्वयं की) एक का प्रयोग करना चाहेंगे । उस गतिविधि का चुनाव चुनाव करें जो आपकी कक्षा के लिए सबसे उचित है ।

1. उद्धारकर्ता का चित्र दिखाएं और उसके जीवन एंव उसके मिशन के लिए अपना आभार प्रकट करें । अन्य वस्तुओं को भी प्रदर्शित करें जिनके लिए आप उसके आभारी हैं । प्रत्येक के लिए अपना आभार प्रकट करें । तब निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

   - किन उपहारों और अवसरों के लिए आप प्रभु के विशेष रूप से आभारी हैं ? इन आशीर्वादों के बिना आपका जीवन कैसे भिन्न होता ?

   यह समझाएं कि बहुत से भजन प्रभु द्वारा दिये गये आशीर्वादों का आभार प्रकट करते हैं । इस पाठ का एक हिस्सा उन आशीर्वादों पर और कैसे हम इनके लिए अपना आभार प्रकट कर सकते हैं, पर केन्द्रित है ।

2. कक्षा के एक सदस्य से भजन संहिता 23 जोर से पढ़ने के लिए कहें । फिर निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

   - इस भजन में क्या भावनायें व्यक्त की गई हैं ? जब आप इस भजन को सुनते या पढ़ते हो तो आपकी क्या भावनायें होती हैं ?

   कक्षा के एक या दो नियुक्त सदस्यों को उनके प्रिय भजन बांटने के लिए और यह बताने के लिए कहो कि यह उनके लिए महत्वपूर्ण क्यों है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र लेखांश सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनको प्रतिदिन जीवन में लागू कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

समझाएं कि भजन संहिता की पुस्तक कविताओं का संग्रह जो मुख्य रूप से परमेश्वर की प्रशंसा या अनुरोध में गाये गये थे । अधिक तर दाऊद द्वारा लिखे गये थे । यह पुस्तक प्राचीन इस्राएल के लिए स्तुति गान की तरह हैं । इनके बोलों में संसार के उत्तम प्रेरणादायक साहित्य शामिल हैं जो कि प्रभु में विश्वास और धार्मिकता से जीवन जीने की हार्दिक इच्छा को प्रकट करते हैं ।

१. यीशु मसीह के जीवन एवं मिशन की भविष्यवाणियां

बहुत से भजन मसीह के मिशन की भविष्यवाणी मसीहा के रूप में करते हैं । पुनःजीवित उद्धारकर्ता ने घोषणा की थी, ''मूसा के नियम की, और भविष्यवक्ताओं की, और भजन सहिंता की मुझ से सम्बन्धित सभी बातें अवश्य पूरी होगीं'' (लूका 24:44) । मसीह के बारे में निम्नलिखित कुछ भविष्यवाणियों की पूर्ति के विषय में चर्चा करें जोकि भजन संहिता की पुस्तक में लिखी हुई हैं:

भविष्यवाणी पूर्ति

भजन संहिता 107:23...30	मत्ती 8:23...27 । यीशु हवा और लहरों को शान्त करता है ।
भजन संहिता 69:8	यूहन्ना 1:11; 7:5 । यीशु को उसके अपने लोगों ने स्वीकार नहीं किया था ।
भजन संहिता 41:9; 55:12...14	यूहन्ना 13:18; 21 । यीशु को एक मित्र द्वारा धोखा दिया गया था ।
भजन संहिता 69:20	मरकुस 14:32...41 । यीशु ने अकेले ही गतसमनी में पीड़ा सही थी ।
भजन संहिता 22:7...8	मत्ती 27:39...43 । यीशु का मजाक उड़ाया गया था ।
भजन संहिता 22:16	मरकुस 15:25 । यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था ।
भजन संहिता 22:18	मत्ती 27:35 । सिपाहियों ने यीशु के वस्त्रों की पर्ची निकाली थी ।
भजन संहिता 22:1	मत्ती 27:46 । यीशु ने पिता से पूछा थी कि उसने उसे क्यों छोड़ दिया ।
भजन संहिता 69:21	यूहन्ना 19:28...30 । यीशु को प्यास बुझाने के लिए सिरका दिया गया था ।
भजन संहिता 34:20	यूहन्ना 19:33...36 । यीशु की किसी भी हड्डी को तोड़ा नहीं गया था ।
भजन संहिता 31:5	लूका 23:46 । यीशु अपनी आत्मा पिता को सौंपकर मरता है ।
भजन संहिता 16:10	प्रेरितों के काम 2:31...32; 13:34...35 । उद्धारकर्ता की देह सड़ी नहीं, अपितु पुनरूत्थान में जी उठी थी ।

- यीशु मसीह ही वह अकेला व्यक्ति है जिसके जन्म, जीवन, मृत्यु, और पुनरूत्थान की उसके जन्म से पूर्व भविष्यवाणी की गई थी । आपके विचार से क्यों उद्धारकर्ता के जीवन के विषय में इतने विस्तार से भविष्यवाणी की गई थी ?(ये भविष्यवाणियां यह स्पष्ट करने लिए की गई थी कि यीशु ही वादा किया गया मसीहा, संसार का उद्धारकर्ता था ।) कैसे यह भविष्यवाणियां उनके लिए आशीर्वाद थी जिन्होंने उन्हें स्वीकार किया था ? (भविष्यवाणियों ने लोगों की उद्धारकर्ता के बारे में सीखने और उसकी गवाही प्राप्त करने में उसके पैदा होने से पूर्व सहायता की थी [देखें मुसायाह 3:13] । भविष्यवाणियों ने कुछ लोगों की जब वह आया था उसको पहचानने में सहायता की थी ।)

2. ''यहोवा ने तेरा उपकार किया है'' (भजन संहिता 116:7) ।

उद्धारकर्ता के जीवन और मिशन के विषय में भविष्यवाणी करने के अतिरिक्त, कई भजनों ने उन आशीर्वादों के लिए आभार प्रकट किया है जैसे स्वर्ग और पृथ्वी की रचना; उद्धारकर्ता की दया, क्षमा, और प्रेम; धर्मशास्त्रों; मन्दिर ।

स्वर्ग और पृथ्वी की रचना

निम्नलिखित भजनों की चर्चा करें जो कि स्वर्ग और पृथ्वी की रचना करने के लिए प्रभु का आभार प्रकट करते हैं:

भजन संहिता 19:1
भजन संहिता 104:5...7, 14, 24
भजन संहिता 136:3...9

- कैसे स्वर्ग और पृथ्वी की रचना परमेश्वर के प्रेम की गवाही देते हैं ? (देखें अलमा 30:44; मूसा 6:63 ।) कैसे हम इस रचना के उपहार के लिए आभार प्रकट कर सकते हैं ?

उद्धारकर्ता की दया, क्षमा, और प्रेम

निम्नलिखित कुछ भजनों की चर्चा करें जो उद्धारकर्ता की दया, क्षमा, और प्रेम के लिए आभार प्रकट करते हैं:

भजन संहिता 23 (आपको इस भजन पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है यदि आप ने इसे ध्यान गतिविधि में प्रयोग किया था)
भजन संहिता 51 (आपको इस भजन पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है यदि आप ने इस पर पाठ 24 में चर्चा की थी)
भजन संहिता 59:16
भजन संहिता 78:38
भजन संहिता 86:5, 13
भजन संहिता 100:4...5
भजन संहिता 103:2...4, 8...11, 17...18

- इन भजनों से हम प्रभु के विषय में क्या सीखते हैं ? कक्षा के सदस्यों को निमंत्रण दें कि वे उन्हें बताएं प्रभु की दया, क्षमा, और प्रेम के बारे में कैसे पता लगा है ।

- भजन 51 में क्षमा के लिए दाऊद के अनुरोध के बारे में किस बात ने आपको प्रभावित किया है ? यह भजन पश्चाताप और क्षमा के विषय में क्या सीखाता है ? आयत 2. 7, और 12 के शब्दों 'मुझे भली भांति धोकर', 'मुझे शुद्ध कर', और 'मुझे फिर से दे' पर ध्यान दें । ये शब्द पश्चाताप के महत्वपूर्ण पहलूओं की व्याख्या करते हैं । आयत 17 पर भी ध्यान दें जो वास्तविक पश्चाताप के लिए हृदय की स्थिति की व्याख्या करता है ।)

धर्मशास्त्र

निम्नलिखित भजनों की चर्चा करें जोकि धर्मशास्त्रों के लिए प्रभु का आभार प्रकट करते हैं:

भजन संहिता 19:7...11
भजन संहिता 119

- भजन संहिता19:7...10में दाऊद ने धर्मशास्त्रों की व्याख्या करने के लिए किन शब्दों का प्रयोग किया था ?(*नियम, गवाही, विधेयक, आज्ञाएं, और निर्णय,* धर्मशास्त्र के पर्यायवाची शब्द हैं । *पूर्ण, अवश्य, सही, शुद्ध, सत्य, और धार्मिक* धर्मशास्त्रों के विश्लेषण हैं । धर्मशास्त्र की तुलना सोने से कीमती और शहद से मीठे के रूप में भी की गई है ।)

- भजन संहिता 19:7...11 के अनुसार धर्मशास्त्रों से कौन से आशीर्वाद हमारे जीवन में प्राप्त हो सकते हैं ? आप इन आशीर्वादों की सूची चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेगें:

  क. ये हमारी आत्माओं को परिवर्तित करते हैं (आयत 7) ।
  ख. ये साधारण को बुद्धिमान बनाते हैं (आयत 7) ।
  ग. ये हमारे हृदयों को आनन्दित करते हैं (आयत 8) ।
  घ. ये हमारी आखों को खोल देते हैं (आयत 8) ।
  च. ये हमें चेतावनी देते हैं (आयत 11) ।

- किस प्रकार धर्मशास्त्र इन तरीकों या अन्य तरीकों से आपके जीवन को आशीषित करते हैं ?

- भजन लिखने वाला प्रभु पर विसमित होता है, ''आह ! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूं ! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है ।'' (भजन संहिता 119:97; आयतें 15...16, 33...35, 40, 47...50, 72, 92, 104, 174) । हम कैसे इस प्रकार का प्रेम धर्मशास्त्रों के प्रति उत्पन्न कर सकते हैं ?

- किस प्रकार धर्मशास्त्र ''[हमारे] पावों के लिए दीपक, और [हमारे] मार्ग के लिए उजियाला'' के समान हैं ? (भजन संहिता 119:105) ।

मन्दिर

मन्दिर के बारे में निम्नलिखित भजनों पर चर्चा करें । जब कक्षा के सदस्य इन भजनों को पढ़ते हैं आप मन्दिरों का एक या अधिक चित्रों को दिखाना चाहेगें:

भजन संहिता 5:7
भजन संहिता 15:1...3
भजन संहिता 24
भजन संहिता 27:4
भजन संहिता 65:4
भजन संहिता 84:1...2, 4, 10...12
भजन संहिता 122
भजन संहिता 134

- इन भजनों से हम मन्दिरों के विषय में क्या सीख सकते हैं ? मन्दिरों में जाने की तैयारी के लिए हम क्या सीख सकते हैं ?

3. ''यहोवा ने मेरे उपर जितने उपकार किए हैं, उनके बदले मैं उसको क्या दूँ ?'' (भजन संहिता 116:12)

- भजन 116:12 में, दाऊद पूछता है, ''यहोवा ने मेरे उपर जितने उपकार किए हैं, उनके बदले मैं उसको क्या दूँ ?'' दाऊद इस प्रश्न का उत्तर कैसे देता है ? आप दाऊद के प्रत्येक कथन की निम्न प्रकार से सूची बनाना चाहेगें:

क. ''मैं उद्धार का कटोरा लूंगा'' (116:13) ।
ख. ''यहोवा से प्रार्थना करूंगा'' (116:13) ।
ग. ''हे यहोवा, सुन मैं तो तेरा दास हूं'' (116:16) ।
घ. ''मैं तुझ को धन्यवाद बलि चढ़ाऊंगा'' (116:17) ।
च. ''मैं यहोवा के लिए अपनी मन्नतें, प्रगट में उसकी सारी प्रजा के साम्हने, यहोवा के भवन के आगनों में, हे येरूशलेम, तेरे भीतर पूरी करूंगा'' (116:18...19) ।

- कैसे हम दाऊद के उत्तरों को प्रभु का आभार प्रकट करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं ?

4. ''यहोवा पर भरोसा रखो'' (भजन संहिता 4:5)

- ''यहोवा पर भरोसा रखो'' भजन संहिता की पुस्तक में सबसे सामान्य प्रबोधन है । (भजन संहिता 4:5; 5:11; 9:10; 18:2; 56:11; 62:8; 118:8...9) । हम प्रभु में हमारा भरोसा कैसे रखते हैं ? उस पर भरोसा रखने से आप कितने आशीषित हुए हैं ?

निष्कर्ष

भजन संहिता यीशु मसीह के दिव्य उद्देश्य की शक्तिशाली गवाही देते हैं । ये हमें उसकी और स्वर्गीय पिता के महान आशीर्वादों को भी याद कराते हैं । और ये हमें इन आशीर्वादों का आभार प्रकट करने के तरीकों का भी सुझाव देते हैं ।

भजन संहिता की पुस्तक का संक्षिप्त सन्देश देने के लिए आप कक्षा के सदस्यों को अन्तिम भजन (भजन 150) पढ़ने के लिए निमंत्रण देना चाहेगें । प्रशंसा और धन्यवाद की अपनी स्वयं की गवाही को सम्मिलित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक सुझावों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अन्तिम-दिनों के स्तुतिगीत पुराने नियम के भजनों से प्रेरित हैं

समझाएं कि स्तुतिगीत पुस्तक हमारे अन्तिम-दिन के भजनों के रूप में देखी जा सकती है । आप कक्षा के सदस्यों को एक अन्तिम-दिन के स्तुतिगीत गाने को कह सकतें हैं जो पूराने नियम के भजनों से प्रेरित है ।

2. स्तुतिगीत गाने की आशीषें

- हमारे अन्तिम-दिन के स्तुतिगीत के कुछ मुख्य विषय कौन से हैं ? (उत्तरों में शामिल हो सकता है, उद्धारकर्ता, गिरजाघर के सदस्यों के रूप में हमारे कर्तव्य, अन्त तक बने रहना, विश्वास, घर और परिवार, प्रेम, प्रचारक कार्य, प्रार्थना, पौरोहित्य, भविष्यवक्ता, सुसमाचार की पुनःस्थापना, प्रभुभोज सेवा, परिक्षा में कायम रहना, और सिय्योन ।) कैसे स्तुतिगीत गाने से हमें आशीर्वाद मिलते हैं ? (सि.और अनु. 25:12 देखें ।)

  निम्नलिखित कुछ तरीकों की चर्चा करें जिससे हमें आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं:

  क. स्तुतिगीत हमारी आत्माओं की उन्नति करते हैं ।
  ख. स्तुतिगीत हमें अधिक धार्मिकता से जीने की प्रेरणा देते हैं ।
  ग. स्तुतिगीत हमें अपनी आशीषों की याद दिलाते हैं ।
  घ. स्तुतिगीत हमें प्रभु की प्रशंसा गाने का अवसर देते हैं ।
  च. स्तुतिगीत हमें गवाही देने का मार्ग बताते हैं ।
  छ. स्तुतिगीत हमारी प्रभु को फिर से समर्पित होने में सहायता करते हैं ।
  ज. स्तुतिगीत हमें आत्मा को महसूस कराने में सहायता करते हैं ।
  झ. स्तुतिगीत परमेश्वर से लयबद्ध होने में हमारी सहायता करते हैं ।
  त. स्तुतिगीत हमारी सुसमाचार सीखने एवं सीखाने में सहायता करते हैं ।

  प्रथम अध्यक्षता ने कहा था:

  ''प्रेरणादायक संगीत गिरजाघर की सभाओं का एक आवश्यक अंग है । स्तुतिगीत प्रभु की आत्मा को निमंत्रण देते, श्रद्धा की अनुभुति उत्पन्न करते, हमें सदस्यों की तरह समरूप करते, और प्रभु की प्रशंसा करने के हमें मार्ग बताते हैं ।

''बहुत से श्रेष्ठतम व्याख्यान स्तुतिगीत गाकर ही सीखाए जाते हैं । स्तुतिगीत हमें पश्चाताप एंव भले कामों की ओर मोड़ते, गवाही एवं विश्वास का निमार्ण करते, थके हुओं को आराम देते, दुखों में दिलासा देते, और हमें अन्त तक दृढ़ रहने की प्रेरणा देते हैं'' (*Hymns,* ix) ।

- कई भजन गाने को ''यहोवा की जयजयकार'' करना कहते हैं (भजन संहिता 98:4; 100:1; और 66:1; 95:1...2 भी देखें) । कैसे यह सुनिश्चित करने के लिए कि स्तुतिगीत आनन्दायक एंव अर्थपूर्ण है, हम स्तुतिगीत का गिरजाघर सभाओं और घरों में बेहतर उपयोग कर सकते हैं ?

- अन्तिम भोज पर, यीशु और उनके प्रेरितों ने एक स्तुतिगीत गाया था (मत्ती 26:30) । आपके विचार से एक स्तुतिगीत गाने से यीशु और उनके प्रेरितों को उनके कार्य को करने में किस प्रकार सहायता मिली थी ?

3. भजन संहिता में काव्य समानताएं

दाऊद और अन्य इब्रानी कवियों की काव्य तकनीक को समझने से आपके भजन संहिता के अध्ययन में विकास होगा । उनमें से एक तकनीक है समनाताएं । इसकी विशेषता है कि इसमें एक विचार को विभिन्न शब्दों में बार बार दोहराया जाता है । इस प्रकार बार बार दोहराने से किसी विचार का अर्थ विस्तार से समझाया जाता है । इस समानता का एक उदाहरण भजन संहिता 102:1...2 है, इसमें एक ही विचार को पाँच भिन्न शब्दों दोहराया गया है (''मेरी प्रार्थना सुन,'' ''मेरी दुहाई तुझ तक पहुँचे,'' ''अपना मुख मुझ से न छिपा,'' ''अपना कान मेरी ओर लगा,'' और ''जिस समय मैं पुकारूं, उसी समय फुर्ती से मेरी सुन ले'') । ध्यान दें कि किस प्रकार बार बार दोहराने से सन्देश का अर्थ विस्तारपूर्वक समझ में आता है ।

राजा सुलेमानः बुद्धिमान व्यक्ति, मूर्ख व्यक्ति

पाठ
26

1 राजा 3; 5...11

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करना कि वे अपने आशीषों का बुद्धिमानी से उपयोग करें और मन्दिर में योग्यता से प्रवेश करें ।

तैयारी

1. निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करनाः

   क. 1 राजा 3:5...28 । सुलेमान अपने पिता, दाऊद, के उत्तराधिकारी के रूप में राजा बनता है और प्रभु के मार्ग पर चलता है । प्रभु सुलेमान को दिखाई दिखाई देता है,, वह प्रभु से ''समझने के विवेक' का वरदान मांगता है । प्रभु सुलेमान को बुद्धि, धन, और सम्मान का आशीष देता है (3:10...15) । दो औरतें एक बच्चे को सुलेमान के पास ले जाती हैं, वह बुद्धिमानी से निर्णय देता है कि बच्चे की माँ कौन है (3:16...28) ।

   ख. 1 राजा 5...6; 7:1...12 । राजा सुलेमान एक बड़ा मन्दिर बनाने का निर्देश देता है (5...6) । वह अपने एक महल का निमार्ण करवाता है (7:1...12) ।

   ग. 1 राजा 8:22...66; 9:1...9 । सुलेमान मन्दिर को समर्पित करता है और प्रभु से इस्राएलियों को आत्मिक और सांसारिक उन्नति की आशीष देने का आग्रह करता है (8:22...53) । लोग 14 दिनों के आराधना करते हैं (8:54...66) । प्रभु सुलेमान को फिर से दर्शन देते हुए वादा करते हैं कि वह इस्राएलियों को आशीष देगें यदि वे उसकी सेवा करते हैं, लेकिन श्राप देंगे यदि वे किसी अन्य ईश्वर की ओर जाते हैं (9:1...9) ।

   ग. 1 राजा 10...11 । सम्पन्नता और ज्ञान के कारण सुलेमान का यश फैलता है (10:1...13, 24...25) । वह अत्याधिक सम्पन्न हो जाता है (10:14...23, 26) । वह कई गैर इस्राएली औरतों से विवाह करता है जो उसे अन्य झूठे ईश्वरों की आराधना करने के लिए दबाव डालती हैं (11:11...25) । प्रभु सुलेमान के विरूद्ध प्रतिद्वंदी खड़े करता है (11:11...25) । एक भविष्यवक्ता भविष्यवाणी करता है कि इस्राएल का राज्य सुलेमान की दुष्टता के कारण बंट जायेगा (11:26...40) ।

2. अतिरिक्त पढ़ाईः 1 राजा 2:1...12; 4:29...34; 7:13...51; 1 इतिहास 29; सिद्धान्त और अनुबन्ध 46 ।

3. यदि पुराना मन्दिर का चित्र उपलब्ध है, आप इसका प्रयोग पाठ के बीच में कर सकते हो (62300; सुसमाचार कला चित्र किट 118)

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं

एल्डर डॉलिन एच. ओक्स के निम्नलिखित कथन को पढ़ें या कक्षा के किसी सदस्य से पढ़वायेंः

''हम अक्सर सोचते हैं कि शैतान हमारी कमजोरियों पर आक्रमण करता है ।.... लेकिन कमजोरियां ही हमारा आरक्षित स्थान नहीं हैं । शैतान वहां भी आक्रमण कर सकता है जहां हम सोचते हैं कि हम सशक्त हैं—उस स्थान पर भी जहां हमें अपनी ताकत पर घमण्ड हो सकता है । वह वहां पर भी धावा कर सकता है जो हमारी महानतम प्रतिभाएं एवं आत्मिक उपहार हैं । अगर हम सावधान नहीं हैं तो शैतान हमारी ताकत से हमें भ्रष्ट करने के साथ साथ हमारी कमजोरियों का लाभ उठाकर भी हमारा आत्मिक पतन कर सकता है'' ("Our Strengths Can Become Our Downfall," *Ensign,* Oct. 1994, 12) ।

- कौन सी हमारी ताकत है जोकि हमारा पतन करवा सकती है ?

समझाएं कि यह पाठ राजा सुलेमान के बारे में है जो ऐसा व्यक्ति था जिसे परमेश्वर से महान उपहार प्राप्त हुए थे लेकिन अन्ततः उसने उन उपहारों का अनैतिक रूप से उपयोग किया था । सुझाव दो कि कक्षा के सदस्य उन घटनाओं की खोज करें जो सुलेमान का धीरे धीरे पतन दर्शाती हैं । जोर दें कि हमें उसकी कमियों को उसका न्याय करने के लिए नहीं अपितु उसकी गलतियों से सबक लेने के लिए खोजना है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

दाऊद के मरने से ठीक पहले, याजक सादोक और भविष्यवक्ता नातान ने सुलेमान को नये राजा के लिए अभिषेक किया था । सुलेमान, जो कि दाऊद और बतशेबा का पुत्र था, ने अपने पिता से यह सलाह प्राप्त की थीः ''तू ताकतवर हो...और पुरूषार्थ दिखाए; और जो कुछ तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करके उसके मार्गो पर चला करना, उसकी विधियों, तथा आज्ञाओं, और नियमों, और चुनौतियों का पालन करते रहना,...जिस से जो कुछ तू करे और जहां कहीं तू जाए, उस में तू सफल होए'' (1 राजा 2:2...3) ।

1. प्रभु सुलेमान को ज्ञान, धन, और सम्मान का वरदान देता है ।

1 राजा 3:5...28 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- सुलेमान के राजा बनने के तुरन्त पश्चात प्रभु ने उसको स्वप्न में दर्शन दिये और कहा, ''जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, मांग ।'' (1 राजा 3:5) । सुलेमान ने क्या मांगा था ? (देखें 1 राजा 3:9 ।) 'समझने के विवेक' होने का क्या अर्थ है ? (देखें 1 राजा 3:28; 4:29 ।) क्यों सुलेमान ने उस आशीष की विशेष ज़रूरत समझी थी ? (देखें 1 राजा 3:7...8) ''परमेश्वर की बुद्धि'' होने से हमें अपने घर की जिम्मेदारियों को पूरा करने में कैसे मदद होती है ? काम में ? विद्यालय में ? गिरजाघर में ? हम इस बुद्धि को कैसे प्राप्त कर सकते हैं ?

- प्रभु सुलेमान की प्रार्थना कि उसके पास समझने का विवेक हो से प्रसन्न क्यों था ? (देखें 1 राजा 3:11...12 । सुलेमान ने ऐसे उपहार के लिए पूछा था जिससे उसे अपनी स्वयं की इच्छाओं को पूरी करने की बजाय दूसरों की सेवा करने में सहायता मिले ।) वे कौन से कुछ आत्मिक उपहार हैं जिनकी हम खोज कर सकते हैं ?(देखें सि.और अनु, 46:13...26 ।) किन शर्तों पर प्रभु आत्मा के उपहार देते हैं ? (देखें 1 राजा 3:14; सि.और अनु. 46:8...12 ।) हम दूसरों की सेवा करने के लिए इन उपहारों का प्रयोग कैसे कर सकते हैं ?

- प्रभु ने सुलेमान को कौन से अतिरिक्त आशीर्वाद दिये थे ? (देखें 1 राजा 3:13...14 ।) ये आशीर्वाद कैसे दूसरों की सेवा करने के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं ?

- न्याय करने के लिए राजा सुलेमान के सामने पहली परिस्थिति क्या थी ? (देखें 1 राजा 3:16...22 ।) सुलेमान ने इस समस्या का हल कैसे निकाला था ? (देखें 1 राजा 3:23...28 ।) कैसे सुलेमान के निर्णय से पता चलता था कि प्रभु ने उसे बुद्धि का आशीर्वाद दिया था ?

2. राजा सुलेमान एक महान मन्दिर के निर्माण की आज्ञा देता है और अपने लिए एक महल बनावाता है ।

1 राजा 5...6; 7:1...12 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- जैसी प्रभु से आज्ञा मिलती है, सुलेमान मन्दिर का निर्माण करवाता है । (मन्दिर के बारे में विस्तार से समझाने के लिए आप संक्षेप में 1 राजा 5:1...6, 17...18; 6:15...36 पर प्रकाश डाल सकते हैं ।) आप क्यों सोचते हैं सुलेमान मन्दिर निर्माण करने के लिए इतनी कीमती वस्तुओं का प्रयोग करता है ?

- कैसे काम करने वाले निर्माण करते समय मन्दिर के प्रति श्रद्धा दिखाते हैं ? (देखें 1 राजा 6:7 ।)

- मन्दिर का उचित निर्माण सुनिश्चित करने के लिए सुलेमान किस प्रकार अपनी बुद्धि, धन, और सम्मान का प्रयोग करता है ? (देखें 1 राजा 5:1...12 । इन ताकतों के कारण वह मन्दिर निर्माण के लिए निर्माण सामग्री एंव कुशल कारीगरों को प्राप्त कर पाया था ।)

- प्रभु सुलेमान से मन्दिर के बारे में क्या प्रतिज्ञा करता है ?(देखें 1 राजा 6:11...13 ।) इसी के समान प्रभु आज हम से क्या प्रतिज्ञा करता है ? (देखें सि.और अनु. 97:15...17 ।)

- सुलेमान अपने एक घर का भी निर्माण करवाता है । कैसे उसके घर के नाप की तुलना प्रभु के घर के नाप से की गई थी । (देखें 1 राजा 6:2...3; 7:2, 6...7 ।) कैसे धन का यह प्रयोग सुलेमान का धीरे धीरे अन्त होना दिखाता है ?

3. सुलेमान मन्दिर को समर्पित करता है ?

सीखायें एवं चर्चा करें 1 राजा 8:22...66; 9:1...9 ।

- निर्माण के सात वर्षों के पश्चात, मन्दिर समर्पित किया जाता है । समर्पण की प्रार्थना में सुलेमान किन बातों के लिए प्रार्थना करता करता है ? (देखें 1 राजा 8:22...53 ।)

  आप कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेगे । उत्तरों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैंः

क. प्रार्थनाओं का उत्तर (1 राजा 8:28...30, 49...52)
ख. क्षमा (1 राजा 8:33...39)
ग. वर्षा (1 राजा 8:35...36)
घ. आकाल एवं बीमारी में सहायता (1 राजा 8:37)
च. युद्ध में सहायता (1 राजा 8:44...45)

- अपनी समर्पण प्रार्थना में सुलेमान प्रभु से अपने लोगों के लिए कई मुश्किल समस्याओं में सहायता करने की प्रार्थना करता है । कैसे मन्दिर जाने से हमारी समस्याओं का भार कम होने में सहायता मिलती है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः ''इन भव्य मन्दिरों की शान्ति में, हमें अक्सर जीवन के गम्भीर प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होते हैं । आत्मा के प्रभाव में अक्सर विशुद्ध ज्ञान की धारा बहती है । मन्दिर व्यक्तिगत प्रकटीकरण प्राप्त करने के स्थान हैं । जब कभी मैं समस्या या परेशानी के बोझ से दबा होता हूं मैं उत्तर पाने के लिए अपने हृदय में प्रार्थना लिए प्रभु के घर में जाता हूं । ये उत्तर साफ एवं सुस्पष्ट आते हैं । ("What I Hope You Will Teach Your Children about the Temple," *Ensign,* Aug. 1985, 8) ।

- सुलेमान ने प्रार्थना की थी कि मन्दिर अविश्वासियों को प्रभु की ओर आने में सहायता करेगा (1 राजा 8:41...43) । मन्दिर ऐसा कैसे कर सकता है ? (कक्षा के सदस्यों को उदाहरणों को बांटने के लिए आमंत्रित करें कि कैसे उन्होंने या दूसरों ने गिरजाघर में मन्दिर के कारण रूचि ली थी ।)

- सुलेमान ने समर्पण प्रार्थना करने के पश्चात, अपने लोगों को सलाह दी, ''तुम्हारा मन हमारे परमेश्वर यहोवा की ओर ऐसी पूरी रीति से लगा रहे'' (1 राजा 8:61) । आप क्या सोचते हैं कि ''ऐसी पूरी रीति से लगा रहे'' का क्या अर्थ है ? कैसे मन्दिर आने से मन पूरी रीति से लगाने में सहायता मिलती है ?

- मन्दिर के प्रभाव को अपने जीवन में सशक्त रखने के लिए हम क्या कर सकते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकते हैः यदि संभव हो अक्सर मन्दिर आयें, नवीन मन्दिर संस्तुति रखें, और अपने घरों में मन्दिर के चित्र लगाएं ।)

- मन्दिर के समर्पण के बाद लोगों ने क्या किया था ? (देखें 1 राजा 8:62...66 ।) मन्दिर के समर्पण और 14 दिनों की आराधना के बाद जब वे अपने घरों को वापस आये उनका रवैया कैसा था ? (देखें 1 राजा 8:66 ।) मन्दिर से वापस आने के बाद आपको कैसा लगता है ?

- मन्दिर के समर्पण के पश्चात जब प्रभु ने सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिये उनका संदेश क्या था ? (देखें 1 राजा 9:3...9 । 1 राजा 6:11...13 भी देखें । ध्यान दें कि प्रभु ऐसा ही वक्तव्य मन्दिर निर्माण के समय भी दिया था ।) आप क्यों सोचते हैं कि सुलेमान को उसके अनुबन्धों के बारे में याद दिलाने की आवश्यकता थी ? प्रभु हमें किस प्रकार अपने अनुबन्धों को याद कराता है ?

4. सुलेमान अत्याधिक धनी हो जाता है और कई गैर-इस्राएली औरतों से विवाह करता है जोकि उसे मूर्ति पूजा के लिए दबाव डालती हैं ।

1 राजा 10...11 में से सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- मन्दिर के बाद कैसे राजा सुलेमान का धन और सम्मान बड़ता है ?(देखें 1 राजा 10:1...15, 24...25 ।) कैसे सुलेमान आशीर्वादों का दुरूपयोग करता है ? देखें 1 राजा 10:16...23, 26...29 । ध्यान दें कि उसने इनका प्रयोग परमेश्वर का राज्य बनाने के स्थान पर अपना राज्य बनाने के लिए किया था ।) ज्ञान, धन, और सम्मान का कैसे प्रयोग किया जाना चाहिए ? (देखें याकूब 2:18...19 ।)

- कैसे सुलेमान की पत्नियों के चुनाव ने. प्रदर्शित किया था कि वह परमेश्वर से दूर जा रहा था ? (देखें 1 राजा 11:1...2 । उसने अनुबन्ध के बाहर विवाह किया था ।) सुलेमान की गैर-इस्राएली पत्नियों ने उसे क्या करने के लिए प्रभावित किया था ? (देखें 1 राजा 11:3...8 । ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद की आयत 4 बताती है कि सुलेमान का हृदय ''दाऊद अपने पिता के हृदय के समान हो गया था'' और आयत 6 बताती है कि ''सुलेमान ने प्रभु की दृष्टि में पाप किया था, जैसा कि उसके पिता दाऊद ने किया था ।'')

- प्रभु ने क्या किया था जब सुलेमान ने उसके अनुबन्धों को तोड़ा और उसकी तरफ से मुँह मोड़ लिया था ? (देखें 1 राजा 11:9...14, 23...25, 33...36 ।)

- आप कैसे सोचते हैं कि सुलेमान के पतन में ज्ञान, धन, और सम्मान के आशीर्वादों का योगदान था ? इन ताकतों का लोगों के पतन में आजकल आप कैसे देखते हैं ? हम कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारी ये ताकतें हमारे पतन के कारण न बन जायें ? (देखें 1 राजा 8:61; सि.और अनु. 88:67 ।)

एल्डर डालिन एच. ओक्स ने कहा थाः

''कैसे हम...अपनी ताकतों को हमारा पतन बनने से रोक सकते हैं ? गुण जो हमें अवश्य पैदा करना चाहिए वह है विनम्रता । विनम्रता अत्याधिक बचाव करने वाला है । विनम्रता से घमण्ड के विरूद्ध बचाव होता है । नम्रता सब शिक्षाओं का उत्प्रेरक है, विशेषकर आत्मिक बातें । भविष्यवक्ता मरोनी के द्वारा, प्रभु ने हमें विनम्रता के गूढ़ ज्ञान की भूमिका को समझाया थाः 'मैं मनुष्य को विनम्र होने की कमजोरी देता हूं, और मेरी तेज उन सब को मेरे सम्मुख विनम्र होने के लिए पर्याप्त है; क्योंकि यदि वे अपने आपको मेरे सम्मुख कमजोर बनायेंगे, और मुझ में विश्वास करेंगे, तब मैं उनकी कमजोर बातों को उनकी ताकत बना दूंगा' (ईथर 12:27) ।

''हम यह भी कह सकते हैं कि यदि नर और नारी अपने आपको परमेश्वर के सामने विनम्र करते हैं, वह उनकी ताकतों को कमजोरी बनने से रोकने में उनकी सहायता करेगा जोकि उनका नाश करने के लिए प्रयोग की जा सकती है...।

''...यदि हम विनम्र और सीखने के योग्य हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं, मार्गदर्शकों की सलाह, और उसकी आत्मा की आवाज को सुनते एवं मानते हैं, हमें अपने आत्मिक उपहारों का, अपनी उन्नति, तथा धार्मिकता के लिए हमारी सारी ताकत का प्रयोग करने में मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है । और हमारा मार्गदर्शन किया जायेगा कि हम कैसे शैतान की कोशिशों को हमारी ताकतों का हमारे पतन के लिए प्रयोग करने बच सकते हैं ।

''इस सब में, हमें याद रखना और प्रभु के निर्देशों एवं प्रतिज्ञओं पर भरोसा रखना चाहिएः 'तू विनम्र हो; और प्रभु तेरा परमेश्वर तेरा हाथ पकड़कर तुझे मार्ग दिखायेगा, और तेरी प्रार्थनाओं का उत्तर देगा' (देखें सि.और अनु. 112:10) ("Our Strengths Can Become Our Downfall," *Ensign,* Oct. 1994, 19) ।

निष्कर्ष

आत्मिक एवं भौतिक आशीषों के लिए जो प्रभु ने आपको दिये हैं और मन्दिर के लिए, अपना आभार व्यक्त करें । कक्षा के सदस्यों को प्रभु के सम्मुख विनम्र होने होने के लिए उत्साहित करें ताकि वे अपने आशीषों को समझदारी से उपयोग करें तथा मन्दिर में योग्यता से प्रवेश करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''जिससे वह अपने मन में घमण्ड करके अपने भाइयों को तुच्छ न जाने'' (व्यवस्थाविवरण 17:20)

- कक्षा के एक सदस्य को व्यवस्थाविवरण 17:14...20 जोर से पढ़ने के लिए कहें । किस प्रकार इस धर्मशास्त्र का उपयोग करने से सुलेमान का जीवन एवं उसके राज्य में रहने वाले लोगों का जीवन बदल गया था ?

2. मन्दिरों के लिए समर्पित प्रार्थनाएं

यदि कक्षा के कोई सदस्य मन्दिर के समर्पण में शामिल हैं, उनमें से एक या दो को उनके अनुभव सुनाने के लिए कहें । आप कक्षा के एक सदस्य को अन्तिम-दिन के सन्तों के मन्दिर की समर्पण प्रार्थना के ज्ञान को बांटने के लिए तैयार करें । (सिद्धान्त और अनुबन्ध 109 में कर्टलैन्ड मन्दिर के समर्पण के समय दी गई प्रार्थना है ।

- समर्पण की प्रार्थनाएं किस प्रकार हमारे जीवन में प्रभाव डालती हैं ?

  अध्यक्ष जोसफ फिल्डींग स्मिथ ने कहा था, ''जब हम प्रभु के घर को समर्पित करते हैं, हमें वास्तव में अपने आप प्रभु की सेवा के लिए इस अनुबन्ध के साथ समर्पित करना चाहिए, कि हम इस घर का उसी प्रकार प्रयोग करेंगे जिस प्रकार वह चाहता कि इसका प्रयोग किया जाना चाहिए'' (*Church News,* 22 Jan. 1972, 3) ।

दुष्ट और धार्मिक मार्गदर्शकों का प्रभाव

पाठ
27

1 राजा 12...14; 2 इतिहास 17; 20

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को अच्छे मार्गदर्शक गुणों का विकास करने लिए उत्साहित करना ताकि वे दूसरों को धार्मिकता से रहने के लिए प्रभावित कर सकें ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 1 राजा 12:1...20 । रहूबियाम अपने पिता, सुलेमान, के उत्तराधिकारी रूप में इस्राएल की बारह जातियों का राजा बनता है । वह लोगों की सेवा करने की अपने बुद्धिमान व्यक्तियों की सलाह को अस्वीकार कर, इसके विपरीत वह उन पर अत्याधिक बोझ डाल देता है (12:1...15) । राज्य बंट गया था जब दस जातियों ने विद्रोह किया था (12:16...19; दस जातियों ने इस्राएल के राज्य के नाम को अपने पास रखा, जबकि यहूदा और बिन्यामिन की जातियां रहूबियाम के शासन में रहे और यहूदा का राज्य कहलाये) । इस्राएल के राज्य ने यारोबाम, सुलेमान के राज्य का भूतपूर्व प्रशासक, को राजा चुना था(12:20) ।

   ख. 1 राजा 12:25...33; 13:33...34; 14:14...16; 21...24 । यारोबाम ने अपने को मूर्ति पूजा के लिए कहा और याजकों के स्थान पर ऐसे लोगों को नियुक्त किय जो लेवीवंशी न थे (12:25...33; 13:33...34; हरे वृक्षों और ऊँचे स्थानों की व्याख्या के लिए द्वितीय अतिरिक्त अध्ययन विचार को देखें) । एक भविष्यवक्ता यारोबाम के परिवार के विनाश एवं इस्राएल के बिखरने की भविष्यवाणी करता है (14:14...16) । रहूबियाम यहूदा के राज्य को मूर्तिपूजा की ओर ले जाता है (14:21...24) ।

   ग. 2 इतिहास 17:1...10; 20:1...30 । याहोशापात, रहूबियाम का पड़-पोता, ने यहूदा के राज्य का धार्मिकता से राज किया, उसने हरे वृक्षों और ऊँचे स्थान नाश कर दिया तथा प्रभु के नियम की शिक्षा देने के लिए पूरे यहुदा में लेवीवंशियों को भेजा (17:1...10) । जब यहूदा के शत्रु उनके विरूद्ध लड़ने आये, तो यहोशापात और उसके लोगों ने उपवास रखा और प्रार्थना की । प्रभु उनको बताता है कि युद्ध उनका नहीं वरन उसका है । उनके आक्रमणकारी आपस में ही लड़ने लगे और एक दूसरे का नाश कर दिया (20:1...30) ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: 1 राजा 11:26...40; 2 राजा 17:20...23 ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग करते हैं, एक पूराने कपड़े के टुकड़े को लें जिसे टुकड़ों में फाड़ सकें या कागज के एक बड़े टुकड़े को लें जोकि कपड़े के टुकड़े की शक्ल में कटा गया हो ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

कपड़े के पुराने टुकड़े को या कागज के उस टुकड़े को लें जिसे कपड़े की शक्ल में काट सकते हों और उसके 12 टुकड़ें करें । समझायें कि सुलेमान के जीवन के अन्त में, भविष्यवक्ता आहिय्याह ने भविष्यवाणी की थी कि यारोबाम, जो सुलेमान के 12 कर और मजदुरी अध्यक्षिकों में से एक था, इस्राएल राष्ट्र के अधिकतर भाग पर राज करेगा । इसको दर्शाने के लिए, आहिय्याह ने अपने परिधान को लिया और उसे 12 टुकड़ों में फाड़ा, और 10 टुकड़ों को यारोबाम को दे दिया (1 राजा 11:29...23; अन्तिम दिन के सन्तों के बाइबिल की आयत 32 के पृष्ठ के नीचे टिप्पणी बताती है कि [Septuagint] पुराने नियम के युनानी अनुवाद के अनुसार, दो जातियां न कि एक दाऊद के वंशजों के द्वारा शासित राज्य में बाकी रह जायेंगी ।)

उद्धारकर्ता ने सिखाया था कि ''जिस किसी राज्य में फूट होती है वह उजड़ जाता है'' (मत्ती 12:25) । व्याख्या करें कि सुलेमान की मृत्यु के पश्चात इस्राएल के राज्य का भी यही हाल हुआ । यह पाठ दुष्टों और धार्मिक मार्गदर्शकों का विभाजित इस्राएल के राज्य पर प्रभाव के विषय में है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. इस्राएल का राज्य, मुख्यतः रहूबियाम के कठोर शासन के कारण बंट गया था ।

1 राजा 12:1...20 का अध्ययन एवं चर्चा करें ।

आप निम्नलिखित कथन को चॉकबोर्ड पर लिख सकते होः

एक अच्छा मार्गदर्शक

1. सेवा करता ।

- सुलेमान की मृत्यु के पश्चात, उसका बेटा रहूबियाम इस्राएल का राजा बना । इस्राएलियों ने रहूबियाम से उसके शासन में किस प्रकार के परिर्वतन करवाना चाहते थे ? (देखें 1 राजा 12:3...4) । बुजुर्ग लोगों ने उसे सफलता पूर्वक शासन करने के लिए क्या सलाह दी थी ?(1राजा 12:6...7; 2 इतिहास 10:7) क्यों हम उनके द्वारा सकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं जो दयालु और हमारी सेवा करते हैं ? कैसे हम इस सलाह को घर में, गिरजे में, विद्यालय में, कार्य में लागू कर सकते हैं ? (देंखें सि.और अनु. 121:41...46 ।) कौन से उदाहरण हैं जो आपने माता-पिता या अन्य मार्गदर्शकों को सफलता पूर्वक लागू करते देखा है ?

- बुजुर्गों की सलाह को ठुकराने के बाद, रहूबियाम ने युवकों से पूछा कि उनकी क्या सलाह थी ?(देखें 1राजा 12:8...11 ।) रहूबियाम द्वारा उनकी सलाह को मानने के क्या परिणाम थे ? (देखें 1 राजा 12:12...17 । ''इस्राएल अपने अपने ढेरे में चले जाओ'' का अर्थ दस जातियों का अपने आपको रहूबियाम के राज्य से अलग करना है ।) परिणाम किस प्रकार भिन्न होते यदि बुजुर्ग यारोबाम की सलाह को मान लेता ?(2 राजा 12:7 देखे ।)

- यारोबयाम सुलेमान के 12 कर एवं मजदूरी के अध्यक्षिकों में से एक था । सुलेमान के राज के अन्त में, भविष्यवक्ता अहिय्याह ने भविष्यवाणी की थी कि यारोबाम इस्राएल की कई जातियों का राजा बनेगा (1 राजा 11:29...31; ध्यान गतिविधि को देखें) । इस भविष्यवाणी की पूर्ति कैसे हुई थी ? (देखें 1राजा 12:20, अन्तिम-दिन के सन्तों के बाइबिल की आयत 20 के पृष्ठ के नीचे टिप्पणी बताती है कि [Septuagint] पुराने नियम के यूनानी अनुवाद बताता है कि बिन्यामीन और यहूदा दोनों यारोबाम के साथ रहे । बाकी दस जातियां ने यारोबाम का अनुसरण किया ।)

2. यारोबाम और रहूबियाम ने अपने राज्यों को मूति पूजा की तरफ ले गए ।

1 राजा 12:25...33; 13:33...34; 14:14...16; 21...24 का अध्ययन एवं चर्चा करें ।

आप निम्नलिखित कथन को चॉकबोर्ड पर लिख सकते होः

एक अच्छा मार्गदर्शकः
1. सेवा करता ।
2. प्रभु पर विश्वास करता एवं उसकी आज्ञा का पालन करता है ।

- भविष्यवक्ता अहिय्याह के द्वारा प्रभु यारोबाम से वादा करता है कि उसे ''निश्चित घर'' (सुरक्षित राज्य) मिलेगा यदि वह प्रभु के मार्गों पर चलेगा (1राजा 11:38) । किस प्रकार यारोबाम इस वादे की आशीषों को खो देता है ? (देखें 1 राजा 12:25...33 ।) यारोबाम ने सोने के बछड़े और ऊचें स्थानों को क्यों बनाया तथा झूठे याजकों को क्यों नियुक्त किया था ? (देखें 1 राजा 12:26...33; 13:33...34 ।)

  समझायें कि यारोबाम को डर था कि यदि उसके लोग पूजा करने यरुशलेम को वापस गये, हो सकता था कि वे रहूबियाम के पास चले जाते थे । लोगों को अपने नियंत्रण में रखने की कोशिश और उनकी विश्वसनीयता प्राप्त करने के लिए उसने बेतल और दान, उत्तरी राज्य के दो शहर, में सोने के बछड़े बनाये और अपने लोगों को इन शहरों में पूजा करने के लिए बुलाया था । ऐसा करके उसने अपने हारने के भय को प्रभु के विश्वास पर हावी होने दिया । यह बतायें कि बुद्धिमान मार्गदर्शक प्रभु पर विश्वास करते हैं और निर्णयों को भय या व्यक्तिगत फैसले के अनुसार नहीं करते है ।

- जब उसका बेटा अस्वस्थ हुआ, यारोबाम ने भविष्यवक्ता आहिय्याह की मदद चाही । आहिय्याह ने यारोबाम के घर (परिवार) और राज्य के विषय में क्या भविष्यवाणी की थी ? (1 राजा 14:14...16 । इस भविष्यवाणी की पूर्ति 2 राजा 17:20...23 में पाई जाती है ।)

- यारोबाम की तरह, रहूबियाम ने भी अपने लोगों को मूर्ति पूजा की ओर ले जाकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया था । (1 राजा 14:21...24) । इन दोनों राजाओं के दुष्ट मार्गदर्शन के कारण बहुत दुरगामी परिणाम हुए । दोनों ही राज्य बिखर गये थे या कई वर्ष बाद बन्दी बना लिये गये थे (इस्राएल को आश्शुरयों ने और यहूदा को बाबेलियों ने बन्दी बनाया था) क्योंकि उन्होंने अपने रिवाजों को नहीं छोड़ा था । कैसे एक भ्रष्ट मार्गदर्शक का इतने लोगों पर इतना गहरा असर हो सकता है ?

आप बताना चाहोगे कि हमें इन इस्राएल और यहूदा की तरह दुष्ट मार्गदर्शकों की नकल करने की जरुरत नहीं है । परमेश्वर ने हमें स्वतंत्रता दी है, और हम इस शक्ति का अच्छा चुनने में प्रयोग कर सकते हैं, बेशक मार्गदर्शक बुराई का चुनाव करें (इलामन 14:30...31) ।

3. यहोशापात यहूदा के राज्य को प्रभु एंव उसके भविष्यवक्ताओं की आज्ञा पालन की ओर मार्गदर्शन करता है ।

2 इतिहास 17:1...10; 20:1...30 को सिखायें एवं चर्चा करें ।

आप निम्नलिखित कथन को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हो:

एक अच्छा मार्गदर्शक:

1. *सेवा करता है ।*
2. *प्रभु पर विश्वास करता एवं उसकी आज्ञा का पालन करता है ।*
3. *परमेश्वर पर विश्वास रखता है ।*
4. *धर्मशास्त्रों में शिक्षा देता है ।*
5. *भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करता है ।*

- रहूबियाम की तीन पीढ़ियों के पश्चात, उसके पड़-पोते यहोशापात ने यहूदा के राज्य पर राज किया । यहोशापात ने किस प्रकार अपनी व्यक्तिगत धार्मिकता को प्रदर्शित किया था ? (देखें 2 इतिहास 17:3...4, 6) । किस प्रकार हमारी व्यक्तिगत परमेश्वर की की भक्ति दूसरों का मार्गदर्शन करने की हमारी योग्यता पर प्रभाव डालती है ?

- यहोशापात ने ''ऊँचे स्थानों और हरे वृक्षों को यहूदा से हटा दिया'' (2 इतिहास 17:6) । आपके विचार से लोगों ने इससे क्या सीखा था ? (2 इतिहास 20:12...13, यह जानकर कि ''समस्त यहूदा अपने छोटों, अपनी पत्नियों, और अपने बच्चों सहित प्रभु के समक्ष खड़ा हो गया था ।'') हमें अपने घरों और निजी जीवनों से क्या हटाने की आवश्यकता है कि हम अधिक भक्ति के साथ परमेश्वर की आराधना कर सकें ?

- यहोशापात ने लेवीवंशियों को पूरे राज्य में ''प्रभु के नियम की शिक्षा'' से लोगों को सिखाने के लिए भेजा था (2 इतिहास 17:9) । आपके विचार से धर्मशास्त्रों में पढ़ाने से यहूदा के लोगों पर कैसे प्रभाव डाला था ? कैसे निजी और पारिवारिक धर्मशास्त्र अध्ययन आपकी सहायता करती है ? कैसे घर में धर्मशास्त्र अध्ययन होने से हमारे परिवारों तथा गिरजाघर में प्रभाव पड़ता है ?

  President Ezra Taft Benson taught: "Often we spend great effort in trying to increase the अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया था: ''अक्सर हम अपने स्टेक में सक्रियता का स्तर बढ़ाने के लिए बहुत कोशिश करते हैं । हम प्रभुभोज सभा में सदस्यों का प्रतिशत बढ़ाने के लिए अच्छी तरह काम करते हैं । हम अपने युवकों का मिशन में जाने का अधिक प्रतिशत पाने के बहुत मेहनत करते हैं । हम मन्दिरों में विवाह करने वालों की संख्या बढ़ाने की भरपूर कोशिश करते हैं । यह सभी प्रयास सहरानीय हैं और राज्य की उन्नति के लिए महत्वपूर्ण हैं । लेकिन जब व्यक्तिगत सदस्य और परिवार अपने आप को धर्मशास्त्र में अध्ययन में निरन्तर और पूर्णरूप से घुलमिल जायेंगे, अन्यों क्षेत्रों में सक्रियता स्वयं आ जायेगी । साक्षियां बढ़ जायेंगी । प्रतिज्ञाओं को बल मिलेगा । परिवार कायम रहेंगे ।व्यक्तिगत प्रकटीकरण बहने लगेगा'' (*The Teachings of Ezra Taft Benson* [1988], 44) ।

- 2 इतिहास 20 यहूदा के लोगों के लिए अत्याधिक व्याकुलता के काल के बारे में बताता है, क्योंकि तीन राष्ट्रों ने उन से युद्ध कर लिया था । युद्ध का परिणाम राजा यहोशापात और उसके लोगों के लिए आशाजनक नहीं था, क्योंकि उनकी संख्या बहुत कम थी । यहोशापात ने मदद प्राप्त करने के लिए क्या किया था ?(देखें 2 इतिहास 20:3...13 ।) प्रभु ने विनति का क्या उत्तर दिया था ?(देखें 2 इतिहास 20:14...17 । ध्यान दें कि यह उत्तर भविष्यवक्ता यहजीएल के द्वारा आया था ।) यहोशापात ने अपने लोगों को क्या सलाह दी थी ? (देखें 2 इतिहास 20:20 ।) अन्तिम-दिनों के सन्तों के नाते, हम किस प्रकार आज संख्या में कम हैं जैसे यहूदा के लोग पूराने समय में थे ? कैसे यहोशापात की सलाह हम पर लागू होती है ?

- भविष्यवक्ता यहजीएल के आश्वासन को याद करके कि यह परमेश्वर का युद्ध था, यहोशापात ने लड़ाई करने के स्थान पर प्रभु की स्तुति के लिए गायकों की नियुक्ति कर दी थी । जब उन्होंने गाना शुरू किया, प्रभु ने उनको सुरक्षा प्रदान की, आक्रमणकारी आपस में लड़ने लगे और एक दूसरे का नाश कर दिया था(2 इतिहास 20:21...24) । हम किस प्रकार सुरक्षित रहते हैं जब हम जीवित भविष्यवक्ता के वचनों को याद रखते एवं सुनते हैं ?

- यारोबाम और रहूबियाम के विपरित, जिन्होंने अपने लोगों को मूर्ति पूजा में धकले था, यहोशापात ने यहूदा के लोगों को प्रभावित किया कि वे अपने आप को प्रभु के सामने दीन बनायें (2 इतिहास 20:3...4) । आप धार्मिक मार्गदर्शकों के उदाहरणों का क्या प्रभाव देखा है ? हम उन लोगों की सहायता के लिए क्या कर सकते हैं जो धार्मिकता से सेवा करना चाहते हैं ?

निष्कर्ष

मार्गदर्शकों की उस शक्ति की साक्षी दें जो लोगों को दुष्टता या धार्मिकता की ओर ले जा सकती है । कक्षा के सदस्यों को गिरजाघर की नियुक्तियों में, समाज में, काम पर, और घर पर नेतृत्व करने हमारे उत्तरदायित्वों के बारे में याद करवायें । कक्षा के सदस्यों को सेवा करने , प्रभु का विश्वास और आज्ञा पालन करने , उसपर विश्वास रखने, धर्मशास्त्रों में सीखाने, और भविष्यवक्ताओं का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. नकरात्मक संगी-साथियों से बचना

- इस्राएल का राज्य मुख्यतः इसलिए बंट गया था क्योंकि रहूबियाम ने अपने मूर्ख साथियों की सलाह को माना था (1 राजा 12:9...16) । कैसे हम अपने मित्रों की मूर्ख सलाहों को मानने के लालच से बच सकते हैं ?

  एल्डर मालकॉम एस. जैपसेन ने कहा थाः

  ''आप में से...अधिकतर, कभी न कभी, अपने एक या अधिक मित्रों द्वारा उस सलाह को मानने के लालच में पड़े होंगे जिसे आप जानते थे कि आपको नहीं करना चाहिए.... ।

  ''किसी को कभी पता नहीं चलेगा,' आप के यह कथित मित्र आप से कहेंगे । 'इसके अलावा, एक बार करने से क्या अन्तर पड़ेगा ?'

  ''...आपको अपने मित्र को अस्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है जो कि गलत मार्ग में चल रहे हैं; तुम्हें उनको त्यागने की बिलकुल भी आवश्यकता नहीं है । आप उनके अच्छे मित्र बने रह सकते हो, उनकी मदद करने के लिए सदा तत्पर रहे जब वे चाहते हैं कि उनकी मदद की जाये । आप उन से बात कर सकते हो और उन्हें ऊपर उठा सकते हो तथा अपना साक्षी दे सकते हो । उदाहरण के द्वारा उनका मार्गदर्शन करें ।

  ''लेकिन कभी भी अपने मित्र के कहने पर उस कार्य को न करना जो सर्व्ग के पिता की नजर में पसन्द न आने वाला हो, आपको प्रभु के मार्ग और उनके मार्ग में से एक को चुनना पड़ेगा ।

  ''यदि ऐसी स्थिति आती है, प्रभु के मार्ग का चयन करना और नये मित्रों की खोज करो'' (in Conference Report, Apr. 1990, 59; or *Ensign,* May 1990, 45) ।

2. *ऊंचे स्थानों और हरे वृक्षों* का अर्थ

निम्नलिखित परिभाषाएं आपको यारोबाम और रहूबियाम द्वारा उकसायी गई मूर्तिपूजा को समझाने में सहायता करेंगी ।

ऊँचे स्थान (1 राजा 12:31): वेदियां जो पहाड़ियों की चोटियों पर बनायी गयी थी । जब लोग मूर्तिपूजक बन गये थे, उन्होंने इन वेदियों को दूषित कर दिया था और इनका प्रयोग मूर्तिपूजा के किया था ।

हरे वृक्ष (1 राजा 14:15): नास्तिक पूजा स्थल जहां पर लोग कभी कभी अनैतिक व्यवहार में व्यस्त रहते थे ।

3. ''और तुम मनुष्य के बनाये हुए...देवताओं की सेवा करोगे'' (व्यवस्थाविवरण 4:28)

- जब यारोबाम ने सोने के बछड़ों को बनाया और लोगों ने ऊँचे स्थानों और हरे वृक्षों में पूजा की, वह तथा उसके लोग मूसा की 500 वर्ष पूर्व दी गई चेतावनी को भूल गये (व्यवस्थाविवरण 4:25...28) । वे अपने लिए किस प्रकार की विपत्ति को न्यौता दे रहे थे ? उनके लिए क्या वादा था यदि वे मूर्ति पूजा के स्थान पर प्रभु की ओर मुड़ जाते ? (देखें व्यवस्थाविवरण 4:29...31 ।)

4. नेतृत्व उद्देश्य पाठ

कक्षा में एक जैसे ब्लाक (या कोई दूसरी वस्तु) के दो सेट लेकर आयें । कक्षा के दो सदस्यों को इस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए आमंत्रित करें । प्रत्येक को ब्लाक का एक सेट दें । दोनों में से एक सदस्य को मार्गदर्शक बनायें और दूसरे को अनुसरण करने वाला । दोंनो सदस्यों को एक दूसरे के पीछे पीठ करके खड़ा इस तरह से खड़ा करें कि वे एक दूसरे के ब्लाक को न देख पायें । मार्गदर्शक को जल्दी से अपने ब्लाक से कुछ बनाने और वही निर्दश अनुसरण करने वाले के लिए देने को कहें ताकि वह भी ब्लाक से वही आकृति बना सके । अनुसरण करने वाले को बनाते समय कुछ भी प्रश्न नहीं पूछने दें । न ही दोनों को एक दूसरे की आकृतियों की ओर देखना चाहिए जब तक कि वे पूरी न हो जायें ।

जब अनुसरण करने वाला आकृति बनाना पूरा कर लेता है, चर्चा करें कि मार्गदर्शक के लिए स्पष्ट निर्देश देना और अनुसरण करने वाले के लिए ध्यान से सुनना क्यों महत्वपूर्ण है । यदि अनुसरण करने वाला मार्गदर्शक से मिलती जुलती आकृति बनाता है तो दोनों की प्रशंसा करें और कक्षा के अन्य सदस्यों को उनकी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए बोलें कि वे सफल कैसे हुए । यदि प्रदर्शन अलग अलग आकृति बनाने के कारण असफल रहता है, निम्नलिखित प्रश्न पूछें:

- क्या मार्गदर्शक ने निर्देश स्पष्ट अधिक दे सकता था ? क्या अनुसरण करने वाला अधिक ध्यान से सुन सकता था ? अगर अनुसरण करने वाले को मार्गदर्शक द्वारा बनाये जाने वाली आकृति को देखने दिया जाता तो इससे क्या मदद मिलती ?
- जो हमने इस प्रदर्शन से सीखा उसे हम अपनी गिरजाघर की बुलाहटों में या अपने घरों में कैसे प्रयोग कर सकते हैं ?

पाठ
28

''आग के बाद एक धीमी शान्त आवाज''

1 राजा 17...19

उद्देश्य

परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देने और जीवित भविष्यवक्ता के शब्दों और पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट में सांत्वना पाने के लिए कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 1 राजा 17 । एलिय्याह स्वर्ग को मेह बरसाने से रोक देता है, अहाब और ईजेबेल से बच कर भाग जाता है, और आश्चर्यजनक रूप से जंगल में उसका जीवन निर्वाह किया जाता है (17:1...6) । प्रभु एलिय्याह को एक विधवा के पास भेजता है जो उसे भोजन व पानी देती है (17:7...16) । एलिय्याह विधवा के पुत्र को मृतकों में से जीवित करता है (17:17...24) ।

   ख. 1 राजा 18 । दो वर्षों से भी अधिक के आकाल के पश्चात, एलिय्याह अहाब से मिलता है और बाल के याजकों को चुनौती देता है कि उनके बलिदान को स्वीकार करने के लिए वे स्वर्ग से आग भेजने का आह्वान करें (18:1...2, 17...24) । बाल के अपनी कोशिशों में नाकाम रहते हैं, परन्तु एलिय्याह प्रार्थना करता है और प्रभु आग भेजकर उसके द्वारा तैयार किये बलिदान को स्वीकार करता है (18:25...40) । एलिय्याह आकाल को समाप्त करने के लिए प्रार्थना करता है, और प्रभु मेह बरसाता है (19:41...46) ।

   ग. 1 राजा 19 । ईजेबेल एलिय्याह को मारने का प्रयत्न करता है (19:1...2) । एलिय्याह जंगल में भाग जाता है और एक दूत द्वारा उसकी भरण-पोषण किया जाता है (19:3...8) । एलिय्याह होरेब के पास जाता है, जहां उसे पवित्र आत्मा द्वारा सांत्वना प्राप्त होती है और परमेश्वर के कार्य को जारी रखने का निर्देश मिलता है (19:9...19) ।

2. कक्षा के एक सदस्य को बाल के याजकों के साथ एलिय्याह के मतभेद पर एक संक्षिप्त रिर्पोट देने के लिए तैयार रहने को कहें (1 राजा 18:17...40) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

एल्डर थोमस एस. मॉनसन द्वारा कही गई निम्नलिखित कहानी बताएं:

''गरीबी में पैदा हुए परन्तु विश्वास में पालन पोषण किये गए, [योस गारसिया] ने मिशन की बुलाहट के लिए तैयारी की । जिस दिन उसकी संस्तुति आई मैं वहां उपस्थित था । एक बयान आया: 'भाई गारसिया अपने परिवार के लिए बहुत बड़ा बलिदान देकर सेवा करेंगे, क्योंकि अपने परिवार का पालन-पोषण करने में वह काफी योगदान करता है । लेकिन उसके पास एक सम्पति है—एक बहुमूल्य डाक-टिकटों का संग्रह—जिसे यदि जरुरी हुआ, वह अपने मिशन का खर्च उठाने के लिए बेचने का इच्छुक है ।'

''अध्यक्ष [स्पेंसर डबल्यू.] किम्बल ने उन्हें सुनाये गए इस बयान को ध्यानपूर्वक सुना और जवाब दिया: 'उसे अपना डाक टिकटों के संग्रह को बेचने दो । इस तरह के बलिदान से उसे आशीर्वाद मिलेगा ।'''

कक्षा के सदस्यों को इस पर विचार करने के लिए कहें कि उनकी क्या प्रतिक्रिया होती यदि उन्हें प्रभु की सेवा करने के लिए अपनी सारी संपत्ति का त्याग करने के लिए कहा जाता । फिर कहानी को आगे बढ़ायें:

''फिर, अपनी आखों में एक चमक और चेहरे पर मुस्कराहट के साथ, इस प्रिय भविष्यवक्ता ने कहा, ''प्रतिमाह गिरजे के मुख्य कार्यालय में संसार के प्रत्येक हिस्से से हजारों की संख्या में डाक आती है । ध्यान रहे कि हम इन डाक टिकटों को बचायें और योस के मिशन की समाप्ति पर उसे दे दें । उसके पास, मुफ्त में, मैक्सिको के किसी भी युवक की तरह एक सर्वोत्तम डाक टिकट संग्रह होगा''' (in Conference Report, Oct. 1978, 83; or *Ensign*, Nov. 1978, 56) ।

समझाएं कि जब हम परमेश्वर को अपने जीवन में प्रथम स्थान देते हैं, तो हमें मिलने वाले उपहार इसके लिए किये बलिदान से कई गुना बेहतर होते हैं । यह पाठ दो लोगों के बारे मे बताता है—एलिय्याह और सारपत की विधवा—जिन्हें महान आशीर्वाद प्राप्त होते हैं क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए तैयार थे जबकि ऐसा करना मुश्किल था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धान्तों को दर्शाते हों ।

यारोबाम के इस्राएल के राज्य को मूर्तिपूजा में मार्गदर्शन करने के बाद, वह और उसके वंशजों का नाश कर दिया गया था । उनके बाद दूसरे मूर्तिपूजक राजा आये थे । उन शासकों में से, अहाब ऐसा राजा था जिसने ''उन सब इस्राएली राजाओं से बढ़कर जो उस से पहिले थे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा को क्रोध दिलाने के काम किये'' (1 राजा 16:33) । उसने ईजेबेल से विवाह कर उसकी रीतियों के अनुसार बाल की पूजा की, और लोगों को भी उत्साहित किया कि वे इस झूठे परमेश्वर की पूजा करें । भविष्यवक्ता एलिय्याह ने अहाब और उसके लोगों को चेतावनी दी ।

1. एलिय्याह स्वर्ग को मेह बरसाने से रोक देता है, आश्चर्यजनक रूप से उसका जीवन निर्वाह किया जाता है, और विधवा के पुत्र को मृतकों में से जीवित करता है ।

1 राजा 17 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- अहाब और उसके लोगों की दुष्टता के कारण, एलिय्याह घोषणा करता है, ''इन वर्षों में न तो मेह बरसेगा, और न ओस पड़ेगी, *लेकिन मेरे वचनों के अनुसार''* (1 राजा 17:1; तिरछी लिखाई को जोड़ा गया है) । एलिय्याह इस प्रकार के बयान देने के योग्य क्यों था ? (आप एलिय्याह की नफी, इलामन के पुत्र, से तुलना कर सकते हैं, जिसे के पास भी यही शक्ति थी । प्रभु क्यों ये सब करने की आज्ञा क्यों देता था, इस पर नफी का स्पष्टिकरण हमें इलामन 10:4...5 में मिलता है ।)

- यह घोषणा करने के बाद कि राज्य में कोई मेह नहीं बरसेगा, प्रभु उसे भाग जाने का आदेश देते हैं । एलिय्याह प्रभु के आदेश का किस प्रकार उत्तर देता है (देखें 1 राजा 17:2...5 ।) एलिय्याह के उत्तर से हम क्या सीख सकते हैं ?

  एल्डर गोर्डन बी. हिंकली कहते हैं:

  ''भविष्यवक्ता एलिय्याह के विषय में किये के साधारण कथन से मुझे बल मिलता है, जिसने राजा अहाब को राज्य में सूखे एवं आकाल की चेतावनी दी थी । लेकिन अहाब ने उसका मजाक उड़ाया था । और प्रभु ने एलिय्याह को वहां से चले जाने तथा कीरत नाम के नाले में छिप जाने के लिए कहा, और कि वह उसी नाले का पानी पीयेगा और कौवे उसे खिलाएंगे । और धर्मशास्त्र में साधारण और शानदार कथन लिखा है:'तो वह गया और प्रभु के वचनों के अनुसार किया ।' (1 राजा 17:5 ।)

  ''कोई बहस नहीं । कोई बहाना नहीं । कोई झुठ नहीं । एलिय्याह चुपचाप 'गया और प्रभु के वचनों के अनुसार किया ।' और वह उन सब भयंकर मुसिबतों से बचा ली गया जो उन पर आई थी जिन्होंने मजाक उड़ाया और बहस करी और प्रश्न किया था'' (in Conference Report, Oct. 1971, 159; or *Ensign,* Dec. 1971, 123...24)

- सूखा पड़ने के बाद एलिय्याह जंगल में कैसे बचा रहा ?(देखें 1 राजा 17:4, 6 ।) आपके पास क्या अनुभव है जब प्रभु ने आपको आत्मिक या शारीरिक रूप से आपका पोषण किया हो ?

- जब जंगल का नाला सूख जाने के बाद प्रभु ने एलिय्याह की सहायता के लिए किसे तैयार किया था ?(देखें 1 राजा 17:7...13 ।) इससे हमें यह जानने में क्या सहायता मिलती है कि प्रभु जरुरतमंदों की कैसे सहायता करता है ? (समझाएं कि प्रभु जरुरतमंदों की सहायता अक्सर दूसरों से करवाता है ।) अपने दूसरों की सेवा द्वारा जरुरतमंदों की सहायता करते हुए प्रभु को कैसे देखा है ? जरुरतमंदों की सहायता करने के लिए दूसरों की क्या मदद कर सकते हैं ?

  एल्डर जैफ्री आर. हौलेन्ड ने कहा थाः ''चाहे कितना थोड़ा ही क्यों न हो हम सभी कुछ न कुछ कर सकते हैं । हम उचित दसमांश और उपवास तथा अन्य एंच्छिक भेंट दे सकतें हैं ।.... और मदद करने के अन्य तरीकों पर ध्यान दे सकते हैं । योग्य कारणों और जरुरतमंदों के लिए, यदि हमारे पास धन नहीं है तो हम अपना समय दे सकते हैं, और जब हमारे पास समय न हो हम अपना प्यार दे सकते हैं । हम अपना भोजन को बांट सकते हैं और परमेश्वर पर विश्वास रख सकते हैं कि हमारी कुप्पी का तेल कभी खत्म न होगा'' (in Conference Report, Apr. 1996, 41; or *Ensign,* May 1996, 31)

- विधवा ने एलिय्याह की पानी पिलाने के आग्रह का कैसे उत्तर दिया ? (देखें 1 राजा 17:10...11 । उसने बिना किसी झिझक के उसे पानी पिलाया था ।) विधवा ने क्या कहा था जब एलिय्याह ने उसे खाना खिलाने का आग्रह किया था ?(देखें 1 राजा 17:11...12 ।) एलिय्याह ने उससे क्या वादा किया था ? (देखें 1 राजा 17:13...14 ।) तब विधवा ने क्या किया था ? (देखें 1 राजा 17:15 ।) हम विधवा के जवाब से क्या सीख सकते हैं ?

  एल्डर हॉलैन्ड ने कहा कि जब एलिय्याह ने भोजन के लिए पूछा तो विधवा का जवाब ''विश्वास की अभिव्यक्ति,—उन परिस्थितियों में, उतनी ही महान थी जितनी कि धर्मशास्त्रों में मुझे पता है ।.... शायद वह अनिश्चित थी कि उसे विश्वास की क्या कीमत चुकानी पड़ेगी...पहले वह अपनी रोटी का छोटा हिस्सा एलिय्याह के पास लेकर गई, इस भरोसे के साथ कि यदि काफी रोटी नहीं बचेगी, तो वह और उसका बेटा कम से कम भलाई का काम करते हुए मरेंगे'' (in Conference Report, Apr. 1996, 39; or *Ensign*, May 1996, 29) ।

- आप क्यों सोचते हैं कि परमेश्वर ने विधवा को खाना खिलाने का आदेश दिया जबकि उसके पास बहुत कम खाना था ? विधवा को आज्ञाकारी होने का क्या आशीर्वाद मिलता है ? (देखें 1 राजा 17:16 ।) वे कौन सी बातें हैं जो परमेश्वर हमसे चाहता है और हमें करने में मुश्किल लगती हैं ? किस प्रकार परमेश्वर को पहले रखकर वे सब करने में जो मुश्किल लगते हैं, हमें आशीर्वाद मिलते हैं ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया थाः

  ''जब हम परमेश्वर को पहले रखते हैं, सब बातें अपने उचित स्थान में हो जाती है या हमारे जीवन से चली जाती हैं । प्रभु के प्रति हमारा प्रेम, हमारे प्रेम या पसन्द को, हमारे समय को जो हम व्यतीत करते, जो कार्य को जो हम करना चुनते हैं, और हमारी प्राथमिकताओं के क्रम को नियंत्रित करेगा ।

  ''परमेश्वर हमें आशीष दे कि हम उसे पहले रखें और, परिणाम स्वरूप, इस जीवन में तथा आने वाले अनन्त जीवन में भरपूर आनन्द पाएं'' (in Conference Report, Apr. 1988, 3, 6; or *Ensign,* May 1988, 4, 6)

- एलिय्याह ने क्या किया था जब विधवा का बेटा बिमारू के बाद मर गया था ? (देखें 1 राजा 17:17...22 ।) किस शक्ति के द्वारा एलिय्याह विधवा के बेटे को फिर से जीवन दे पाया था ? पौरोहित्य की शक्ति के द्वारा आपके जीवन कैसे आशीषित हुआ है ?

2. एलिय्याह बाल के याजकों को चुनौती देता है और स्वर्ग से मेह बरसाता है ।

1 राजा 18 का अध्ययन और चर्चा करें ।

- आकाल के तीसरे वर्ष में, प्रभु एलिय्याह को आदेश देता है, ''अहाब के पास जाकर अपने आप को प्रकट करो; और मैं पृथ्वी पर मेह बरसाऊंगा'' (1 राजा 18:1) । जब अहाब ने एलिय्याह को देखा तो उसकी क्या प्रतिक्रिया थी ? (देखें 1 राजा 18:17 । बताएं कि अहाब ने आकाल के लिए एलिय्याह को दोषी ठहराया था ।) आकाल का असली कारण क्या था ? (देखें 1 राजा 18:18 ।)

- जैसा एलिय्याह ने प्रार्थना की थी, अहाब ने पूरे इस्राएल और झूठे 850 याजकों को कर्म्मेल पर्वत पर एकत्रित किया (1 राजा 18:19...20) । जब लोग एलिय्याह को सुनने के लिए एकत्रित हुए, उसने उनसे पूछा, ''कब तक तुम दो विचारों के बीच लटकते रहोंगे'' (1 राजा 18:21) । दो विचारों के बीच लटकने से आप क्या समझते हो ? किस प्रकार हम कभी कभी दो विचारों के बीच लटकते हैं ? (देखें मत्ती 6:24 । बताएं कि शब्द *धन* का अर्थ सांसारिक होना है ।)

  एल्डर नील ए. मैक्सवैल ने कहा थाः ''विभिन्न भविष्यवक्तों के उत्साहजनक शब्द...हमें चुनने, निणर्य लेने, और दुविधा में न पड़ने के लिए जोर देते हैं...एलिय्याह के सन्देश का वर्तमान समय में लागू होता है, क्योंकि अंततः हमें ससांर के परमेश्वर में से और अनन्तता के परमेश्वर में से एक को चुनना पड़ेगा'' (*That My Family Should Partake* [1974], 22)

नियुक्त किये गये कक्षा के सदस्य को बाल के या जकों के साथ एलिय्याह के मतभेद की एक संक्षिप्त रिर्पोट देने दें (1 राजा 18:17...40) ।

- बाल के याजकों को चुनौती देने का एलिय्याह क्या उद्देश्य था ?(देखें 1 राजा 18:36...37) । लोगों ने प्रभु की शक्ति प्रदर्शन पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ?(देखें 1 राजा 18:38...39 ।) प्रभु को और उसकी शक्ति को स्वीकार करके लोग किस प्रकार आशीषित हुए थे ?(देखें 1 राजा 18:45 ।) किस प्रकार हम प्रभु और उसकी शक्ति को अधिक स्वीकार कर सकते हैं ? (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 5:16...18; अलमा 34:38; मरोनी 7:33...39 ।)

3. एलिय्याह को पवित्र आत्मा द्वारा सांत्वना मिलती है और परमेश्वर का कार्य जारी रखने का आदेश मिलता है ।

1 राजा 19 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

बाल के याजकों पर एलिय्याह की विजय से क्रोधित होकर, ईजेबेल उसको मारने की कोशिश करती है । एलिय्याह जंगल में भाग जाता है और प्रभु को पुकार कर कहता है, ''हे यहोवा बस हो गया, अब मेरा प्राण ले, ले'' (1 राजा 19:4) । प्रभु एलिय्याह को स्वर्गदूत द्वारा भोजन व पानी भेज कर आशीषित करता है । आप यह बताना चाहोगे कि यहां तक भविष्यवक्ता भी निराश हो सकते हैं और उन्हें भी आराम एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है जोकि केवल परमेश्वर दे सकता है ।

- एलिय्याह हतोत्साहित क्यों हुआ था ?(देखें 1 राजा 19:10, 14 । लोगों को परमेश्वर की शक्ति के शानदार प्रदर्शन के बावजूद, एलिय्याह महसूस किया कि केवल वही सच्चे परमेश्वर की आराधना करने वाला एकमात्र इस्राएली था ।) उसने शान्ति प्राप्त करने के लिये क्या किया था ?(देखें 1 राजा 19:4, 8 । उसने प्रार्थना की एवं उपवास रखा ।) यदि हम हतोत्साहित, निराश, या दबा हुआ महसुस करते हैं तो हम एलिय्याह के अनुभव से क्या सीख सकते हैं ?

- होरेब पर्वत पर परमेश्वर ने एलिय्याह को किस प्रकार सांत्वना दी ?(देखें 1 राजा 19:9...13 ।) हम इससे क्या सीख सकते हैं कि परमेश्वर हमसे किस प्रकार बात करता है ? आप क्यों सोचते हैं कि परमेश्वर अक्सर हम से पवित्र आत्मा के ''दबे हुए

धीमे शब्द'' से बातचीत करता है न कि तेज आवाज और आश्चर्यजनक शक्ति के प्रदर्शन से ? हम पवित्र आत्मा की हल्की आवाज को कैसे समझ सकते हैं ?

जब एक संवाददाता ने अध्यक्ष हिन्कली से पूछा, वे परमेश्वर से कैसे बातचीत करते हैं, भविष्यवक्ता ने जवाब दिया, ''मैं सोचता हूं कि सबसे अच्छा तरीका जो मैं बता सकता हूं वह एलिय्याह के अनुभव के समान है जैसा कि पहले राजा की पुस्तक में नियुक्त किया है । एलिय्याह ने प्रभु से बात की, और प्रचण्ड आन्धी चली, और प्रभु आन्धी में न था । और भूचाल आया, परमेश्वर भूचाल में न था । और फिर आग दिखाई दी, और प्रभु आग में न था । और आग के बाद, दबा हुआ धीमा शब्द, जिसकी मैं, आत्मा फुसफुसाहट की तरह व्याख्या करता हूं'' (in Conference Report, Oct. 1996, 71; or *Ensign,* Nov. 1996, 51) संवाददाता ने अध्यक्ष हिंकली से पूछा, वे परमेश्वर से कैसे बातचीत करते हैं, भविष्यवक्ता ने जवाब दिया,''मैं सोचता हूं कि सबसे अच्छा तरीका जो मैं बता सकता हूं वह एलिय्याह के अनुभव के समान है जैसा कि पहले राजा की पुस्तक में नियुक्त किया है । एलिय्याह ने प्रभु से बात की, और प्रचण्ड आन्धी चली, और प्रभु आन्धी में न था । और भूचाल आया, परमेश्वर भूचाल में न था । और फिर आग दिखाई दी, और प्रभु आग में न था । और आग के बाद, दबा हुआ धीमा शब्द, जिसकी मैं, आत्मा की फुसफुसाहट की तरह व्याख्या करता हूं'' (in Conference Report, Oct. 1996, 71; or *Ensign,* Nov. 1996, 51)

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने सीखाया थाः ''क्या आपको आत्मा की आवाज सुनने में समय लगता है ? प्रार्थना का उत्तर अधिकत्तर दबी हुई हल्की आवाज में आता है और हमारी गहनतम, आंतरिक *अनुभूतियों* द्वारा समझा जाता है । मैं तुम से कहता हूं कि तुम अपने विषय में परमेश्वर की इच्छा को जान सकते हो यदि आप पूरे मन से प्रार्थना करो और ध्यान से सुनो'' (in Conference Report, Oct. 1977, 46; or *Ensign,* Nov. 1977, 32)

- सहायक होने के अलावा, पवित्र आत्मा एक शिक्षक भी है (यूहन्ना 14:26; 2 नफी 32:5) । पवित्र आत्मा के द्वारा—प्रभु—एलिय्याह को क्या करने के लिए निर्देश देता है ?(देखें 1 राजा 19:15...16 ।) कैसे प्रभु की सेवा करके हमें निराशा के समय हमें सहायता मिलती है ?
- प्रभु ने एलिय्याह को एक तरीके से तसल्ली दी थी कि अभी बहुत से इस्राएली हैं जिन्होंने बाल की पूजा करना नहीं चुना था (1 राजा 19:18) । कैसे किसी दूसरे वफादार अन्तिम-दिन सन्तों की सहभागिता से हमें आराम मिलता है ? क्या प्रभाव आपके चारों ओर होता है जिससे आपको सहायता मिलती है कि आप अकेले नहीं हैं ? दूसरों की सहायता करने के लिए आप क्या कर सकते हो जब वे अकेला महसूस करते हैं ?

निष्कर्ष

साक्षी दें कि जब हम परमेश्वर को पहला स्थान देते हैं और पवित्र आत्मा की फुसफुसाहट को सुनते एवं पालन करते हैं हम सांत्वना प्राप्त होती है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

एलिय्याह की आत्मा

अन्तिम-दिन के सन्त अक्सर एलिय्याह की आत्मा के बारे में बातें करते हैं । यह वाक्याशं उस काम को दर्शाता है जो हम ''पिता के दिलों को बच्चों की ओर, तथा बच्चों के दिलों को पिता की ओर मोड़ते है'' (सि.और अनु. 110:15) । इस काम में जीवितों एवं मृतकों के लिए पारिवरिक इतिहास की खोज और मन्दिर के कार्य शामिल हैं । हम इसे एलिय्याह की आत्मा कहते हैं क्योकि एलिय्याह मोहर बन्द करने की पौरोहित्य शक्ति की कुंजियों को जोसफ स्मिथ को फिर से दिया था (सि. और अनु.110:13...16) । इस शक्ति के द्वारा, मोहर बन्द धर्मविधि को किया जा सकता है जो परिवारों को अनन्ता के लिए मिलती है ।

जोसफ स्मिथ ने कहा थाः

''एलिय्याह की आत्मा, शक्ति, और बुलाहट यह है, कि तुम्हारे पास प्रकटीकरण, धर्मविधियां, परमेश्वर के वचन, शक्तियों की कुंजियों और पूर्णता के इन्डोवमेन्ट का पौरोहित्य और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य; और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित धर्मविधियों प्राप्त करना, उपलब्ध करना, और पूरा करना ताकि पिता के दिल बच्चों की ओर, तथा बच्चों के दिल पिता की ओर मुड़ें, जो स्वर्ग में है उनके भी ।....

''मैं आशा करता हूं कि इस विषय को समझूँ, क्योंकि यह महत्वपूर्ण है; और यदि आप इसे प्राप्त करते हैं, यह एलिय्याह की आत्मा है, कि हम अपने मृतक को बचायें, और अपने आपको अपने पिता से जोड़ें जो स्वर्ग में है, और अपने मृतक से मुहरबंद हों जोकि प्रथम पुनरूत्थान में जीवित होंगे; और यहां पर हमें एलिय्याह की शक्ति की आवश्यकता होगी कि जो पृथ्वी पर रहते हैं और उन्हें जो स्वर्ग में रहते हैं मुहरबंद कर सकें । यह एलिय्याह की शक्ति और यहोवा के राज्य की कुंजियां हैं'' (*Teachings of the Prophet Joseph Smith,* sel. Joseph Fielding Smith [1976], 337...38)

पाठ
29

''उसने...एलिय्याह की चद्दर को उठाया''

2 राजा 2; 5...6

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की सहायता करना कि कैसे अधिकार (चद्दर) एक भविष्यवक्ता से दूसरे भविष्यवक्ता के पास जाती है, उन्हें भविष्यवक्ता के शब्दों का पालन करने के लिए उत्साहित करना, और सुनिश्चित करना कि परमेश्वर की शक्ति किसी भी शक्ति से महान है ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 2 राजा 2:1...18 । एलिय्याह एलीशा को नया भविष्यवक्ता बनने के लिये तैयार करता है (2:1...10) । एलिय्याह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया जाता है । एलीशा एलिय्याह की चद्दर को लेता है और भविष्यवक्ता बन जाता है (2:11...15) । पचास आदमी एलीशा की सलाह के विरूद्ध एलिय्याह को तीन दिन तक खोजते हैं (2:16...18) ।

   ख. 2 राजा 5 । एलीशा नामान के कोढ़ को दूर करता है (5:1...14) । नामान परमेश्वर की प्रशंसा करता है और एलीशा को पुरस्कार देता है, जिसे एलीशा लेने से मना कर देता है (5:15...19) ।

   ग. 2 राजा 6:8...18 । एलीशा इस्राएल के राजा का सीरिया के साथ युद्ध में मार्गदर्शन करता है (6:8...10) । सीरिया का राजा अपने आदमियों को एलीशा को पकड़ने का आदेश देता है, और फौज दोतान शहर को घेर लेती है (6:11...14) । निडर, एलीशा प्रार्थना करता है, और प्रभु घोड़ों से भरा पर्वत और आग से भरे रथ प्रकट करता है, फिर वह सीरिया की फौज पर अन्धाधुन्ध हमला कर देता है (6:15...18) ।

2. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, चद्दर के रूप में उपयोग करने के लिए एक कपड़े का टुकड़ा लेकर आयें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

अपने कन्धे के चारों तरफ कपड़े को लपटे लें (या कक्षा के किसी सदस्य के कन्धे के चारों तरफ) । समझाएं कि भविष्यवक्ता एलीशा चद्दर ओढ़ता था । हम अच्छी तरह से नहीं जानते की वास्तव में चद्दर कैसे लगती थी, लेकिन यह कपड़े का लबादा जैसा होता होगा । एलिय्याह से एलीशा को चद्दर का देना भविष्यवक्ता होने के अधिकार एलीशा को देने का प्रतीक था ।

वर्तमान समय में हम कभी कभी कहतें हैं कि भविष्यवक्ता ''चद्दर'' के अधिकार को प्राप्त करता है जब उसकी नियुक्ति होती है और उसे अलग किया जाता है । यद्यपि आजकल भविष्यवक्ता लबादा या कपड़े को नहीं ओढ़ते, परमेश्वर उन्हें पौरोहित्य की कुंजियां देता है । ये कुंजियां उसे परमेश्वर के नाम में कार्य करने की शक्ति को पृथ्वी पर गिरजाघर के मार्गदर्शक के रूप में देते हैं । जब भविष्यवक्ता की मृत्यु होती है, यह अधिकार की चद्दर नये भविष्यवक्ता को दे दी जाती है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. एलीशा एलिय्याह के बाद भविष्यवक्ता बनता है ।

1 राजा 2:1...18 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- एलिय्याह और एलीशा के बोच क्या सम्बन्ध था ? (देखें 2 राजा 2:2...10 ।) आपके विचार से एलीशा एलिय्याह के साथ रहने के लिए इतना इच्छुक क्यों था ? एलिय्याह के स्वर्ग पर उठा लिये जाने के बाद एलीशा ने क्या किया था ? (देखें 2 राजा 2:11...13 ।) यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग नहीं किया था, इसे संदर्भ करें कि एलीशा की चद्दर क्या थी और यह क्या दर्शाती थी ।)
- आजकल चद्दर किसके पास है ? (गिरजाघर के वर्तमान अध्यक्ष के पास) इस चद्दर को किस प्रकार हस्तांतरित किया जाता है जब भविष्यवक्ता की मृत्यु होती है ?

अध्यक्ष जोसफ फिल्डींग स्मिथ ने व्याख्या की थीः

''गिरजाघर के अध्यक्ष का चुनाव कोई भेद की बात नहीं है । प्रभु ने इसे बहुत पहले स्थापित किया था, और *वरिष्ठ प्रेरित स्वतः ही गिरजाघर का संचालन अधिकारी बन जाता है,* और उसे इस तरह से बारह की परिषद का समर्थन प्राप्त होता है जोकि कोई भी प्रथम अध्यक्षता के न रहने पर गिरजाघर की संचालन समीति बन जाती है । अध्यक्ष का *चुनाव नहीं* किया जाता है, लेकिन इसे अपने भाइयों की परिषद तथा गिरजाघर के सदस्य, दोनों का समर्थन प्राप्त होना चाहिए'' (*Doctrines of Salvation,* comp. Bruce R. McConkie, 3 vols. [1954...56], 3:156)

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली समझाते हैं कि वे किस प्रकार अध्यक्ष हावर्ड डबल्यु. हन्टर की मृत्यु के पश्चात उनको नियुक्त किया गया था तथा वे गिरजाघर के अध्यक्ष बने थेः

''अध्यक्ष हन्टर के निधन के साथ ही, प्रथम अध्यक्षता भंग हो गयी थी । भाई मॉनसन और मैं, जिन्होंने उनके सलाहकारों के रूप में कार्य किया था, ने बारह की परिषद में अपना स्थान ग्रहण कर लिया, जोकि गिरजाघर की संचालन प्राधिकरण बन गई थी ।

''[कुछ दिनों के पश्चात] सभी नियुक्त प्रेरित उपवास और प्रार्थना की आत्मा में मन्दिर के ऊपरी कक्ष में एकत्रित हुए । यहां हमने एक साथ पवित्र स्तुति गान गाया और प्रार्थना की । हमने प्रभुभोज में भाग लेकर अपने पवित्र, प्रतीकात्मक अनुबन्ध और उसके साथ अपने सम्बन्ध का नवीनीकरण किया जो हमारा दिव्य मुक्तिदाता है । इस तरह पीढ़ियों से भलि-भांति स्थापित परम्परा का पालन करते हुए अध्यक्षता पुनः व्यवस्थित की गई [इस परम्परा को अध्यक्ष जोसफ फिल्डिंग स्मिथ के पहले वाले बयान में समझाया गया है] । कोई प्रचार नहीं, कोई प्रतियोगिता नहीं, पद की कोई लालसा नहीं । यह बिना शोरगुल, शान्तिपूर्वक, सीधा, और पवित्र था । यह उसी आधार पर किया गया था जिस स्वयं प्रभु ने स्थापित किया था'' (in Conference Report, Apr. 1995, 92; or *Ensign,* May 1995, 69)

आप बता सकते हैं कि जिस प्रकार पुराने काल में उसने किया था, उद्धारकर्ता ने प्रत्येक अन्तिम-दिन के प्रेरित को पौरोहित्य की कुंजियां दी हैं । यद्यपि, केवल गिरजाघर का अध्यक्ष, जो वरिष्ठ जीवित प्रेरित है, इन कुंजियों का प्रयोग सम्पूर्ण गिरजाघर की ओर से कर सकता है (या किसी अन्य को इन्हें उपयोग करने का अधिकार दे सकता है) (देखें सि.और अनु. 132:7) ।

- लोगों ने क्या प्रतिक्रिया की जब उन्होंने एलीशा को एलिय्याह के यरदन के पानी को दो भागों में बांटने के चमत्कार की नकल करते हुए देखा ? (देखें 2 राजा 2:14...15 ।) यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम तुरन्त नये नियुक्त गिरजे के अध्यक्ष को स्वीकार और समर्थन दें ? (देखें सि.और अनु. 43:3, 7 ।)

- एलिय्याह के स्वर्ग में उठाये जाने के तुरन्त बाद, लोग 50 मजबुत आदमियों को भेजकर उसको खोजना चाहते थे । एलीशा ने लोगों से क्या कहा था ?(देखें 2 राजा 2:16 ।) लोगों ने एलीशा के जवाब पर क्या प्रतिक्रिया की ? (देखें 2 राजा 2:17 । वे एलीशा से याचना करते रहे जब तक उसने आदमियों को जाने की आज्ञा नही दे दी ।)

- जब 50 आदमी बिना एलिय्याह को प्राप्त किये वापस आये, एलीशा ने लोगों से क्या कहा ?(देखें 2 राजा 2:18 ।) 50 आदमियों के अनुभव से हम क्या सीख सकते हैं ?(हमें भविष्यवक्ता की सलाह को तुरन्त पालन करना चाहिए ।) क्यों कई बार हम किसी सलाह का अनुसरण करने से पहले प्रतीक्षा करते हैं कि भविष्यवक्ता सलाह को दोहराये ? हाल के वर्षों में गिरजे के मार्गदर्शकों ने क्या सलाह दी है ? आप कैसे आशीषित होते हैं यदि आप इन सलाह का पालन करते हैं ?

2. एलीशा नामान का कोढ़ ठीक करता है ।

2 राजा 5 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- नामान कौन था, और उसका क्या कष्ट था ?(देखें 2 राजा 5:1) वह एलीशा के पास क्यों गया था ? (देखें 2 राजा 5:2...9) एलीशा के सन्देशवाहक ने नामान से स्वस्थ होने के लिए क्या करने को कहा था ? (देखें 2 राजा 5:10) क्यों, नामान ने सर्वप्रथम एलीशा के निर्देश को मानने से इन्कार कर दिया था ?(देखें 2 राजा 5:11...12)

- नामान के सेवकों ने उसे किस प्रकार राजी किया कि वह एलीशा का कहा करे ?(देखें 2 राजा 5:13) जब नामान ने सात बार यरदन नदी में स्नान किया तो क्या हुआ ? (देखें 2 राजा 5:14)

- भविष्यवक्ता की सलाह को मानने के विषय में नामान की कहानी हमें क्या सीखाती है—बेशक तब भी जब हम इसे पसन्द न करते हो या हमें यह समझ में न आये या जब यह छोटी और साधारण बात के बारे में हो ? कौन सी छोटी, साधारण बातें हें जिनके बारे में भविष्यवक्ता या गिरजे के मार्गदर्शकों ने करने को कहा है ? क्यों कई बार यह बाते करने में कठिन लगती हैं ? किस प्रकार हम गिरजे के मार्गदर्शकों सलाह मानने की आपनी इच्छा को बढ़ा सकते हैं ?

एल्डर रैक्स डी. पाईनगर ने कहा था,''क्या हम कभी कभी नामान की तरह नहीं होते हैं, जब हम चाहते हैं कि सिर्फ महत्वपूर्ण कार्यों को ही करें और साधारण कार्यों को छोड़ दें जो हमारा जीवन बदल सकते हैं और हमें रोगों से छुटकारा दिला सकते हैं ?'' (in Conference Report, Oct. 1994, 106; or *Ensign,* Nov. 1994, 80)

नामान की कहानी बताने के बाद, एल्डर ने कहा:''सुसमाचार का मार्ग एक साधारण मार्ग है । कुछ आवश्यकताएं आपको प्राथमिक और गैर जरुरी लग सकती है । इन्हें अस्वीकार न करें । अपने आपको दीन बनाएं और आज्ञा का पालन करें । मैं वादा करता हूं कि परिणाम आश्चर्यजनक और सन्तोषजनक अनुभव होगा'' (in Conference Report, Oct. 1976, 143; or *Ensign,* Nov. 1976, 96)

- नामान ने अपनी चंगाई से क्या सीखा था ? (देखें 2 राजा 5:15) कैसे छोटी बातों में आज्ञाकारी होने से आपकी गवाही को मजबूती मिली ?
- नामान ने चंगाई पाने के बाद एलीशा को क्या देने की कोशिश की ? (देखें 2 राजा 5:15) एलीशा ने नामान की भेंट को क्यों अस्वीकार कर दिया था ? यह क्यों आवश्यक है बिना सांसारिक पुरस्कारों के लालच के सेवा की जाये ?

3. एलीशा इस्राएल को सीरिया के साथ युद्ध में मार्गदर्शन करता है ।

2 राजा 6:6...18 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- एलीशा ने इस्राएल के राजा की सीरिया के साथ युद्ध में किस प्रकार सहायता की थी ? (देखें 2 राजा 6:8...10) जब सीरिया के राजा को पता चला कि एलीशा मदद कर रहा है तो उसने क्या किया ?(देखें 2 राजा 6:11...14)
- एलीशा के सेवकों ने क्या प्रतिक्रिया की जब उन्होंने सीरिया के घोड़ों और रथों को शहर को घेरते देखा ? (देखें 2 राजा 6:15)एलीशा ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?(देखें 2 राजा 6:16) एलीशा का क्या अर्थ था जब उसने अपने सेवकों का कहा,''जो हमारी ओर हैं वह उनसे अधिक हैं जो उनकी ओर हैं'' ?(2 राजा 6:16) । आप कैसे एलीशा के इस कथन को आज भी सच समझते हैं ?
- कौन सी वर्तमान परिस्थितियाँ हैं जो हमें यह विश्वास कराती हैं कि हम संसार की बुराइयों के विरूद्ध असहाय हैं ? कैसे यह आत्म-विश्वास कि ''जो हमारी ओर हैं वह उनसे अधिक हैं जो उनकी ओर हैं'' हमें बुराई के विरूद्ध युद्ध में हमारी सहायता करता है ?

  एल्डर डालिन एच. ओक्स ने कहा था: ''जब एक बालक के रूप में इस शानदार कहानी को पढ़ा था, मैंने हमेशा अपने आपको एलीशा का नव जवान सेवक समझा । मैं सोचता था, मानो प्रभु की सेवा करते समय मुझे बुराई की ताकतों ने चारों ओर से घेर लिया है, मैं आशा करता कि प्रभु मेरी आखें खोलेगा और मुझे यह समझने के लिए विश्वास देगा कि जब हम प्रभु की सेवा करते हैं, जो हमारे साथ होते हैं वे हमेशा हमारे विरोधियों से अधिक शक्तिशाली होते हैं'' (in Conference Report, Oct. 1992, 54; or *Ensign,* Nov. 1992, 39)
- कैसे यह आत्म-विश्वास कि ''जो हमारी ओर हैं वह उनसे अधिक हैं जो उनकी ओर हैं'' सब लोगों तक सुसमाचार पुहंचाने में हमारी सहायता करता है ?(देखें सि.और अनु. 84:87...88)

  अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा था: ''हम अभी सुसमाचार को सभी राष्ट्रों, जातियों, भाषाओं, और लोगों तक नहीं पहुंचाया है ? लेकिन हमने काफी काम कर लिया है । हम वहां सभी जगहों पर गये है जहां हमें जाने की अनुमति मिली है । परमेश्वर हमारे कार्य का निर्देशक है, और द्वार उसकी शक्ति से उसकी दिव्य इच्छा से खुलेंगे । इस बात का मुझे पूरा विश्वास है । इस बात से मैं पूरी तरह निश्चित हूं'' (in Conference Report, Oct. 1995, 93; or *Ensign,* Nov. 1995, 70–71)
- अपने सेवकों की तरफ से एलीशा की क्या प्रार्थना थी ?(देखें 2 राजा 6:17) क्यों, पहले, सेवकों को घोड़ों से भरा पर्वत और आग के रथ दिखाई दिये, जो परमेश्वर ने भेजे थे ? परमेश्वर की शक्ति को देखने के लिए हम अपने जीवन में और संसार में क्या कर सकते हैं ?

निष्कर्ष

साक्षी दें कि गिरजाघर का अध्यक्ष परमेश्वर का भविष्यवक्ता है । कक्षा के सदस्यों को गिरजे के नये मार्गदर्शकों का समर्थन करने और भविष्यवक्ता की सलाह को मानने के लिए उत्साहित करें । गवाही दें कि परमेश्वर की शक्ति किसी भी शक्ति से महान है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. एलीशा के चमत्कार

लोगों के लिए दया दिखाते हुए और यह सबूत देते हुए कि वही एलिय्याह का उत्तराधिकारी है, एलीशा ने कई महान चमत्कार किये थे । उसने यरदन के जल को दो भागों में कर दिया, लोगों को बचाये जिन्हें विष दिया गया था, भूखों को खिलाया, नामान के कोढ़ को ठीक किया, कुल्हाड़ी को तैराया, और राजा की युद्ध मदद की । आप 2 राजा 2...6 में से कुछ चमत्कारों का अवलोकन कर सकते हैं ।

- क्या आप सोचते हैं कि आज भी उसी तरह से चमत्कार होते हैं जैसे एलीशा के समय में होते थे ? केवल आश्चर्यजनक चमत्कारों की खोज करने के क्या खतरे हैं ? कौन से दिखने में छोटे चमत्कार हमारे जीवन में होते हैं ?

2. एक इस्राएली नवयुवती नामान को एलीशा के विषय में बताती है

- नामान को एलीशा और उसकी चंगाई देने की शक्ति के बारे मे कैसे पता चलता है ? (देखें 2 राजा 5:2...4 । एक इस्राएली नवयुवती जिसे सीरियन लोग कैद कर ले गये थे नामान की पत्नी को बताती है कि इस्राएल में एक भविष्यवक्ता है जो नामान को ठीक कर सकता है ।) किस प्रकार ये इस्राएली नवयुवती हम लोगों के लिए एक उदाहरण है ? (हमारी आयु चाहे कितनी भी क्यों न हो, चाहे कैसी भी परिस्थितियां क्यों न हों, या गिरजाघर की बुलाहट हो, हम लोगों को भविष्यवक्ता—और प्रभु के विषय में बताकर अच्छा काम कर सकते हैं ।)

पाठ
30

''यहोवा के भवन को आओ''

2 इतिहास 29...30; 32; 34

उद्देश्य

कक्षा के प्रत्येक सदस्य को प्रेरणा देना कि वह मन्दिर और धर्मशास्त्र अध्ययन से वादा की गई आशीषों को प्राप्त करें ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. 2 इतिहास 29...30 । यहूदा का राजा, हिजकिय्याह, मन्दिर द्वार खोल देता है और याजकों और लेवीवंशियों को निर्देश देता है कि इसे आराधना के लिए साफ तथा पवित्र करें (29:1...19) । जब मन्दिर साफ हो जाता है, हिजकिय्याह और उसके लोग प्रभु की आराधना और प्रशंसा करते हैं (29:20...36) । हिजकिय्याह पूरे इस्राएल को यरूशलेम में प्रभु के भवन में बुलाता है (30:1...9) । कुछ लोग इस निमंत्रण पर हंसते और मजाक उड़ाते हैं, लेकिन इस्राएल के विश्वासी लोग प्रभु की आराधना करने यरूशलेम जाते हैं (30:10...27) ।

   ख. 2 इतिहास 32:1...23 । अश्शुर का राजा, सन्हेरीब, यहूदा पर चढ़ाई कर देता है और प्रभु की निन्दा करता है (32:1...19) । यशायाह और हिजकिय्याह मदद के लिए प्रार्थना करते हैं, और प्रभु का दुत अश्शुरओं की बहुत सी फौज का नाश कर देता है (32:20...23) ।

   ग. 2 इतिहास 34 । हिजकिय्याह के बेटे और पोते के भ्रष्ट शासन के पश्चात, हिजकिय्याह का पड़-पोता योशिय्याह यहूदा का राजा बना । योशिय्याह ने राज्य में मूर्तियों का नाश किया और मन्दिर की मरम्मत की (34:1...13) । व्यवस्था की पुस्तक मन्दिर में पाई जाती और योशिय्याह को पढ़कर सुनाई जाती थी, जोकि यह सुनकर रोता था कि लोग व्यवस्था से कितने दूर हो गये थे (34:14...21) । हुल्दा स्त्री भविष्यवक्ता ने यहूदा पर आने वाली विपत्तियों के बारे में बताया परन्तु भविष्यवाणी की कि योशिय्याह इन विपत्तियों को अपनी आँखों से नहीं देख पायेगा (34:22...28) । योशिय्याह और उसके लोगों ने प्रभु की सेवा करने का अनुबन्ध किया (34:29...33) ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: 2 इतिहास 31; 33; 2 राजा 18...19; 22...23; यशायाह 37:10–20, 33–38 ।

3. यदि निम्न चित्र उपलब्ध हैं, आप उनको पाठ के दौरान उपयोग कर सकते हो: प्राचीन काल में प्रयोग किये गये मन्दिर(62300) और एक अन्तिम-दिन के मन्दिर की तस्वीर ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

समझाएं कि यरूशलेम को अश्शुरों के आक्रमण से बचाने के लिए, राजा हिजकिय्याह ने शहर की चारदिवारी के अन्दर, गीहोन झरने के पानी को सीलोएम तलाब की ओर मोड़ दिया था । (2 इतिहास 32:2...4, 30) । यह चुना पत्थर के पर्वत के आर पार लगभग 540 मीटर लम्बी एक सुरंग खोद कर किया गया था । हिजकिय्याह ने फिर आदेश दिया कि शहर के बाहर सभी तलाबों को ढक दिया जाये ताकि अश्शुरों को पानी न मिल पाए । शहर की चारदिवारी के अन्दर, बिना इस पानी के यरूशलेम के लोग अश्शुरों का घेराव से बच नहीं सकते थे ।

बताएं कि ठीक जिस तरह गीहोन झरने का पानी हिजकिय्याह के लोगों के लिए अश्शुरों के युद्ध के समय शारीरिक रुप से जीवित रहने के लिए आवश्यक था, उसी प्रकार शैतान से युद्ध के समय हमारे आत्मिक रूप से जीवित रहने के लिए जीवन का जल जरुरी है ।

- जीवन का जल क्या है ? (देखें यूहन्ना 4:10...14 ।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकान्की ने बताया था ''अनन्त जीवन के शब्द, मुक्ति का सन्देश, परमेश्वर और उसके राज्य के बारे में सत्य; यह सुसमाचार का सिद्धान्त जीवन का जल है'' (*Doctrinal New Testament Commentary,* 3 vols. [1966...73], 1:151)

- हम प्रभु तक एक सुरंग कैसे खोल सकते हैं ताकि हमें जीवन का जल हमारे जीवन में बह सके ?

समझाएं कि जीवन का जल प्राप्त करने का एक तरीका, परमेश्वर के घर, मन्दिर जाना है, जहां हम शक्ति और समझ के साथ हमें इन्डोव किया जा सकता है, प्रभु द्वारा निर्देशित किये जा सकते हैं और शान्ति एवं आनन्द महसूस कर सकते हैं ।

बताएं कि मन्दिर में आराधना करना हिजकिय्याह के समय में लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा थी, और यह आज भी हमारे लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा हो सकती है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. हिजकिय्याह परमेश्वर के घर को साफ करने का आदेश देता है ।

2 इतिहास 29...30 का अध्ययन और चर्चा करें ।

- हिजकिय्याह का पिता, अहाज, एक भ्रष्ट राजा था जिसने प्रभु के मन्दिर को अपवित्र कर दिया था और ''इसके द्वार बन्द कर दिये थे'' (2 इतिहास 28:24) । जब हिजकिय्याह 715 ई.पू. में यहूदा (दक्षिणी राज्य) का राजा बना, उसने पहले जो काम किये थे उनमें एक था मन्दिर के द्वार खोलना और याजकों एंव लेवीवंशियों को आदेश देना कि इसे साफ तथा पवित्र करें (2 इतिहास 29:3...5) । हिजकिय्याह के अनुसार, क्यों, मन्दिर को पवित्र करने की आवश्यकता थी ? (देखें 2 इतिहास 29:6...7) । किस तरह हम भी ''प्रभु के निवास से मुंह मोड़ के दोषी हैं'' ? मन्दिर का अपमान करने के कारण यहूदा के लोगों के साथ क्या हुआ था ? (देखें 2 इतिहास 29:8...9) ।

- मन्दिर की सफाई तथा आराधना के लिए फिर से तैयार कर के हिजकिय्याह क्या हासिल करने की आशा करता था ? (देखें 2 इतिहास 29:10) । यह क्यों आवश्यक है कि अशुद्ध वस्तुओं को मन्दिर से बाहर रखें ? (देखें सि.और अनु. 97:15...17) । यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई अशुद्ध वस्तु मन्दिर में प्रवेश न करें हमारी क्या जिम्मेदारी है ? (देखें सि.और अनु. 109:20...21 । हम यह सुनिश्चित करें कि जब हम मन्दिर जायें हम शुद्ध हों ।)

- जब मन्दिर को साफ कर लिया गया था तो हिजकिय्याह और यरूशलेम के लोगों ने क्या किया था ? (देखें 2 इतिहास 29:20...21, 29...31, 36) । प्रभु के घर में फसह का पर्व मनाने के लिए हिजकिय्याह ने किसे निमंत्रण दिया था ? (देखें 2 इतिहास 30:1, 6) निमंत्रण को स्वीकार किया गया था ? (2 इतिहास 30:10...11)

- इस्राएल के लोगों ने मन्दिर आने से मना करके किन आशीर्वादों को आस्वीकार किया था ? (देखें 2 इतिहास 30:6...9 । समझाएं कि हिजकिय्याह के राज के समय, इस्राएल के अधिकतर हिस्से (उत्तरी राज्य) पर अश्शुरों ने कब्जा कर लिया था । हिजकिय्याह ने वादा किया था कि यदि वे ''फिर से प्रभु की ओर फिरते हैं,''तो कब्जा किया हिस्सा छुड़ा लिया जायेगा । इसके बावजूद, इस्राएल के अधिकत्तर लोगों ने हिजकिय्याह के निमंत्रण को ठुकरा दिया था । लोगों की दुष्टता के कारण, इस्राएल राज्य का बचा हुआ हिस्सा भी कई वर्षो बाद कब्जे में ले लिया गया था [2 राजा 18:10...12] । दास बनाये गये इस्राएली खोई हुई दस जातियां बन गये ।

2. आश्शुरों ने यहूदा के राज्य पर धावा कर दिया । यशायाह और हिजकिय्याह ने सहायता के लिये प्रार्थना की, और प्रभु के दुत ने अश्शुरों की अधिकतर फौज का नाश कर दिया था ।

2 इतिहास 32:1...23 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- इस्राएल के राज्य पर कब्जा करने के बाद, अश्शुरों ने यहूदा राज्य पर हमला शुरू कर दिया था (2 इतिहास 32:1) । हिजकिय्याह ने क्या किया जब उसने देखा कि सन्हेरीब की फौज यरूशलेम पर हमला करने की योजना बना रहा था ? (देखे 2 इतिहास 32:2...5) हिजकिय्याह द्वारा युद्ध की तैयारी करने के बाद, उसके लोगों ने होने वाले युद्ध के बारे में क्या कहा था ? (देखें 2 इतिहास 32:6...8) हम अपनी कोशिशों पर विश्वास करने और प्रभु विश्वास करने के उचित सम्बन्ध के बारे में हिजकिय्याह से क्या सीख सकते हैं ?

- सन्हेरीब ने अपने सेवकों को यरूशलेम के लोगों से बात करने के लिए भेजा था । सेवकों ने उनसे क्या कहा था ? (देखें 2 इतिहास 32:9...17) उन्होंने उन बातों को क्यों कहा था ?(देखें 2 इतिहास 32:18) किस तरह शैतान हमें यह मानने के लिए कोशिश करता है कि परमेश्वर हमारी मदद नहीं कर सकता या नहीं करेगा ?

- हिजकिय्याह और भविष्यवक्ता यशायाह ने सन्हेरीब के सेवकों की बातों का क्या जवाब दिया था ?(देखें 2 इतिहास 32:20; यशायाह 37:14...20) प्रभु ने हिजकिय्याह और यशायाह की प्रार्थनाओं का उत्तर किस प्रकार दिया था ? (देखें 2 इतिहास 32:21...22; यशायाह 37:33...38)

- हिजकिय्याह और उसके लोगों को उनकी धार्मिकता के कारण प्रभु की सुरक्षा मिली थी, जिसका प्रदर्शन उन्होंने मन्दिर में आराधना करके दिया था । मन्दिर में जाना हम लोगों को कैसे सुरक्षा दे सकता है ? (देखें सि.और अनु. 109:24...28) मन्दिर के योग्य होने और वहां जाने के लिए प्राथमिकता देने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

अध्यक्ष हावर्ड डबल्यु. हॉन्टर ने प्रोत्साहित किया थाः

''आओ हम मन्दिर जाने वाले लोग बनें । अपनी निजी परिस्थितियों के अनुसार नियमित रूप से मन्दिर जायें । अपने घरों में एक मन्दिर का चित्र रखें ताकि आपके बच्चे उसको देख सकें । उन्हें प्रभु के घर के उद्देश्य के बारे में बताएं । उन्हें उनके जीवन में जल्दी से जल्दी मन्दिर जाने की योजना बनाने और हमेशा उस आशीर्वाद के योग्य रहने के लिए कहें ।

''यदि मन्दिर की दूरी वहां नियमित रूप से जाने में बाधा बनती हो, तो अपने परिवार के इतिहास की सूचनाओं को एकत्र करें और उन पवित्र धर्मविधियों के लिए नामों को दें जो केवल मन्दिर में की जा सकती हैं । यह पारिवारिक शोध मन्दिर के काम के लिए आवश्यक है और जो इन कार्यों को करते हैं उन्हें आशीर्वाद अवश्य मिलेगा'' (in Conference Report, Oct. 1994, 8; or *Ensign,* Nov. 1994, 8)

3. योशिय्याह और उसके लोग प्रभु की सेवा करने का अनुबन्ध करते हैं ।

2 इतिहास 34 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

हिजकिय्याह के बाद उसका बेटा मनश्शे और उसका पोता आमोन राजा बने थे (2 इतिहास 33) । मनश्शे ने यहूदा पर दुष्टता से शासन किया, उसने मन्दिर में मूर्तियों को स्थापित किया और लोगों को पाप की ओर ले गया । यद्यपि से अपनी मृत्यु पहले मनश्शे ने विन्रम होकर अपने पापों से पश्चाताप किया था । मनश्शे के बेटे ने भी अपने पिता द्वारा बनाई गई मूर्तियों की पूजा करके दुष्टता से शासन किया । आमोन ने पश्चाताप नहीं किया था, और अपने ही सेवकों द्वारा मार डाला गया था । आमोन के बेटे योशिय्याह को जब आठ वर्ष का था राजा बना दिया गया था । वह धार्मिक राजा बना जिसने अपने पिता और दादा के दुष्ट मार्गों पर चलने से अस्वीकार किया था ।

- राजा योशिय्याह किस प्रकार का व्यक्ति था ?(देखें 2 इतिहास 34:1...2; 2 राजा 23:25 । ध्यान दें कि 2 इतिहास 34:2 में बताया गया दाऊद, राजा दाऊद है जोकि योशिय्याह का पूर्वज था, उसका असली पिता नहीं है ।)
- आपने राज के प्रारम्भ में योशिय्याह ने राज के रूप में क्या किया था ? (देखें 2 इतिहास 34:3...8 । उसने सच्चे परमेश्वर की खोज की, राज्य से मूर्तिपूजा का नाश किया, और लोगों को मन्दिर की मरम्मत करने के भेजा । बताएं कि योशिय्याह उस समय मात्र 15 या 16 वर्ष का जब उसने यह महत्वपूर्ण बदलाव किये थे ।)
- मन्दिर की मरम्मत के समय उच्च याजक हिल्किय्याह ने क्या विशेष खोज की थी ? (देखें 2 इतिहास 34:14 । उसे यहोवा की व्यवस्था की पुस्तक, या धर्मशास्त्र मिले थे । ध्यान दें कि इस समय तक यहूदा का इतिहास एक लिखित व्यवस्था लगभग लुप्त हो चुकी थी और उसे को नहीं जानता था ।) योशिय्याह की क्या प्रतिक्रिया थी जब व्यवस्था की पुस्तक को उसे पढ़कर सुनाया गया था ? (देखें 2 इतिहास 34:19 । ध्यान दें कि प्राचीन इस्राएल में यह रिवाज था कि अपना दुख या शोक प्रकट करने के लिए लोग अपने कपड़ों को फाड़ते थे ।) योशिय्याह व्यवस्था की पुस्तक की बातों को सुन कर इतना परेशान क्यों हो गया था ? (देखें 2 इतिहास 34:21)
- स्त्री भविष्यवक्ता हुल्दा ने क्या कहा था कि यहूदा के लोगों के साथ होगा क्योंकि उन्होंने यहोवा की और धर्मशास्त्र में सीखाई बातों का पालन नहीं किया था ? (देखें 34:22...25) हमारा क्या होगा यदि हम धर्मशास्त्रों को पढ़ने और उनकी शिक्षाओँ को अपनाने में लापरवाह रहते हैं ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने हमारे धर्मशास्त्रों में से एक, मॉरमन की पुस्तक, के प्रति लापरवाह होने के खतरे की व्याख्या करते हुए बताया थाः

  ''1829 में, प्रभु ने सन्तों को चेतावनी थी कि उन्हें पवित्र बातों को छोटा नहीं समझना चाहिए (देखे सि.और अनु. 6:12) सचमुच में मॉरमन की पुस्तक एक पवित्र बात है, फिर भी बहुत्तेरे इसे छोटा समझते हैं, या अन्य शब्दों में, इसके प्रति सहज रहते हैं, इस के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो इसका महत्व कम हो ।

  ''1832 में, कुछ आरंभिक प्रचारक अपने परिश्रम की क्षेत्र से लौटे थे, प्रभु ने उनको मॉरमन की पुस्तक को सहज लेने के लिए ताड़ना दी । उनके उस दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप, प्रभु ने कहा, उनके मन अन्धकार में हो गये थे । मॉरमन की पुस्तक को छोटा समझने के कारण, उन्होंने न केवल अपने प्रकाश को खोया परन्तु सम्पूर्ण गिरजाघर को, यहां तक की सिय्योन की सारी सन्तान को इसके लिए दण्डित किया गया था । और फिर प्रभु ने कहा था, 'वे तब तक दण्डित रहेंगे जब तक वे पश्चाताप न कर लें और नये अनुबन्ध को याद रखें यानि मॉरमन की पुस्तक' (सि.और अनु. 84:54...57)....

  ''यदि आरंभिक सन्तों को मॉरमन की पुस्तक के प्रति लापरवाह रहने के लिए दण्डित किया जा सकता है, तो हम भी दण्डित कियें जायेंगे यदि हम भी यही गलती करते हैं ?'' (in Conference Report, Oct. 1986, 3...4; or *Ensign,* Nov. 1986, 4...5)

- हिल्कियाह ने क्या कहा कि योशियाह के साथ होगा ? (देखें 2 इतिहास 34:26; 28 । इस वादे की पूर्ति 2 इतिहास 35:20...24 में बताई गयी है) प्रभु ने योशियाह से यह वादा क्यों किया था ? (देखें 2 इतिहास 34:27)

- जब योशियाह को पता चला कि उसके लोग धर्मशास्त्रों का पालन न करने के लिए दण्डित किये जायेंगे, उसने सभी लोगों को मन्दिर में बुलाया और उनको धर्मशास्त्रों की बातें पढ़कर सुनाई (2 इतिहास 34:29...30) । आप क्या सोचते हैं कि उसने ऐसा क्यों किया था ? (लोगों को जब तक परमेश्वर की व्यवस्था की जानकारी नहीं होगी वे उसका पालन नहीं कर सकते थे ।) माता-पिता ने कैसे योशियाह के उदाहरण का पालन किया और अपने बच्चों को सुसमाचार की व्यवस्था के बारे में बताया था ? (देखें सि.और अनु. 68:25, 28)

- धर्मशास्त्रों के प्रति अपना सम्मान हम कैसे दिखा सकते हैं ? बताएं कि हमारे पास इस्राएलियों से अधिक धर्मशास्त्र हैं, और ये हमें आसानी से उपलब्ध हैं । इन आशीषों के कारण हमारी क्या जिम्मेदारियां हैं ?

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यू. किम्बल ने कहा था:''प्रभु ने हमें यह सब धर्मशास्त्र किसी विशेष उद्देश्य के लिए दिये हैं, क्योंकि 'जिसको अधिक दिया गया है उससे अधिक की आशा की जाती है' (लुका 12:48) इनकी उपलब्धता का अर्थ है इनके लिए जिम्मेदारी । हमें धर्मशास्त्रों को प्रभु की आज्ञा के अनुसार पढ़ना चाहिए (देखें 3 नफी 23:1...5); और हमें इनको हमारे जीवन पर नियंत्रण करने देना चाहिए'' ("How Rare a Possession—the Scriptures!" *Ensign,* Sept. 1976, 5)

- जब योशियाह और उसके लोग मन्दिर में थे, उन्होंने प्रभु के साथ अुनबन्ध किया था । उन्होंने क्या करने का अनुबंध किया था ? (2 इतिहास 34:31...33) समझायें कि मन्दिर में हम प्रभु के साथ पवित्र अनुबन्ध करते हैं, जिनको पूरा करने से हमें सांसारिक आशीर्वाद और अनन्त उत्कर्ष प्राप्त होगें । मन्दिर के पवित्र अनुबन्धों के लिए हम क्या तैयारी कर सकते हैं ? एक बार जब हम यह अनुबन्ध कर लेते हैं, यह क्यों महत्वपूर्ण है कि हम मन्दिर अक्सर आयें ?

निष्कर्ष

समझाएं कि यहूदा राज्य के लोग अन्त में इतने दुष्ट हो गये थे कि प्रभु ने उन्हें दास बनाने के लिए छोड़ दिया (2 इतिहास 36:14...21) । यद्यपि अपने शासनकाल में, हिजकिय्याह और योशियाह ने अपने लोगों का ध्यान मन्दिर और धर्मशास्त्रों की तरफ मोड़ कर मजबूती देने की कोशिश की थी । प्रमाणित करें कि जब हम अपना ध्यान प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने और मन्दिर में प्रवेश करने के योग्य होने पर लगाते हैं, हमें आत्मिक शक्ति और आनन्द की आशीष मिलती हैं । कक्षा के सदस्यों को मन्दिर के आशीर्वादों का आनन्द लेने के लिए योग्यता से जीवन जीने और जब भी सम्भव हो मन्दिर जाने के लिए उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''प्रभु के साथ क्रेडिट कार्ड''

इस पाठ के पढ़ाने से एक हफ्ते पहले, कक्षा के एक सदस्य को कहें कि वह अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली के सन्देश से लिए गए निम्नलिखित अंशों को याद कर ले और कक्षा में इन्हें बांटने के लिए तैयार रहे:

''मेरे हाथ में दो क्रेडिट कार्ड हैं । आप में से बहुत से लोग इस प्रकार के कार्ड से परिचित होगें:

''पहला कार्ड एक बैंक का है । इससे मैं बाजार से उधार में सामान खरीद जा सकता है और बाद में अपने द्वारा की गई विभिन्न खरीदारी का एकसाथ भुगतान कर सकता हूं । यह एक बहुमूल्य वस्तु और इसको सुरक्षित रखना चाहिए । यदि यह चोरी कर लिया जाये और बेईमानी से इसका प्रयोग किया जाये तो मुझे बहुत हानि और शायद काफी आर्थिक संकट हो सकता है । अपने बैंक से इसे प्राप्त करते समय, मैं बैंक के साथ एक समझौता करता हूं और उसके अन्तर्गत दायित्व तथा सहमति से बन्ध जाता हूं । कार्ड स्वीकार करने पर, मैं उसको जारी करने की सभी शर्तों को मानने के लिए सहमति देता हूं ।

''यह केवल एक वर्ष के लिए जारी किया जाता है और यदि मैं चाहता हूं कि इसके द्वारा दिये जाने वाले लाभों को मैं लेता रहूँ तो प्रत्येक वर्ष इसको फिर से जारी किया जाना चाहिए । यह वास्तव में मेरा नहीं है । इसका स्वामित्व बैंक के पास है । यदि मैं अपने समझौते का पालन नहीं करता हूं, तो बैंक उधार देना बन्द कर देगा और कार्ड वापस ले लेगा ।

''दूसरा कार्ड जो मेरे पास है उसे हम मन्दिर संस्तुति कहते हैं । यह प्रभु के साथ क्रेडिट कार्ड को प्रदर्शित करता है, इसके द्वारा मुझे उसकी महानतम आशीर्वाद प्राप्त होते हैं । बैंक कार्ड सांसारिक वस्तुओं से सम्बन्धित है, यह संस्तुति परमेश्वर की वस्तुओं से सम्बन्धित है ।

''मन्दिर संस्तुति प्राप्त करने के लिए, प्राप्तकर्ता को इसके लिए अपनी पात्रता को प्रमाणित करना होगा, और यह पात्रता व्यक्तिगत योग्यता पर आधारित होती है । एक प्राप्त की गई संस्तुति हमेशा के लिए नहीं होती इसको प्रतिवर्ष फिर से जारी किया जाना

चाहिए । इसके अलावा यह खो या जब्त भी किया जा सकता है यदि धारक कोई ऐसा कार्य करता जिससे कारण वह इसके लाभों के लेने के अयोग्य हो जाता है ।

''मन्दिर संस्तुति की पात्रता आर्थिक योग्यता पर आधारित नहीं होती है । इसका इसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है । यह हमारे जीवन में भलाई के एक समान व्यक्तिगत व्यवहार पर आधारित होती है । इस का धन से नहीं, लेकिन असल में अनन्तता की बातों से सम्बन्ध होता है ।

''बैंक कार्ड आर्थिक उधार के द्वार खोलता है । मन्दिर संस्तुति प्रभु के घर के द्वार खोलता है । इसका सम्बन्ध पवित्र स्थानों पर पवित्र और दिव्य कामों को करने के लिए प्रवेश से है ।....

''...यह संस्तुति जो मेरे पास और जो आप में से बहुतों के पास है, यह बेशकीमती और आश्चर्यजनक वस्तु है । यह किसी को उत्तम और महान लाभों के योग्य बनाता है—ऐसे घर में प्रवेश करने का लाभ जिसकी दिवारों पर लिखा होता है, 'परमेश्वर के पवित्र—परमेश्वर का घर' । इस घर में सेवा करने के लिए योग्य रहें । इसे पवित्र रखें । परमेश्वर के घर से अशुद्ध या असम्मानजनक प्रभाव को अथवा व्यक्ति को दूर रखने के लिए अपनी जिम्मेवारी को निभायें । इसकी सुन्दरता का उपभोग करें । उन आश्चर्यजनक बातों का जो यहां बताई जाती हैं, सुन्दरता और धर्मविधियों के आशीर्वादों का, जो यहां समपन्न की जाती हैं, उपभोग करें ।

''उन लोगों से [जो] अभी मन्दिर नहीं गये हैं, मैं एक सुझाव देना चाहूंगा कि आप किसी मृतक के स्थान पर बपतिस्मा लेने के अवसर का लाभ उठायें । और इस पवित्र अनुभव को अपने जीवन में एक मुख्य आधार बनाओ । यह आधार आपको सभी समय और सभी परिस्थतियों में आपकी सहायता करेगा । और उपयुक्त समय पर आपको प्रभु का विशेष और सीमित कार्ड मिल सकेगा, जोकि हर किसी को उपलब्ध नहीं है, अर्थात उसके पवित्र घर में प्रवेश करके उसकी तमाम आशीर्वादों और लाभों का उपभोग करने की संस्तुति'' (in Conference Report, Apr. 1990, 65, 69; or *Ensign,* May 1990, 49, 52)

2. मन्दिरों के उद्देश्य

कई अन्तिम-दिन के सन्तों के मन्दिरों के चित्र लायें (यदि सम्भव हो, विभिन्न वास्तुकला के नमुने वाले) । बताएं कि यद्यपि ये सब बाहर से भिन्न दिखाई देते हैं, लेकिन इनके भीतर किये जाने वाली धर्मविधियां और बनाये जाने अनुबन्ध एक समान होते हैं ।

समझाएं कि यद्यपि प्राचीन इस्राएली मन्दिर में की जाने वाली कुछ रीतियां, अन्तिम-दिन के मन्दिरों में की जाने रीतियों से भिन्न थीं (उदाहरण के लिए, हम मन्दिरों में हम पशु बलि नहीं देते या मोमबत्तियां और अगरबत्तियां नहीं जलाते), लेकिन प्राचीन मन्दिरों के और अन्तिम-दिन के मन्दिरों के उद्देश्य एक समान हैंः अपने आपको प्रभु की उपस्थिति में लाना और उसके जैसा बनना ।

> आप *Old Testament Video Presentations* (53224) में से 9 मिनट का प्राचीन मन्दिरों (Ancient Temples) पर एक भाग दिखा सकते हैं जोकि मूसा के मंडप और वहां की जाने वाली गतिविधियों की व्याख्या करता है ।

3. धर्मशास्त्रों का अध्ययन करना

- क्यों हमें कभी कभी धर्मशास्त्रों का अध्ययन करने में कठिनाई होती है ?

कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर एक कॉलम में लिखें । फिर उन पर चर्चा करें कि किस प्रकार उन कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है । उदाहरण के लिए, यदि हमें कोई बात जो हम पढ़ते हैं समझ में नहीं आती है, हम समझ के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और अध्ययन करें कि भविष्यवक्ताओं और प्ररितों ने धर्मशास्त्र पढ़ने के विषय में क्या बताया है; यदि हमें रात में धर्मशास्त्र पढ़ने में नींद आती है, हम किसी और समय का चुनाव कर सकते हैं । इन उपायों को चॉकबोर्ड पर अन्य कॉलम में लिखें ।

कक्षा के सदस्यों को उनके धर्मशास्त्र अध्ययन में अधिक श्रदा देने के लिए चुनौती दें ।

''वह व्यक्ति प्रसन्न है जो समझ प्राप्त करता है''

पाठ
31

नीतिवचन और सभोपदेशक

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को मसीह की तरह बनने के लिए नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकों में दी गई सलाह का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूवर्क पाठ में चर्चा किये धर्मशास्त्रों का तथा जितना अधिक हो सके नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकों का अध्ययन करें ।

2. यदि आप प्रथम ध्यान गतिविधि का प्रयोग करना चाहते हैं, तो निम्नलिखित वाक्यों को एक पोस्टर या चॉकबोर्ड पर कक्षा आरम्भ होने से पहले लिखें:

   क. विनाश से पहले _____ होता है ।
   ख. _____ को शिक्षा उसी मार्ग की दो जिस में उसको चलना चाहिए ।
   ग. हर एक बात का एक _____ और प्रत्येक काम का, जो स्वर्ग के नीचे होता है, एक _____ होता है ।
   घ. अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा पर _____ रखना ।
   च. _____ _____ सुनने से जलजलाहट दूर होती है ।
   छ. क्योंकि जैसा वह अपने मन में _____ करता है, वैसा वह आप है ।

   यदि आप द्वितीय ध्यान गतिविधि को करते हो, तो कक्षा के एक या दो सदस्यों से कहो, कि वे नीतिवचन या सभोपदेशक में से उनके प्रिय अनुच्छेद और क्यों ये उनको प्रिय हैं, को बांटने की तैयारी करें ।

3. यदि *Old Testament Video Presentations* (53224) उपलब्ध है, आप इसमें से 'प्रभु पर विश्वास करें' (Trusting in the Lord) एक पांच मिनट के भाग को, पाठ के हिस्से के रूप में दिखा सकते हैं

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो । उस गतिविधि का चुनाव करें जो आपकी कक्षा के उचित हो ।

1. कक्षा के सदस्यों को उन वाक्यों को बताएं जो आपने पोस्टर या चॉकबोर्ड पर लिखें हैं (उपर ''तैयारी'' देखें) । समझाएं कि ये नीतिवचन और सभोपदेशक के जाने-पहचाने कथन हैं, और कक्षा के सदस्यों से रिक्त स्थानों को भरने को कहें । यदि आवश्यक हो तो आप कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्रों के संदर्भ बता सकते हो ताकि वे उस शब्द को खोज सकें जो वे नहीं जानते ।

   क. नीतिवचन 16:18 (गर्व)
   ख. नीतिवचन 22:6 (लड़के)
   ग. सभोपदेशक 3:1 (अवसर, समय)
   घ. नीतिवचन 3:5 (भरोसा)
   च. नीतिवचन 15:1 (कोमल उत्तर)
   छ. नीतिवचन 23:7 (विचार)

2. नियुक्त किये गये एक या दो कक्षा सदस्यों से नीतिवचन या सभोपदेशक में से उनके प्रिय अनुच्छेद तथा क्यों यह प्रिय है बांटने के लिए कहो ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्रों अनुच्छेदों को सीखायें, चर्चा करें कि ये किस प्रकार प्रतिदिन के जीवन में लागू हो सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि वे अपने धर्मशास्त्र सम्बन्धी अनुभवों को बांटें । क्योंकि पाठ में सभी प्रश्नों या विचार को सम्मिलित करना मुश्किल होगा जाये, इसलिए प्रार्थनापूर्वक उनका चुनाव करें जो कक्षा के सदस्यों की जरूरतों को भलि-भांति पूरा करते हों । आप कक्षा के सदस्यों की परिस्थिति अनुसार कुछ प्रश्नों अपना सकते हैं ।

नीतिवचन छोटी छोटी बातें हैं जो सामान्यतः धार्मिकता से जीवन निर्वाह करने की सलाह देतीं हैं । पुराना नियम दर्शाता है कि सुलेमान ने ''तीन हजार नीतिवचन कहे थे'' (1 राजा 4:32) । इन ज्ञान की बातों में से कुछ को नीतिवचन में सम्मिलित किया गया है । यद्यपि सुलेमान और इस पुस्तक के अन्य लेखक भविष्यवक्ता नहीं थे, लेकिन जो कुछ उन्होंने लिखा वह प्रभु द्वारा प्रेरित था । उनके लेख सामान्यतः इस विश्वास को दर्शाते हैं कि सच्चा ज्ञान परमेश्वर की ओर से आता है ।

सभोपदेशक में भी ज्ञान की बातें हैं, और कुछ लोग सुलेमान को इनका लेखक मानते हैं । सभोपदेशक का सन्देश है कि केवल परमेश्वर के द्वारा ही जीवन अर्थपूर्ण है ।

यह पाठ सात खण्डों में विभजित है जोकि नीतिवचन और सभोपदेशक के मुख्य विषयों पर प्रकाश डालते हैं । अपने व्यक्तिगत अध्ययन में, आपको अन्य विषय भी मिल सकते हैं जिनकी आप कक्षा में चर्चा करना चाहेगे ।

1. ज्ञान

नीतिवचन और सभोपदेशक में से निम्नलिखित अनुच्छेदों को सीखाएं और चर्चा करें ।

- नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकें ज्ञान के महत्व पर जोर देती हैं । सीखा हुआ होने तथा ज्ञानी होने में क्या अन्तर हैं । (देखें नीतिवचन 1:7; 9:9...10; 2 नफी 9:28...29 । बताएँ कि बाइबिल की भाषा में, परमेश्वर से डरने का अर्थ है उनकी श्रद्धा और आज्ञा पालन करना । समझाएं कि ज्ञान होना, जानकारी होने से अधिक है; ज्ञान होने से आपनी जानकारी का सही उपयोग करेंगे । इस्राएलियों के लिए ज्ञान होने का अर्थ था परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ।)

- नीतिवचन 2:2...5 में से हम परमेश्वर के ज्ञान प्राप्त करने के विषय में क्या सीख सकते हैं ? आपके विचार से इस जानकारी को प्राप्त करने के लिए एकाग्रता की आवश्यकता क्यों होती है ?

- किस प्रकार ज्ञान का मूल्य की तुलना सांसारिक खजाने से की जाती है ? (देखें नीतिवचन 3:13...18; सभोपदेशक 7:12 । ध्यान दें कि नीतिवचन 3:15...18 में शब्द *वह* और *उसके* ज्ञान के लिए प्रयोग किये गये हैं ।) ज्ञान किस प्रकार प्रसन्नता और शांति लाता है ?

- नीतिवचन 3:18 कहता है कि ज्ञान (बुद्धि) उनके लिए ''जीवन का वृक्ष है'' जिनके पास यह है । इस प्रतीकात्मक तुलना से हम ज्ञान के मुल्य के विषय में क्या सीख सकते हैं ? (देखें 1 नफी 11:8...11, 21...25, यह ध्यान दें कि जीवन का वृक्ष परमेश्वर के प्रेम का प्रतीक है ।)

- नीतिवचन 9:9...10 और 15:31...33 में ज्ञानी मनुष्यों के किन गुणों की सुची बताई गयी है ? क्यों ये गुण ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं ?

2. प्रभु पर विश्वास करें

नीतिवचन 3:5...7 का अध्ययन और चर्चा करें ।

- नीतिवचन 3:5...7 में क्या सलाह दी गई है ? प्रभु किस प्रकार हमारे मार्गो को निर्धारित करता है ? किन अनुभवों से आपने प्रभु पर विश्वास रखना सीखा है ?

- परमेश्वर को स्मरण रखने का क्या अर्थ है ? (देखें नीतिवचन 3:6; अलमा 34:38; सि.और अनु.59:21) जब उसको स्मरण करते हैं तो हम किस प्रकार आशीषित होते हैं ?

3. वचन जो हम बोलते हैं

नीतिवचन में से निम्नलिखित अनुच्छेदों का अध्ययन और चर्चा करें:

- नीतिवचन 6:16...19 में उन सात बातों की सूची है जिससे प्रभु को घृणा है । उनमें से तीन हैं — झूठ, झूठ बोलने वाला साक्षी, और झगड़े उत्पन्न करने वाला मनुष्य— वचन जो हम बोलते हैं, पर लागू होता है । जो हम बोलते हैं उससे प्रभु इतना चिन्तित क्यों होता है ? (देखें नीतिवचन 16:27...28; 18:8; 25:18; मत्ती 12:36...37) झूठ, बुराई करना, या दूसरों के बारे में गलत बोलने की समस्या से हम कैसे छुटकारा पा सकते हैं ?

- नीतिवचन 16:24 में लिखा है कि ''मनभावने वचन मधुभरे छत्ते की नाई प्राणों को मीठे लगते ।'' यह कहां तक सत्य है ? दया से बात करने के क्या परिणाम होते हैं ? (देखें नीतिवचन 12:25; 15:1; 16:24) दूसरों के मीठे वचनों ने किस प्रकार आपकी सहायता की है ?

- असहमति होने पर कोमलता से बात करने से क्या लाभ होता है ? (देखें नीतिवचन 15:1)

  एल्डर गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः ''जब हम कोमलता से बोलते हैं हमें शायद ही कभी परेशानी का सामना करना पड़ता है । केवल तभी राई का पहाड़ बनता है जब हम ऊँची आवाज में बोलते है'' (in Conference Report, Apr. 1971, 82; or *Ensign,* June 1971, 72)

4. घमण्ड

नीतिवचन 8:13; 13:10; 16:18...19 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- नीतिवचन 8:13 दर्शाता है कि प्रभु घमण्ड से घृणा करता है । घमण्ड कितना गम्भीर पाप क्यों है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः

  ''घमण्ड का केन्द्रिय भाग बैर होता है— परमेश्वर से बैर और अपने साथियों से बैर । *बैर* का अर्थ है 'नफरत करना, शत्रुता, या विद्रोह की स्थिति ।' यह वह शक्ति है जिसके द्वारा शैतान हमारे ऊपर शासन करना चाहता है ।

  ''घमण्ड आवश्यक ही स्वभाव से प्रतियोगी होता है । हम अपनी इच्छाओं को परमेश्वर के विरूद्ध कर देते हैं । जब हम अपने घमण्ड को परमेश्वर की ओर करते हैं, इसकी प्रकृति का आधार 'तेरी नहीं परन्तु मेरी इच्छा पूरी हो' होता है । जैसा पौलुस ने कहा था, क्योंकि 'सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की' (फिलिप्पियों 2:21) ।

  ''हमारी इच्छा परमेश्वर की इच्छा की प्रतियोगी होने से आकांक्षाएं, भूख, और भावनाएं बेलगाम हो जाती हैं (देखें अलमा 38:12; 3 नफी 12:30) ।

  ''घमण्डी को अपने जीवन में परमेश्वर के अधिकार द्वारा निर्देश दिया जाना स्वीकार नहीं हो सकता (देखें इलामन 12:6) । वे परमेश्वर के महान ज्ञान की सच्चाई के विरूद्ध अपने विचार या धारण, परमेश्वर के पौरोहित्य शक्ति के विरूद्ध अपनी योग्यता, उसके महान कार्यो के विरूद्ध अपनी उपलब्धियों को खड़ा करते हैं ।

  ''परमेश्वर से हमारी शत्रुता के कई रूप हो सकते हैं, जैसे विद्रोही, कोठर हृदयी, हठी, अपश्चातापी, अंहकार में फूले हुए, जल्दी बुरा मान जाने वाले, और चिन्ह की खोज करने वाले । घमण्डी चाहता है कि परमेश्वर उनकी बातों का समर्थन करे । वे परमेश्वर का समर्थन करने के लिए अपने विचारों को बदलने के इच्छुक नहीं होते हैं ।....

  ''घमण्ड सही मायने में श्रापित पाप है । यह उन्नति को सीमित या रोक देता है (देखें अलमा 12:10...11) । घमण्डी को सीखाना आसान नहीं है (देखें 1 नफी 15:3; 7...11) । वे सच्चाई को स्वीकार करने के लिए अपने मनों को नहीं बदलेंगे, क्योंकि ऐसा करने से वे गलत होते हैं'' (in Conference Report, Apr. 1989, 3...5; or *Ensign,* May 1989, 4, 6)

- नीतिवचन 13:10 और 16:18 सीखाता है कि घमण्ड विवाद और नाश को ले जाता है । घमण्ड ऐसा कैसे कर सकता है ? घमण्ड किस प्रकार हमारे परिवारों पर प्रभाव डालता है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः

  ''घमण्ड का दूसरा चेहरा विवाद है । बहस, लड़ाई, अधार्मिक रूप से हावी होना, माता-पिता और बच्चों के बीच मतभेद, तलाक, पति या पत्नी को शारीरिक या मानसिक कष्ट देना, लूट-पाट, और अशान्ति ये सब घमण्ड की श्रेणी में ही आते हैं ।

  ''परिवार में विवाद होने से प्रभु की आत्मा दूर चली जाती है । यह हमारे परिवार के बहुत से सदस्यों को भी दूर कर देता है ।....

  ''घमण्ड हमारे सभी सम्बन्धों पर बूरा प्रभाव डालता है— जैसे परमेश्वर और उसके सेवकों से हमारे सम्बन्ध, पति और पत्नी, बच्चे और माता-पिता के सम्बन्ध'' (in Conference Report, Apr. 1989, 5; or *Ensign,* May 1989, 6)

- हम घमण्ड पर कैसे विजय पा सकते हैं ? (देखें नीतिवचन 16:19) अपने परिवार के सदस्यों और परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्धों में अधिक विनम्र होने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

5. मित्रता

नीतिवचन और सभोपदेशक से निम्नलिखित अनुच्छेदों का अध्ययन और चर्चा करें ।

- हमें बुरे मित्रों के बारे में चेतावनी क्यों दी जाती है ? (देखें नीतिवचन 13:20;22:24...25)

- अच्छे मित्रों के कुछ गुण क्या है ? (देखें नीतिवचन 17:17; 27:9 ।) मुसीबत के समय अच्छे मित्रों ने किस प्रकार आपकी सहायता की थी ?

- अच्छे मित्र पाने के लिए हम क्या कर सकते हैं ? (देखें नीतिवचन 18:24 । बताएं कि अच्छे मित्र पाने के लिए हमें स्वयं अच्छा मित्र बनना पड़ेगा ।)

- सच्चे मित्र किस प्रकार प्रतिक्रिया करते हैं जब हम कोई मूर्खतापूर्ण चुनाव करते हैं ?(देखें सभोपदेशक 4:9...10 ।)

  एल्डर मारविन जे. एश्टन ने कहा थाः

  ''किसी ने कहा है, 'मित्र वह व्यक्ति है जो मुझे मेरे स्वभाविक रूप में स्वीकार करता है ।' इस एक पंक्ति की परिभाषा में, मैं जल्दी से यह सलाह देना चाहूंगा कि हम सच्चे मित्र नहीं हैं यदि हम किसी व्यक्ति को जैसा वह मिलता है वैसा ही रहने दे ।....

  ''इससे बड़ा पुरस्कार हमें सेवा करने का नहीं मिल सकता जब कोई हृदय से ये कहे 'मेरा मित्र होने के लिए धन्यवाद ।' जब को जरूरत के समय हमारे पास मदद के लिए आता है, तो मित्रता के प्रभाव में ही हम उसकी मदद करते हैं । जब हमारे जीवन के प्रभाव से...कमजोर शक्तिशाली, और शक्तिशाली अधिक शक्तिशाली बनते हैं, तो हमारी मित्रता सच्ची है । यदि कोई मनुष्य अपने मित्रों द्वारा पहचाना जा सकता है, तो उसके मित्र आत्मिकरूप से कितने महान या अच्छे हैं, हम यह भी जान सकते हैं ।....

  ''हां, मित्र वह व्यक्ति है जो मुझे मेरे स्वभाविक रूप में स्वीकार करत है लेकिन जो चाहता तथा इस योग्य हो कि जब वह मुझे छोड़े मेरा विकास हो चुका हो'' (in Conference Report, Oct. 1972, 32, 35; or *Ensign,* Jan. 1973, 41, 43)

- परिवार के सदस्यों के बीच हम मित्रता को कैसे मजबूत कर सकते हैं ?

- यीशु मसीह अक्सर अपने अनुयायियों को अपना मित्र कहते थे (सि.और अनु. 88:62; 93:45) । उसने कैसे प्रदर्शित किया था कि वह हमारा मित्र है ? (देखें यूहन्ना 15:13) हम कैसे दिखा सकते हैं कि हम उसके मित्र हैं ? (देखें यूहन्ना 15:14) अपने उसकी मित्रता को कैसे अनुभव किया है ?

6. बच्चों को पालना

नीतिवचन के निम्नलिखित अनुच्छेदों का अध्ययन और चर्चा करें ।

- नीतिवचन 22:6 कहता है ''अपने बच्चों को उस मार्ग की शिक्षा दो जिस पर उसे चलना है ।'' माता-पिता इस सलाह पर चलने के लिए क्या कर सकते हैं ? (देखें सि.और अनु. 68:25...28) कैसे हम अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से अपने बच्चों को सुसमाचार सिद्धांतों की शिक्षा देने और उनकी गवाहियों का विकास करने में सहायता कर सकते हैं ?

  एल्डर रीचर्ड जी. स्कॉट ने कहा थाः ''परिवार पर केन्द्रित गतिविधि के लिए अपने व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ को त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए, और बच्चे के सर्वोपरि विकास में सहायता करने के लिए गिरजाघर, विद्यालय, या समाज पर निर्भर नहीं रहना चाहिए । 'बच्चे को उस मार्ग की शिक्षा देने के लिए जिस पर कि उसे चलना है' समय, अधिक प्रयास, और अत्याधिक व्यक्तिगत त्याग की आवश्कता होती है । लेकिन इस कार्य को भली भलि-भांति से अधिक पुरस्कार आप कहां पा सकते हो ?'' (in Conference Report, Apr. 1993, 43; or *Ensign*, May 1993, 34)

- बच्चों को नियम, सीमाओं, और प्यार-भरा सुधार की आवश्यकता होती है ? (देखें नीतिवचन 19:18; 29:17) बच्चों को अपने माता-पिता की धार्मिक सलाह पर कैसे प्रतिक्रिया करनी चाहिए ? (देखें नीतिवचन 6:20...23) माता-पिता को सुधार कैसे करना चाहिए ? (देखें सि.और अनु. 121:41...44)

7. प्रसन्नता और अच्छी विनोदशीलता

नीतिवचन 15:13 और 17:22 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- यह क्यों आवश्यक है कि हम एक खुश स्वभाव और अच्छी विनोदशीलता का विकास करें ? (देखें नीतिवचन 15:13; 17:22)

  अध्यक्ष ह्यूग बी. ब्राउन ने कहा थाः ''मैं चाहता हूं कि आपके चेहरे पर हमेशा मुस्काराहट रहे क्योंकि चाहे कुछ भी क्यों न हो हमें सदा विनोदशील रहना चाहिए । सब संसार के सभी लोगों के विषय में सोचता हूं हमें सबसे अधिक खुश होना चाहिए । हमारे पास संसार में महानत्तम और सबसे आनन्दायक सन्देश है । मैं सोचता हूं जब संसार से जाएंगे, हमारा कोई मुस्कुराहट के साथ स्वागत करेगा (बशर्ते हम गलत स्थान पर नहीं जाते हैं क्योंकि तब कोई हम पर मजाक में हंसेगा), इसलिए खुश रहो । लेकिन तुम्हारी खुशी सच्ची होनी चाहिए— यह भीतर से होनी चाहिए''*(The Abundant Life* [1965], 83*)*

- अपने परिवार में उच्च विनोदशीलता को बढ़ावा देने के हम क्या कर सकते हैं ? (आप कक्षा के सदस्यों को वह समय बताने के लिए कह सकते हो जब विनोदशीलता ने उनके परिवार को समस्याओं का समाधान करने तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ाने में सहायता की थी ।)

निष्कर्ष

चर्चा किये गये विषयों पर अपने अनुभवों को बांटें । कक्षा के सदस्यों को नीतिवचन और सभोपदेशक की सलाह को याद रखने के लिए उत्साहित करें । आप उनको इन में से किसी एक पुस्तक से प्रिय अनुच्छेदों को याद करने के लिए भी उत्साहित कर सकते हो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. नीतिवचन गतिविधि

नीतिवचन की पुस्तक में से कई संदर्भों को अलग पर्चियों पर लिखकर एक डिब्बे में डाल दें । कक्षा के सदस्यों को बारी बारी डिब्बे से एक पर्ची निकालने को कहें, वे पर्ची पर लिखे धर्मशास्त्र को पढ़ें, और समझाएं कि किस प्रकार वह अनुच्छेद हमारे जीवन में लागू होता है ।

2. धर्मशास्त्र उपयोग

चॉकबोर्ड पर एक शरीर का चित्र बनाएं । कक्षा के सदस्यों को निम्नलिखित आयतों को खोजने दो और संदर्भों को शरीर से सम्बन्धित उस हिस्से के सामने लिखने को कहो । आयतों को एक साथ पढ़ें और चर्चा करें कि ये किस प्रकार हमारे जीवन में लागू होते हैं ।

क. नीतिवचन 2:2 (कान और हृदय)
ख. नीतिवचन 3:5 (हृदय)
ग. नीतिवचन 3:7 (आंखें)
घ. नीतिवचन 3:27 (हाथ)
च. नीतिवचन 4:26...27 (पैर)
छ. नीतिवचन 8:7 (मुंह)
ज. नीतिवचन 10:4 (हाथ)
झ. नीतिवचन 12:15 (आंखें)

3. ''भली स्त्री'' (नीतिवचन 31:10)

कक्षा के सदस्यों को नीतिवचन 31:10...31 का जांच करें और भली स्त्री की गुणों की सूची बनाएं । बताएं कि यह वे गुण हैं जिनका हम सभी को, पुरूष और स्त्री, विकास करने का प्रयत्न करना चाहिए । आप कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं । उत्तरों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

आयत	*गुण*
11	विश्वास किया जा सकता है
13	इच्छा के साथ काम करती है
20	दयालु है
25	मजबूत और आदरणीय है
26	दया और ज्ञान की बातें करती है
28	एक समर्पित पत्नी और मां है
30	प्रभु की आज्ञा का पालन करती है

कक्षा के कुछ सदस्यों को उन लोगों के बारे में बताने के लिए आमंत्रित करें जो इन गुणों के जीते जागते उदाहरण हैं ।

पाठ
32

''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है''

अय्यूब 1...2; 13; 19; 27; 42

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की बुरे समय में प्रभु में विश्वास करने, उसकी गवाही का निमार्ण करने, और व्यक्तिगत ईमानदारी को बनाये रखने के लिए बल का विकास करने में सहायता करना ।

तैयारी

1. प्राथर्नापूवर्क निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. अय्यूब 1...2 । अय्यूब, एक सीधा और ईमानदार व्यक्ति, गम्भीर परिक्षाओं का अनुभव करता है । वह अपना धन, बच्चे और स्वस्थ्य खोने के बावजूद भी प्रभु के प्रति वफादार रहता है ।

   ख. अय्यूब 13:13...16; 19:23...27 । अय्यूब प्रभु में विश्सास करने और उद्धारकर्ता की गवाही होने में शक्ति प्राप्त करता है ।

   ग. अय्यूब 27:2...6 । अय्यूब अपनी व्यक्तिगत धार्मिकता और ईमानदारी में शक्ति प्राप्त करता है ।

   घ. अय्युब 42:10...17 । अपनी परिक्षाओं में ईमानदारी से अन्त तक कायम रहने पर, उसे प्रभु आशीर्वाद देते हैं ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: अय्यूब के अन्य अध्याय; सिद्धान्त और अनुबन्ध 121:1...10 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

निम्नलिखित समरूपता को कक्षा के सदस्यों के साथ बांटें (या कक्षा के किसी सदस्य को बांटने के लिए तैयार होने के लिए कहें):

एल्डर जोसफ बी. वर्थलीन ने उत्तर पश्चिम मैक्सिको के गरम मरूस्थल के किसानों के बारे में बताया था जो ''सूखा और अन्य परेशानियों की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विभिन्न प्रजातियों की मक्का और सेम उगाते हैं । ये प्रजातियां उस कठिन वातावरण में जीवित और फलती-फुलती हैं जिसमें अन्य पौधे मुरझा और मर जाते । इनमें से एक प्रजाति है सफेद खाने योग्य सेम । इस बीज से अंकुर निकलता है और पौधा कम वर्षा में ऊगता है । यह अपनी जड़ों को पर्वत, रेतीली भूमि के अन्दर नमी की तलाश में छ फूट गहरा भेजता है । इस पर 46 डिग्री से. के मरूभूमि के तापमान तथा वर्ष में एक बारिश में भी फूल खिलता और फल लगता है । इसकी पत्तियां बहुत कम सिंचाई, मध्य जुलाई की गर्मी में भी अत्याधिक हरी रहती हैं ।''

- इस समरूपता से हमें परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहने में मदद के लिए क्या सीख सकते हैं ?

एल्डर वर्थनील ने सुझाव दिया था: ''शायद गिरजाघर के सदस्य इन सहासी, मजबूत पौधों के उदाहरणों की नकल कर सकते हैं । हम सुसमाचार की भूमि में अपनी जड़ों को गहरे में भेज सकते हैं । हमें बुराई, लालच, या आलोचनाओं के होते हुए भी विकास, फलना, खिलना, और अच्छे प्रतिफल प्राप्त करने चाहिए । हमें प्रतिकुलता की गर्मी में जीवित रहना सीखना चाहिए''

समझाएं कि यह पाठ एक ऐसे व्यक्ति अय्यूब के बारे में है, जिसके विश्वास और नेकता ने कठोर दुर्भाग्य को अन्त तक सहने में उसकी सहायता की थी । (Conference Report, अप्रैल 1989; या *Ensign,* मई 1989, 7 में)

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. अय्यूब की दर्दनाक परिक्षा हुई थी ।

अय्यूब 1...2 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- अय्यूब किस प्रकार का व्यक्ति था ? आप निम्नलिखित कुछ गुणों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहोगे । बहुत से संदर्भ अध्ययन क्रम में नहीं हैं, इसलिये आप इनको अलग अलग कक्षा के सदस्य को पढ़कर इन गुणों को बताने के लिए कह सकते हैं ।

  क. वह परमेश्वर से डरता और बुराई से बचता था (अय्यूब 1:1) ।

  ख. वह धनी था परन्तु धन से उसे कोई लगाव नहीं था (अय्यूब 1:3, 21) ।

  ग. वह ईमानदार था (अय्यूब 2:3) ।

घ. उसने निर्बल लोगों को बलवन्त किया था (अय्यूब 4:3...4) ।
च. वह प्रभु के मार्गों पर चलता और प्रभु के वचनों का आदर करता था (अय्यूब 23:10...12) ।
छ. वह विधवा, निर्धन, लंगड़ों, और अन्धों के प्रति दयावान था (अय्यूब 29:12...16) ।
ज. वह अपने शुत्रओं और उन्हें क्षमा करने के लिए चिन्तित रहता था (अय्यूब 31:29...30) ।

- अय्यूब ने किस प्रकार की परिक्षाओं का अनुभव किया था ? आप इनमें से कुछ परिक्षाओं को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेगे । बहुत से संदर्भ अध्ययन क्रम में नहीं हैं, इसलिये आप इनको अलग अलग कक्षा के सदस्य को पढ़कर इन गुणों को बताने के लिए कह सकते हैं ।

  क. सेवकों, सम्पत्ति, और आय की हानि (अय्यूब 1:13...17) ।
  ख. बच्चों को खोना (अय्यूब 1:18...19) ।
  ग. शारीरिक बीमारी और दर्द (अय्यूब 2:7; 7:5; 16:16) ।
  घ. बुरे सपनों भरी बेचैन नींद (अय्यूब 7:4, 13...14) ।
  च. क्रूर दोषारोपण और मित्रों एवं परिवार के समर्थन को खोना (अय्यूब 2:9; 4:1; 7...8; 11:1...6; 19:13...22) ।
  छ. उलझन कि उसे क्यों इन सब परिक्षाओं से गुजरने के लिए कहा गया था (अय्यूब 10:15) ।
  ज. उनके द्वारा मजाक उड़ाया जाना जो उसके पतन से खुश थे (अय्यूब 16:10...11; 30:1; 8...10) ।
  झ. यह अनुभूति होना कि परमेश्वर उसे भूल गया है या उसकी नहीं सुन रहा (अय्यूब 19:6...8; 23:3...4; ध्यान दें कि अय्यूब 23:3...4 शब्द *उसके* परमेश्वर को दर्शाता है) ।

- अय्यूब की परेशानियां कैसे हमारे दिनो के लोगों की परेशानियों का साथ मेल खाती है? (परेशानियां सामान्य हैं, सम्पति का खो जाना, बच्चों का खो जाना, बीमार होना, प्रेम और साथी और परिवार के साथ का खो जाना ।)

- शैतान ने अय्यूब की धार्मिकता के लिए क्या कारण दिया था ? (देखें अय्यूब 1:9...10) शैतान ने अय्यूब की प्रतिक्रिया का क्या अनुमान लगाया था कि जब अय्यूब का धन और अन्य आशीर्वाद उससे ले लिये जायेगें ? (देखें अय्यूब 1:11; 2:4...5) अय्यूब की क्या प्रतिक्रिया थी जब ऐसा हुआ था ? (देखें अय्यूब 1:20...22; 2:10) हम इन प्रतिक्रियाओं से क्या सीख सकते हैं ?

- गरीबी के बावजूद, अय्यूब ने ''न तो कोई पाप किया, न ही मूर्खतावश परमेश्वर को दोष दिया'' (अय्यूब 1:22) । कैसे कुछ लोग परमेश्वर पर मूर्खतावश दोष लगाते हैं जब दुख, दुर्भाग्य, या दुर्घटना होती है ? (वे परमेश्वर पर दोष लगाते या उसके ज्ञान या ईश्वरत्व पर प्रश्न करते, अनुभव करते हैं कि वह उन्हें समझता या प्रेम नहीं करता है । कुछ लोग तो उसके अस्तित्व पर ही सन्देह करते हैं ।)

2. अय्यूब को प्रभु से बल मिलता है ।

अय्यूब 13:13...16; 19:23...27 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- अय्यूब का प्रभु में विश्वास उसके लिए अत्मिक बल का महान स्रोत था (अय्यूब 13:13...16) । प्रभु में विश्वास करने का क्या अर्थ है ? हम किस प्रकार प्रभु में विश्वास का विकास कर सकते हैं जो हमें परिक्षा के समय जीवित रखेगा ?(देखें दें 8:28; 2 नफी 2:2, 11, 24; सि.और अनु. 58:2...4; 122:5...9) गवाही रोमियों कि क्योंकि प्रभु हमसे प्रेम करता है, उसने निश्चित किया कि यदि हम उसके प्रति ईमानदार रहें, तो सब बातें हमारी भलाई और हमें उन्नति करने में मदद करेंगी ।

- अध्याय 19 में, अय्यूब ने उन परिक्षाओं की व्याख्या की जो उस पर आई थीं, फिर मुक्तिदाता की गवाही दी । कैसे अय्यूब की मुक्तिदाता की गवाही ने उसे परिक्षा को अन्त तक सहने में मदद की ? (देखें अय्यूब 19:25...27) किस प्रकार मुक्तिदाता की गवाही हमें परीक्षा के समय बल देती है ?

  आप कक्षा के सदस्यों को ''मुझे तो निश्चय है, कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है'' (*स्तुति संख्या १३६),* गाने के लिए कहें या आप इस स्तुति गीत की रिकार्डिंग भी चला सकते हैं ।

3. अय्यूब को अपनी व्यक्तिगत धार्मिकता और ईमानदारी में बल मिलता था ।

अय्यूब 27:2...6 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- अय्यूब की ईमानदारी उसकी मुसीबत के समय अत्मिक बल देने का अन्य स्रोत थी (अय्यूब 27:2...6) ईमानदारी क्या है ? कैसे व्यक्तिगत ईमानदारी ने अय्यूब ने परिक्षा के समय उसे बल दिया था ? कैसे व्यक्तिगत ईमानदारी हमें परिक्षा के समय हमारी सहायता करती है ?(जब हम ईमानदार रहते हैं, हमें यह जानकर बल प्राप्त होता है कि हमारे जीवन का मार्ग प्रभु को प्रिय है ।)

एल्डर जोसफ बी. वर्थलीन ने *ईमानदारी* को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''बिना यह चिन्ता किये हुए कि इसके परिणाम क्या होगा हमेशा उचित और भला करना । इसका अर्थ है अपनी आत्मा की गहराई से धार्मिक होना, न केवल अपने कामों में लेकिन, अपने विचारों और हृदयों में भी, यह अधिक महत्वपूर्ण है । व्यक्तिगत ईमानदारी का अर्थ इतना विश्वसनीय और निष्कलंक होना है कि हम विश्वास या अनुबन्ध के प्रति हमेशा सच्चे रहेंगे ।'' (in Conference Report, Apr. 1990, 38; or *Ensign,* May 1990, 30)

4. अय्यूब द्वारा वफादारी से अपनी परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहने पर प्रभु उसे आशीष देते हैं ।

अय्यूब 42:10...17 का अध्ययन और चर्चा करें ।

- अय्यूब द्वारा वफादारी से अपनी परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहने पर प्रभु उसे किस प्रकार आशीषित किया था ?(देखें अय्यूब 42:10...15; याकूब 5:11) जब हम अपनी परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहते हैं प्रभु हमें कैसे आशीर्वाद देते हैं ? (देखें अय्यूब 23:10; 3 नफी 15:9 । कक्षा के सदस्यों को व्यक्तिगत अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करो । आप बता सकते हैं कि यद्यपि प्रभु ने अय्यूब को ''जितना उसके पास पहले था उसका दुगना उसे दे दिया,'' वफादारी से अन्त तक कायम रहने पर प्रभु हमें जो आत्मिक आशीर्वाद देता है वे सांसारिक आशीर्वादों से महान हैं ।)

  एल्डर ओरसन एफ. वीटनी ने कहा थाः ''कोई भी दर्द जो हमें सहते हैं, कोई भी परिक्षा जो हम अनुभव करते हैं कभी भी बेकार नहीं जाती है । यह ऐसे गुणों का विकास करने के लिए जैसे धीरज, विश्वास, सहनशक्ति, और विनम्रता हमारे ज्ञान की सेवा करता है । वह सब कुछ जो हम सहते हैं और वह सब कुछ जिस पर अन्त तक कायम रहते हैं, विशेषकर जब हम धीरज से कायम रहते हैं, हमारे गुणों का विकास करता, हमारे हृदयों को शुद्ध करता, हमारी आत्मा का विस्तार करता, और हमें अधिक कोमल और दयावान बनता, हमें परमेश्वर की सन्तान कहलाने के अधिक योग्य बनाता है.... और यह सब दुख और दर्द सहने, निरन्तर कार्य करने और परिक्षा देने से आता है, जिसकी शिक्षा ग्रहण करने हम यहां आयें हैं और जो हमें हमारे परम पिता एवं माता के तुल्य बनायेगा'' (quoted in Spencer W. Kimball, *Faith Precedes the Miracle,* 98)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा थाः ''मैं एक बड़े, बेडोल पत्थर के समान हूं जो पर्वत से नीचे लुड़क रहा है; और मुझे केवल तभी तराशा जाता है जब मेरे कोना किसी अन्य वस्तु से टकराता है,... एक टुकड़ा यहां से गिरता है और दूसरा टुकड़ा वहां से गिरता है । इस प्रकार मैं सर्वशक्तिमान के तर्कश में एक मुलायम और चिकना तीर बन गया'' (*Teachings of the Prophet Joseph Smith,* sel. Joseph Fielding Smith [1976], 304)

निष्कर्ष

इस बात पर जोर देते हुए कि हम अपनी परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहने के लिए प्रभु में विश्वास करके शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, अय्यूब की पुस्तक की चर्चा को संक्षिप्त करें । अपनी गवाही का निमार्ण करके और अपनी ईमानदारी को कायम रख कर हम जान सकते हैं कि हमारा जीवन उसको प्रिय है । आप उस समय के बारे कक्षा के सदस्यों को बता सकते हो जब आपको मुसीबत के समय बल मिला था । सुझाव दें कि कक्षा के सदस्य विचार करें किस प्रकार वे इस पाठ में चर्चित सिद्धान्तों को अपनी परिक्षाओं में अन्त तक कायम रहने में सहायता के लिए लागू कर सकते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अय्यूब के मित्र

- कैसे एलीपेज और बिलदद, अय्यूब के दो मित्र, ने अय्यूब की मुसीबतों की व्याख्या की थी ? (देखें अय्यूब 4:7...8; 8:6 । उन्होंने सोचा कि अय्यूब की मुसीबतें उसके पापों के लिए परमेश्वर द्वारा दिये गये दण्ड हैं ।) यह विश्वास करने के क्या खतरे हैं कि सभी मुसीबतें हमारे पापों के लिए परमेश्वर का दण्ड है ?
- अय्यूब के मित्रों की गलतियां हमें मुसीबत में फंसे लोगों की सहायता करने के विषय में क्या सीखा सकती हैं ?

2. मुसीबत के समय पूछने के लिए प्रश्न

एल्डर रीचर्ड जी. स्कॉट ने कहा थाः ''जब मुसीबत का सामना कर रहें हों, आप कई प्रश्नों को पूछ सकते हो । कुछ से लाभ होता; कुछ से नहीं । यह पूछने से आपको कुछ लाभ नहीं होगा कि, मेरे साथ यह क्यों हो रहा है ? मुझे अभी यह क्यों सहना पड़ रहा है ? मैंने क्या किय था कि मेरे साथ ऐसा हुआ ? ऐसे प्रश्न पूछने से कोई भला नहीं होगा जो परमेश्वर की इच्छा का विरोध करते हों । असल में यह पूछें, मुझे क्या करना चाहिए ? मैं इन अनुभवों से क्या सीख सकता हूं ? मुझे अपने आप में क्या

परिवर्तन करने की आवश्यकता है ? मुझे किसकी मदद करनी चाहिए ? मैं किस प्रकार अपनी बहुत सी आशीषों को परिक्षा के समय में याद कर सकता हूं ? (in Conference Report, Oct. 1995, 18; or *Ensign,* Nov. 1995, 17)

3. मुसीबत के समय अनन्त दृष्टिकोण पर बने रहना

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने कहा थाः

''यदि हम नश्वरता को संपूर्ण अस्तित्व के रूप में देखें, तो दर्द, दुख, असफलता, और क्षणिक जीवन एक आपदा होगा । लेकिन यदि हम जीवन को अनन्त के रुप में देखें जोकि इस जीवन से पहले और मृत्यु के बाद अनन्त जीवन तक फैला है, तब यह सब कुछ जो हो रहा है सही दृष्टिकोण में नजर आयेंगे ।

''...क्या लालच हम में इसलिए नहीं दिया जाता कि हमारी शक्ति की परिक्षा हो, बीमारी कि हमारे धैर्य सीखें, मृत्यु कि हम अमर और महिमायुक्त किये जायें ?

''यदि सभी बीमार जिनके लिए हम प्रार्थना करते हैं स्वस्थ हो जायें, यदि सभी धार्मिक बचा लिये जाएं और दुष्टो का नाश हो, तो परम पिता की योजना का कोई अर्थ नहीं रहेगा और सुसमाचार का मूल सिद्धान्त, चुनने की स्वतंत्रता, समाप्त हो जायेगी । किसी भी जन को विश्वास में जीवित रहने की आवश्यकता नहीं होगी'' (*Faith Precedes the Miracle* [1975], 97)

4. दुष्ट की सम्पन्नता अधिक दिनों की नहीं रहती

- कभी कभी दुष्ट सम्पन्न होते हैं जबकि धार्मिक को कष्ट सहने पड़ते हैं । अय्यूब की पुस्तक दुष्टों के कथित सम्पन्नता के बारे में क्य सीखाती है ? (देखें अय्यूब 21;24)

पाठ
33

संसार में सुसमाचार को बांटना

योना 1...4; मीका 2; 4...7

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को अन्तिम-दिन के इस्राएल के रूप में संसार के लोगों को प्यार करना तथा उनके साथ सुसमाचार की आशीषों को बांटने की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

प्राथर्नापूवर्क निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

क. योना 1...2 । प्रभु योना को नीनवे के लोगों को पश्चाताप सीखने के लिए बुलाता है । योना प्रभु से भागने की कोशिश में जहाज में जाता है, एक बड़ी मछली द्वारा निगल लिया जाता है, प्रार्थना करता है, और मछली के पेट से बचाया जाता है ।

ख. योना 3...4 । योना नीनवे के पतन की भविष्यवाणी करता है और नाराज होता है जब नीनवे के लोग पश्चाताप करते हैं और प्रभु शहर को बचा लेता है (जोसफ स्मिथ अनुवाद का योना 3:9...10 बताता है कि लोगों ने पश्चाताप किया था न की परमेश्वर ने) । प्रभु ने योना को सीखाने के लिए कि उसे लोगों से प्रेम रखना चाहिए रेंड़ का पेड़ और कीड़े का प्रयोग किया था ।

ग. मीका 2:12...13; 4:1...7, 11...13; 5:2...4, 7...8; 6:6...8; 7:18...20 । मीका अन्तिम दिनों में इस्राएल के मिशन की भविष्यवाणियां करता है ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

- प्रभु गिरजाघर में कितने नौजवानों से पूरे समय का मिशन करवाना चाहता है ? (सभी योग्य नौजवानों से) यह क्यों जरूरी है कि ये सभी नौजवान इस बुलाहट को पूरा करें ? इनके अलावा और कौन पूरे समय मिशन में सेवा कर सकते हैं ? (21 वर्ष या अधिक की योग्य अविवाहित बहनें तथा वरिष्ठ दम्पतियाँ यदि उनकी परिस्थितियां अनुमति देती हों ।)

1979 में, अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल ने अधिक प्रचारकों की जरूरत के विषय में बोला था जो संसार में लोगों को सुसमाचार का प्रचार कर सकें । उन्होंने घोषणा की थी: ''मैं विश्वास करता हूं कि प्रभु सब कुछ चाहे कर सकता है । मुझे ऐसा कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता कि प्रभु उन द्वारों को न खोले जो अभी प्रवेश के लिए बन्द हैं'' ("The Uttermost Parts of the Earth," *Ensign,* July 1979, 9)

यह पाठ बताता है कि किस प्रकार योना तथा मीका के जीवन और लेख हमें यह जिम्मेदारी समझने में मदद कर सकते हैं कि हमें सभी लोगों से प्रेम करना है तथा उनके साथ सुसमाचार की आशीषों को बांटना है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. योना को नीनवे को प्रचार करने के लिए बुलाया जाता है, लेकिन वह भाग जाता है ।

योना 1...2 को सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- प्रभु क्यों चाहता था कि योना नीनवे जाये ? (देखें योना 1:2) क्यों योना नीनवे के मिशन पर जाने के लिए तैयार नहीं होता ? (देखें नाहूम 3:1...5, जहां नीनवे की दुष्टता और हिंसा की व्याख्या है । नीनवे के लोग, अश्शुरियों की राजधानी इस्राएल के दुश्मन थे ।)
- योना तर्शीश को क्यों जाता है ? (देखें योना 1:3) किस तरीके से हम कभी कभी प्रभु की उपस्थिति या उसके प्रतिनिधियों के द्वारा हमें दिये गए कार्यों से बचते हैं ? इन कोशिशों के क्या परिणाम होते हैं ?
- कैसे प्रभु योना के प्रति दया दिखाता और पश्चाताप करने में मदद करता है ? (देखें योना 1:4...2:10) जब योना बड़ी मछली के पेट में होता है वह क्या सीखता है ? (देखें योना 2:1...9) कैसे प्रभु हमें पश्चाताप करने और उसके मार्ग मे वापस आने में मदद करता है ?

- अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान, उद्धारकर्ता ने ''भविष्यवक्ता यूनुस के चिन्ह (योना)'' (मत्ती 12:39) के विषय में कहा था । इस चिन्ह क्या अर्थ था ? (देखें 12:39...41 । योना ने तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में गुजारी थी और फिर जिन्दा बाहर निकाल गया था । उद्धारकर्ता भी तीन दिन और रात जमीन में गाढ़ा जायेगा और फिर बाहर पुनःजीवित होकर आयेगा ।)

- अपने भविष्यवक्ताओं के द्वारा, प्रभु ने प्रत्येक योग्य, नौजवानों को बार बार आज्ञा दी है कि वे पूरे समय के मिशन पर जायें । उसने वरिष्ठ दम्पतियों से भी पूरे समय का मिशन करने के उत्साहित किया है यदि वे इस योग्य होते हैं । (देखें सीखाने के अतिरिक्त सुझाव) कौन से कुछ कारण हैं कि क्यों योग्य नौजवान और वरिष्ठ दम्पतियां मिशन पर जाने का चुनाव नहीं करते हैं ? (समर्पण और विश्वास की कमी, अयोग्यता, घर के सुख चैन व परिवार को छोड़ने की अनिच्छा, भय कि पता नहीं उनसे क्या करवाया जायेगा ।) हम योना की कहानी में से क्या सीख सकते हैं जोकि हमें प्रभु की आज्ञा पालन करने और सुसमाचार को बांटने में साहसी बनने में मदद करेगा ?

2. नीनवे के लोगों ने योना के सन्देश का जवाब दिया और पश्चाताप किया ।

योना 3...4 को सीखायें एवं चर्चा करें ।

- योना के पश्चाताप करने के बाद, प्रभु ने उसे नीनवे के लोगों को पश्चाताप का प्रचार करने के लिये फिर से नियुक्त किया । नीनवे के लोगों पर योना के सन्देश का कैसे जवाब दिया था ?(देखें योना 3:5...9 । प्राचीन समय में, लोग अपने आप मोटे कपड़े जिसे टाट कहते हैं पहन लेते थे, और राख पर बैठ जाते थे यह दिखाने के लिए कि वे विनम्र और पश्चातापी हैं ।) परमेश्वर ने लोगों में बदलाव का क्या जवाब दिया था ? (देखें योना 3:10 ।)

- योना ने नीनवे के पतन की भविष्यवाणी की थी (देखें योना 3:4) । योना ने क्या जवाब दिया जब प्रभु ने नीनवे के लोगों को क्षमा कर दिया था ? (देखें योना 4:1...3 । वह नाराज था क्योंकि प्रभु ने लोगों पर दया दिखाई थी ।)

- प्रभु ने रेंड़ का पेड़ जिसने छाया और आराम दी और फिर मर गया, के द्वारा योना को क्या सीखाया था ? (देखें योना 4:4...11 । परमेश्वर अपने सभी बच्चों को प्यार करता है । ठीक जिस प्रकार उसने योना पर दया दिखाई थी, उसकी इच्छा थी कि वह नीनवे के पश्चातापी लोगों पर भी दया दिखाऊं ।) योना का अनुभव दूसरों को प्रेम करने के विषय में हमें क्या सीखाता है ?

3. मीका अन्तिम-दिन दिन के इस्राएल के मिशन की भविष्यवाणी करता है ।

मीका से निम्नलिखित अनुच्छेदों को सीखाएं एवं चर्चा करें ।

भविष्यवक्ता मीका ने इस्राएल के लोगों को उनकी दुष्टताओं से पश्चाताप करने और प्रभु की ओर फिरने को कहा था । उसने याकूब (इस्राएल) और यहूदा के विनाश की भविष्यवाणी की थी । उसने यह भी भविष्यवाणी की थी कि अन्तिम-दिन का इस्राएल (अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर) प्रभु के उद्देश्यों को महान शक्ति के साथ पूरा करेगा ।

- मीका 2:12...13 में प्रभु क्या प्रतिज्ञाएं करता है ? (वह प्रतिज्ञा करता है कि वह इस्राएल के अवशेषों को इकठ्ठा करूंगा, जोकि संख्या में बहुत अधिक होंगे, और वह उनका मार्गदर्शन करेगा ।) यह प्रतिज्ञाएं आज कैसे पूरी हो रही हैं ?

- अन्तिम दिनों के विषय में मीका कुछ महान भविष्यवाणियां मीका 4:1...7 में अभिलेख की गई हैं । अन्तिम-दिन के मन्दिर के विषय में मीका ने क्या भविष्यवाणी की थी ?(देखें आयतें 1...2) उसने हजार वर्ष के विषय में क्या भविष्यवाणी की थी ? (देखें आयतें 3...7) क्यों ये भविष्यवाणियां हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं ?

- मीका 4:11...13 में से हम अन्तिम दिन के इस्राएल के भाग्य के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (प्राचीन संसार में, बैलों का प्रयोग अक्सर अनाज कूटने के लिए किया जाता था । वे अनाज के ऊपर चलते, और दानों को भूसे में से अलग करते थे । भूसे को उड़ा दिया जाता था और दानों को बचा कर रख लिया जाता था । राष्ट्र जो सिय्योन का विरोध करते हैं पूलों की तरह इकठ्ठा करके, और फिर इस्राएल द्वार कूटे जाएंगे ।) भूसे में दाने को अलग करने को, अन्तिम-दिन के इस्राएल की पूरे संसार में प्रचारक काम की जिम्मेदारी के साथ कैसे तुलना कर सकते हैं ?(देखें सि.और अनु. 29:7; 33:5...7 ।)

- मीका ने 5:2...4 में किस के विषय में भविष्यवाणी की थी? (इस भविष्यवाणी की मत्ती 2:4...6 में पूरी हुई भविष्यवाणी से तुलना करें)

- मीका 5:7 में तुलना किये गए प्रभु के लोग कौन हैं ? कैसे घास पर ओस या वर्ष की तुलना गिरजाघर के सदस्यों का प्रभाव संसार के लोगों के साथ किया जा सकता है ? आप क्या सोचते हैं कि मीका का अर्थ होगा जब उसने कहा कि ये वर्षा ''किसी मानव पुत्रों की'' प्रतीक्षा नहीं करेगी ?(ठीक जिस प्रकार मानव ओस का बनना या वर्षा का गिरना नहीं रोक सकता, उसी प्रकार कोई भी प्रभु के कार्य को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता है)

- मीका 5:8 में प्रभु के लोगों की किससे तुलना की गई है ? इस प्रतीक से प्रभु की ताकत और शक्ति के बारे में क्या पता चलता है ? (ठीक जिस प्रकार भेड़ों के झुण्ड के पास जवान शेर को रोकने की शक्ति नहीं होती, उसी प्रकार पृथ्वी में कोई शक्ति प्रभु के काम में रूकावट पैदा नहीं कर सकते हैं ।)

  1842 में भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने घोषणा की थी, ''कोई भी अपवित्र हाथ इस कार्य को आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता; उत्पाती अत्याचार बड़ा सकते हैं, उपद्रवी भीड़ एकजुट हो सकती है, सेनाएं इसके विरूद्ध एकत्रित हो सकती हैं, निन्दा करके इसे बदनाम कर सकते हैं, लेकिन परमेश्वर की सच्चाई साहस, तेजस्वी, और स्वतन्त्रता के साथ आगे बढ़ेगी, जब तक कि यह प्रत्येक महाद्वीप मे न पहुंच जाये, प्रत्येक प्रदेश का दौरा न कर ले, प्रत्येक देश को शुद्ध न कर लिया जाये, और प्रत्येक कान में सुनाया न जाये, जब तक कि परमेश्वर का उद्देश्य पूरा न हो जाये, और जब तक महान यहोवा यह न कहेगा कि कार्य पूरा हो गया है ।'' (*History of the Church,* 4:540) ।

- कैसे मीका 6:6...8 हमें उस समय सहायता करता है जब हम अपने आपको कामों तले दबा हुआ महसूस करते हैं ?

- अन्तिम दिनों में प्रभु के काम की भविष्यवाणी करने पश्चात, मीका प्रभु की प्रकृति के बारे में किस निणर्य पर पहुँचा ? (देखें मीका 7:18...20) इन आयतों के कौन से वाक्यांश नीनवे के लोगों के साथ प्रभु के सम्बन्धों पर लागू होती हैं ? इनमें से कौन से वाक्यांश हम पर लागू होते हैं ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि प्रभु अपने सब बच्चों को प्यार करता है और कि हमारी, अन्तिम-दिन के इस्राएल के नाते, सभी के साथ सुसमाचार की सच्चाइयां और उसके प्रेम को बांटने की महान जिम्मेदारी है । कक्षा के सदस्यों से पूछें कि उन्होंने जोना और मीका से क्या सीखा है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. प्रत्येक योग्य नौजवान को मिशन पर जाने की तैयारी करन चाहिए

अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल के निम्नलिखित कथन की चर्चा करें:

''जब मैं अधिक प्रचारकों की मांग करता हूं तो, मै बिना गवाही या अयोग्य प्रचारक की मांग नहीं कर रहा हूं । मैं मांग कर रहा हूं कि हम समय पर शुरू करें और संसार में प्रत्येक शाखा और प्रत्येक वार्ड में अपने प्रचारकों को बेहतर प्रशिक्षण दें । यह एक दूसरी चुनौती है...कि नौजवान समझें कि मिशन पर जाना एक महान अवसर है और वे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक से ठीक हों, और कि प्रभु 'पापों की ओर तनिक भी छुट की दृष्टि से नहीं देखता ।'....

''यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है: क्या प्रत्येक नौजवान को मिशन पर जाना चाहिए ? और जवाब प्रभु द्वारा दे दिया गया है । 'हां' । प्रत्येक नौजवान को मिशन पर जाना चाहिए'' ("When the World Will Be Converted," *Ensign,* Oct. 1974, 7...8)

2. प्रचारक दम्पतियों की आवश्यकता

एल्डर डेविड बी. हेट के निम्नलिखित की चर्चा करें:

''भाइयों को ओर से, यह बुलाहट सेवा-निवृत दम्पतियों के लिए है जो मिशन पर जाने के लिए गम्भीरता से विचार करते हैं । हमें मिशन पर जाने वाले दम्पतियों की अत्याधिक आवश्यकता है ।.... 50 प्रतिशत से भी कम हमारा यह मांग पूरी हो पाती है ।....

''भाई-बन्धु आशा करते हैं कि इससे भी अधिक दम्पति अपने आपको गिरजे की पूरे समय की सेवा के लिए उपलब्ध करा पायेंगे । आवश्यकता बहुत अधिक है ! प्रत्येक वर्ष हजारों नये सदस्य गिरजे में शामिल होते हैं, और वे अपने समर्थन में एक मित्रता का भाव और अनुभवी सदस्यों की सांत्वना चाहते हैं ।

''स्तुति गीत के बोल,'प्रिय प्रभु, आप जहां कहोगे मैं वहां जाऊंगा' (स्तुति गीत, 1985, संख्या 270), का अर्थ रविवार को गायें जाने वाले से अधिक होगा । यह हमारे विश्वास की प्राथना होनी चाहिए जब हम प्रभु के कहे अनुसार सेवा करते हैं'' ("Couple Missionaries: 'A Wonderful Resource,' " *Ensign,*[1] Feb. 1996, 7, 12)

''मैं धर्म के साथ तुझे अपना बनाऊंगा''

पाठ
34

होशे 1...3; 11; 13...14

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की यह समझने में मदद करना कि प्रभु प्रेम करता और दया रखता और हमें क्षमा करता है जब हम पश्चाताप करके उसके पास वापस लौटते हैं ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. होशे 1...3 । विश्वासपात्र पति तथा चरित्रहीन पत्नी की तुलना (चिन्ह का प्रयोग) करके, होशे प्रभु और इस्राएल के सम्बन्धों की व्याख्या करता है ।

   ख. होशे 11; 13...14 । अपने लोगों से प्यार के कारण, प्रभु इस्राएल को पश्चाताप करने और उसके पास वापस आने का निमंत्रण देता है

2. अतिरिक्त पढ़ाई: होशे का शेष भाग ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग करते हैं, निम्नलिखित वाक्यांश को एक अलग कागज पर कक्षा के सामने लिखें । यदि आपकी कक्षा छोटी है, प्रत्येक सदस्य के लिए एक कागज तैयार करें ।

   ''इस्राएल की सन्तान सागर के रेत के समान होगी'' (होशे 1:10)
   ''मैं अपने जलजलाहट को उन पर जल की नाई उंडेलुंगा'' (होशे 5:10)
   ''प्रभु...वर्षा की नाई हमारे उपर आयेगा'' (होशे 6:3)
   ''वह उकाव की नाई झपटेगा'' (होशे 8:1)
   ''इस्राएल एक लहलहाती दखलत्ता है'' (होशे 10:1)
   ''खेत की रेघारियों में धतुरे की नाई दण्ड फूले फलेगा'' (होशे 10:4)
   ''वे चिमनी के धुंए...के नाई होंगे'' (होशे 13:3)
   ''मैं उनसे उस जच्चा की नाई मिलूंगा जो अपने बच्चे के लिए पीड़ा उठाती है'' (होशे 13:8)
   ''मैं हरे सनीवर सा हूं'' (होशे 14:8)

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो

जो कागज आपने तैयार करे हैं उन्हें कक्षा में बाटं दें (ऊपर ''तैयारी'' देखें) । व्याख्या करें कि प्रत्येक वाक्यांश होशे की पुस्तक में से एक तुलना है । प्रत्येक सदस्य से कागज में लिखे वाक्यांश को जोर से पढ़ने को कहें और उस तुलना के लिए एक सम्भव अर्थ को सुझायें । उदाहरण के लिए, कोई ''शेर के समान है'' इसका अर्थ हो सकता है ताकत या खुंखार ।

- आप क्यों सोचते हैं कि होशे तथा अन्य भविष्यवक्ता तुलनाओं का प्रयोग करते थे ? (किसी मुश्किल या अन्जान विचार को एक आसान या लोकप्रिय विचार के साथ तुलना करने से सीखने वाले सुगमता से समझ जाते हैं । तुलना करने से कुछ ही शब्दों बहुत सी जानकारी मिल जाती है ।)

व्याख्या करें कि इन छोटे छोटे तुलनाओं के अलावा, होशे ने गम्भीर तुलनाओं का भी प्रयोग किया था, जिन्हें उपमा या चिन्ह कहा जाता है (*चिन्ह* शब्द का प्रयोग धर्मशास्त्रों में हुआ है) होशे की पुस्तक में यीशु मसीह और उसके लोगों के सम्बन्ध को समझाने के लिए कई तुलनाएं हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा के करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. विश्वासपात्र पति तथा चरित्रहीन पत्नी की तुलना (चिन्ह का प्रयोग) करके, होशे प्रभु और इस्राएल के सम्बन्धों की व्याख्या करता है ।

होशे 1...3 सीखाएं एवं चर्चा करें । यदि आपने ध्यान गतिविधि का प्रयोग नहीं किया है, चर्चा शुरू करने से पहले व्याख्या करें कि तुलना या उपमा क्या है ।

धर्मशास्त्रों में सबसे अधिक प्रयोग किया गयी उपमा, प्रभु को दुल्हा (या पति) और उसके अनुबन्धित लोगों को दुलहन (या पत्नी) के रूप में व्याख्या करती है । होशे 1...3 शक्तिशाली रुप से इस उपमा का प्रयोग करता है, इस्राएल की मूर्तिपूजा को चरित्रहीनता (अशुद्धता) से तुलना करता है । इन अनुच्छेदों में होशे प्रभु को पति, और गोमेर इस्राएल की तुलना पत्नी के रूप में करता है ।

- होशे की पुस्तक में, इस्राएल के साथ (और आजकल गिरजे के साथ) प्रभु के सम्बन्ध की पति और पत्नी के रूप में तुलना की जाती है । यह तुलना हमें समर्पण और भक्ति के उस स्तर के बारे में क्या सीखाता है जिसकी प्रभु हमसे आशा रखता है ?

- किन तरीकों से प्राचीन इस्राएल की तुलना गोमर से करने के योग्य थी, जिसकी व्याख्या''वेश्या''के रूप में की गई है ?(देखें होशे 1:2...3; 2:5, 13 । गोमर ने अपने प्रेमियों के खातिर अपने पति को छोड़ दिया था; इस्राएल भी प्रभु को भूल गया था और दुष्ट हो गया था ।)

- इस्राएल के ''प्रेमी'' कौन थे — अर्थात वे बातें क्या थी जिन के कारण लोग प्रभु से दूर हो गये थे ? (दूसरे परमेश्वर, सांसारिक वस्तुएं, और सांसारिक बातें) कौन से बातें हमें प्रभु के प्रति वफादार होने में विमुख कर सकती हैं ?

- कुकर्मी पत्नी किसे अपने भोजन तथा वस्त्रों का श्रेय देती है ? (देखें होशे 2:5) इस्राएली बहुतायत की भूमि में रहने का श्रेय किसको देते थे ? (होशे 2:5, 12; अपने झूठे परमेश्वर या मूर्तियों को ।) किस प्रकार लोग आज अपने आशीर्वादों का श्रेय झूठे परमेश्वर को देते हैं ?

- पति अपनी पत्नी को कैसे याद दिलाता है कि वह — न कि उसके प्रेमी—उसको भोजन, जल, और अन्य वस्तुएं देते है ? (देखें होशे 2:8...9) किस प्रकार प्रभु आपको सांसारिक और आत्मिक आशीर्वाद देता है ? हमें दिये गए आशीर्वादों के लिए हम कैसे उसका धन्यवाद प्रकट कर सकते हैं ?

- होशे 2-6...13 में पति का अपनी अविश्वासी पत्नी के प्रति क्या दृष्टिकोण था ? कैसे यह दृष्टिकोण आयत 14...23 में भिन्न था ? (बताएं कि बेशक पत्नी विश्वासयोग्य नहीं थी, पति उससे फिर भी प्रेम करता था और चाहता था कि वह उसके पास वापस आ जाए । इसी तरह प्रभु भी अपने लोगों से प्रेम करता जो कि उससे बिछुड़ गये हैं, और वह चाहता है कि वे उसके पास वापस आ जाएं ।)

  एल्डर हेन्री बी. आइरिंग ने समझाया थाः ''यह एक प्रेम कहानी थी । यह कहानी एक विवाह प्रेम, दृढ़ प्रेम सूत्र में बन्धे अनुबन्ध की थी ।.... प्रभु, जिसके साथ अनुबन्ध होने का मुझे आशीर्वाद मिला है, मुझे प्यार करता है, और आपको प्यार करता है,... इतनी दृढ़ता से प्यार करता है जिसके लिए मैं आश्चर्य करता हूं और अपने सम्पूर्ण हृदय से मैं वैसा ही करना चाहता हूं'' (*Covenants and Sacrifice* [address delivered at the Church Educational System Symposium, 15 Aug. 1995], 2)

- पति अपनी पत्नी से क्या वादा करता है यदि वह उसके पास वापस लौट आती है ? (देखें होशे 2:19) प्रभु अपने लोगों से क्या वादा करता है यदि वे पश्चाताप करते और उसके पास लौट आते हैं ? (देखें होशे 2:20, 23) क्यो यह वाद महत्वपूर्ण है ।

- होशे 3:1...2 में, पति आपनी पत्नी को उसके प्रेमी से खरीदता है (आप यहां पर बता सकते हैं कि पुराने नियम के रिवाजों में, औरतों को अक्सर एक सम्पति समझा जाता था और इसलिए उन्हें खरीदा या बेचा जाता था) अपनी पत्नी को खरीदने के पश्चात पति अपनी पत्नी से क्या चाहता था ? (देखें होशे 3:3) वह उससे क्या वादा करता है ? इसी तरह किस प्रकार यीशु मसीह ने हम में से प्रत्येक को ''खरीदा'' है ? (देखें 1 पतरस 1:18...19) इसके बदले में मसीह हमसे क्या चाहता है ?

2. अपने प्रेम के कारण, प्रभु लगातार इस्राएल को पश्चाताप करने का और उसके पास लौट आने का निमंत्रण देता है ।

होशे 11; 13...14 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

होशे की पूरी पुस्तक में, प्रभु इस्राएलियों को उनके महान पापों के लिए चेतावनी देता है । होशे का द्वारा, दासता और विनाश जो इस्राएलियों की दुष्टता का परिणाम होगा, प्रभु फिर से अपने लोगों को पश्चाताप करने और उसके पास लौट आने का निमंत्रण देता है ।

- एक अन्य उपमा, जो कि धर्मशास्त्रों में प्रभु और उसके लोगों के बीच के सम्बन्ध की व्याख्या करने के लिए अक्सर प्रयोग किया गया है वह मालिक और जानवर का सम्बन्ध । यह उपमा होशे 11:4 में संक्षिप्त रूप से उपयोग किया गया है । इस

तुलना से हम उसके लोगों के प्रति प्रभु के प्रेम के विषय में सीखते हैं ? (देखें होशे 11:7...9 । ध्यान दें कि जोसफ स्मिथ अनुवाद बताता है कि प्रभु का हृदय उनको दण्ड देने के स्थान पर उनपर दया से भर गया ।)

- कई बार प्रभु इस्राएलियों को याद दिलाता है कि कैसे उनके पूर्वज मिश्र की दासता से निकाले गये थे (होशे 11:1; 12:9; 13; 13:4...5) । इस घटना की किसके साथ तुलना की जा सकती है ?(देखें होशे 13:14 । जिस प्रकार प्रभु ने इस्राएल की सन्तान को मिश्र की गुलामी से निकाला था, उसी प्रकार वह उन सभी को जो उसके पास आते हैं —पाप और मृत्यु के बन्धन से मुक्त करेगा ।)
- इस्राएलियों को प्रभु के पास वापस लौटने और मुक्ति के लिए क्या करना था ?(देखें होशे 12:6; 14:2...3 । उन्हें अपने पापों से क्षमा मांगनी थी और अन्य देवताओं को जिनकी वे पूजा करते थे त्याग करना था ।) प्रभु ने उन से क्या वादा किया थी यदि वे पश्चाताप करते ?(देखें होशे 14:4...7) प्रभु हमसे क्या वादा करता है यदि हम अपने पापों से पश्चाताप करते हैं ?
- होशे की पुस्तक की यह उपमाओं से आपको मुक्तिदाता की अनुभूति को समझने में क्या सहायता मिलती है ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि हालांकि प्रभु के आशीर्वाद उनके लिए हैं जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं परन्तु वह सभी से लगातार प्रेम करता है । बेशक हम पाप के कारण उससे दूर हो जाते हैं, प्रभु हमसे स्थिर प्रेम करता है और चाहता है कि हम पश्चाताप करें और उसके पास लौट आयें । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि वे प्रभु के प्रति विश्वसनीय बने रहें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''क्योंकि मैं बलिदान से नहीं स्थिर प्रेम से प्रसन्न होता हूं'' (होशे 6:6)

होशे 6:6 में प्रभु इस्राएल से कहता है, ''मैं बलिदान से नहीं स्थिर प्रेम से प्रसन्न होता हूं; और होमबलि से अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें ।'' अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान, मसीह ने इन आयतों का फरीसियों की आलोचना के जवाब में दो बार बताया था (मत्ती 9:13; 12:7) । इन दोनों संदर्भ (मत्ती 9:10...13; 12:1...8) के दृष्टिकोण को समझने के पश्चात, चर्चा करें कि इन आयतों का अर्थ क्या है ।

2. ''हे इस्राएल, तूने अपना विनाश किया है'' (होशे 13:9)

होशे की सेवकाई के दौरान, उत्तरी राज्य (इस्राएल) पर अश्शुरियों ने आक्रमण किया था, जिन्होंने परिणामस्वरूप राज्य का विनाश किया और लोगों को गुलाम बना लिया था । वास्तव में अश्शुरियों ने इस्राएल का विनाश किया था । परन्तु प्रभु ने कहा था, ''हे इस्राएल, तूने अपना विनाश किया है'' (होशे 13:9)

- किस अर्थ में इस्राएल ने अपना विनाश किया था ? अपने राष्ट्र के विनाश के बाद उनकी एकमात्र आशा क्या थी ? (देखे होशे 13:9...10; 14:1) किस प्रकार यीशु मसीह का अनुसरण करने से हम सांसारिक और आत्मिक सुरक्षा प्राप्त करते हैं ?

3. पश्चाताप

यदि उपलब्ध हो, आप ''पश्चाताप: इसके लिए कभी देर नहीं होती,'' नामक छ मिनट का भाग *Family Home Evening Video Supplement (International)* (5X736) में से दिखा सकते हैं ।

पाठ
35

परमेश्वर अपने भविष्यवक्ताओं को अपने मर्म की बातें प्रकट करता है

आमोस 3; 7...9; योएल 2...3

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सीखाना कि अन्तिम दिनों में, प्रभु अपने मर्म की बातें अपने भविष्यवक्ताओं को प्रकट करता है और सभी लोगों पर अपनी आत्मा उंडलेता है ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. आमोस 3:6...7 । आमोस सीखाता है कि प्रभु अपने मर्म की बात अपने सेवक भविष्यवक्ताओं पर प्रकट करता है ।

   ख. आमोस 7:10...17; 8:11...13; 9:8...15 । आमोस परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ता नियुक्त किया गया था (7:10...15) । वह इस्राएल के बिखरने और गुलाम बनाये जाने की भविष्यवाणी करता है (7:16...17; 9:8...10) । वह भविष्यवाणी कर ता है कि प्रभु के वचनों को सुनने का आकाल पड़ेगा (8:11...13) । वह भविष्यवाणी करता है कि अन्तिम दिनों में इस्राएल महान और सम्पन्न लोगों के रूप में स्थापित होगा (9:11...15) ।

   ग. योएल 2; 3:16...17 । योएल अन्तिम दिनों में युद्ध और तबाही की भविष्यवाणी करता है (2:1...11) । वह लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहता है (2:12...14; ध्यान दें कि आयत 13 ओर 14 का जोसफ स्मिथ अनुवाद समझाता है कि लोगों को, न कि प्रभु को, पश्चाताप करना था) । योएल भविष्यवाणी करता है कि परमेश्वर अन्तिम दिनों में अपने लोगों को आशीर्वाद देगा और अपनी आत्मा उन पर उंडेलेगा (2:15...32; 3:16...17) ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:41; सिद्धान्त और अनुवाद 1:14...28, 37...38 ।

3. यदि आप ध्यान गतिविधि का उपयोग कर रहें हैं, आप स्तुति गीत में संगीत की संगत देने के लिए किसी को कहना चाहिए । आप कक्षा के सदस्यों को हाल ही में मिली भविष्यवक्ता की सलाहों को बांटने के लिए भी बुला सकते हो ।

4. यदि सम्भव हो, जीवित भविष्यवक्ता के चित्र को प्राप्त करें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

1. कक्षा के सदस्यों के साथ निम्नलिखित कहानी को बांटें:

   ''जब मैं एक जवान पत्नी और मां थी, मेरे पति ने दो वर्ष वायु सेना में व्यतीत किये थे । हम लोग आइलैन्ड, न्युयार्क के सैनिक आवास में रहते थे । अपने छोटे बच्चों की देखभाल करते समय, मैं अक्सर पड़ोस में चली जाती थी जो पूरे देश से आये हुए थे । एक दिन जब मैं और मेरा पड़ोसी अपने अपने विश्वास के बारे में बात कर रहे थे, वह यह जानने के लिए उत्सुक हो गई कि अन्तिम-दिनों का यीशु मसीह का गिरजाघर में भिन्न क्या था ।

   ''मैंने उसे संक्षिप्त में पुनः स्थापना के विषय में बताया, और समझाया कि यीशु मसीह के पुनःस्थापित गिरजाघर में जीवित भविष्यवक्ता है । इससे उसकी जिज्ञासा बढ़ गई, और वह जानना चाहती थी कि भविष्यवक्ता क्या कहते थे । जब मैंने उसे सिद्धान्त और अनुबन्ध और आधुनिक प्रकटीकरण के विषय में बताया, उसने कहा, 'उसने अभी हाल में ही क्या कहा है ?' मैंने उसे जनरल सम्मेलन के विषय में बताया और कि गिरजाघर में भविष्यवक्ता के सन्देश का मासिक प्रकाशन होता है । तब वह सचमुच में उसकी जिज्ञासा उसे जानने के लिए बढ़ गई । मुझे यह कहने में बहुत संकोच हुआ कि मैंने नया सन्देश नहीं पढ़ा था । उसने यह कह कर बातचीत खत्म की, तुम्हारा अर्थ है कि तुम्हारे पास जीवित भविष्यवक्ता है और तुम नहीं जानते कि उसका सन्देश क्या है ?''' (Janette Hales Beckham, "Sustaining the Living Prophets," *Ensign,* May 1996, 84)

   - यदि आपसे कोई पूछे कि जीवित भविष्यवक्ता ने अभी हाल में क्या कहा है, क्या आप इस प्रश्न का उत्तर दे पायोगे ?

   समझाएँ कि यह पाठ जीवित भविष्यवक्ता को सुनने और उसका अनुसरण करने पर जोर डालता है ।

2. कक्षा के सदस्यों से स्तुति गीत ''ओ परमेश्वर, भविष्यवक्ता देने के लिए, हम आपका धन्यवाद करते हैं'' (*स्तुति गीत* स. 19) समझाएं कि अपने जीवित भविष्यवक्ता की सलाह पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है । कक्षा के सदस्यों को कुछ सलाह को बांटने के

लिए कहें जो कि हाल में दी गई हों या नियुक्त किये गये कक्षा के सदस्य को भविष्यवक्ता की हाल की कुछ सलाहों का संक्षिप्त विश्लेषण करने के लिए कहें ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हो, चर्चा के करें कि कैसे इनका प्रयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

आमोस यरूशलेम के निकट, एक छोटे से शहर तकोई का चरवाह था । उसने इस्राएल राज्य के लोगों की 800 ई.पू. से 750 ई.पू. तक सेवा की थी । इन में से अधिकतर धार्मिक अन्धकार में थे । ये धन के प्रेमी और निर्धन का शोषण करते थे, और ये इतने कोठर थे कि अकाल या महामारी से भी विनम्र नहीं हुए थे । जब आमोस ने लोगों को उनके पापों के विषय में बताया, उसने उनके लिए अधिक गम्भीर दण्ड की भविष्यवाणी की थी । फिर भी, उसने यह घोषणा करके कि ''यहोवा की खोज करो, तब तुम जीवित रहोगे'' (आमोस 5:6) जोर दिया कि परमेश्वर किसो को भी शुद्ध करने के लिए तैयार है जो पश्चाताप करता है । आमोस ने अन्तिम दिनों की भी भविष्यवाणी की थी ।

भविष्यवक्ता योएल ने यहूदा राज्य के लोगों की सेवा की थी । हम उसके सेवाकाल के बारे में भलि-भांति नहीं जानते, लेकिन उसकी भविष्यवाणियां हमारे लिए विशेष महत्व रखती हैं क्योंकि उसकी अधिकतर भविष्यवाणियां अन्तिम दिनों से सम्बन्ध रखती हैं । योएल ने टिड्डी के विनाश करने वाले शक्तिशाली रूप को अन्तिम दिनों में परमेश्वर के न्याय और सेना द्वारा होने वाली तबाही के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है । योएल ने अन्तिम दिनों में महान आशीर्वादों की भी भविष्यवाणी की थी, उसने कहा था कि परमेश्वर ''सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा'' (योएल 2:28)

1. आमोस सीखाता है कि प्रभु अपने सेवक भविष्यवक्ताओं के द्वारा अपने भेद प्रकट करता है ।

आमोश 3:6...7 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- हम परमेश्वर के वचन को आजकल किस प्रकार सुनते हैं ? भविष्यवक्ता आमोस ने भविष्यवक्ताओं के महत्व के बारे में क्या सीखाया था ? (देखें आमोस 3:7)
- सिद्धांत और अनुबन्ध 1:37...38 हमें भविष्यवक्ताओं के सन्देशों के प्रति आदर के बारे में क्या सीखाता है ? (जीवित भविष्यवक्ता का चित्र दिखाएं) जैसा कि सिद्धान्त और अनुबन्ध 21:4...5 में लिखा गया है, प्रभु गिरजाघर स्थापित करते समय हमें क्या सलाह और आज्ञा दी थी ? उसने किस आशीर्वाद का वादा किया था अगर ऐसा करते हैं ? (देखें सि.और अनु. 21:6) आप इस वादे को अपने जीवन में किस प्रकार पूरा होते देखते हो जब भविष्यवक्ताओं की सलाह का पालन करते हो ?

2. आमोस ने प्राचीन एवं अन्तिम-दिन के इस्राएल की भविष्यवाणी की थी ।

आमोस 7:10...17; 8:11...13; 9:8...15 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- क्यों इस्राएल राज्य के एक याजक, अमाजिया, ने आमोस को प्रदेश छोड़कर चले जाने को कहा था ? (देखें आमोस 7:10...17 । आमोस ने भविष्यवाणी की थी कि प्रजा और उसके राजा के साथ बुरा होगा । अमाजिया और उसके लोग अपने बुरे कामों की सच्चाई के बारे में सुनना नहीं चाहते थे ।) आयत 14 से 17 हमें भविष्यवक्ता आमोस के बारे में क्या सीखाती हैं ? (उसके पास धैर्य और साहस था । प्रभु ने उससे जो कहा था उसने बिना बदले भविष्यवाणी करना जारी रखा कि लोगों के साथ बुरा होगा यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं ।)
- इतिहास के सभी काल में, क्यों इतने लोगों ने भविष्यवक्ताओं के सन्देशों को अस्वीकार या उपेक्षा की ? आमोस ने किस परिणाम की भविष्यवाणी की थी यदि इस्राएल भविष्यवक्ताओं की सलाह को अस्वीकार करते हैं ? (देखें आमोस 8:11...13 । आत्मिक अकाल, या धार्मिक अन्धकार ।) हमारे लिए क्या व्यक्तिगत परिणाम होंगे यदि हम भविष्यवक्ताओं की सलाह को अस्वीकार करते हैं ?

  इस्राएल की सन्तान के बीच आत्मिक अकाल की आमोस की भविष्यवाणी, मलाकी, पूराने नियम का एक भविष्यवक्ता, के बाद के काल में पूरी हुई थी । यह अवधि लगभग 400 वर्षों बाद समाप्त हुई जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को यीशु मसीह के लिए तैयार करने के लिए नियुक्त किया गया था । आमोस की भविष्यवाणी उस महान धार्मिक अन्धकार पर भी लागू होती है, जो उद्धारकर्ता की मृत्यु के बाद शुरू हुआ था और भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ द्वारा सुसमाचार पुनःस्थापित करने के साथ समाप्त हुआ था ।

- किस तरह प्रभु के वचनों की कमी की तुलना अकाल से की जा सकती है ? आप क्या प्रमाण देखते हो कि लोग आजकल प्रभु के वचनों के लिए ''पृथ्वी के एक कोने से दूसरे कोने तक'' भटक रहे हैं ? किस प्रकार सुसमाचार की पुनःस्थापना की तुलना एक दावत से की जा सकती है ?

- आशा के किस सन्देश के साथ आमोस की पुस्तक समाप्त होती है ? (देखें आमोस 9:8...15 । इस्राएल की सन्तान का सम्पूर्ण नाश नहीं होगा, वे सभी राष्ट्रों में बिखर जाएंगे, और अन्तिम दिनों में वे महान एवं सम्पन्न लोगों के रूप में पुनःस्थापित होंगे । ध्यान दें कि आयत 9 के अन्त में, प्रभु यह सपष्ट करता है कि वह इस्राएल के घराने के प्रत्येक सदस्य के लिए चिन्तित है ।)

3. योएल भविष्यवाणी करता है कि परमेश्वर अन्तिम दिनों में अपने लोगों को आशीर्वाद देगा तथा अपनी आत्मा उन पर उंडेलेगा ।

योएल 2; 3:16...17 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

भविष्यवक्ता ने कुछ घटनाओं की व्याख्या की थी जो अन्तिम दिनों में द्वितीय आगमन से पहले होंगे । उसने एक सेना की व्याख्या की थी जिस के कारण दुष्टों का भारी नुकसान होगा (योएल 2:1...11) । उसने इस्राएल से पश्यचाताप करने और प्रभु की ओर फिरने को कहा, वादा किया कि परमेश्वर उनके बीच में होगा, और इस्राएल की ऐतिहासिक विजय तथा मुक्ति की व्याख्या की थी (योएल 2:12...32) ।

- *योएल २:१२...३२* और *योएल ३:१६...१७* को चॉकबोर्ड पर लिखें । कक्षा के सदस्यों से इन अनुच्छेदों का विश्लेषण करने तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तरों को खोजें: प्रभु ने अन्तिम दिनों में रहने वालों को क्या निमंत्रण दिया है ?

  शब्द *निमंत्रण* को चॉकबोर्ड पर लिखें । जब कक्षा के सदस्य वाक्यांश को बताते हैं, प्रत्येक निमंत्रण के लिए संकेत शब्दों को चॉकबोर्ड पर लिखें । कक्षा के सदस्यों को इन वाक्यांशों को अपने धर्मशास्त्रों में चिन्हित करने के लिए कहें । नीचे कुछ निमंत्रण लिखें है जिनको आप लिख सकते हैं:

  निमंत्रण

  क. ''अपने पूरे मन से फिरकर मेरे पास आओ'' (योएल 2:12) ।
  ख. ''अपने मनों को फाड़कर'' (योएल 2:13, अर्थात अपने मनों को बदलो या विनम्र बनो) ।
  ग. ''अपने परमेश्वर यहोवा की ओर फिरो'' (योएल 2:13) ।
  घ. ''सभा को पवित्र करो'' (योएल 2:16) ।
  च. ''हे देश, तू मत डर; तू मगन हो और आनन्द कर'' (योएल 2:21) ।

- ये निमंत्रण अपने पूरे मन से यहोवा की ओर फिरने के महत्व के बारे में क्या सुझाव देते हैं ? अपने आप को पवित्र करने के लिए हम क्या कर सकते हैं ताकि हम यहोवा के वादा किये गए आशीर्वादों को प्राप्त करने के योग्य हों ?

- निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर खोजने के लिए, कक्षा के सदस्यों से योएल 2:12...32 और योएल 3:16...17 का फिर से जांच करें: उनके लिए योहवा के क्या आशीर्वाद हैं जो अन्तिम दिनों में उसका अनुसरण करते हैं ?

  शब्द *आशीष* को चॉकबोर्ड पर लिखें । जब कक्षा के सदस्य वाक्याशों को बताते हैं, प्रत्येग आशीष में से संकेत शब्दों को चॉकबोर्ड पर लिखें । कक्षा के सदस्य इन वाक्याशों को अपने धर्मशास्त्रों में चिन्हित भी कर सकते हैं । निम्नलिखित कुछ आशीषें हैं जिनको बताया जा सकता है:

  आशीष

  क. प्रभु महान और क्षमा करने वाला, क्रोध करने में धीमा, एवं बहुत दयालु है, और आपसे बुराई को दूर करेगा'' (देखें जोसफ स्मिथ अनुवाद, योएल 2:13)
  ख. उसने अपनी प्रजा पर तरस खाया (योएल 2:18) ।
  ग. मैं उत्तर से आई सेना को (आयत 1...11 में बताई गई) तम्हारे पास से दूर करूंगा (योएल 2:20) ।
  घ. ''तुम पेट भर कर खाओगे और तृप्त होगो'' (योएल 2:26) ।
  च. ''मैं इस्राएल के बीच में हूं...और मेरी प्रजा की आशा फिर से न टुटेगी'' (योएल 2:27) ।
  छ. ''मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंण्डेलुगा'' (योएल 2:28; आयत 29 भी देखें) ।
  ज. तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्यवाणियां करेंगे, तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे (योएल 2:28) ।
  झ. ''जो कोई यहोवा को पुकारेगा, वह छुटकारा पायेगा'' (योएल 2:32) ।
  त. ''यहोवा सिय्योन में गरजेगा, और यरूशलेम में बड़ा शब्द सुनाएगा'' (योएल 3:16) ।
  थ. ''यहोवा अपने लोगों के लिए शरणस्थल है'' (योएल 3:16) ।
  द. ''यहोवा...इस्राएलियों के लिए गढ़ ठहरेगा'' (योएल 3:16) ।
  ध. ''इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास करेगा'' (योएल 3:17) ।

- ये आशीषें उसके अनुबंधित लोगों के लिए यहोवा की प्रतिज्ञा के बारे में क्या सीखाते हैं ? सन्तों की तरफ से उसकी शक्ति के बारे में ? उसकी दया और प्रेम के बारे में ? इन अन्तिम दिनों में हमारे अवसरों के बारे में ?
- योएल की घोषणा कि यहोवा अन्तिम दिनों में सभी लोगों पर अपना आत्मा उण्डेलेगा (योएल 2:28...29) आमोस द्वारा बताए गये अकाल के एकदम विपरित है (आमोस 8:11...12) । दूत मरोनी ने योएल की भविष्यवाणी को जोसफ स्मिथ को बताया और कहा कि यह अभी पूरी नहीं हुई थी लेकिन जल्दी ही पूरी होगी (जोसफ स्मिथ...इतिहास 1:14) । इस उण्डेलने के कौन से उदाहरण आपको आजकल जवान और बड़े लोगों के जीवन में दिखाई देते हैं ?

निष्कर्ष

जोर दें कि ये हमारे लिए अन्तिम दिनों में एक महान आशीष है, जब बहुत सी भविष्यवाणियां पूरी हो रही हैं और हमें जीवित भविष्यक्ता मार्गदर्शन प्राप्त है । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि प्रार्थनापूर्वक जीवित भविष्यवक्ता के वचनों का अध्ययन करें और उसकी सलाह को अपने जीवन में लागू करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. जो सिय्योन में सुख से रहते थे

- आमोस लोगों को ''सिय्योन में सुख से रहने'' के विषय में चेतावनी देता है (आमोस 6:1) । सिय्योन में सुख से रहने का क्या अर्थ है ? (देखें 2 नफी 28:19...24, 27, 29...30) । वर्तमान में, हम किस प्रकार सिय्योन में सुख से रहने की स्थिति में होते हैं ? किस प्रकार हम इन से अपने आप को बचा सकते हैं ?

2. ''मैं अपना आत्मा सभी प्राणियों पर उण्डेलुंगा'' (योएल 2:28)

- सुसमाचार की पुनःस्थापना के बाद से यातायात और संचार में काफी खोज हुई है । किस प्रकार ये उन्नति योएल 2:28...29 में बतायी भविष्यवाणी को पूरा करती है ? ये खोज किस प्रकार वर्तमान में प्रभु के कार्य को आगे बढ़ाने में हमारी सहायक है ?

  कक्षा के सदस्यों को प्रभु के कार्य में इन खोजों के लाभ को समझने में सहायता के लिए आप एल्डर जोसफ फिल्डींग स्मिथ के निम्नलिखित बयान को पढ़ सकते हैंः

  ''मुझे इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि यदि सुसमाचार की पुनःस्थापना नहीं हुई होती, और अन्तिम-दिनों के यीशु मसीह का गिरजाघर का संगठन नहीं हुआ होता, तो न कोई रेडियो होता; न कोई हवाई जहाज होता, और औषधि, रसायान, विधुत, और अन्य क्षेत्रों में शानदार खोज न हुई होती जिससे की सम्पूर्ण संसार लाभान्वित हुआ है । उस स्थिति में इन आशीर्वादों को रोक लिया जाता, क्यों कि ये आशीर्वाद समय की परिपूर्णता के प्रबन्ध से सम्बन्धित हैं जिसमे सुसमाचार की पुनःस्थापना और गिरजे का संगठन केन्द्र बिन्दु है, और इस बिन्दु से प्रभु की आत्मा पूरे संसार में फैलती है । प्रभु की प्रेरणा निकलती है और मनुष्यों के मन का नियंत्रण करती है, यद्यपि वे इसको नहीं जान पाते हैं, और वे प्रभु द्वारा निर्देशित किये जाते हैं । इस प्रकार वह उन्हें अपने उद्देश्यों और धार्मिकता की सेवा में लाता है, और उचित समय पर पृथ्वी वह सर्वशक्तिमान होगा ।

  ''...मैं एक पल के लिए भी यह विश्वास नहीं कर सकता कि ये खोज मात्र इत्तफाक हैं, या ये वर्तमान मानव की आदि काल के मानव से अत्याधिक बुद्धिमान होने के कारण हुई हैं । ये इस हुई हैं और अभी भी हो रही हैं क्योंकि समय इस के लिए तैयार हो चुका है, क्योंकि प्रभु की ऐसी इच्छा है, और क्योंकि उसने आपना आत्मा सब प्राणियों पर उण्डेला है'' (in Conference Report,[2] Oct. 1926, 117) ।

पाठ
36

समस्त विभव के ऊपर एक मण्डप छाया रहेगा ।

यशायाह 1...6

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को संसार की बुराइयों से बचने के लिए पवित्र स्थानों में डटे रहने के लिए उत्साहित करना और उन्हें यशायाह की सेवा करने इच्छा से प्रेरणा पाने में सहायता करना ।

तैयारी

1. यशायाह 1...6 के अनुच्छेदों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करना जिनकी इस पाठ में चर्चा की गई है ।

2. अतिरिक्त पठनः 2 नफी 11 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

समझाएं कि प्रभु अक्सर एक ही विचार को धर्मशास्त्रों में कई बार दोहराता है । निम्नलिखित संदर्भों को चॉकबोर्ड पर लिखें और कक्षा के सदस्यों से प्रभु की सलाह को खोजने के कहें जो उन्हें अन्तिम दिनों की परीक्षा में कायम रहने में सहायक होते हैं:

सिद्धान्त और अनुबन्ध 45:32
सिद्धान्त और अनुबन्ध 87:8
सिद्धान्त और अनुबन्ध 101:22

चॉकबोर्ड पर लिखें ''पवित्र स्थानों पर खड़े रहें, और विचलित न हो'' (देखें सि.और अनु.87:8) ।

- आपके विचार से इस वाक्यांश का क्या अर्थ है ? (उत्तरों में शामिल हो सकता है हर समय योग्य रहना, पवित्र स्थानों पर निरन्तर होने की इच्छा होना, अपवित्र स्थानों पर न जाने का चुनाव करना, विश्वास रखना कि परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करेगा, और सच्चाई तथा पवित्रता का समर्थन करना ।)

समझाएं कि कक्षा के सदस्य इस पाठ में, प्रभु क्यों पवित्र स्थानों पर रहने और ये पवित्र स्थान क्या हैं, के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

धर्मशास्त्र चर्चा और लागू करना

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

''यशायाह के वचन महान हैं,'' उद्धारकर्ता ने नफायटियों को यशायाह के भविष्यवाणियों की घोषणा करते समय कहा था (3 नफी 23:1) यशायाह की भविष्यवाणियां नये नियम, मॉरमन की पुस्तक, तथा सिद्धान्त और अनुबन्ध में किसी भी अन्य भविष्यवक्ता के वचनों से अधिक उद्धरित की गयी हैं । उसने उद्धारकर्ता के पृथ्वी के मिशन के बारे में, इस्राएल की दुष्टता के पश्चात होने वाले विनाश के बारे में, और अन्तिम-दिन के इस्राएल के मिशन एंव भाग्य के बारे में, कई बातों की भविष्यवाणियां की थी ।

1. यशायाह ने अन्तिम दिनों में संसार की स्थिति की व्याख्या की थी ।

- यशायाह की बहुत सी चेतावनियां और भविष्यवाणियां उसके समय, जोकि बहुत अधिक दुष्टता भरा था, और हमारे समय दोनों पर एक समान लागू होती हैं । नीचे दिये धर्मशास्त्रों में बताई गई स्थितियां आज संसार में किस प्रकार सत्य हैं ? (आप संदर्भों को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं और कक्षा के सदस्य को इन्हें खोजने दें ।)

  क. यशायाह 1:3...5 (यहोवा से बलवा किया)
  ख. यशायाह 1:11...15 (धार्मिक बलियां बिना किसी अर्थ या विश्वास के)
  ग. यशायाह 2:7...8 (यहोवा के स्थान पर सांसारिक वस्तुओं तथा फौज की सुरक्षा लेना; ध्यान दें कि घोड़ों और रथों का प्रयोग पुराने समय में युद्ध के यंत्रों के रूप में किया जाता था)
  घ. यशायाह 2:11...12 (घमंड)
  च. यशायाह 3:5 (लोग आपस में अंधेर और जवान वृद्ध जनों से असभ्यता करेंगे)

छ. यशायाह 3:9 (पाप के लिए कोई शर्म नहीं)
ज. यशायाह 3:14...15 (दीन लोगों के धन को लुट लेते और उनको पीस डालते हो)
झ. यशायाह 3:16...24 (धार्मिकता और अच्छे चरित्र के स्थान पर शारीरिक सुन्दरता पर जोर देना)
त. यशायाह 5:8 (सांसारिक वस्तुओं को अधिक से अधिक रखने की लालसा)
थ. यशायाह 5:11...12 (यहोवा और उसके कार्य के स्थान पर सांसारिक खुशियों को निरन्तर खोजना)
द. यशायाह 5:20 (यह कहना कि बुरी बातें भली हैं और भली बातें बुरी हैं)
ध. यशायाह 5:21 (परमेश्वर के स्थान पर स्वयं पर विश्वास करना)
य. यशायाह 5:24 (परमेश्वर के वचनों और आज्ञाओं को पसन्द न करना)

- यह भविष्यवाणियां आज किस प्रकार पूरी हो रही हैं ? (इन में कुछ भविष्यवाणियों पर अधिक चर्चा करने के लिए सीखने के अतिरिक्त सुझाव देखें)

2. यशायाह विश्वासी को पवित्र स्थानों पर खड़े रहने का सलाह देता है ।

- यशायाह द्वारा बताई गई सांसारिक स्थितियों से बचने में कौन से स्थान सुरक्षा देतें हैं ? यशायाह 4:5...6 में बताये गये तीन पवित्र स्थान कौन से हैं ?

  क. पर्वत सिय्योन का प्रत्येक स्थान (घर)
  ख. कलीसिया (स्टेक, वार्ड, और शाखांए; सि.और अनु. 115:5...6 भी देखें)
  ग. मंडप (मन्दिर)

- कैसे सांसारिक दुष्टता से बचने के लिए घर एक पवित्र शरणस्थान हो सकता है ? कैसे स्टेक, वार्ड, और शाखाएं पवित्र स्थान और शरणस्थान हो सकते हैं ? कैसे मन्दिर एक पवित्र स्थान और शरणस्थान हो सकता है ? कैसे यह तीन पवित्र स्थान संसार की बुराइयों से आपका बचाव करने में आपकी सहायता करते हैं ?

  आप चॉकबोर्ड पर *पवित्र स्थानों पर खड़े रहें* लिख सकतें हैं और फिर इसके नीचे लिखें *१. घर; २. स्टेक, वार्ड, और शाखाएं;* और *३. मन्दिर* । प्रत्येक शीर्षक के नीचे सदस्यों की टिप्पणियां लिखें ।

- यशायाह 4:5...6 में यह बताने के लिए कि ये पवित्र स्थान कैसे हमें सुरक्षा देते है कौन सी भावनायें प्रयोग की गई हैं

  क. ''दिन को घाम से बचाव''
  ख. ''शरण स्थान''
  ग. ''आंधी पानी और झड़ी में आड़ [बचने का या शरण स्थान]''

- यशायाह के बहुत से लेख मॉरमन की पुस्तक में भी शामिल किये गए हैं । कक्षा के सदस्यों से 2 नफी 14:5 पढ़कर खोजने दें कि कौन से शब्द यशायाह 4:5 में जोड़े गए हैं । (शब्द *सिय्योन के* जोड़े गए हैं ।) ये शब्द इस आयत की हमारी जानकारी में क्या अधिक जोड़ते हैं ?

- यशायाह 2:2...3 में अन्तिम दिनों में मन्दिर के बारे में क्या भविष्यवाणी शामिल की गई है ? (बहुत से लोग परमेश्वर के घर में आएंगे, जोकि मन्दिर हैं, और परमेश्वर की आज्ञाओं के बारे में सीखेंगे और उसके मार्गो पर चलेंगे ।) आप क्यों सोचते हैं कि यशायाह ने मन्दिर को ''यहोवा का पर्वत'' कहा था ? (प्राचीन भविष्यवक्ता यहोवा के साथ बात करने के लिए पर्वतों पर जाते और उससे सलाह प्राप्त करते थे । वह उन्हें बहुत सी बातें प्रकट करता था । हम इसी प्रकार के अनुभव आज मन्दिर में प्राप्त कर सकते हैं ।)

3. यशायाह अन्तिम दिनों में इस्राएल के इकट्ठा होने की व्याख्या करता है ।

यशायाह 5:26...29 में, यशायाह इस्राएल के इकट्ठा होने को बताता है । झण्डा जोकि ऊपर किया जायेगा वह अन्तिम-दिनों का यीशु मसीह का गिरजाघर है । ''सीटी बजाकर बुलाएगा'' का अर्थ है कि पृथ्वी के राष्ट्रों को गिरजे में इकट्ठा होने का निमंत्रण देना है । यह इकट्ठा होना शीघ्र एवं शक्तिशाली होगा ।

- कैसे यह भविष्यवाणी कि राष्ट्र गिरजे में इकट्ठा होंगें आज पूरी हो रही है ? (प्रचारक सम्पूर्ण विश्व में सुसमाचार को सीखाने और सच्चाई में लोगों को इकट्ठा करने जाते हैं ।) हम से प्रत्येक इस भविष्यवाणी को पूरा करने में किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं ?

4. यशायाह भविष्यवक्ता होने की अपनी बुलाहट को स्वीकार करता है ।

यहोवा यशायाह को एक दिव्यदर्शन के द्वारा भविष्यवक्ता चुनता है जिसमें यशायाह ने यहोवा को उसकी महिमा में देखा था । यह दिव्यदर्शन यशायाह 6 में अभिलेखित है ।

- यशायाह यहोवा की महिमा का किस प्रकार व्याख्या करता है ? (देखें यशायाह 6:1...4) यशायाह की क्या प्रतिक्रिया थी जब उसने यहोवा को देखा था ?(देखें यशायाह 6:5 । यशायाह अपने आप को यहोवा के सम्मुख खड़ा होने के अयोग्य पाता है ।) किस प्रकार यहोवा प्रतीकात्मक रूप से बताता है कि यशायाह उसके सम्मुख शुद्ध था ? (देखें यशायाह 6:6...7) कैसे यशायाह क्या उत्तर देता है जब यहोवा उसे भविष्यवक्ता चुनता है ? (देखें यशायाह 6:8)
- अपनी नियुक्ति स्वीकार करने में, यशायाह ने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया था जो उद्धारकर्ता ने परम पिता से उसके बच्चों की मुक्ति की योजना की जिम्मेदारी लेते समय करे थे (इब्राहीम 3:27) । कौन सी स्थितियां हैं जिसमें हम भी वैसे ही शब्दों का प्रयोग करने की आवश्यकता होती है ? (उत्तरों में शामिल हो सकते हैं जब हमें मिशन पर जाने के लिए कहा जाता है, जब हमें गिरजे में सेवा करने को कहा जाता है, और जब हमें कठीन परिक्षाओं में कायम रहने के लिए कहा जाता है)
- यशायाह के बहुत से अध्याय मॉरमन की पुस्तक में अभिलेखित हैं, अध्याय 2 से 6 तक । भविष्यवक्ता यशायाह के लेखों को अपने अभिलेखों में शामिल करने का क्या कारण बताता है ? (देखें 2 नफी 11:8)
- यशायाह के इन अध्यायों में से कौन से सन्देश आपको आनन्द मनाने के लिए उकसाते हैं ? इन अध्यायों के कौन से सन्देश आपके लिए अधिक महत्व रखते हैं ?

निष्कर्ष

यशायाह के शब्द हमें अन्तिम दिनों के विषय में बहुत सी बातें सीखाते हैं । यशायाह की सलाहों का अध्ययन करने से, हम पवित्र स्थानों में खड़ा होना सीख सकते हैं और संसार की बुराइयों से बच सकते हैं । उसके उदाहरणों का अनुसरण करके, हम अपने परम पिता के सेवक बनने की अधिक इच्छा रखते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

यशायाह 1...6 में बताई गई यशायाह की भविष्यवाणियों की चर्चा

हमारी धार्मिक रीतियों को प्रभु को स्वीकार्य बनाना

- यशायाह 1:11, 16...17 के अनुसार, इस्राएलियों की बलियां प्रभु को क्यों स्वीकार्य नहीं थी ? (यद्यपि इस्राएली बाहर से धार्मिक बनने का प्रयास करते थे, परन्तु उनके हृदय परमेश्वर से दूर थे । मत्ती 5:23...24; मरोनी 7:6...9 भी देखें) क्यों कुछ लोग बाहर से धार्मिक बनने का प्रयास करते हैं जबकि उनके हृदय परमेश्वर से दूर होते हैं ? क्यों इस प्रकार का दिखावा परमेश्वर को नराज करता है ?

क्षमा करने की आशीषें

- यशायाह ने दो सुन्दर विचारों को प्रस्तुत किया था जोकि हमें यह जानने में सहायता करेंगे कि यहोवा कैसे उनको पूर्ण रूप से क्षमा करता है जो पश्चाताप करते हैं । उसने कहा था, ''यद्यपि हमारे पाप अत्याधिक काले (घृणित) हो सकते हैं, वे इतने स्वच्छ और उज्जवल हो सकते हैं जैसे हिम; यद्यपि वे गहरे लाल हो सकते हैं, वे सफेद हो सकते हैं'' (यशायाह 1:18) । किस प्रकार ये विचार हमारी सहायता करते हैं जब हम पाप करते हैं और अपने आपको यहोवा से दूर पाते हैं ?(सि.और अनु.58:42)

सांसारिक दिखावे से बचना

- एल्डर जोसफ फिल्डींग स्मिथ ने कहा था कि यशायाह 3:16...24 में की गई भविष्यवाणी आजकल के गिरजाघर के सदस्यों का संदर्भ करती है और ''सभी पुरूषों के साथ साथ स्त्रियों से भी सम्बन्धित है'' (*Answers to Gospel Questions,* comp. Joseph Fielding Smith Jr., 5 vols. [1957...66], 5:174) । कैसे हमारे वस्त्र पहनने का तरीका हमारे आत्मिक होने को दिखाता या प्रभावित करता है ? सुशील वस्त्र पहनने से क्या अर्थ है ? अपने व्यक्तिगत पहनावे और दिखावे के प्रति अत्याधिक चिन्तित होने के क्या खतरे हैं ? (देखें अलमा 31:27...28) कैसे हम अपने बच्चों को सांसारिक दिखावे से बचना सीखा सकते हैं ?

बुरे को भला तथा भले को बुरा कहना

- क्यों इस्राएल की भले और बुरे की पहचान करने योग्यता समाप्त हो गई थी ? (देखें यशायाह 5:20) किस प्रकार लोग आजकल बुरे को भला और भले को बुरा कहते हैं ? किस प्रकार हम सुनिश्चित कर सकते हैं हम भले और बुरे की पहचान करने योग्य हैं ? (देखें 2 नफी 32:5; सि.और अनु. 45:57)

''अपनी नजरों में बुद्धिमान होना''

- यशायाह का क्या अर्थ था जब उसने लोगों को ''अपनी दृष्टि में ज्ञानी, और अपने लेखे बुद्धिमान'' न होने की चेतावनी दी थी ? (यशायाह 5:21) इससे क्या कठिनाई पैदा हो सकती है ? यह क्यों खतरनाक है ? हम कैसे इससे बचाव कर सकते हैं ?

''उसका हाथ अब तक बढ़ा हुआ है''

- यशायाह 5:25, 9:12, 9:17, 9:21, और 10:4 में यशायाह कौन से सन्देश पर जोर देता है ? क्यों यह सन्देश महत्वपूर्ण है ? आपको इस सन्देश की सच्चाई का पता कैसे चला ?

पाठ
37

''तू ने आश्चर्य कर्म किए हैं''

यशायाह 22; 24...26; 28...30

उद्देश्य

आश्चर्यकर्मों को पहचान कर मसीह के पास आने में कक्षा के सदस्यों की सहायता करना ।

तैयारी

प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें ।

क. यशायाह 22:22 । उद्धारकर्ता स्वर्ग के पिता के राज्य का द्वार खोलेगा ।
ख. यशायाह 24:21...22 । उद्धारकर्ता उनपर दया दिखाते है जो वह आत्मिक कैद में हैं ।
ग. यशायाह 25:1...4; 32:1...2 । उद्धारकर्ता ताकत और शरणस्थान है ।
घ. यशायाह 25:6...9 । उद्धारकर्ता उत्तम भोजन तैयार करेगा और ''पर्दा'' के नाश करेगा ।
च. यशायाह 25:8 । उद्धारकर्ता हमारे आसुंओं को पोंछे डलेगा ।
छ. यशायाह 26:19 । उद्धारकर्ता पुनरुत्थान लायेगा ।
ज. यशायाह 28:16 । उद्धारकर्ता हमारी दृढ़ नींव है ।
झ. यशायाह 29:4, 9...14, 18, 24 । उद्धारकर्ता सुसमाचार को पृथ्वी पर पुनःस्थापित करेगा ।
त. यशायाह 30:19...21 । उद्धारकर्ता हमारी परिक्षाओं और सही मार्गों को जानता है ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

कक्षा के सदस्यों से परिवार के एक ऐसे सदस्य या मित्र के बारे में बताएं जिसने आपके लिए कुछ विशेष किया है । कक्षा के सदस्यों को ऐसे लोगों के विषय में बताने के लिए आमंत्रित करें जिन्होंने उनके लिए कुछ विशेष किया है । उन लोगों के प्रति उनकी अनुभूतियों को संक्षिप्त में बताने के लिए कहें । समझाएं कि इस पाठ में उनमें से कुछ विशेष बातों पर जोर दिया जायेगा जो उद्धारकर्ता ने किये हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

समझाएं कि भविष्यवक्ता यशायाह ने उसकी अधिकतर शिक्षा प्रतीकात्मक भाषा में दी थी । यह भाषा प्रत्यक्षरूप से नहीं सीखाती है, इसलिए हमें यशायाह के वचनों को समझने के लिए उनकी जांच और उनपर मनन करना चाहिए ।

यशायाह की अति सुन्दर और गुढ़ सांकेतिक भाषा उद्धारकर्ता के विषय में है, जो कि इस पाठ का केन्द्र है । आप चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं *''उसका नाम अभ्दुत युक्ति करने वाला''* (याशायाह 9:6) । जब आप उद्धारकर्ता के विषय में निम्नलिखित भविष्यवाणियों की चर्चा करते हो, प्रत्येक को चॉकबोर्ड पर संक्षिप्त करें ।

1. उद्धारकर्ता स्वर्ग के पिता की उपस्थिति के द्वार खोलता है ।

यशायाह 22:22 की चर्चा करें ।

- यशायाह 22:22 बताता है कि मसीहा के पास ''दाऊद के घर की कुंजियां हैं ।'' यह एक सांकेतिक तरीका है यह कहने का कि उद्धारकर्ता के पास किसी भी व्यक्ति को स्वर्गीय पिता की उपस्थिति में भेजने या निकालने का अधिकार है । (प्रकाशितवाक्य 3:7...8; 2 नफी 9:41 भी देखें) हमारे लिए यह द्वार खोलने के लिए उद्धारकर्ता क्या करता है ? हमें यहां प्रवेश करने के योग्य होने के लिए क्या करना चाहिए ? (देखें 2 नफी 9:45)

2. जो आत्मिक कैद में हैं उद्धारकर्ता उन पर दया दिखाता है ।

यशायाह 24:21...22 की चर्चा करें ।

- यशायाह 24:21...22 में बताई गई आत्मिक कैद क्या है ? (आत्मिक कैद, वह स्थान है जहां मृत लोगों की आत्माएं पुनरूत्थान की प्रतिक्षा करती हैं ।) क्यों कुछ मृत लोगों की आत्माएं आत्मिक कैद में रहती है ? (देखें सि.और अनु. 138:32 । उन में से कुछ ने पृथ्वी पर सुसमाचार को ग्रहण नहीं किया था, और अन्य अपनी गवाहियों में कमजोर थे ।)

- उद्धारकर्ता आत्मिक कैद में बन्द आत्माओं के लिए क्या करता है ? (देखें यशायाह 42:5...7; सि.और अनु. 138:29...37 देखें । वह धार्मिक आत्माओं को उन्हें सुसमाचार सीखाने के लिए नियुक्त करता है ।) इससे कैसे उद्धारकर्ता का प्रेम और दया का प्रदर्शन होता है ? (देखें यशायाह 49:9...10)

3. उद्धारकर्ता बल और शरणस्थान है ।

यशायाह 25:1...4; 32:1...2 की चर्चा करें ।

- यशायाह ने उद्धारकर्ता के हमें हमारे जीवन की आंधी, बौछार, रेगिस्तान और तप्त भूमि में बल देने के विषय में लिखा था । निम्नलिखित चित्रण चुनौतियों का सामना करने में उद्धारकर्ता की मदद के विषय में क्या सीखाते हैं ?

  क. वह तुफान में शरणस्थान है (यशायाह 25:4) ।
  ख. वह तपन में छाया है (यशायाह 25:4) ।
  ग. वह आंधी से छिपने का स्थान है (यशायाह 32:2) ।
  घ. वह बौछार से आड़ है (यशायाह 32:2) ।
  च. वह निर्जल देश में जल का झरना है (यशायाह 32:2) ।
  छ. वह तप्त भूमि में बड़ी चट्टान की छाया है (यशायाह 32:2) ।

4. उद्धारकर्ता उत्तम भोजन तैयार करेगा और ''पर्दे'' का नाश करेगा ।

यशायाह 25:6...9 की चर्चा करें ।

- यशायाह 25:6...7 का एक भावार्थ यह कि पर्वत मन्दिर को दर्शाता है (यशायाह 2:2; सि.और अनु.58:8...9 भी देखें) । यशायाह 25:6 में बताया गया उत्तम भोजन क्या है ?(मसीह के वचन और शिक्षाओं का उत्तम भोजन) कैसे मन्दिर जाना उत्तम भोजन को ग्रहण करने के समान है ?

- पर्दा एक पतला सा आवरण होता है । प्रतिकात्मक रूप से यह अक्सर यह लोगों को मसीह के पास आने से रोकने के अविश्वास को दर्शाता है (मूसा 7:26) । कैसे यह ''पर्दा'' जोकि पृथ्वी के ऊपर है नाश किया जायेगा ? (देखें यशायाह 25:7...9)

5. उद्धारकर्ता हमारे आंसुओं को पोंछ डालता है ।

यशायाह 25:8 की चर्चा करें ।

- आप क्या करते हैं जब आपका कोई प्रियजन रोता है ? उद्धारकर्ता किस प्रकार ''[हमारे] आंसुओं को पोंछ डालता है''? (कक्षा के सदस्यों से अपने मनों में एक चित्र का विचार करने को कहें, जिसमें माता-पिता बच्चे के चेहरे से आंसु पोंछ रहे हैं । इस कार्य में घनिष्ठता की अनुभूति होती है । यह एक कोमल भाव जोकि उनके बीच होती है जो एक दूसरे से अत्याधिक प्यार और विश्वास करते हैं ।)

- प्रकाशितवाक्य 21:4 में बताई गई स्थितियां क्या हैं जिनके कारण आंसु आते हैं ? उद्धारकर्ता किस प्रकार इन स्थितियों से उत्पन्न आंसुओं को पोंछता है ?

6. उद्धारकर्ता पुनरूत्थान लाएगा ।

यशायाह 26:19 की चर्चा करें ।

- यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि जब मसीहा आएगा, वह मारा जायेगा और पुनःजीवित होगा (यशायाह 25:6) । और कौन जीवित होंगे ? (देखें यशायाह 26:19; 1 कुरिन्थियों 15:20...22; अलमा 11:43...44 । परमेश्वर की सभी सन्तान जो इस पृथ्वी पर रही हैं पुनःजीवित होंगी ।) पुनःजीवित होने पश्चात हमारी भावनाओं के बारे में यशायाह 26:19 क्या सुझाव देता है ? (सि. और अनु. 138:12...16, 50 भी देखें)

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा थाः ''जब मृतकों जी उठने की आवाज दी जायेगी,... मेरे हृदय का प्रथम आनन्द क्या होगा ? अपने पिता, अपनी माता, अपने भाई, अपनी बहन से मिलना, और जब वे मेरे बगल में होंगे, मैं उनको गले लगाऊंगा और वे मुझे'' (*Teachings of the Prophet Joseph Smith,* sel. Joseph Fielding Smith [1976], 295...96)

7. उद्धारकर्ता मेरी दृढ़ नींव है ।

यशायाह 28:16 की चर्चा करें ।

- यशायाह हमें क्या बताता है जब वह उद्धारकर्ता को एक ''योग्य पत्थर'' कहता है ? (देखें मूसा 7:53) यीशु मसीह किस प्रकार हमारी ''दृढ़ नींव'' है ? (देखें इलामन 5:12) हम इस नींव पर निर्माण करने के लिए क्या कर सकते हैं ? प्रभु हमसे क्या प्रतिज्ञा करता है यदि हम इस नींव पर निर्माण करते हैं ? (देखें सि.और अनु. 50:44)

8. उद्धारकर्ता पृथ्वी पर सुसमाचार फिर से स्थापित करेगा ।

यशायाह 29:4, 9...14, 18, 24 की चर्चा करें ।

- यशायाह अन्तिम-दिनों में सुसमाचार की पुनःस्थापना के भविष्य के बारे में क्या देखता है ? (देखें यशायाह 29:4, 9...14 । उसने देखा था कि यह आत्मिक अन्धकार के समय पर होगा । उसने मॉरमन की पुस्तक का आना भी देखा था ।)

यशायाह 29 की निम्नलिखित आयतों को उनके सामने लिखे मॉरमन की पुस्तक, अनमोल मोती, और सिद्धान्त और अनुबन्ध के अनुच्छेदों से यह देखने के लिए तुलना करें कैसे यशायाह की कुछ भविष्यवाणियां पूरी हुई हैं:

क. यशायाह 29:4	मरोनी 10:27
ख. यशायाह 29:9...10, 13	जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:18...19
ग. यशायाह 29:11...12	जोसफ स्मिथ— इतिहास 1:63...65
घ. यशायाह 29:14	सिद्धान्त और अनुबन्ध 4:1; 6:1

- यशायाह ने लोगों को मुंह से यहोवा के निकट परन्तु मनों से दूर होने के विषय में कहा था (यशायाह 29:13) । हम यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं कि अपने विचारों एवं कार्यों के साथ साथ अपने वचनों में भी उसके निकट हैं ?
- यशायाह ने कहा था कि मॉरमन की पुस्तक आत्मिक रूप से बहरे और अन्धों को सुनने एवं देखने में सहायता करेगी (यशायाह 29:18, 24) । यह भविष्यवाणी कैसे पूरी हुई थी ? कैसे मॉरमन की पुस्तक ने आपको आत्मिक रूप से बेहतर देखने एवं सुनने में सहायता की है ?

9. उद्धारकर्ता हमारी परिक्षाओं के विषय में जानता है तथा हमारे मार्ग का निर्देशन करता है ।

यशायाह 30:19...21 की चर्चा करें ।

- यशायाह 30:19...21 विपत्ति के समय के विषय में क्या सीखाता है ? ये आयतें क्या सीखाती हैं कि उद्धारकर्ता हमारे लिए विपत्ति के समय क्या करेगा ? (अलमा 37:37 भी देखें)

निष्कर्ष

हमारे लिए किये गये आश्चर्यजनक कामों का आभार प्रकट करते हुए, उद्धारकर्ता के विषय में अपनी गवाही दें । कक्षा के सदस्यों को चॉकबोर्ड पर लिखी सूची की जांच करने और यह बताने के लिए कि वे इन बातों के बारे में कैसा महसूस करते हैं, आमंत्रित करें । चर्चा करें कि हम इसका बदला चुकाने के लिए क्या कर सकते हैं । (कुछ सुझावों के लिए यशायाह 35:3...4 देखें) । आप कक्षा के सदस्यों को "Stand All Amazed" (*Hymns,* no. 193)

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. वस्तुएं जो यशायाह के मन के विचारों को दर्शाती हैं ।

जब आप यशायाह के मन विचारों के विषय में चर्चा करते हो तो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं या उनके चित्रों को दिखाएं जो इन मन के विचारों को दर्शाती हैं, जैसे चाभी, पत्थर, या मरूभूमि में छाया का चित्र ।

2. जार्ज फैडरिक हेन्डल द्वारा रचित *मसीहा* से संगीत

जार्ज फैडरिक हेन्डल की यशायाह 9:6 के संगीत प्रस्तुति *मसीहा* में से ''हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ'' का संगीत बजाओ

3. ''स्वामी के हाथ का स्पर्श''

यदि *Family Home Evening Video Supplement 2* (53277) उपलब्ध है, तो आप ''स्वामी के हाथ का स्पर्श'', 18 मिनट का भाग पाठ के हिस्से के रूप में दिखा सकते हैं ।

''मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं''

पाठ
38

यशायाह 40...49

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों की यह समझने में सहायता करना कि अपने लोगों के प्रति यीशु मसीह के स्नेह की तुलना किसी अन्य के साथ नहीं की जा सकती है और वह चाहता है कि उसके लोग महान कार्य करें ।

तैयारी

1. प्राथर्नापूवर्क यशायाह 40...49 में से उन अनुच्छेदों का अध्ययन करें जिनकी चर्चा पाठ में की जाती है ।
2. यदि आपने ध्यान गतिविधि का चुनाव किया है, तो निम्नलिखित उद्धरण को पोस्टर या चॉकबोर्ड पर कक्षा शुरू होने से पहले लिखें:

   क. ''मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो ?'' (मत्ती 22:42) ।
   ख. ''तुम्हें किस तरह का व्यक्ति होना चाहिए ?'' (3 नफी 27:27) ।
   ग. ''लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं ?.... तुम मुझे क्या कहते हो ?'' (मत्ती 16:13, 15) ।
   घ. ''कौन यहोवा की ओर है ?'' (निर्गमन 32:26) ।
   च. ''क्या तुमने अपनी आकृति में उसकी किरणों को प्राप्त किया है'' (अलमा 5:14) ।

3. यदि *Family Home Evening Video Supplement 2* (53277) उपलब्ध है, तो आप ''तुम मसीह के बारे में क्या सोचते हो'' पांच मिनट का भाग पाठ के हिस्से के रूप में दिखा सकते हैं ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

कक्षा के सदस्यों को आपने जो उद्धरण पोस्टर या चॉकबोर्ड पर लिखा है उसे दिखाएं (ऊपर ''तैयारी'' देखें) । फिर निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- इन सब उद्धरणों में क्या बात समान है ? (यह सभी उद्धरण धर्मशास्त्रों से लिये गये है जोकि उद्धारकर्ता के प्रति हमारी गवाही तथा उसके शिष्य बनने की हमारी कटिबद्धता का मूल्यांकन करने में सहायता करते हैं ।) आप क्यों सोचते हैं कि धर्मशास्त्रों में इस प्रकार के कई प्रश्न हैं ?

समझाएं कि पाठ के इस भाग में धर्मशास्त्र के उन प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया है जो उद्धारकर्ता की महानता पर जोर डालते हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यशायाह सीखाता है कि उद्धारकर्ता की तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती है ।

- यशायाह के द्वारा, यहोवा एक ही प्रश्न को विभिन्न तरीकों से पूछता है । निम्नलिखित आयतों में क्या प्रश्न पूछा गया है ?

  क. यशायाह 40:18 (''तुम ईश्वर को किस के समान बताओगे ?'')
  ख. यशायाह 44:8 (''क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है ?'')
  ग. यशायाह 46:5 (''तुम किस से मेरी उपमा दोगे और मुझे किस के समान बताओगे, किस से मेरा मिलान करोगे कि हम एक समान ठहरे ?'')

- आगे दिये गए प्रश्नों में क्या समानता है ? (ये सभी सीखाते हैं कि उद्धारकर्ता किसी भी व्यक्ति या वस्तु से महान है हम उसकी तुलना किसी से नहीं कर सकते हैं ।) आप इन प्रश्नों का उत्तर कैसे दोगे ? इनका उत्तर यशायाह की पुस्तक में कैसे दिया गया है ? (नीचे लिखी आयतों को देखें, ध्यान दें की यहोवा मूर्तिपूजकों से बात कर रहा था जिन्होंने अपने लिए सोने तथा चांदी से झूठे ईश्वर का निर्माण किया था ।)

क. यशायाह 43:11 (''मुझे छोड़ कोई उद्धारकर्ता नहीं ।'')
ख. यशायाह 44:6 (''मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं ।'')
ग. यशायाह 45:5 (''मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं''; इन आयतों को भी देखें 6, 14, 18, 21...22 ।)
घ. यशायाह 46:9 (''मैं ही परमेश्वर हूं और मेरे तुल्य कोई नहीं ।'')

- आप क्यों सोचते हैं कि यह प्रश्न और उत्तर यशायाह की पुस्तक में बार बार दोहराये गये हैं ? किस प्रकार ये प्रश्न व उत्तर हमारे समय से सम्बन्ध रखते हैं ?

2. यशायाह उद्धारकर्ता के अतुल्यनीय गुणों की व्याख्या करता है ।

- भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने सीखाया था कि हमें परमेश्वर पर विश्वास करने के लिए ''उसके चरित्र, सम्पूर्णता और गुणों की *सही* धारणा हमें होनी चाहिए (*Lectures on Faith* [1985], 38) । यशायाह ने उद्धारकर्ता के चरित्र और गुणों की बहुत सी सुन्दर व्याख्याएं दी हैं । कक्षा के सदस्यों को नीचे लिखें कुछ अनुच्छेदों को पढ़ने दो और निम्नलिखित प्रश्नों पर चर्चा करोंः इस अनुच्छेद में उद्धारकर्ता के कौन से गुण को बताया गया है ? किस प्रकार इस गुण को जानकर हमें उद्धारकर्ता में अपना विश्वास बढ़ाने में सहायता मिलती है ? आप इन गुणों को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हो ।

  क. यशायाह 40:13...14 (उसे कोई सलाह या निर्देश नहीं देता है ।)
  ख. यशायाह 40:28...31 (वह कभी थकता नहीं; वह हमें बल देता है ।)
  ग. यशायाह 40:12, 21...22, 26; 45:12, 18 (उसने ब्रह्माण्ड की योजना बनाई तथा इसकी रचना की थी और इसके प्रत्येक भाग को जानता है ।)
  घ. यशायाह 41:17...18 (जब हम परेशानी में होते हैं वह हमारी सुनता है तथा बहुतायत से आशीषें देता है ।)
  च. यशायाह 42:1, 4 (जब तक उसका उद्देश्य पूरा न हो जाए वह न तो असफल होगा न ही हतोत्साहित ।)
  छ. यशायाह 42:16 (वह अपने भटके हुए लोगों के मार्गों को प्रकाश दिखाता तथा बल देता है ।)
  ज. यशायाह 43:1...4 (वह अपने लोगों की विपत्ति के समय सहायता करता है ।)
  झ. यशायाह 43:25...26; 44:21...23 (वह हमारे पापों को मिटा देता है और उन्हें कभी याद नहीं रखता ।)
  त. यशायाह 44:2...4 (वह अपनी आत्मा को हमारे परिवारों पर सूखी भूमि पर जल की तरह उंडेलता है ।)
  थ. यशायाह 46:3...4 (वह अपने लोगों को जन्म से लेकर बुढ़ापे तक मार्ग दिखाता है ।)
  द. यशायाह 49:14...16 (वह हमें कभी नहीं भूलेगा । हम उसके हाथ की हथेलियों पर ''खुदी हुई'' रेखाओं के समान हैं ।)

  कक्षा के सदस्यों को अपने अनुभवों को बताने के लिए आमंत्रित करें जिसमें उद्धारकर्ता के किसी भी गुण ने उनकी गवाही को बल दिया हो ।

3. हमारी भक्ति के लिए संसार (बाबुल) उद्धारकर्ता के समर्थ होने की कोशिश करता है ।

- यशायाह 47 किसको दर्शाता है ? (आयत 1 को देखें । बाबुल प्राचीन संसार का एक शक्तिशाली शहर था जोकि अपनी दुष्टता के कारण नाश कर दिया गया था । धर्मशास्त्रों में, बाबुल अक्सर संसार की दुष्टता के लिए प्रयोग किया जाता है ।)

- अध्याय 47 में, यशायाह बाबुल को चेतावनी देता है उसे उसकी दुष्टता के लिए नाश कर दिया जायेगा । ये चेतावनियां संसार के विनाश और इसकी दुष्टता के लिए भी प्रयोग की जा सकती हैं । संसार के दुष्ट तरीकों को खोजने के परिणामों के बारे में निम्नलिखित अनुच्छेद क्या सीखाते हैं ?

  क. यशायाह 47:1, 5 (संसार को धुल में मिला दिया जायेगा और यह शान्त तथा अन्धकार हो जायेगा ।)
  ख. यशायाह 47:7...9 (संसार के इस विचार के बावजूद कि यह अजय है, इसका नाश कर दिया जायेगा और बेशकीमती वस्तुओं का खोना, पति तथा बच्चों के खोने का प्रतीक है ।)
  ग. यशायाह 47:10...11 (क्योंकि संसार ने घोषणा की है कि वह परमेश्वर से महान है, यह अनाथ हो जायेगा ।)

- यशायाह 47:8, 10, बाबुल (संसार) क्या घोषणा करता है जोकि उद्धारकर्ता की घोषणा के समान है ?(''सिर्फ मैं ही हूं, और मेरे सिवाय अन्य कोई नहीं है ।'') संसार उद्धारकर्ता की तुलना में क्या दे सकता है ? अधिकतर लोग उद्धारकर्ता के स्थान पर संसार से इतना स्नेह क्यों रखते हैं ? अन्य लोग उद्धारकर्ता के सेवाओं के बारे में जाने इसके लिए हम क्या कर सकते हैं ?

- यशायाह 48:17...18, यहोवा उन लोगों से महान आशीर्वादों का वादा करता है जो संसार के स्थान पर उसकी खोज करते हैं । किस प्रकार ये वादे आपको उद्धारकर्ता का अनुसरण पूरे हृदय से करने की अनुभूति देते हैं ?

4. यशायाह अन्तिम-दिन के इस्राएल के मिशन की व्याख्या करता है ।

- यशायाह 49 में अन्तिम-दिन के इस्राएल की बहुत सी भविष्यवाणियां सम्मिलित हैं । ये भविष्यवाणियां हम सब के लिए प्रभु के महत्वपूर्ण काम को समझने में सहायता करती हैं । कक्षा के सदस्यों को नीचे लिखे कुछ अनुच्छेदों को पढ़ने के लिए कहें और निम्नलिखित प्रश्न की चर्चा करें: इन अन्तिम दिनों में हमारी जिम्मेदारियों के विषय में ये अनुच्छेद क्या सीखाते हैं ? (ध्यान दें कि बहुत सी भविष्यवाणियां, इस्राएल के घराने में उद्धारकर्ता के कार्यों और उसके लोगों के कार्यों दोनों पर लागू होती हैं [यशायाह 49:3] ।)

  क. यशायाह 49:1, 5 । ''यहोवा ने मुझे गर्भ ही से बुलाया ।'' (हम अपने जन्म से ही प्रभु के काम के लिये अन्तिम दिनों में नियुक्त किया गया है; यिर्मयाह 1:5 भी देखें ।)

  ख. यशायाह 49:2 । ''उसने मेरे मुंह को चोखी तलवार के समान बनाया ।'' (यह रूप सच्चाई के प्रभावपूर्ण वचनों—प्रभु के वचनों को बोलना बताता है; सि.और अनु. 6:2 भी देखें ।)

  ग. यशायाह 49:2 । ''अपने हाथों की आड़ में मुझे छिपा रखा ।'' (प्रभु ने हमें बचाया है और हमें महान जिम्मेदारियों के लिए तैयार किया है; सि.और अनु. 86:9 भी देखें ।)

  घ. यशायाह 49:2 । ''उसने मुझे चमकीला तीर बनाकर... गुप्त रखा ।'' (चमकीला तीर हवा में सीधा और सही उड़ेगा । हमें प्रभु ने चमकीला और तैयार किया ताकि वह हमें जहां कहीं भी भेजे हम सीधे और सच्चे काम करें ।)

  च. यशायाह 49:6 । ''मेरा उद्धार पृथ्वी की एक छोर से दूसरी छोर तक फैल जाए ।'' (प्रभु ने अपने सेवकों से उठने को और इस्राएल के अवशेषों को एकत्र करने को तथा अन्य जातियों के लिए ज्योति होने को कहा है । इस तरीके से हम उद्धार को पृथ्वी के अन्त तक ले जाने में सहायता करेंगे; सि.और अनु. 86:8...11 ।)

निष्कर्ष

गवाही दें कि यशायाह के लेख हमें उद्धारकर्ता के लिए अधिक प्रेम और उस काम के प्रति जो वह हमसे करवाना चाहता है अधिक समझ उत्पन्न करने में सहायता कर सकते हैं ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. यशायाह द्वारा प्रयोग किये गये प्रतीक

- यशायाह ने बार बार अन्धेपन को दुष्टता और आत्मिक लापरवाही के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया है (यशायाह 29:10, 18; 32:3; 42:6...7, 16...18; 43:8; 44:9) । जब आप इन आयतों पर मनन करें, याद करें कि उद्धारकर्ता ने अक्सर घोषणा की थी कि वह जगत की ज्योति है (यूहन्ना 8:12) । हम कैसे अपनी आंखों को जगत की ज्योति के लिए आत्मिक रूप से खोल सकते हैं ?

- यशायाह बार बार जल की छवि का प्रयोग किया है (यशायाह 12:3; 32:2; 41:17...18; 43:19...20; 44:3...4; 48:18, 21; 49:10) । कैसे उद्धारकर्ता की शिक्षा कि वह जीवन जल है आपको इस अनुच्छेद को समझने में सहायता करता है ? (यूहन्ना 4:7...14)

2. यहोवा की बाट जोहना

- ''यहोवा की बाट जोहना'' इसका क्या अर्थ है ? (यशायाह 40:31) । किस प्रकार वह उनकी शक्ति को नवीन करता है जो उसकी बाट जोहते हैं ? (देखें यशायाह 41:10) कक्षा के सदस्यों को प्रभु द्वारा किसी व्यक्ति की आत्मिक या शारीरिक शक्ति को नवीन करने के अनुभव बांटने के लिए आमंत्रित करो ।

3. ''तूने मुझसे प्रार्थना नहीं की''

- क्यों हम से कुछ लोग कभी कभी महसूस करते हैं कि प्रभु ने उनको अकेला छोड़ दिया है ? यदि हम महसूस करते हैं कि प्रभु ने हमें छोड़ दिया है, असली कारण क्या हो सकता है ? (देखें यशायाह 43:22...26; मुसायाह 5:13) हम फिर से उसके निकटता महसूस करने के लिए क्या कर सकते हैं ?

  अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यु. किम्बल ने कहा था: ''मैंने पाया है कि जब मैं ईश्वर के साथ अपने सम्बन्धों में लापरवाह होता हूं और जब ऐसा लगता है कि कोई दिव्य कान नहीं सुन रहे एवं कोई दिव्य आवाज बात नहीं कर रही है, कि मैं बहुत, बहुत दूर हूं । यदि मैं धर्मशास्त्रों में विलीन हो जाता हूं ये दूरियां कम हो जाती हैं और आत्मिकता लौट आती है'' (*The Teachings of Spencer W. Kimball,* ed. Edward L. Kimball [1982], 135)

पाठ
39

''पहाड़ पर उसके पांव क्या ही सुहावने हैं''

यशायाह 50...53

उद्देश्य

कक्षा के प्रत्येक सदस्य की यीशु मसीह के बलिदान की गवाही को बल देना ।

तैयारी

1. यशायाह 50...53 के उन अनुच्छेदों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें जिनकी इस पाठ में चर्चा की गई है । ये उद्धारकर्ता के प्रायश्चित के बलिदान पर केन्द्रित हैं ।
2. अतिरिक्त पढ़ाई:मुसायाह 14...15 ।
3. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, तो कक्षा के दो या तीन सदस्यों को उद्धारकर्ता के प्रेम और बलिदान के बारे में पसंदीदा स्तुतिगीत चुनने और कक्षा में इस स्तुतिगीत के संदेश तथा इसने कैसे उन्हें प्रभावित किया बताने के लिए कहें । आप उद्धारकर्ता के बारे में अपने पसंदीदा स्तुतिगीत के बारे में बताना चाहेंगे ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हो ।

व्याख्या करें कि गिरजे के स्तुतिगीत हमें उद्धारकर्ता के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा उसके प्यार को समझने में सहायता करते हैं । कक्षा के प्रत्येक नियुक्त सदस्य को उद्धारकर्ता के प्यार और बलिदान के बारे में उनके प्रिय स्तुतिगीत को बताने के लिए बुलाएं । क्योंकि संगीत उद्धारकर्ता की आत्मा के एहसास को कक्षा में महसूस करने मदद कर सकता है, आप कक्षा के सदस्यों को चर्चा किया हुआ स्तुतिगीत गाने के लिए कह सकते हो ।

समझाएं कि इस पाठ में उद्धारकर्ता के जीवन और उद्देश्य के विषय में यशायाह की कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करेगें ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यशायाह एक संदेशवाहक के बारे में बताता है जो खुशी का समाचार लाता है ।

- यशायाह 52:7, यशायाह काव्य रूप में महान संदेश लाने वाले लोगों के विषय में बताता है । आप क्यों सोचते हैं कि यशायाह संदेशवाहक के पैरें को क्यों संदर्भ करता है ? (प्राचीन संसार में, इलेक्ट्रोनिक संचार सेवा से पहले, महत्वपूर्ण संदेश अक्सर पैदल चलकर ही एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाए जाते थे । यशायाह संदेशवाहकों के पैरों का प्रयोग संदेशवाहकों को दर्शाने के लिए करता है ।) यशायाह इन संदेशवाहकों के बारे में कैसे महसुस करता है ?
- पहुंचाए जाने वाले संदेश की यशायाह कैसे व्याख्या करता है ? (यह एक खुशी का समाचार, शांति एवं मुक्ति का संदेश है ।) मॉरमन की पुस्तक का भविष्यवक्ता समझाता है कि यशायाह द्वारा दिया गये संदेश में भविष्यवक्ता और स्वयं प्रभु शामिल हैं (मुसायाह 15:13...18) । शांति के और मुक्ति के कौन से महान संदेश ये संदेशवाहक लाये थे ? (देखें 2 नफी 2:6...8)
- और कौन सुसमाचार के संदेश इस संसार में लाते हैं ? आप कक्षा के सदस्यों से सुसमाचार के संदेशों को बाटने में उनके अनुभवों को बताने के लिए कह सकते हो । आप कक्षा के सदस्यों से जो इन संदेशों को लाये हैं उनके बारे में उनकी अनुभूति बताने के लिए भी कह सकते हो ।

2. यशायाह ने उद्धारकर्ता के प्रायश्चित के बलिदान की भविष्यवाणी की ।

उद्धारकर्ता के प्रायश्चित के बलिदान के विषय में निम्नलिखित भविष्यवाणियों और इससे मिलने वाले आशीषों की चर्चा करें ।

- यशायाह 50:5...7 । हम सब के लिए किये इस महान बलिदान के विषय में उद्धारकर्ता के दृष्टिकोण के विषय में यह अनुच्छेद क्या सीखाता है ? मत्ती 26:39 और फिल्लिपियों 2:8 महान दुख का सामना करने के उद्धारकर्ता के दृष्टिकोण के विषय में क्या बताते हैं ?

- यशायाह 51:6 । इस आयत में क्या तुलना की गई है ? प्रायश्चित का प्रभाव कब तक रहेगा ? (मुसायाह 16:9; अलमा 34:10, 14 भी देखें ।)
- यशायाह 51:22 । उद्धारकर्ता ने किस के लिए विनय की थी ? प्रायश्चित किस प्रकार उसे हमारे वकील होने की आज्ञा देता है ? (सि.और अनु. 45:3...5 भी देखें ।) लड़खड़ा देने वाले मद का प्याला क्या है जिसे यीशु ने हमारे लिए पीया था ? (देखें सि.और अनु. 19:15...20 ।) प्रायश्चित द्वारा दिये गए सम्पूर्ण आशीर्वाद को पाने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?
- यशायाह 52:3 । ''बिना रुपये दिये छुड़ाए गये'' का क्या अर्थ है ? (देखें 2 नफी 26:27...28; यशायाह 55:1...3 ।)
- यशायाह 53:2...4 । ये आयतें हमें उद्धारकर्ता के जीवन के विषय में क्या बताती हैं ? वह क्यों हमारे दुखों और दर्द को समझ सकता है ? (देखें अलमा 7:11...13; इब्रानियों 2:16...18; 4:15 ।) आपने कैसे महसुस किया है कि वह हमारे दुखों और दर्दो को समझ सकता है ?
- यशायाह 53:5 । क्यों उद्धारकर्ता घायल किये जाने, चोट खाए जाने, और कोड़े खाने के लिए तैयार था ? (देखें 1नफी 19:9)
- यशायाह 53:6...7 । उद्धारकर्ता ने किन गुणों का प्रदर्शन किया था जब उसे अपमानित किया गया, यातना दी गई, और हमारे दोषों को सहना पड़ा था ? कैसे हम कभी कभी परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने की बजाए ''अपने स्वयं के मार्ग'' पर चलते हैं ? किस प्रकार उद्धारकर्ता का उदाहरण हमें परमेश्वर के इच्छा पर चलने में सहायता करता है ?
- यशायाह 53:10 । यशायाह का क्या अर्थ था जब उसने कहा कि ''यहोवा को यही भाया कि उसे (उद्धारकर्ता को) कुचले''? इस अनुच्छेद से हम अपने लिए स्वर्गीय पिता के प्रेम के विषय में क्या सीख सकते हैं ? (यूहन्ना 3:16...17 भी देखें)
- यशायाह 53:8...11 । समझाएं कि मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता अभिनन्दी ने इन आयतों पर एक प्रभावशाली टिप्पणी की थी जब वह राजा नूह के दुष्ट याजकों को सम्बोधन कर रहा था (मुसायाह 15:10...13) । अभिनन्दी के अनुसार, उद्धारकर्ता की सन्तान कौन होगा ? (मुसायाह 5:7...8 भी देखें ।)
- यशायाह 53:12 । समझाएं कि युद्ध के अन्त में, विजयी सेना के सेनापति कब्जे में ली गई सम्पत्ति को अपने अनुचरों के बीच बांटता है । पाप और मृत्यु पर विजय के क्या प्रतिफल हैं जो मसीह हमारे साथ बांटना चाहता है ? (देखें रोमियों 8:16...17; 2 तीमुथियुस 4:7...8 ।)

3. यशायाह कुछ जिम्मेदारियों की व्याख्या करता है ।

- जैसा कि यशायाह 51 और 52 में अभिलेख किया गया है, उद्धारकर्ता के प्रायश्चित को स्वीकार करने के रूप में हमारा क्या जिम्मेदारियां है ?

  क. यशायाह 51:1, 4,7 । प्रभु को सुनना और उसकी आज्ञा का पालन करे; मनुष्य के अपमान से भय न खांयें ।
  ख. यशायाह 51:12...13 । प्रभु को याद रखें, जोकि सृष्टिकर्ता है । शैतान से न डरें ।
  ग. यशायाह 52:1...2 । जोगो और पौरोहित्य की शक्ति को ओढ़ लो (देखें सि.और अनु. 113:7...8) । धार्मिकता के सुन्दर गारमेन्ट को पहनो (देखें प्रकाशितवाक्य 19:7...8) । ''अपनी गर्दनों के बन्धनों को खोल दो'' (देखें सि.और अनु. 113:9...10) ।
  घ. यशायाह 52:11 । संसार की दुष्टता से दूर रहो । अशुद्ध वस्तु मत छुओ; शुद्ध रहो ।

- हम कैसे इन जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से पूरा कर सकते हैं ?

निष्कर्ष

मुसायाह 15:18 पर विचार करें, जिसमें भविष्यवक्ता अभिनन्दी ने उद्धारकर्ता को एक सन्देशवाहक के समान समझाया था जिसके पैर पर्वत पर सुन्दर हैं । समझायें कि एक कारण से उसके पैर सुन्दर हैं क्योंकि उनके ऊपर, उसके प्रायश्चित के प्रेम के प्रमाण, कीलों के निशान हैं । गवाही दें कि किस प्रकार यशायाह की शिक्षाओं ने उद्धारकर्ता के प्रति आपके प्रेम और उसकी प्रायश्चित के बलिदान की आशिषों के लिए योग्य होने की इच्छा को बल दिया है । कक्षा के सदस्यों को उनकी गवाहियों को बांटने के लिए कहो जिन से उन्हें भी बल मिला है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. प्रकाश में चलना

यशायाह 50:10...11 पर विचार करें और इन आयतों में यशायाह द्वारा हमें दिये गए चुनाव पर ध्यान आकर्षित करें । यदि हम यहोवा से भय का चुनाव करें, उसके सेवकों के वचनों का पालन करें, और उसका विश्वास करें, हमें उसकी ज्योति का मार्गदर्शन मिलेगा और हम कभी अन्धकार में न भटकेंगे (यूहन्ना 8:12; 12:46) । यदि हम अपनी स्वयं की ज्योति में चलने का चयन करेंगे, जिसकी तुलना चमक के साथ की जाती है, प्रभु हमें चेतावनी देता है कि हमें ''दुख के सिवाय कुछ नहीं मिलेगा'' ।

2. प्रचारक कार्य

यदि *Family Home Evening Video Supplement 2* (53277) उपलब्ध है, आप इसके ''प्रचारक कार्यः हमारी महानतम जिम्मेदारी,'' पांच मिनट के भाग को पाठ के हिस्से के रूप में दिखाना चाहेंगे ।

''अपने तम्बू का स्थान चौड़ा कर''

पाठ
40

यशायाह 54...56; 63...65

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सिय्योन के स्टेक को बल देने और मसीह के दुबारा आने की तैयारी करने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. इस पाठ में चर्चा किये गये यशायाह 54...56 और 63...65 के अनुच्छेदों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें ।
2. यदि आपने ध्यान गतिविधि का चुनाव किया है, तो एक तम्बू लेकर आयें ।
3. यदि पुनःजीवित यीशु मसीह का चित्र उपलब्ध है, आप उसे पाठ के दौरान प्रयोग कर सकते हैं (62187; सुसमाचार कला चित्र किट 239) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

नीचे बताए गए चित्र के अनुसार चॉकबोर्ड पर तम्बू बनाएं । फिर तम्बू को दिखाएं और निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें ।

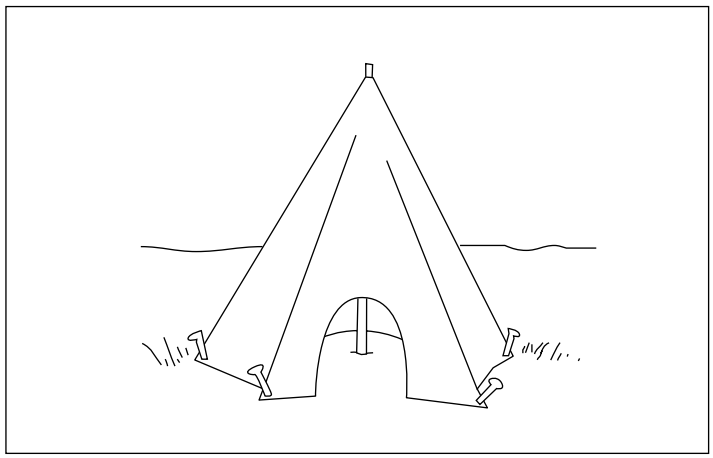

- इस तम्बू को *खूंटे* की आवश्यकता क्यों है ? क्या होता यदि तम्बू को स्टेकों का सहारा नहीं मिलता ?
- यशायाह 54:2 में बताया गया तम्बू क्या दशार्ता है ? (यीशु मसीह का गिरजाघर) तम्बू में *खूंटा* क्या दशार्ता है ?

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः

''शब्द *खूंटा* एक प्रतीकात्मक रूप है । आपने दिमाग में एक बड़े-से तम्बू का चित्र बनाएं जिसे रस्सियों के सहारे कई *खूंटों* से जमीन पर मजबूती से गाढ़ा हुआ है ।

''भविष्यवक्ता अन्तिम-दिनों के सिय्योन के तम्बू के समान हैं जिसने पृथ्वी ढंका हूआ है । यह तम्बू रस्सियों के सहारे *खूंटों* से मजबूती से बन्धा है । यह *खूंटों* वास्तव में विभिन्न भौगोलिक संस्थाएं हैं जोकि पूरी पृथ्वी में फैली हुई हैं । वर्तमान में, इस्राएल सिय्योन के विभिन्न *खूंटे* में एकत्रित हो रहा है'' ("Strengthen Thy Stakes," *Ensign,* Jan. 1991, 2)

कक्षा के सदस्यों को बताएं कि यीशु मसीह का अन्तिम-दिनों का गिरजाघर का पहला स्टेक कर्टलैन्ड, ओहायो, और क्ले काउंटी, मिस्सूरी में सन 1834 में संगठित हुआ था । जैसे जैसे गिरजाघर बड़ता गया, कई स्टेक जुड़ते गये जैसा कि प्रभु ने आज्ञा दी थी (सि.और अनु. 101:20...21) । आज पूरे विश्व में कई सौ *खूंटे* हैं ।

समझाएं कि इस पाठ में हम चर्चा करेंगे कि कैसे सिय्योन के *खूंटों* को हम बल दे सकते हैं । मसीह के दुबारा आने के हजार वर्षों के विषय में यशायाह की शक्तिशाली शिक्षा की भी चर्चा करेंगे ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. ''अपनी रस्सियों को लम्बा करो, और अपने खूंटों (स्टेक) को दृढ़ करो'' (यशायाह 54:2) ।

- ''अपने तम्बू का स्थान चौड़ा करो'' वाक्यांश से आप समझते हैं ? (यशायाह 54:2) । (प्रभु चाहता है कि गिरजाघर के सदस्य सुसमाचार को बहुत से लोगों के बीच खूंटो ताकि यह पूरी पृथ्वी को ढंक ले । यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि अन्तिम-दिनों में, गिरजाघर बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा और पूरी दुनिया में बहुत-से लोग सच्च की ओर परिवर्तित होंगे [यशायाह 54:3]) ।
- तम्बू या गिरजाघर के सम्बन्ध में यशायाह 54:3 में दी गई अन्य सलाह क्या है? हम कैसे इन सलाहों का पालन कर सकते हैं ? निम्नलिखित चित्र के अनुसार आप चर्चा को चॉकबोर्ड पर संक्षिप्त करना चाहेगे ।

यशायाह की सलाह	हम क्या कर सकते हैं
तम्बू के पर्दों को फैलाओ और रस्सियों को लम्बा करो ।	पूरे-समय के प्रचारक बनकर सेवा करना; मित्रों और पड़ोसियों से सुसमाचार बांटना ।
खूंटों (स्टेक) को दृढ़ करो ।	अपने स्थानीय खूटों (स्टेक) को दृढ़ करना ।

- जिस स्टेक में हम रहते हैं उसे दृढ़ करने के लिए हम क्या कर सकते हैं ? (उत्तरों में शामिल हो सकता हैः व्यक्तिगत आत्मिक बल को बढ़ाना, अपने परिवार और मित्र को ऐसा करने के लिए प्रभाव डालना, अपने सदस्य और गैर-सदस्य पड़ोसियों की सेवा करना, गिरजे में सेवा करने के लिए पौरोहित्य मार्गदर्शकों से नियुक्ति स्वीकार करना ।)
- स्टेक किस प्रकार लोगों के जीवन को आशिषित कर सकता है ? (देखें सि.और अनु.115:5...6) कैसे सिय्योन के स्टेक हमारे लिए सुरक्षा और शरण स्थान हैं ?

2. ''बड़ी दया करके मैं तुझे रख लूंगा'' (यशायाह 54:7) ।

- यद्यपि कई वर्षों तक बिखरा रहा था, प्रभु ने वादा किया था कि वह उसे अन्तिम-दिनों में सच्चे गिरजाघर में एकत्रित करूंगा (यशायाह 54:4...10) । यशायाह 54:4...10 में हम प्रभु के विषय में क्या सीख सकते हैं ? क्या विशेष आशिषें प्रभु अपने धार्मिक सेवकों से वादा करता है ? (देखें यशायाह 54:13...14, 17) यह वादे महत्वपूर्ण क्यों हैं ?
- किसको सन्तों के साथ शरण स्थान में एकत्रित होने के लिए आमंत्रित किया गया है ? (स्वर्गीय पिता के सभी बच्चे ।) यशायाह के निम्नलिखित अनुच्छेदों पर पुनःविचार करें जोकि व्याख्या करते हैं प्रभु किसे चाहता है कि वे उसके पास आयें और सुसमाचार में सुरक्षा पायेंः

  क. यशायाह 55:1...3 । (वे सभी जो प्यासे हैं ।) इन आयतों में कौन सी प्यास को बताया गया है ? क्या होता है जब हम आत्मिक प्यास को धन और सांसारिक वस्तुओं से बुझाते हैं ? किस प्रकार हमारी आत्मिक प्यास वास्तव में बुझ सकती है ? (देखें 2 नफी 9:50...51; 3 नफी 20:8)

  ख. यशायाह 55:6...7 । (दुष्ट जो पश्चाताप करेंगे ।) जो पश्चाताप करेंगे उन्हें क्या आशिषें प्राप्त होगीं ?

  ग. यशयााह 56:3; 5...8 । (अनजान जिन्हें प्रभु के बारे में पता नहीं है ।) अनजान को प्रभु द्वारा स्वीकार किये जाने के लिए क्या करना चाहिए ?

- ये अनुच्छेद प्रभु की दया के विषय में क्या सीखाते हैं ? ये हमें क्या सीखाते हैं कि हमें स्वर्गीय पिता के सभी बच्चों को किस दृष्टि से देखना चाहिए ?
- यशायाह ने लिखा था कि परमेश्वर के वचन हमारी आत्माओं को उसी प्रकार सींच सकता है जिस प्रकार वर्षा और हिम बीज को सींचता है (यशायाह 55:10...13) । किस प्रकार परमेश्वर का वचन हमारी आत्माओं को सींचता है ? (देखें अलमा 32:28, 41 ।)

3. हजार वर्ष शान्ति और आनन्द का समय होगा ।

- अपने सभी लेखों में, यशायाह ने गवाही दी है कि यद्यपि संसार में संघर्ष, लालच, और दुख होंगे, भलाई की बुराई पर विजय होगी, और धार्मिक लोगों के लिए, भविष्य आनन्द से भरपूर होगा । यशायाह ने मसीह के दूसरे आगमन के लिए प्रबलता से

प्रार्थना की थी, जिसके कारण दुष्टों को दण्डित किया जायेगा और धर्मी आनन्दित होंगे (यशायाह 64) । यशायाह 64:1...4 में आशा और आनन्द क्या सन्देश है ? कैसे यह सन्देश आपको अन्त तक प्रभु की सेवा करने की इच्छा को बढ़ाता है ?

- यशायाह के अभिलेख के अन्तिम अध्याय मसीह के दुबारा आने के हजार वर्षों की शान्ति की समय का एक सुन्दर चित्रण करते हैं जोकि प्रभु के पुनः आने पर शुरू होगा । जैसा कि यशायाह 65:17...25 में अभिलेख किया गया है, हजार वर्ष के समय में कैसी परिस्थितियां होगीं ? (आप इन परिस्थितियों को चॉकबोर्ड पर लिखना चाहेंगे; यशायाह 11:6...9 भी देखें)

  क. प्रभु नया स्वर्ग और नयी पृथ्वी बनायेगा (यशायाह 65:17) ।
  ख. प्रभु के लोगों के लिए महान आनन्द होगा और कोई रोना नहीं होगा (यशायाह 65:18...19) ।
  ग. लोग जवानी में नहीं मरेंगे; उनकी आयु 100 वर्ष की होगी (यशायाह 65:20) ।
  घ. लोग अपने कर्मों के फलों का आनन्द लेंगे (यशायाह 65:21...23) ।
  च. प्रार्थनाओं का उत्तर जल्दी प्राप्त होगा (यशायाह 65:24) ।
  छ. जानवरों के बीच कोई बैर नहीं होगा (यशायाह 65:25) ।

- यशायाह 63:7...9 अनन्त प्रभु की भलाई और प्रेम के विषय में क्या सीखाता है ? (कक्षा के सदस्यों से इन आयतों से उन शब्दों और वाक्यांशों का सुझाव देने को कहो जो हमारे लिए उद्धारकर्ता का प्रेम प्रकट करते हैं । आप इन्हें चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं ।) किस प्रकार उद्धारकर्ता ने आपको ''उसके अत्यन्त करूणामय कामों'' को दिखाया है ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि जब हम सिय्योन के स्टेकों को बल देते और संसार के साथ सुसमाचार को बांटते हैं, अनन्तता की सम्पत्ति हमें प्राप्त होगी । हम उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन और शान्ति एवं आनन्द जोकि हजार वर्ष में होगा, की प्रतिक्षा कर सकते हैं । यशायाह की भविष्यवाणियां हमें यह याद करने के लिए उत्साहित करती हैं कि प्रभु की सेवा करना एक विशेष अवसर है और कि वह अपने शिष्यों को आशीष देता है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. उपवास का सच्चा नियम (यशायाह 58:3...12)

- उपवास के विषय में यशायाह 58 से हम क्या सीख सकते हैं ? सच्चे उपवास के तत्व कौन कौन से हैं ? (यशायाह 58:3...7 देखें)

  सच्चे उपवास का एक तत्व है उदारतापूर्वक उपवास भेंट देना । अध्यक्ष स्पेन्सर डबल्यु. किम्बल ने कहा था, ''मैं सोचता हूं कि जब हम सम्पन्न होते हैं, जैसा कि हम में से बहुत से हैं, कि हमें बहुत, बहुत उदार होना चाहिए...और देना चाहिए, सिर्फ उपवास से दो भोजन से बचाया हुआ धन ही नहीं, शायद उससे बहुत, बहुत अधिक—दस गुना अधिक, जब ऐसा करने की स्थिति में हो'' (in Conference Report, 3 Apr. 1974, 184)

- उपवास के नियम का पालन करने से यशायाह 58 में वादा की गई कौन सी आशीषें हैं ?

  क. हम लालच का सामना करने में मजबूत होते हैं (यशायाह 58:6) ।
  ख. हमारे बोझ हल्के होते हैं (यशायाह 58:6) ।
  ग. हमारा शारीरिक और आत्मिक स्वास्थ्य में सुधार होता है (यशायाह 58:8) ।
  घ. हम दीन और प्रभु से बात करने को तैयार होते हैं (यशायाह 58:9) ।
  च. हम दीन और जरुरतमंद की मदद करते हैं (यशायाह 58:10) ।
  छ. हम प्रभु से नियमित मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं (यशायाह 58:11) ।
  ज. हम अपनी आत्माएं सूखे में तृप्त होती हैं और ''एक ऐसे झरने की तरह होती है, जिसकी जल कभी समाप्त नहीं होता'' (य शायाह 58:11) ।

  कक्षा के सदस्यों को धर्मशास्त्रों, गिरजाघर के इतिहास, या व्यक्तिगत अनुभव से उदाहरणों को बांटने के लिए आमंत्रित करें जो उपवास के नियम का पालन करने की आशीषों को दिखाते हों । (See Topical Guide, "Fast, Fasting.") ।

- कैसे उपवास के नियम का पालन करने के लिए हम अधिक परिश्रमी हो सकते हैं ?

2. उद्धारकर्ता की सेवकाई की व्याख्या

- यशायाह 61:1...3 उद्धारकर्ता की नियुक्ति और सेवकाई की घोषणा है । नासरत में अपनी सेवकाई के आरम्भ में, उद्धारकर्ता ने इन आयतों को उद्धरित किया था और लोगों से कहा था, ''आज ही यह लेख तुम्हारे सामने पूरा हुआ'' (लुका 4:14...21) । यह आयतें यीशु मसीह के चरित्र और मिशन के विषय में क्या सीखती हैं ?

3. मसीह का दूसरा आगमन (यशायाह 63:1...6)

- यशायाह 63:1...6 में उद्धारकर्ता के दूसरे आगमन की व्याख्या की गयी है । उद्धारकर्ता के चोगे का रंग कौन सा होगा जब वह अपनी महिमा में आयेगा ? (देखें यशायाह 63:2; प्रकाशितवाक्य 19:11...13; सि.और अनु. 133:46...48) लाल रंग क्या दर्शाता है ? (लहू जो उसने बहाया था जब उसने गतसमनी और सलीब पर हमारे पापों के खातिर दुख उठाया था ।)

''आज मैंने तुझे इस...लोहे का खम्भा...बनाया है''

पाठ
41

यिर्मयाह 1...2; 15; 20; 26; 36...38

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को प्रतिकूल एवं परीक्षा के समय में विश्वसनीय बने रहने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. इस पाठ में चर्चा किये गए यिर्मयाह के अनुच्छेदों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें । यह पाठ यिर्मयाह के उत्साह और समर्पण पर केन्द्रित है जब हर कोई उसके विरुद्ध था ।
2. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, कक्षा में एक धातू की छड़ लायें ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ के आरम्भ में कर सकते हैं ।

धातू की छड़ को दिखायें और कक्षा के प्रत्येक सदस्य को इस तोड़ने की कोशिश करने के लिए आमंत्रित करें । फिर निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- यदि यह वस्तु किसी व्यक्ति के गुणों को प्रदर्शित करती है, तो यह व्यक्ति के बारे में क्या बताती है ?
- कक्षा के सदस्यों को यिर्मयाह 1:17...19 पढ़ने के लिए कहें । प्रभु आयत 18 में यिर्मयाह की व्याख्या करने के लिए कौन से वाक्यांशो का प्रयोग करता है ? ये वाक्यांश यिर्मयाह के बारे में क्या बताते हैं ? आप को कैसा लगता यदि ये वाक्यांश आपको दर्शाने के लिये प्रयोग किये जाते जब आप अपनी बुलाहट को या प्रभु द्वारा दिया गया कार्य पूरा करते ?

समझाएं कि देश के राजाओं, राजकुमारों, याजकों, और सभी लोगों ने यिर्मयाह का विरोध किया था, परन्तु उसने साहस से प्रभु की आज्ञा का पालन किया था । धातू की छड़ का जिक्र करें और समझाएं कि यिर्मयाह ''लोहे का स्तम्भ'' था जिसके पास परीक्षा के समय बहुत बल था जो न तो झुका या टूटा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

यिर्मयाह ने योशिय्याह से सिदकिय्याह तक पांच राजाओं के शासन में सेवकाई की थी (626 से 586 ई.पू.) । योशिय्याह के समय में उसने लोगों को मूर्तिपूजा और अशुद्धता से दूर करने का प्रयास किया था । लेकिन योशिय्याह के बाद के राजाओं ने दुष्टता में शासन से किया था, और लोगों ने पूर्ण रूप से स्वधर्मत्याग दिया था । यिर्मयाह का मिशन उंची आवाज में चेतावनी देना था, और उनकी दुष्टता के लिए उसके आरोप पूरे धर्मशास्त्र में सबसे अधिक कोठर हैं । उसकी चेतावनी भरी आवाज यहूदा द्वारा बाबुल को जीत लेने से पहले अन्तिम आवाजों में से एक थी ।

यिर्मयाह का जीवन दुखों से भरा हुआ था, लेकिन परीक्षा के समय उसका धैर्य हमें शिक्षा और प्रेरणा दे सकता है । उसे यहूदा के राज्य के विरूद्ध भविष्यवाणी करने के लिए पीटा तथा जेल में डाला गया था । लेकिन इन सब परेशानियों और विरोध के, यिर्मयाह ''लोहे की छड़'' के समान था (यिर्मयाह 1:18) । यिर्मयाह की पुस्तक व्यक्तिगत, जीवन के दुखों और परेशानियों के जवाब में भविष्यवक्ता की विश्वास बड़ाने वाला अभिलेख उपलब्ध कराती है ।

1. यिर्मयाह परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ता नियुक्त किया गया है ।

यिर्मयाह 1:4...10 में अंकित किये गये यिर्मयाह की भविष्यवक्ता होने की बुलाहट के अभिलेख का अवलोकन करें ।

- पहले से नियुक्ति के सिद्धान्त को सीखाने के लिए यिर्मयाह की क्या बुलाहट है ? (देखें यिर्मयाह 1:5) आप कैसे सोचते हैं कि इस जानकारी से यिर्मयाह को क्या सहायता मिली थी कि उसे पहले के अस्तित्व में ही भविष्यवक्ता नियुक्त किया गया था ?

  भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ ने कहा था, ''प्रत्येक व्यक्ति जिस के पास संसार के लोगों की सेवा करने की बुलाहट है उसे स्वर्ग की महान परिषद में इस उद्देश्य के लिए इस संसार से पहले नियुक्त किया गया था'' (*History of the Church,* 6:364) ।

- प्रभु ने क्या किया थी जब यिर्मयाह को महसूस हुआ कि आपनी बुलाहट को पूरा करने में असमर्थ था ? (देखें यिर्मयाह 1:6...10) कैसे आपको प्रभु द्वारा दिलासा मिलती है जब आप स्वयं को असमर्थ पाते हैं ?

2. कई लोगों ने यिर्मयाह का विरोध किया तथा उसे उसका मिशन करने से रोका ।

प्रभु द्वारा दिये गये मिशन को पूरा करने पर यिर्मयाह जिस विरोध का सामना किया था उसकी चर्चा करने के लिए निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का प्रयोग करें:

क. यिर्मयाह 20:1...6 । यिर्मयाह की भविष्यवाणियों से अप्रसन्न होकर, पशहूर, मन्दिर के प्रधान रखवाले, ने यिर्मयाह को पीटा और उसे काठ में डाल दिया था । यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि पशहूर, उसका परिवार, और उसके मित्र बाबुल द्वारा कैद कर लिये जायेगें और वहीं पर उन सभी की मृत्यु होगी ।

ख. यिर्मयाह 26:7...15 । देश के बहुत से लोगों ने, याजकों सहित, यिर्मयाह और उसके सन्देश का विरोध किया था (26:7...11) । यद्यपि, यिर्मयाह ने साहसपूर्वक प्रभु द्वारा दिये गये सन्देश को बता दिया था (26:12...15) यिर्मयाह का फिर भी विरोध किया गया और उससे उसके पड़ोसियों तथा रिश्तेदारों ने नफरत की थी (11:19...21; 12:6 । ध्यान दें कि यिर्मयाह अनातोत शहर का रहने वाला था) ।

ग. यिर्मयाह 36:1...6, 20...32 । यिर्मयाह को भविष्यवाणियों के शब्द लिखे गये तथा लोगों को पढ़कर सुनाये गये थे (36:1...6) । राजा ने इन शब्दों को जला दिया था, और प्रभु ने यिर्मयाह को फिर से उन्हें लिखने की आज्ञा दी थी (36:20...32) ।

घ. यिर्मयाह 37:12...15; 38:4...13 । यिर्मयाह पर अन्यायपूर्वक दोष लगाया और जेल में डाल दिया गया था (37:12...15) उसे बाद में गड़हे में डाल दिया गया, जहां वह दलदल में डूब गया था (38:4...6) । सिदकिय्याह के आदेश से उसे गड़हे से निकाल दिया गया और फिर से जेल में डाल दिया गया था (38:7...13) ।

- यिर्मयाह 20:14...18 क्या बताता है कि यिर्मयाह ने कैसा महसूस किया था जब उसने विचलित करने वाले विरोध का सामना करना पड़ा था ? यिर्मयाह से हम मुसीबत के समय में सहायता के लिए क्या सीख सकते हैं ? (उत्तरों में शामिल हो सकता है कि यिर्मयाह ने प्रभु की आज्ञा का पालन करना जारी रखा था और पीड़ित और निरूत्साहित किये जाने बावजूद उसने अपनी बुलाहट को पूरा किया था; देखें यिर्मयाह 26:12...15 ।)

- यिर्मयाह 2:13, कौन से दो बुरे कामों के बारे में प्रभु ने कहा कि उसके लोगों ने किये थे ? (उन्होंने जीवन के जल, उसे छोड़ दिया था । और उन्होंने अपने आपको टुटा हुआ बर्तन बना लिया था जिसमें प्रभु का जीवन का जल एकत्रित नहीं किया जा सकता था, अर्थात उन्होंने सांसारिक बातों में सुरक्षा और शांति की तलाश की थी ।) क्यों इस तरह के गुणों वाले व्यक्ति यिर्मयाह के शब्दों को स्वीकार करने में परेशानी होती है ? वे क्यों यिर्मयाह की तरह परेशानियों का सामना नहीं कर सकते ? किस प्रकार हम कभी कभी टुटे हुए बर्तन बना लेते हैं जोकि उद्धारकर्ता के जीवन के जल को रख सकता ?

  एल्डर मेरियन डी. हैन्कस ने कहा था:

  ''सांसारिक वस्तुओं के बारे में चिन्ता करने में हमारा अधिकतर समय बीत जाता है । अपनी आवश्यकताओं या आवश्यकता से अधिक पाने के संघर्ष में हमारा समय और शक्ति व्यर्थ हो जाती है । हम कामना या मनोरंजन के पीछे भागते हैं, या सामुदायिक या सामाजिक कार्यों में अत्याधिक उलझ जाते हैं । अवश्य ही, लोगों की मनोरंजन जरुरत है, कुछ पाने की जरुरत है, कुछ योगदान देने की जरुरत है; यदि इन सबके बदले मसीह की मित्रता का मूल्य देना पड़े, तो कीमत बहुत ही अधिक है ।

  '''क्योंकि मेरी प्रजा ने दो बुराइयां की हैं,' इस्राएल का प्रभु कहता है; 'उन्होंने मुझ बहते जल के सोते को त्याग दिया है, और, उन्होंने होद बना लिये, वरन ऐसे होद जो टुट गए हैं, और जिन में जल नहीं रह सकता ।' (यिर्मयाह 2:13)

  ''अपने जीवन में परमेश्वर का स्थान लेने के लिए जिस वस्तु का हम निर्माण करते हैं, उनमें वास्तव में कोई जल नहीं समा सकता । कुछ हद तक हम इस प्रकार 'जीवन के सोते' का इन्कार करके, हम उस आनन्द को खो देते हैं जिसे हम पा सकते थे'' (in Conference Report, Apr. 1972, 127; or *Ensign,* July 1972, 105) ।

यिर्मयाह भविष्यवाणियां कि बाबुल के लोग यरूशलेम को नष्ट कर देंगे पूरी होती है, जैसा कि यिर्मयाह 39...40 में अंकित किया गया था । यिर्मयाह इस अवधि के दौरान जेल में था, लेकिन बाद में बाबुल के लोगों ने उसे छोड़ दिया था और उसे तथा यहूदियों के बचे हुए अवशेषों को यहूदा में रहने की आज्ञा दे दी थी । बाकी बचे हुए लोगों के प्रधान योहनान ने, यिर्मयाह से पूछा कि वह उनके लिए प्रभु की इच्छा को पता करे और उसने प्रतिज्ञा की कि वे उसका पालन करेंगे (यिर्मयाह 42:1...6) । यिर्मयाह के द्वारा प्रभु ने लोगों को कहा कि वे यहूदा के राज्य में रुके रहें और प्रतिज्ञा की यदि वे ऐसा करेंगे वह उन्हें आशीर्वाद देगा (यिर्मयाह 42:9...22) । लेकिन योहनान लोगों को मिश्र ले गया, जहां उनमें से अधिकतर लोगों ने दुष्ट काम करना जारी रखा (यिर्मयाह 43...44) ।

3. यिर्मयाह को परमेश्वर के वचनों के प्रति प्रेम के कारण बल मिलता है ।

निम्नलिखित धर्मशास्त्रों की चर्चा करें, जोकि बताते हैं कि कैसे परमेश्वर के वचनों ने यिर्मयाह की परीक्षा के समय मजबूत रहने में सहायता की थी ।

- जैसा कि यिर्मयाह 1:9 में अंकित किया गया है, प्रभु ने यिर्मयाह के मुहं से क्या कहलवाया था ? जैसा कि यिर्मयाह 15:16में अंकित किया गया है, यिर्मयाह ने प्रभु के वचनों के साथ क्या किया था ? (उसने उन्हें खा लिया था जिसका, भावार्थ है कि परमेश्वर के वचन उसका हिस्सा बन गये थे ।) यिर्मयाह ने प्रभु के वचनों के बारे में क्या महसूस किया था ?
- हम कैसे परमेश्वर के वचनों को ''खा'' सकते हैं जैसा यिर्मयाह ने किया था ? (धर्मशास्त्रों के अध्ययन और अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ताओं की सलाह द्वारा ।) मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता नफी ने कहा था ''मसीह की वाणी का प्याला पियो'' (2 नफी 32:3) । कैसे प्रभु के वचनों को खाने से हमें बल मिलता है ?
- यिर्मयाह 20:9 में, यिर्मयाह कैसे व्याख्या करता है कि प्रभु के वचन उसके अन्दर हैं ? इसका क्या अर्थ है कि प्रभु के वचन तुम्हारी हड्डियों के अन्दर जलती हुई आग के समान हों ? आप क्या सोचते हैं कि यिर्मयाह आपने आप को प्रभु के वचन सीखाने से क्यों नहीं रोक पाया था ?

निष्कर्ष

यिर्मयाह के उदाहरणों के बारे में और परीक्षा के समय विश्वसनीय बने रहने के लिए अपनी भावना व्यक्त करें । कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें कि प्रभु के वचनों को इतना तलाशते व मनन करते रहें कि जब वे प्रभु का कार्य करें ये वचन उनकी हड्डियों में आग बनकर उन्हें बल दे । यदि आपने ध्यान गतिविधि का प्रयोग किया है, धातू की छड़ को दिखाएं और कक्षा के सदस्यों को प्रभु के लिए, यिर्मयाह के समान, लोहे की छड़ बनने के लिए उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''कुम्हार के हाथ में...मिट्टी'' (यिर्मयाह 18:6)

- यिर्मयाह का कुम्हार से भेंट की व्याख्या का अवलोकन करें, जैसा कि यिर्मयाह 18:1...4 में अंकित है । यिर्मयाह के अनुभव से प्रभु अपने लोगों को क्या सीखाता है ? (यिर्मयाह 18:5...10) । प्रभु उन्हें दिखाता है कि यदि वे पश्चाताप करते हैं, वह उन्हें अच्छाई के लिए ढाल दूंगा, जिस प्रकार कुम्हार बेडौल बर्तन को नयी शक्ल देता है । उसने यह भी याद कराया कि उसके पास उन्हें नाश करने की शक्ति है यदि वे पश्चाताप नहीं करते हैं ।)
- किस प्रकार यह तुलना हम पर आज लागू होती है ? किस प्रकार हम प्रभु के हाथों में अच्छी मिट्टी बन सकते हैं ? (विनम्र होने...आज्ञाकारी होने, पश्चाताप करके, प्रभु पर विश्वास करके, और उसकी इच्छा को जान कर । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए आमंत्रित करें जिसने लोगों को उसके उद्देश्यों के लिए बदला तथा तैयार किया है ।) क्या होता है जब हम अपने आप को प्रभु द्वारा ढालने से मना कर देते हैं ?

  अध्यक्ष हीबर सी. किम्बल ने यिर्मयाह 18:1...10 की तुलना करते हुए निम्नलिखित ज्ञान की बातें हमें बताई थीः

  ''सभी [जो] परमेश्वर के हाथों ढलने के योग्य हैं तथा आज्ञाकारी है, आदर योग्य बर्तन हैं, और परमेश्वर उन्हें प्राप्त करेगा'' (*History of the Church,* 4:478) ।

  ''कई बर्तन हैं जिन्हें ढालने एवं शक्ल देने के पश्चात नष्ट कर दिया गया । क्यों ? क्योंकि वे उस शक्ल से सन्तुष्ट नहीं थे जो कुम्हार ने उन्हें दी थी, उन्होंने तुरन्त अपने आपको उस शक्ल में ढाल लिया जो उनको प्रिय थी, इसलिये यह उनकी समझ से बाहर है कि परमेश्वर उन्हें इस तरह क्यों बनाता है, और वे अपने आपको स्वयं की स्वतंत्रता की शक्ति से नष्ट कर देते हैं । [इन लोगों] को कई प्रकार के नमूनों, और शक्लों, से होकर गुजरना पड़ता है...फिर जाकर इन्हें चमकाया और पकाया जाता है; और कभी कभी पकाते समय, कुछ बर्तन चटक जाते हैं'' (in Stanley B. Kimball, *Heber C. Kimball: Mormon Patriarch and Pioneer* [1981], 270) ।

2. यिर्मयाह ने उसी समय शिक्षा दी थी जिस समय मॉरमन की पुस्तक के भविष्यवक्ता लेही ने शिक्षा दी थी ।

भविष्यवक्ता यिर्मयाह यहूदा के लोगों को शिक्षा और चेतावनी दे रहा था जब लेही ने यरूशलेम को छोड़ा था । यिर्मयाह और लेही दोनों ने भविष्यवाणी की थी यरूशलेम नष्ट कर दिया जायेगा ।

- जब लेही और उसके परिवार ने यरूशलेम छोड़ा था यिर्मयाह कहां था ? (देखें यिर्मयाह 37:15...16; 1 नफी 7:14 ।)

- यिर्मयाह ने अधिकतर समय सिदकिय्याह, यहूदा के राजा, को सलाह देने में बिताया था, लेकिन सिदकिय्याह ने यिर्मयाह दिये गये प्रभु के वचनों को मानने से मना कर दिया था । आज्ञा न मानने के कारण सिदकिय्याह के साथ क्या हुआ था ? (देखें यिर्मयाह 39:4...7) ।
- मॉरमन की पुस्तक से हम जानते हैं कि सिदकिय्याह का एक बेटा बाबुल द्वारा मारा नहीं गया था । उसका नाम क्या है ? (देखें इलामन 8:20...21 ।) वह कहां गया था ? (देखें ओमनी 1:15 ।)

''मैं उनके हृदयों में लिखूंगा''

पाठ
42

यिर्मयाह 16; 23; 29; 31

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को परमेश्वर के महान अन्तिम-दिनों के काम में भाग लेने तथा उसके नियमों को अपने हृदयों में लिखने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूवर्क यिर्मयाह 16; 23; 29; और 31 का अध्ययन करें ।

2. अतिरिक्त अध्ययनःयिर्मयाह 3...9; 13; 30; 32:37...42; 33; 35 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

- यदि आप को पुराने नियम की किसी कहानी या घटना को देखने या उसमें भाग लेने के लिए कहा जाये तो आप किसका चुनाव करेंगे ? (आप कक्षा के सदस्यों के जवाबों को चॉकबोर्ड पर लिख सकते हैं ।)
- आप क्यों इस घटना को देखना या उसमें भाग लेना चाहेंगे ?
- आजकल गिरजाघर में क्या हो रहा है जिसकी तुलना उनमें से कुछ घटनाओं से की जा सकती है जिसका चुनाव आपने किया है ?

समझाएं यद्यपि यिर्मयाह के पास उसके समय के लोगों के लिए आशा के कुछ सन्देश थे, उसने अन्तिम-दिनों में इस्राएल के एकत्रित होने के समय में आशा के समय को भी देखा था । यह पाठ यिर्मयाह की महान अन्तिम-दिनों में एकत्रित होने की भविष्यवाणियों की चर्चा करता जिसमें की हम आजकल रह रहे हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यिर्मयाह अन्तिम-दिनों में इस्राएल के एकत्रित होने की भविष्यवाणी करता है.

यदि इस्राएल के मिश्र से निर्गमन की कहानी ध्यान गतिविधि में बताई नहीं गई है, बतायें कि यह घटना पूराने नियम की अत्याधिक चमत्कारपूर्ण घटनाओं में से एक है । यह पुराने नियम की यिर्मयाह और अन्य पुस्तकों के साथ साथ मॉरमन की पुस्तक में भी संदर्भ की गयी है ।

- मूसा ने निर्गमन के महत्व के बारे में कैसे महसूस किया था ? (देखें व्यवस्थाविवरण 4:32...35 ।) आप क्या सोचते हैं कि इस्राएल का मिश्र से निर्गमन का हिस्सा होने पर कैसा लगता ?
- काफी पीढ़ियों बाद, यिर्मयाह ने अन्तिम-दिनों में एक घटना का दिव्यदर्शन देखा जिसके विषय में प्रभु ने कहा था कि यह उतना ही महान निर्गमन होगा (यिर्मयाह 16:14...16; 23:3...8) । यिर्मयाह 16:15 और 23:3 में किस घटना की व्याख्या की गई है ?(इस्राएल के एकत्रित होने तथा गिरजाघर की उन्नति ।) यिर्मयाह 23:4 में चरवाहे बताये गये है ? (पौरोहित्य मार्गदर्शक और अन्य गिरजाघर मार्गदर्शक ।) यिर्मयाह 23:5...6 में किसे राजा बताया गया है ? (यीशु मसीह) आप क्यों सोचते हैं कि यह घटनाएं उतनी ही महान हैं जितनी कि निर्गमन ?
- एल्डर लीग्रांड रिचर्ड ने कहा कि यिर्मयाह 16:16 में बताए गए मछुआरे और शिकारी गिरजाघर के प्ररचारक हैं (in Conference Report, Apr. 1971, 143; or *Ensign* June 1971, 98...99) । मछुआरे और शिकारियों में क्या बात समान होती है ? (देखें मत्ती 4:18...19 ।) हम किस प्रकार अधिक प्रभावी प्रचारक हो सकते हैं ?

2. परमेश्वर अपने नियमों को अपने लोगों के हृदयों पर लिखेगा ।

- इस्राएल की सन्तान जंगल में अपने प्रवास के दौरान प्रकटीकरण के लिए मूसा के ऊपर निर्भर थे । गिनती 11:29 में मूसा अपनी किस इच्छा को व्यक्त करता है ? (वह चाहता था कि लोग परमेश्वर के नियम सीखें और अपने स्वयं के लिए आत्मा को सुनना सीखें ।)

- जैसा कि यिर्मयाह 31:31...34 में अंकित किया गया है, प्रभु ने अन्तिम-दिनों में क्या करने का वादा किया था ? (यहेजेकेल 11:17...20; 36:24...28; 2 कुरिन्थियों 3:2...3 भी देखें ।) इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर के नियम को अपने हृदयों में लिखना ?

- कैसे हमारा व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है जब हम परमेश्वर के नियम को अपने हृदयों में लिख लेते हैं ? आप यह चर्चा कर सकते हैं कि इससे विशेष आज्ञा का पालन करने में कैसे सहायता मिलती है, उदाहरण के लिए:

  क. अपने पड़ोसियों से प्रेम करना ।
  ख. अपने माता-पिता का आदर करना ।
  ग. शुद्ध रहना ।
  घ. सब्त के दिन को पवित्र रखना ।
  च. उचित फिल्म, टेलिविजन कार्यक्रम, पुस्तकें, और पत्रिकाओं का चुनाव करना ।
  छ. सम्मानजनक कपड़ों को पहनना ।
  ज. उचित संगीत का चुनाव करना ।

- जोसफ स्मिथ से एक बार पूछा गया था कि वह किस प्रकार इतने लोगों का सफलतापूवर्क नियंत्रण कर पाते हैं । उन्होंने कहा था, ''मैं लोगों को सही सिद्धान्त सीखाता हूं और वे अपने स्वयं के ऊपर नियंत्रण करते हैं'' (जॉन टेलर द्वारा *Journal of Discourses,* 10:57...58 में उद्धरित किये गये ।) कैसे यह कथन परमेश्वर के नियम अपने हृदयों में लिखने के समान है ?

- यिर्मयाह ने भविष्यवाणी की थी कि यहूदा के लोगों को बाबुल में बन्दी बना लिये जाने के 70 साल बाद, वे अपने प्रदेश को वाप स आयेंगे और एक बार फिर से परमेश्वर के साथ समरूप होकर रहेंगे (यिर्मयाह 29:10...14; इस भविष्यवाणी का पूरा होना पाठ 47 में बताया गया है ।) यिर्मयाह 29:12...14 के अनुसार, हम परमेश्वर के निकट आने के लिए क्या कर सकते हैं ? जब हम परमेश्वर के निकट आने की कोशिश करते हैं तो शब्द जैसे *बुलाना, प्रार्थना, खोजना,* और *जांच करना* किस तरह से हमारे दृष्टिकोण में लागू होते हैं ? कक्षा के सदस्यों को उनके अनुभवों को बांटने के लिए आमंत्रित करें जब वे परमेश्वर के निकट जाने का प्रयास करते हैं ।

निष्कर्ष

यह गवाही दें कि हम उस समय में रह रहे हैं जिसकी यिर्मयाह तथा अन्य कई भविष्यवक्ताओं ने आनन्द के लिए प्रतीक्षा की थी । कक्षा के सदस्यों को इस्राएल के एकत्रित होने में भाग लेने तथा परमेश्वर के नियम उनके हृदयों में लिखने के लिए उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अभी पश्चाताप करने का समय है ।

प्रभु की दया हमेशा उन पर होती है जो पश्चाताप करते हैं । यद्यपि, लोग जो कि पश्चाताप को टालते रहते हैं इसे अत्याधिक रूप से मुश्किल पाते हैं ।

अध्यक्ष जोसफ एफ. स्मिथ ने सीखाया था: ''वह व्यक्ति जिसके पास पिछली जमा की गई और बिना क्षमा की गलतियों हैं उसके लिए इन सबसे बचकर लौटना मुश्किल है और उसकी दशा इस संसार में निराशाजनक है; और जिसने लापरवाह होकर प्रत्येक अवसर को खो दिया है क्योंकि उसने अपने पापों से पश्चाताप नहीं किया, तथा जिसने अपना वापस लौटना असंभव कर दिया, वह अति दुर्भाग्यशाली है । प्रतिदिन का अभ्यास, फिर, दिव्य दया और क्षमा को खोजना को जब हम पाते हैं, यह हमें बुराइयों से बचने की शक्ति देता है'' (Gospel Doctrine, 5th ed. [1939], 374) ।

- नीचे दिये गये अनुच्छेद प्रभु के वचन और तुरन्त पश्चाताप करना की महता के बारे में क्या सीखाते हैं ?

  यिर्मयाह 5:1...5, 21...25
  यिर्मयाह 6:10...17
  यिर्मयाह 7:23...28
  यिर्मयाह 8:6...12, 20

यिर्मयाह 13:11, 23
यिर्मयाह 17:23

2. भविष्यवक्ताओं के वचनों पर ध्यान देना

- यिर्मयाह ने बार-बार अंकित किया था कि लोगों ने उसके वचनों को नहीं सुना था (यिर्मयाह 7:13; 25:3...4; 26:2...5; 32:33) । अन्तिम-दिनों के भविष्यवक्ताओं के कौन से वचनों का हमें अधिक समझदारी से अनुसरण करने चाहिए ?

3. पिछली पीढ़ी के पापों को दोहराना

- यिर्मयाह ने अपने समय के यहूदियों को चेतावनी दी थी कि पिछली पीढ़ी के उन्हीं पापों को दोहरा रहे थे जिसके लिए उन्हें अत्याधिक दण्डित किया गया था (यिर्मयाह 11:1...12) । आप क्या सोचते हैं कि यिर्मयाह की पीढ़ी के लोगों ने अपने पूर्वजों के पापों से कुछ नहीं सीखा था जबकि उन पापों के दण्ड स्पष्ट रूप अंकित किये जा चुके थे ? हम किस प्रकार परमेश्वर के अनुबन्धित लोगों की पिछली पीढ़ियों से सबक सीख कर किस प्रकार लाभ उठा सकते है ?

4. परमेश्वर पर विश्वास करने की महत्वता

- यिर्मयाह 17:5...8 में, उन लोंगों के बीच में क्या तुलना की गई है जो मनुष्य पर विश्वास करते हैं और जो परमेश्वर विश्वास करते हैं ? कैसे आप कह सकते हैं कि यह तुलना सही है ? परमेश्वर में अपने विश्वास का हम कैसे प्रदर्शन कर सकते हैं ?

5. झूठे भविष्यवक्ता

- सिदकिय्याह एक राजा था जो चाहता था भविष्यवक्ता उससे वही बात कहे जो वह सुनना चाहता था । परिणामस्वरूप, कई झूठे भविष्यवक्ताओं ने वादा किया था कि यरूशलेम का पतन नहीं होगा (यिर्मयाह 28:1...4; 37:19) । आज भी बहुत से भविष्यवक्ता ''भेड़ की खाल ओढ़कर'' आते हैं (मत्ती 7:15) । इसके क्या प्रमाण है कि आज हमारे बीच में झूठे भविष्यवक्ता हैं ? आज के झूठे भविष्यवक्ताओं के कुछ सन्देश क्या हैं ? इन झूठे भविष्यवक्ताओं द्वारा अपने आपको भटकाने से हम कैसे बच सकते हैं ?

पाठ
43

इस्राएल के चरवाहे

यहेजकेल 18; 34; 37

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को उनकी ''इस्राएल के चरवाहे'' के रूप में अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए उत्साहित करना (यहेजकेल 34:2) ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. यहेजकेल 34 । प्रभु उन चरवाहों को चेतावनी देता है जो अपने झुण्डों की देखभाल नहीं करते हैं । वह सभी भेड़ों को खोजेगा और उनका चरवाह बनेगा ।

   ख. यहेजकेल 18:21...32 । यहेजकेल सीखाता है कि दुष्ट जोकि पश्चाताप करेंगे बचाये जायेंगे और कि नेक जो दुष्टता करेंगे उन्हें बाहर निकाला जायेगा ।

   ग. यहेजकेल 37:1...14 । यहेजकेल एक दिव्यदर्शन देखता है जिसमें सूखी हड्डियों को जीवन दिया जाता है ।

   घ. यहेजकेल 37:15...28 । यहेजकेल भविष्यवाणी करता है कि यहूदा की लाठी और जोसफ (यूसुफ) की लाठी प्रभु के हाथ में एक हो जायेंगी ।

2. अतिरिक्त अध्ययन:यहेजकेल 2 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

निम्नलिखित प्रश्नों को पढ़ें (या चॉकबोर्ड पर लिखें):

- भेड़ चराने वाले और भेड़ पालने वाले दोनों में क्या अन्तर है ?

कक्षा के सदस्यों को अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन के निम्नलिखित उद्धरण में प्रश्नों के उत्तर सुनने के लिए कहें (आप कक्षा के एक सदस्य से उद्धरण पढ़ने को कह सकते हैं) ।

''यीशु के समय में, पलिश्तियों के चरवाहे अपनी भेड़ों की रखवाली के लिए जाने जाते थे । आजकल के आधुनिक चरवाहों के विपरित, ये चरवाहे हमेशा अपनी झुण्ड के आगे चलते थे । चरवाह अपनी प्रत्येक भेड़ को जानता था और अकसर प्रत्येक का एक नाम होता था । भेड़ें उसकी आवाज को पहचानती थीं और किसी अनजान के पीछे नहीं जाती थीं । इस प्रकार, जब बुलाया जाता था, भेड़ें उसके पास आती थीं ।(देखें यूहन्ना 10:14, 16 ।)

''रात के समय चरवाहे अपनी भेड़ों को बाड़े में लाता था जिसे भेड़शाला कहते हैं । भेड़शाला के चारों ओर ऊंची दीवार होती थी, और दीवार के ऊपर कांटे रखे जाते थे ताकि जंगली जानवर और चोर दीवार पार न कर सकें ।

''हालांकि कभी कभी, भूख के कारण जंगली जानवर दिवार पार के भेड़ों के बीच पहुंच कर उन्हें भयभीत कर देते थे । ऐसी स्थिति में सच्चे चरवाहे—जोकि अपनी भेड़ों से प्रेम रखता था और—वह जिसे किराये पर भेड़ों की रखवाली के लिए रखा जाता था—पहचान हो जाती थी ।

''सच्चा चरवाह अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार हो जाता था । वह उनके बीच जाता था और उनकी रक्षा के लिए जानवर का सामना करता था । किराये पर काम करने वाला, अपनी जान को अधिक कीमती जानकर अपनी सुरक्षा को भेड़ की जान की परवाह नहीं करता था और अक्सर खतरे के समय भाग खड़ा होता था'' (in Conference Report, Apr. 1983, 61; or *Ensign,* May 1983, 43) ।

उद्धरण को पढ़ने के बाद, कक्षा के सदस्यों से चारवाहे और किराये पार काम करने वाले में अन्तरों को संक्षिप्त करने के लिए कहें । यदि जरूरी हो तो निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें, और उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखें:

- चरवाहा भेड़ों के साथ कहां चलता है ? किराये पर काम करने वाला भेड़ों के साथ कहां चलता है ? (चरवाहा भेड़ों के आगे चलता है और उनका मार्गदर्शन करता है; और किराये पर काम करने वाला भेड़ों के पीछे चलता है और उन्हें उन्हें आगे चलाता है ।)

- चरवाहे का प्रत्येक भेड़ के साथ क्या सम्बन्ध होता है ? किराये पर काम करने वाले का प्रत्येक भेड़ के साथ क्या सम्बन्ध होता है ?
- चरवाहा भेड़ों पर खतरा होने पर क्या करता है ? किराये पर काम करने वाला क्या करता है ?

समझायें कि इस पाठ का एक भाग आत्मिक चरवाहे के रूप में हमारी जिम्मेदारियों की चर्चा करता है ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

597 ई.पू., बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा राज्य के बहुत से लोगों को बन्दी बना लिया था । इन बन्दी बनाये लोगों में यहेजकेल भी था, जिसे प्रभु ने पांच वर्ष बाद भविष्यवक्ता नियुक्त किया था । 587 ई.पू. में बाबुल ने यरूशलेम को नष्ट कर दिया था और बहुत अधिक लोगों को बन्दी बनाया था । यहेजकेल ने अपने निर्वासित लोगों की 570 ई.पू. तक सेवा की थी ।

यहेजकेल के लेखों में कठोर चेतावनियां और महिमायुक्त प्रतिज्ञाएं हैं जोकि न केवल प्राचीन यहूदा के राज्य पर बल्कि सम्पूर्ण इस्राएल पर, जिसमें आज का गिरजाघर भी सम्मिलित है, लागू होती हैं । यद्यपि यरूशलेम को नष्ट कर दिया गया था, यहेजकेल ने एक ऐसा दिन को देखा है जब इस्राएल एकत्रित होगा और पुनःस्थापित किया जायेगा । इस घटना को उसके सूखी हड्डियों की तराई के दिव्यदर्शन और यहूदा और जोसफ (यूसुफ) की लकड़ी के बारे में उसकी भविष्यवाणी में चिन्हित किया गया है ।

1. इस्राएल के चरवाहे

यहेजकेल 34 का अध्ययन तथा चर्चा करें । इस अध्याय में प्रभु स्वयं की सेवा करवाने वाले इस्राएल के चरवाहों को डांटता है जोकि अपने झुण्ड की देखभाल नहीं करते हैं । तब वह अपने आपको एक अच्छा चरवाह बताता है जोकि अपने झुण्ड को अन्तिम-दिनों में एकत्रित करेगा और हजार वर्ष में मार्गदर्शन करेगा ।

- यहेजकेल 34 में बताए हुए ''इस्राएल के चरवाहे'' कौन हैं ? (यहेजकेल के समय में धार्मिक मार्गदर्शक ।) प्रभु उन से नाराज क्यों है ? (देखें यहेजकेल 34:2...4 ।) भेड़ों का क्या होता है जब चरवाह उनकी देखभाल नहीं करता है ?(देखें यहेजकेल 34:5...6 ।)
- किस तरह से हम सब इस्राएल के चरवाहे के समान हैं ?(हमें एक दूसरे की एक परिवार के सदस्य, गिरजाघर के सदस्य, पड़ोसियों,घर के शिक्षक, और भेंट करने वाली शिक्षकों, और परिषद तथा कक्षा के सदस्य के रूप में देखभाल करनी है ।)

  एल्डर ब्रूस आर. मैकॉन्की ने कहा थाः ''कोई भी जो किसी क्षमता से गिरजाघर में सेवा कर रहा है जिसमे वह प्रभु के बच्चों के आत्मिक या सांसारिक कल्याण के लिए जिम्मेदार है, वह उन भेड़ों का चरवाह है । प्रभु अपने चरवाहों को उसकी भेड़ों की सुरक्षा (मुक्ति) के लिए जिम्मेदार ठहरायेगा'' (*Mormon Doctrine,* 2nd ed. [1966], 710) ।
- प्रभु उन कुछ चरवाहों से नाराज था जो अपनी भेड़ों की देखभाल करने के स्थान पर अपनी देखभाल करवाते हैं (यहेजकेल 34:2...3, 8) । कैसे हम से कुछ लोग आज इसी तरह की गलती करते हैं ।
- यहेजकेल के अनुसार 34:11...16, सच्चा चरवाह अपनी भेड़ों के लिए क्या करता है ? (*ढूंढूंगा, सुधि लूंगा, बटोरूंगा, निकालूंगा, इकट्ठा करूंगा, चराऊंगा, घाव बान्धुंगा,* और *बलवान करूंगा,* क्रिया वाचक शब्दों पर ध्यान दें ।) हम कैसे अन्य को भटकने या बिखरने से बचा सकते हैं ? हम कैसे प्रभु के झुण्डों की देखभाल तथा बलवान कर सकते हैं ? आप कैसे सच्चे चरवाहे द्वारा आशीषित हुए हैं जो यह सब कार्य करता है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः ''हम आपको फिर से समर्पित होकर अधिक मेहनत करने के लिए कहते हैं...हम चाहते हैं कि आप झुण्ड की रखवाली करें, चरायें, सुधि लें, और देखभाल करें, और यदि किसी कारण से कुछ अस्थायी रूप से खो गई हैं, हम आपको चुनौती देते हैं कि उनकी खोज करें'' (in Conference Report, Apr. 1983, 64; or *Ensign,* May 1983, 45) ।
- कैसे उद्धारकर्ता हमारे चरवाहे के समान है ? (देखें यहेजकेल 34:11...16; भजन संहिता 23; यशायाह 40:11; यूहन्ना 10:11...15 ।) आप शायद यह बताना चाहेंगे कि उद्धारकर्ता ने हमारे लिए इन धर्मशास्त्रों में बताये कार्य किस प्रकार करता है । जैसे आपको आत्मा कहे उद्धारकर्ता के विषय में अपनी गवाही दें ।

2. पश्चाताप और क्षमा

यहेजकेल 18:21...32 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- यह अनुच्छेद पश्चाताप और क्षमा के बारे में क्या सीखाता है ? (देखें यहेजकेल 18:21...22, 27...28 ।) इसका क्या अर्थ है ''अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो'' ? (यहेजकेल 18:31) । यह जानना क्यों जरूरी है कि पश्चाताप में पाप से दूर

होना तथा हृदय का बदलना दोनों सम्मिलित है ? हम कैसे इस हृदय के बदलाव को महसूस कर सकते हैं ? (देखें अलमा 5:7...14 ।)

- इस अनुच्छेद से उन लोगों के बारे में क्या शिक्षा मिलती है जो नेकता से दूर हो जाते तथा पश्चाताप नहीं करते हैं ? (देखें यहेजकेल 18:24, 26 ।)
- यह अनुच्छेद प्रभु की अनुभूति के बारे में क्या शिक्षा देता है जब वह दुष्ट को सजा देता है ?(देखें यहेजकेल 18:23, 32 ।)
- यह अनुच्छेद प्रभु के न्याय और दया के बारे में क्या शिक्षा देता है ? (देखें यहेजकेल 18:25, 29...32 ।) यह जानना क्यों महत्वपूर्ण है कि प्रभु न्यायी तथा दयावान है ?

3. यहेजकेल का हड्डियों की तराई का दिव्यदर्शन

यहेजकेल 37:1...14 का अध्ययन और चर्चा करें । समझायें कि यहेजकेल का हड्डियों की तराई का दिव्यदर्शन पुनरूत्थान और इस्राएल के बच्चों के लिए उनके वादा किये देश के लिए पुनःस्थापना दोनों का प्रतीक है ।

- यहेजकेल के दिव्यदर्शन में पुनरूत्थान को कैसे दिखाया गया है ? (हड्डियों एक साथ जुड़ती हैं, वे मांस और खाल से ढंक जाती हैं, और उन्हें जीवन दिया जाता है; देखें यहेजकेल 37:1...10; अलमा 11:42...44; 40:23 भी देखें ।)
- यहेजकेल के दिव्यदर्शन में इस्राएल के बच्चों को उनके प्रतिज्ञा के देश में पुनःस्थापना को कैसे दिखाया गया है ?(देखें यहेजकेल 37:11...14 । पुनरूत्थान को पुनःस्थापना के प्रतीक के रूप में दिखाया गया है ।)
- यहेजकेल के दिव्यदर्शन को इस्राएल की ''आशा'' के नवीनीकरण की व्याख्या करने के सम्बन्ध में भी पढ़ा जा सकता है (यहेजकेल 37:11) । यद्यपि इस्राएल की आशा ''बड़ी सेना''की हड्डियों के समान मृत है जिसे यहेजकेल ने देखा था, उद्धारकर्ता इसे फिर से जीवन और स्वास्थ्य दे सकता है । कैसे उद्धारकर्ता हमारी आशा को नवीन करता है ? (जब आप इस प्रश्न पर चर्चा करते हैं, आप मरोनी 7:41 पढ़ना चाहेंगे ।)
- यहेजकेल के दिव्यदर्शन में जब यहेजकेल ने हड्डियों से कहा ''प्रभु का वचन सुनो'' उन्होंने जीवन ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया था (यहेजकेल 37:4) । कैसे प्रभु के वचन हमें जीवन देतें हैं ?

4. यहूदा की लकड़ी और यूसुफ (जोसफ) की लकड़ी

यहेजकेल 37:15...28 की शिक्षा दें और चर्चा करें । समझाएं कि यहूदा और यूसुफ (जोसफ) की लकड़ी के विषय में यहेजकेल की भविष्यवाणी के दो अर्थ हैं । यह अन्तिम-दिनों में यहूदा और यूसुफ (इस्राएल) के आत्मिक अभिलेखों को मिलाने को संदर्भ करता है । यह अन्तिम-दिनों में यहूदा और यूसुफ (इस्राएल) का एक साथ मिलने को भी संदर्भ करता है ।

- कैसे यहेजकेल में 37:15...20 बताई गई भविष्यवाणी पूरी हुई थी ? (देखें 1 नफी 5:14; 2 नफी 3:12; सि.और अनु.27:5 ।) समझाएं कि शब्द *लकड़ी* का अर्थ यहां एक प्रकार की लिखने वाली लकड़ी की पट्टी से है ये यहेजकेल के समय में प्रयोग में लाई जाती थी । यहूदा की लकड़ी का अर्थ बाइबिल है, और यूसुफ (जोसफ) की लकड़ी का अर्थ मॉरमन की पुस्तक है ।)

  एल्डर बोएड के. पैकर ने कहा थाः ''यहूदा की लकड़ी या अभिलेख—पुराना नियम और नया नियम—और एफ्रैम की लकड़ी या अभिलेख—मॉरमन की पुस्तक, जो यीशु मसीह का अन्य नियम है—दोनों को अब एक साथ इस तरह बुना गया है कि एक का अध्ययन करें तो दूसरे तक पहुंच जाते हैं, जब आप एक से सीखते हैं तो दूसरे से ज्ञान प्राप्त करते हैं । ये वास्तव में हमारे हाथों में एक ही हैं । यहेजकेल की भविष्यवाणी अब पूरी हो चुकी है'' (in Conference Report, Oct. 1982, 75; or *Ensign,* Nov. 1982, 53) ।

- बाइबिल के अतिरिक्त मॉरमन की पुस्तक होने से क्या आशीर्वाद मिलें हैं ? (देखें 1 नफी 13:39...40; 2 नफी 3:12 ।) कैसे मॉरमन की पुस्तक ने आपको बाइबिल को बेहतर ढंग से समझने में सहायता की है ? कैसे इसने आप पर अधिक प्रभाव डाला है कि बाइबिल ही यीशु मसीह की साक्षी है ?
- यहेजकेल के अनुसार क्या होगा यदि दोनों लकड़ियों को एक साथ रखा जाता है ?

  क. इस्राएल के बच्चे एक साथ एकत्रित होगें और एक राज्य में मिलकर रहेगें तथा उद्धारकर्ता राजा होगा (यहेजकेल 37:21...22) ।
  ख. लोग साफ किये और शुद्ध किये जायेंगे (यहेजकेल 37:23) ।
  ग. लोग प्रभु की विधियों को मान कर चलेंगे (यहेजकेल 37:24) ।
  घ. लोग वादा किये हुए देश में रहेंगे (यहेजकेल 37:25) ।

- यहेजकेल 37:26...28 में प्रभु अन्य किन आशीर्वादों की प्रतिज्ञा करता है ? (एक महत्वपूर्ण आशीर्वाद है प्रभु के शरणस्थान या मंडप, यानि मन्दिर । अगला पाठ मन्दिर के आशीर्वादों की अधिक विस्तार से चर्चा करता है ।)

निष्कर्ष

यहेजकेल की शिक्षाएं यह समझने में हमारी सहायता करती हैं कि उद्धारकर्ता हम में से प्रत्येक से कितना प्रेम और प्रत्येक का कितना ध्यान रखता है । वह हमारा चरवाह है । वह क्षमा करने के लिए उत्सुक है । उसने हमारे लिये यह सम्भव किया है कि हम पुनःजीवित हो सकें । वह अन्तिम-दिनों के इस्राएल के इकट्ठा होने का निर्देशन कर रहा है । और उसने मॉरमन की पुस्तक को उसके एक अन्य गवाह के रूप में हमें दिया है । कक्षा के सदस्यों को इन सच्चाइयों की उनकी गवाही बांटने के लिए आमंत्रित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. अच्छा चरवाहा होना सीखना

चरवाहे के रूप में हमारी जिम्मेदारियों की चर्चा करते समय, आप अध्यक्ष जेम्स ई. फॉस्ट की निम्नलिखित कहानी को पढ़ या सुना सकते हैं:

''जब मैं बहुत छोटा लड़का था मेरे पिताजी को एक भेड़ का बच्चा जंगल में मिला था । भेड़ों का झुण्ड जिसमें उसकी मां भी थी आगे बढ़ चुका था, और किसी तरह यह भेड़ का अपनी मां से बिछुड़ गया था, और चरवाहे को शायद मालूम नहीं था कि यह खो चुका है । क्योंकि यह जंगल में अकेला जिन्दा नहीं बचता, मेरे पिता उसे उपने साथ घर ले आये । भेड़ के बच्चे को वहां छोड़ने का अर्थ था उसकी मृत्यु, या तो उसे भेड़िये खा जाते या फिर भूख से मर जाता क्योंकि वह बहुत ही छोटा था सिर्फ दूध ही पीता था...मेरे पिता जी ने वह भेड़ का बच्चा मुझे दे दिया, और मैं उसका चरवाहा बन गया ।

''कई हफ्तों तक मैंने गाय के दूध को बच्चों की बोतल में गर्म किया और भेड़ के बच्चे को पिलाया । हम दोनों पक्के मित्र बन गये थे ।...वह बड़ा होना शुरु हो गया था । हम दोनों मैदान में खेलते थे । कभी कभी हम दोनों घास पर लेट जाते थे और मैं उसकी मुलायम, उनी बगल में अपना सिर रख कर लेट जाता और ऊपर नीले आकाश और सफेद फूले हुए बादलों को देखता था । मैं दिन के समय अपनी भेड़ को बन्द नहीं करता था । वह कहीं नहीं जाता था । उसने जल्द ही घास चरना शुरू कर दिया था । भेड़ की तरह आवाज निकाल कर मैं अपने भेड़ के बच्चे को कहीं से भी बुला सकता था ।...

''एक रात भयंकर तूफान आया । मैं अपने भेड़ के बच्चे को बाड़े में बन्द करना भूल गया जैसा कि मुझे करना चाहिए था । मैं सोने चला गया । मेरा नन्हा साथी तूफान में डर गया था, और मैं उसकी मिमियाने की आवाज सुन रहा था । मैं जानता था कि मुझे अपने जानवर की मदद करनी चाहिए थी, लेकिन मैं अपने बिस्तर में सुरक्षित, गर्म, और सुखा हुआ रहना चाहता था । मैं खड़ा नहीं हुआ जैसा कि मुझे होना चाहिए था । अगली सुबह मैंने पाया कि मेरा भेड़ का बच्चा मर चुका था । एक कुत्ते ने उसकी आवाज को सुन लिया था और उसे मार डाला । मेरा दिल टुट गया था । मैं अच्छा चरवाह या सेवक नहीं बन पाया था जिसके लिए मेरे पिता ने मुझ पर विश्वास किया था । मेरे पिता जी ने मुझ से पूछा, ''बेटा, क्या मुझे केवल एक भेड़ के बच्चे की देखभाल करने के लिए विश्वास नहीं करना चाहिये था ?'' मेरे पिता की टिप्पणी ने मुझे अपने ऊनी मित्र को खोने से अधिक दुख दिया था । उसी दिन से मैंने प्रतिज्ञा की, एक छोटे लड़के रूप में, कि मैं कभी भी एक चरवाहे के रूप में अपने प्रबंधक पद के प्रति लापरवाह नहीं होंगा यदि मुझे कभी इस जगह फिर से बिठाया जाता है ।

''उस घटना से कुछ वर्षों बाद ही मुझे घर के शिक्षक में कनिष्ठ साथी नियुक्त किया गया था । कभी कभी ऐसा समय होता कि बहुत ठन्ड होती थी या तूफान होता था और मैं चाहता था कि घर में ही बैठूँ और आराम करूं, लेकिन मेरे दिमाग के कानों में मैं अपने छोटे भेड़ के बच्चे की आवाज सुन सकता था, और मैं जानता था कि मुझे अच्छा चरवाह होना है और मैं अपने वरिष्ठ साथी के साथ चल पड़ता था । उन दिनों में जब भी मैं अपने कर्तव्य से बचना चाहता था, मुझे तुरन्त याद आ जाता था कि कई वर्ष पहले उस रात मैं कितना शर्मिन्दा हुआ था जब मैं अच्छा चरवाह नहीं बन पाया था'' (in Conference Report, Apr. 1995, 62...63; or *Ensign,* May 1995, 46).

2. पहरूए चेतावनी की आवाज लगायेंगे

- यहेजकेल को भविष्यवक्ता नियुक्त करते समय प्रभु ने कहा था, ''मैंने तुझे इस्राएल के घराने का पहरुआ नियुक्त किया है'' (यहेजकेल 3:17) । कैसे भविष्यक्ता के रूप में यहेजकेल के कर्तव्य एक पहरुए के समान हैं ? (यहेजकेल 3:17...21; 33:1...9 । यहेजकेल के समय में, पहरुआ मिनार पर खड़ा होकर लोगों को शत्रुओं की सेना से आने वाले खतरे के बारे में चेतावनी देता था । यहेजकेल लोगों को उन शत्रुओं के खतरे के बारे में चेतावनी देता था जो उन्हें आत्मिक रूप से खतरा पहुंचा सकते थे ।)

- अन्तिम-दिनों में हमारा पहरूआ कौन है ? इन पहरुओं का होना क्यों महत्वपूर्ण है ? पहरुआ होने की हमारी क्या जिम्मेदारी क्या है ? (देखें सि.और अनु. 88:81 । इस जिम्मेदारी का एक भाग यह है कि उन्हें सुसमाचार की शिक्षा देना जिन्होंने इसे अभी तक नहीं पाया है ।)

भविष्यवक्ताओं की चेतावनियों पर ध्यान देने—और अपने पड़ोसियों को सुसमाचार सीखा कर उन्हें चेतावनी देने की महत्ता सीखाने के लिए—एल्डर बोएड के. पैकर ने 1976 में आइडाहो में टैटोन बांध के धवस्त होने से आयी भयंकर बाढ़ के बारे में बताया था । उस तेजी से बहते बाढ़ के पानी के मार्ग में 7,800 लोग तुरन्त चपेटे में आने वाले थे । जैसे बाढ़ घाटी की ओर बढ़ी, इसने 790 मकानों को तबाह कर दिया और 800 मकानों, गिरजाघरों, विद्यालयों, और दुकानों को बहुत नुकसान पहुंचाया । जल की अधिकता, इसकी रफ्तार, और क्षेत्र की आबादी का विचार करके एक विशेषज्ञ ने अनुमान लगाया था कि लगभग 5,300 लोग मारे गये होंगे । आश्चर्यजनक रूप से, केवल 6 लोग डूबे थे ।

एल्डर पैकर ने पूछा थाः

''यह कैसे हुआ कि इतना बड़ा विनाश हुआ हो और बहुत थोड़ी सी जाने गई ? ...क्योंकि उन सबों को चेतावनी दे दी गयी थी ! उन्हें विस्तार नहीं पता था, लेकिन उन्हें चेतावनी दे दी गयी थी; और हर व्यक्ति ने जिसे चेतावनी मिली थी, अपने पड़ोसी को चेतावनी दे दी थी ।...

''उन 6 के साथ क्या हुआ जो डूब गये थे ? उनमें से एक बान्ध के बिलकुल नीचे था और उसके पास कोई चुनाव नहीं था । उनमें से दो ने इस चेतावनी को जब सच समझा तब बहुत देर हो चुकी थी । वे दोनों बाद में अपनी कार में मिले थे, लेकिन उन्होंने चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया था । उन में से तीन कुछ समान लेन वापस गये थे, और अपने जीवन से हाथ धो बैठे थे ।

''लेकिन यह एक अत्याधिक चमत्कार था । अन्तिम-दिनों के सन्तों के रूप में हम चेतावनियों पर ध्यान देना सीखते हैं ।...

''अब, मैं जो कुछ संसार में हो रहा है उसमें बहुत समानता देखता हूं, संसार में बहुत तेज बुराई और दुष्टता की लहर । यह चुपके से हमारे चारों ओर घुस जाती है और अन्दर घुसती चली जाती है । हमारे जीवन खतरे में हैं । हमारी सम्पत्ति खतरे में है । हमारी स्वतंत्रता खतरे में है, और हम निश्चिन्त हो कर अपना काम कर रहे हैं यह समझने में असमर्थ हैं हर किसी को अपने पड़ोसी को चेतावनी देनी है...

''हम सभी को भविष्यवक्ता द्वारा चेतावनी दे दी गयी है । क्या हम चेतावनी पर ध्यान देंगे या फिर उन 6 लोगों की तरह सोचेंगे कि यह चेतावनी हमारे लिए नहीं है ?'' (*That All May Be Edified* [1982], 220...21, 223) ।

''जहां जहां यह नदी जायेगी वहां जीवन होगा''

पाठ
44

यहेजकेल 43...44; 47

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को मन्दिर में उपलब्ध जीवन-देने वाली, बचाने वाली शक्तियों में भाग लेने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करें:

   क. यहेजकेल 43:1...12; 44:6...9, 23 । यहेजकेल को यरूशलेम के मन्दिर का दिव्यदर्शन दिया गया था ।
   ख. यहेजकेल 47:1, 6...12 । यहेजकेल मन्दिर से एक नदी को बहते हुए देखता है जोकि मरुभूमि में जीवन देती है तथा मृत सागर को जीवित करती है ।
   ग. यहेजकेल 47:2...5 । यहेजकेल नदी की गहराई नापता है और पाता है कि जब भी वह उसके अन्दर जाता है यह हर बार अधिक गहरी होती जाती है ।

2. पृष्ठ 209 में दिये गए मानचित्र को कक्षा आरम्भ होने से पहले पोस्टर या चॉकबोर्ड पर बनायें ।

3. अतिरिक्त अध्ययन: यहेजकेल 40...42; योएल 3:18; जकर्याह 14:8; प्रकाशितवाक्य 22:1...3; 1 नफी 8:10...11; 11:25; सिद्धान्त और अनुबन्ध 97:8...20 ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

कक्षा के सदस्यों से निम्नलिखित प्रश्नों की तरह प्रश्न पूछें:

- क्या आप कभी खेल या किसी अन्य मनोरंजक घटना को देख कर उत्तेजित हुए हैं ?
- क्या आप किसी घटना को देखकर इतने उत्साहित हुए हैं कि आप खड़े होकर चिल्लाने या हौसला बढ़ाने लगे हों ?
- क्या आप किसी ऐसी पवित्र घटना को सोच सकते हैं जिससे आपके मन में खुशी और आभार प्रकट करने का भाव उत्पन्न हुआ हो ? इस तरह की कुछ घटनाओं में शामिल हो सकती हैं:

  क. पृथ्वी की रचना । (अय्यूब 38:4...7) ।
  ख. यीशु का यरूशलेम में विजयी प्रवेश (यूहन्ना 12:12...16) ।
  ग. मसीह का दूसरा आगमन और पुनरूत्थान (1 थिस्सलुनीकियों 4:16) ।

- कैसे खेलकूद की घटनाओं या अन्य उत्तेजित मनोरंजन घटनाओं की खुशी की तुलना इन पवित्र घटनाओं से कर सकते हैं ? (जबकि खेलकूद की या अन्य उत्तेजित घटनाओं की खुशी अस्थाई होती है, पवित्र घटनाओं से जुड़ा आनन्द अनन्त होता है ।)
- गिरजाघर में वह कौन सी घटना है जब हिस्सा लेने वाले खड़े होकर, चिल्लाकर, और हाथ हिला कर आपना आनन्द और आभार प्रकट करते हैं ? (मन्दिर के समर्पण के समय, लोग अत्याधिक आनन्दित होकर होशन्ना चिल्लाते हैं ।)

  होशन्ना की पूकार एक सम्पूर्ण-आत्मिक है, इसे पूरी शक्ति से बोला जाता है । कलीसिया खड़ी होती है और एक ही पूकार में शब्द, होशन्ना, होशन्ना, होशन्ना हो परमेश्वर और मेमने की । आमीन, आमीन, और आमीन, इन्हें तीन बार दोहरायें । इसके बाद अक्सर सफेद रुमाल हाथों में ऊपर उठाकर लय में एक साथ हिलाते हैं । मेमने की विशेषण यीशु मसीह की कृपा और प्रायश्चित से सम्बन्ध रखता है'' (in Daniel H. Ludlow, ed., *Encyclopedia of Mormonism,* 5 vols. [1992], 2:659) ।

समझायें कि यह पाठ कक्षा के सदस्यों को मन्दिर से मिलने वाले बहुत से आनन्दों में से कुछ को समझने में सहायता करेगा ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. यहेजकेल को यरूशलेम में एक मन्दिर का दिव्यदर्शन दिखाया जाता है

यहेजकेल 43:1...12; 44:6...9, 23

- कक्षा के सदस्यों को यहेजकेल 43:1...12 और 44:6...9, 23 पढ़ने में सहायता करें । इन आयतों में से हम मन्दिर के बारे में क्या सीख सकते हैं ?

  आप कक्षा के सदस्यों के उत्तरों को चॉकबोर्ड पर लिखकर उनके अर्थों के बारे में चर्चा कर सकते हो । उत्तरों में निम्नलिखित सम्मिलित हो सकते हैं:

  क. प्रभु की महिमा मन्दिर को भर देती है (यहेजकेल 43:2, 4...5) ।
  ख. मन्दिर ''पृथ्वी पर प्रभु के सिंहासन का स्थान'' है (यहेजकेल 43:7) ।
  ग. प्रभु मन्दिर में चलता है, वह इसे ''मेरे पांव रखने का स्थान'' कहता है (यहेजकेल 43:7) ।
  घ. मन्दिर वह स्थान है जहां प्रभु अपने लोगों के ''मध्य रह सकता'' है (यहेजकेल 43:7) ।
  च. हम प्रभु की विधियां मन्दिर में सीखते हैं (यहेजकेल 43:11) ।
  छ. कुछ धर्मविधियां हैं जिन्हें प्रभु चाहता है कि हम मन्दिर में करें (यहेजकेल 43:11) ।
  ज. यहां तक की मन्दिर के चारों ओर का स्थान भी ''अत्याधिक पवित्र होगा'' (यहेजकेल 43:12) ।
  झ. केवल वही जो योग्य हैं मन्दिर में प्रवेश करेंगे (यहेजकेल 44:6...9) ।
  त. मन्दिर में हम पवित्र और अपवित्र तथा शुद्ध और अशुद्ध के अन्तर को सीखते हैं (यहेजकेल 44:23) ।

2. यहेजकेल मन्दिर से एक नदी को बहते देखता जो मरुस्थल को जीवन और मृत सागर को चंगा करती है ।

यहेजकेल 47:1, 6...12 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- यहेजकेल यरूशलेम में मन्दिर के पूर्व के दरवाजों से क्या आता देखता है ? (देखें यहेजकेल 47:1 ।) पानी कहां जाता है ? (देखें यहेजकेल 47:8 । मानचित्र में दिखायें कि यहूदिया वीरानभूमि और मृत सागर यरूशलेम के पूर्व में हैं ।)

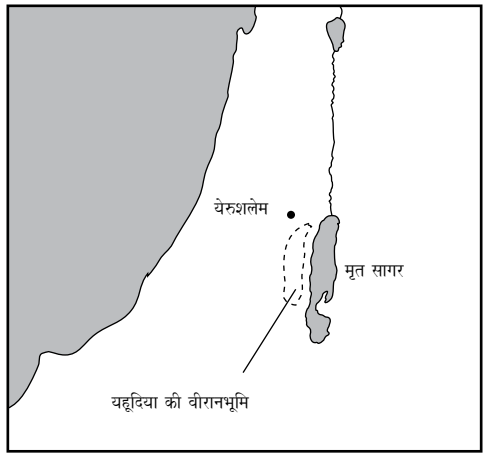

- यहूदी वीरानभूमि एक बंजर मरुस्थल है, और मृत सागर इतना नमकीन है कि इसमें जीवन नहीं हो सकता है । यहेजकेल के दिव्यदर्शन के अनुसार, यहूदिया की वीरानभूमि और मृत सागर में मन्दिर से नदी बहने के कारण क्या परिवर्तन होते हैं ? (देखें यहेजकेल 47:6...12 ।)

- यहेजकेल के मन्दिर के दिव्यदर्शन के समान एक अन्य दिव्यदर्शन में, प्रिय यूहन्ना को परमेश्वर का सिंहासन दिखाया गया था (प्रकाशितवाक्य 22:1...3 । ध्यान दें कि यहेजकेल 43:7, प्रभु मन्दिर को ''मेरे सिंहासन का स्थान'' कहता है) । यूहन्ना के दिव्यदर्शन में परमेश्वर के सिंहासन से क्या बहता है ? (देखें प्रकाशितवाक्य 22:1 ।) ''जीवन का जल'' क्या है ? (सुसमाचार के सिद्धान्त; देखें पाठ 30 में ध्यान गतिविधि । । हम किस प्रकार यहूदिया की वीरानभूमि और मृत सागर के समान हैं यदि हम जीवन के जल को न पीयें ?

- कैसे जीवन का जल जोकि मन्दिर में उपलब्ध है विवाहों को, परिवारों को, हमारे पूर्वजों को, गिरजाघर को, चंगाई और जीवन देता है ? मन्दिर से और क्या बहता हो जो आत्मिक जीवन तथा चंगाई देता है ? (उत्तरों में शामिल हो सकते हैं सच्चाई, बुद्धि, प्रकटीकरण, और अनुबन्ध ।)

- यहेजकेल 47:12 उन पेड़ों की व्याख्या करता है जो यहेजकेल के दिव्यदर्शन में नदी के किनारे पर उगते हैं । पेड़ों और नदी के पानी में क्या बात समान थी ? (उनके पास चंगाई और जीवन-दायनी शक्तियां थी ।)
- यूहन्ना के दिव्यदर्शन में नदी के किनारे में क्या उगता है ? (देखें प्रकाशितवाक्य 22:2 ।) धर्मशास्त्रों में और कहां पर भविष्यवक्ताओं को जीवन का वृक्ष दिखाया गया था ? (1 नफी 8:10...11; 11:25 ।) लेही और नफी को दिये गये सपने में, जीवन का वृक्ष क्या दर्शाता है ? (देखें 1 नफी 11:25 ।)
- कैसे परमेश्वर का प्रेम चंगाई और जीवन देता है ? कौन से आत्मिक और शारीरिक घावों को परमेश्वर का प्रेम चंगा करता है ?

3. यहेजकेल नदी की गहराई नापता है

यहेजकेल 47:2...5 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- पहली बार जब यहेजकेल नदी के पार गया था तो नदी कितनी गहरी थी ? (देखें यहेजकेल 47:2...3 ।) कितनी गहरी थी जब वह दूसरी बार, तीसरी बार, और चौथी बार उसके पार गया था ? (देखें यहेजकेल 47:4...5 ।) इन आयतों से मन्दिर के बारे में क्या सच्चाई प्रकट होती है ? (हमारे जीवन में मन्दिर की शक्ति जितनी बार हम वहां जाते हैं हर बार बड़ती जाती है ।)
- अति उत्तम सच्चाइयां मन्दिर में, अधिकतर चिन्हों द्वारा, सीखायी जाती हैं । यदि प्रथम बार में इन सच्चाइयों या मन्दिर धर्मविधियों की हमारी समझ में केवल ''घुटनों तक'' गहरा होती है, हमें क्या करना चाहिए ? (यहेजकेल 47:2...5 । हमें ''नदी'' में बार बार जाना चाहिए—या, अन्य शब्दों में, मन्दिर जब भी सम्भव हो जाना चाहिए ।)

निष्कर्ष

कक्षा के सदस्यों को बतायें कि प्रभु मन्दिर को ''धन्यवाद देने का स्थान'' कहता है (सि.और अनु. 97:13) । मन्दिर के कारण आपको जो आशीर्वाद मिलें हैं उनके लिए धन्यवाद प्रकट करें, और कक्षा के सदस्यों को मन्दिर के लिए उनका आभार प्रकट करने के लिए आमंत्रित करें । गवाही दें कि जैसे यहेजकेल के दिव्यदर्शन में मन्दिर से निकला पानी यहूदिया की वीरानभूमि को चंगाई और मृत सागर को जीवन देता है, यीशु मसीह का सुसमाचार हमें भी चंगाई और शुद्ध करेगा यदि हम इसे ग्रहण करेंगे ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''तेरी महिमा के निवासस्थान से प्रीति रखता हूं'' (भजन संहिता 26:8)

बहुत से भजन, मन्दिर जाने और मन्दिर के लिए प्रेम की सुन्दर अनुभूति एवं धन्यवाद प्रकट करने से प्राप्त आशीर्वादों, को दर्शाते हैं । जब निम्नलिखित भजनों की चर्चा करते हैं, आप कक्षा के कुछ सदस्यों से मन्दिर के लिए उनकी आभार की अनुभूतियों को बताने के लिए कह सकते हैं:

भजन संहिता 24:3...4
भजन संहिता 26:6...8
भजन संहिता 27:1, 4...6
भजन संहिता 65:4
भजन संहिता 84
भजन संहिता 122
भजन संहिता 134

2. ''[हमारी] सदस्यता का महान चिन्ह''

अध्यक्ष हावर्ड डबल्यु. हन्टर ने कहा था: ''मैं गिरजाघर के अन्तिम-दिनों के सन्तों को प्रभु के मन्दिर को अपनी सदस्यता के महान चिन्ह के रूप में देखना चाहिए । यह मन की प्रबलत्तम आकांक्षा है कि गिरजाघर का प्रत्येक सदस्य मन्दिर में प्रवेश करने के योग्य हो । यह प्रभु को प्रसन्न करेगा यदि प्रत्येक वयस्क सदस्य वर्तमान मन्दिर संस्तुति के योग्य हो—तथा इसे हमेशा साथ रखे । वे बातें जो मन्दिर संस्तुति के योग्य होने के लिए हमें करनी या नहीं करनी चाहिए, वही बातें हैं जो व्यक्ति या एक परिवार के रूप में खुशी प्राप्त करने के लिए जरूरी हैं'' (in Conference Report, Oct. 1994, 8; or *Ensign,* Nov. 1994, 8) ।

- हम कैसे गिरजाघर में मन्दिर को ''[अपनी] सदस्यता का महान चिन्ह'' बना सकते हैं ? कैसे इस प्रकार मन्दिर को देखने से जीवन के प्रति हमारे दृष्टिकोण और प्रभु के कार्य के प्रति हमारे समर्पण पर प्रभाव डालता है ?

पाठ
46

''राज्य, जो अनन्तकाल तक नहीं टुटेगा''

दानिय्येल 2

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को पुनःस्थापित यीशु मसीह के गिरजाघर की गवाही को बल देना तथा उन्हें पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य को बनाने में मदद देने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करो:

   क. दानिय्येल 2:1...23 । राजा नबूकदनेस्सर ने स्वप्न देखा था और अपने सलाहकारों को आज्ञा दी कि वे इसकी व्याख्या करें तथा इसका अर्थ बताएं (2:1...13) । दानिय्येल अपने मित्रों के साथ प्रार्थना करता है, और परमेश्वर उसे स्वप्न तथा उसका अर्थ प्रकट करता है (2:14...23) ।

   ख. दानिय्येल 2:24...49 । दानिय्येल प्रकट करता है कि राजा नबूकदनेस्सर का स्वप्न पृथ्वी के महान राज्य का उत्थान और पतन तथा अन्तिम-दिनों में परमेश्वर के राज्य की सभी राज्यों पर विजय की भविष्यवाणी करता है ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: सिद्धान्त और अनुबन्ध 65 ।

3. कक्षा के दो या तीन सदस्यों गिरजाघर की सच्चाई की संक्षित गवाही तैयार करने के लिए कहें ।

4. यदि आप ध्यान गतिविधि का चुनाव किया है, इस पृष्ठ के अन्त में दिये गये चार्ट को कक्षा आरम्भ होने से पहले पोस्टर या चॉकबोर्ड पर बनायें ।

5. यदि आप ''नबूकदनेस्सर का स्वप्न'' रेखाचित्र का प्रयोग कर रहे हैं (देखें पृष्ठ 00 218), इसे कक्षा आरम्भ होने से पहले पोस्टर या चॉकबोर्ड पर बनायें । अलग अलग राज्यों के नाम न लिखें जब तक कि आप इस पर कक्षा में चर्चा न कर लें ।

6. दानिय्येल नबूकदनेस्सर को स्वप्न का अर्थ समझाता है, का चित्र उपलब्ध है तो आप इसे कक्षा के दौरान प्रयोग कर सकते हैं (62531; सुसमाचार कल चित्र किट 115) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

कक्षा के सदस्यों का ध्यान उस चार्ट पर डालें जो आपने पोस्टर या चॉकबोर्ड पर बनाया है:

	6 अप्रैल 1830	1880	1930	1980	1995	2000
	6	133,628	670,017	4,639,822	9,340,898	11,000,000 से अधिक
	1	10	16	44	88	100
	0	23	104	1,218	2,150	2,581
	0	10	30	188	307	334
	0	1	7	19	47	102

- आपके विचार से ये संख्याएं क्या प्रदर्शित करती हैं ?

कक्षा के सदस्यों को कुछ मिनट इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए दें । फिर जैसे नीचे दिखाया गया है उस तरह चार्ट को पूरा करें:

''यदि नाश हो गई तो हो गई''

पाठ 45

दानिय्येल 1; 3; 6; एस्तेर 3...5; 7...8

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सुसमाचार के अनुसार जीवन जीने में सहायता के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों को पढ़ें:

   क. दानिय्येल 1 । दानिय्येल और उसके मित्रों ने आपने आपको राजा नबूकदनेस्सर के भोजन को खाकर अशुद्ध करने से मना कर दिया (1:1...16) । प्रभु दानिय्येल और उसके मित्रों को अच्छा स्वास्थ्य और बुद्धि का आशीर्वाद देता है (1:17...21) ।

   ख. नबूकदनेस्सर 3. शद्रक, मेशक, और अबेदनगो ने राजा दानिय्येल की मूर्ति की पूजा करने से इन्कार करते हैं (3:1...12) । राजा नबूकदनेस्सर उन्हें धधकते हुए भट्टे में फेंक देता है, और प्रभु उन्हें मरने से बचाता है (3:13...30) ।

   ग. दानिय्येल 6 । राजा दारा के आदमी राजा पर एक आज्ञापत्र पर हस्ताक्षर करने के जोर डालते हैं कि 30 दिनों तक कोई भी किसी मनुष्य या देवता के स्थान पर उससे विनती करेंगे (6:1...9) । राजा के आज्ञापत्र के बावजूद, दानिय्येल परमेश्वर से प्रार्थना करता है (6:10...13) । आज्ञापत्र का पालन न करने के दण्ड स्वरूप, दानिय्येल को शेरों की मान्द में फेंक दिया जाता है (6:14...17) । प्रभु दुत भेज कर दानिय्येल को बचाता है (6:18...23) ।

   घ. एस्तेर 3...5; 7...8 । मोर्दकै हमान को झुककर दण्डवत करने से मना करता है (3:1...4) । हमान राजा क्षयर्ष को एक आज्ञापत्र बनाने के लिए राजी जिससे साम्राज्य के सारे यहूदियों को मारा जा सके (3:5...14) । एस्तेर को हमान की योजना के बारे में पता चलता है वह आपनी जान जोखिम में डाल कर राजा के पास सहायता के लिए जाती है (4:1...17) । राजा एस्तेर का स्वागत करता है और वह स्वीकार करता है कि वह हमान के साथ दावत में आयेगा (5:1...8) । दावत में एस्तेर राजा को हमान की यहूदियों को मारने की योजना के बारे में बताती है (7:1...6) । राजा हमान को फांसी पर लटका देता है (7:7...10) । राजा मोर्दकै का सम्मान करता है और एस्तेर के निवेदन को मान कर हमान के आज्ञापत्र को वापस ले लेता है (8:1...7) ।

2. अतिरिक्त पढ़ाई: दानिय्येल 5; एस्तेर 1...2; 6; 9...10 ।

3. यदि आपने ध्यान गतिविधि का प्रयोग किया है, कक्षा के दो सदस्यों को संक्षिप्त में यह बताने को तैयार करो जब उन्होंने या किसी अन्य ने जिसे वह जानते हैं, प्रभु की आज्ञा पालन करने का साहस किया था ।

4. यदि निम्नलिखित चित्र उपलब्ध हों, आप उनका प्रयोग पाठ के दौरान कर सकते हैं: दानिय्येल राजा के मांस और शराब को अस्वीकार करता है (62094; सुसमाचार कला चित्र किट 114); तीन मनुष्य धधकते भट्टे में (62093; सुसमाचार कला चित्र किट 116); और दानिय्येल शेर की मान्द में (62096; सुसमाचार कला चित्र किट 117) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

नियुक्त कक्षा के सदस्य को संक्षेप में उस समय के बारे में बताने के लिए कहें जब उन्होंने या जिन्हें वे जानते हैं उसने प्रभु की आज्ञा मानने का साहस किया था ।

कक्षा के सदस्यों के द्वारा उनके अनुभव बांटने के बाद, समझायें कि यह पाठ पुराने नियम के 6 लोगों के बारे में जिन्होंने प्रभु की आज्ञा मानने का साहस किया था ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. दानिय्येल और उसके मित्र राजा नबूकदनेस्सर का भोजन खाने से मना कर देते हैं; उन्हें अच्छे स्वास्थ्य और बुद्धि का आशीर्वाद मिलता है ।

दानिय्येल 1 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

एक छोटे लड़के के रूप में, दानिय्येल यरूशलेम से बाबुल बन्दी बना कर ले जाया गया था । वह और अन्य होनहार युनानी युवक—उसके मित्र शद्रक, मेशक, और अबेदनगो—को राजा नबूकदनेस्सर के दरबार में प्रशिक्षण दिया गया था ।

- दानिय्येल और उसके मित्रों ने क्या सुझाव दिया था जब उन्हें राजा की ओर से मांस और शराब दिया गया था ?(देखें दानिय्येल 1:8...14 ।) प्रभु के स्वास्थ्य के नियम का पालन करने से उन्हें क्या आशीर्वाद मिले थे ? (देखें दानिय्येल 1:15, 17, 20 ।) कैसे जो आशीर्वाद उन्हें मिले थे वे प्रभु की प्रतिज्ञाओं के समान हैं जब हम ज्ञान के शब्द का पालन करते हैं ? (देखें सि.और अनु. 89:18...20) ।

  एल्डर बोएड के. पैकर ने सीखाया था:''मुझे पता चला है...कि ज्ञान के शब्द का मूल उद्देश्य प्रकटीकरण के साथ है । जब आप बहुत छोटे होते हो हम आपको चाय, काफी, शराब, तम्बाखू, नशीले पदार्थ, और अन्य कोई भी वस्तु जो आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है...यदि कोई नशे की हालत में साधारण सी बात को अच्छी तरह सुन सकता, तो वह आत्मिक आवाज को कैसे सुन सकता है जो कि अत्यन्त सूक्ष्म होती है ? ज्ञान के शब्द स्वास्थ्य के नियम के रूप में कीमती है लेकिन यह शारीरिक रुप से कहीं अधिक आत्मिक रुप से बेशकीमती है'' (in Conference Report, Oct. 1979, 28...29; or *Ensign,* Nov. 1979, 20) ।

- यह कहानी हमें क्या शिक्षा देती है कि हमें उस समय क्या करना चाहिए जब हम पर दबाव होता है कि वह करें जिसे हम नहीं करना चाहते ? (देखें दानिय्येल 1:5, 8 ।) किन परिस्थितियों में हमें प्रभु की आज्ञा का पालन करने के लिए साहस की आवश्यकता होती ? कैसे हम इन परिस्थितियों में अपने साहस को बढ़ा सकते हैं ?

2. प्रभु शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को धधकते भट्टे में से बचाता है ।

दानियल 3 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- राजा नबूकदनेस्सर का आज्ञापत्र की जो कोई उसकी मूर्ति की पूजा नहीं करेगा उसे धधकते भट्टे में फेंक दिया जायेगा (दानिय्येल 3:1...6) । शद्रक, मेशक, और अबेदनगो इस आज्ञापत्र का कैसे जवाब देते हैं ? (देखें दानिय्येल 3:12 ।) नबूकदनेस्सर क्या करता है जब उसको पता चलता है कि वे उसकी मूर्ति की पूजा नहीं कर रहे हैं ? (देखें दानिय्येल 3:13...15, 19...20 ।)

- शद्रक, मेशक, और अबेदनगो क्या कहते हैं जब राजा उन्हें भट्टे में फेंकने की धमकी देता है ? (देखें दानिय्येल 3:16...18 ।)

  एल्डर नील ए. मैक्सवैल ने कहा था: ''हम अपने जीवन में आने वाली सभी परेशानियों से हमेशा नहीं बच सकते, लेकिन हम अनन्त मृत्यु से आवश्य बच सकते हैं ! तब तक, अन्तिम आशा तीन शब्दों को कहना सम्भव करती है जो सदियों पहले तीन साहसी युवकों ने कहे थे । वे जानते थे कि परमेश्वर उन्हें धधकते भट्टे में से बचा लेगा यदि वह चाहे । परन्तु, यदि नहीं, उन्होंने कहा, वे फिर भी उसकी ही सेवा करेंगे'' (in Conference Report, Oct. 1994, 45; or *Ensign,* Nov. 1994, 35) ।

- शद्रक, मेशक, और अबेदनगो का जवाब हमें प्रभु की आज्ञा पालन करने के लिए क्या शिक्षा देता है ? (शद्रक, मेशक, और अबेदनगो प्रभु की आज्ञा मानने के लिए तैयार थे चाहे वह उनकी रक्षा करता या नहीं । हमारी आज्ञाकारिता बिना शर्त होनी चाहिए चाहे प्रभ हमें इच्छा के अनुसार आशीर्वाद देता है या नहीं ।) किसी निश्चित आशीर्वाद के लिए प्रभु की आज्ञा पालन करने के क्या खतरे हैं ?

- क्या होता है जब शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को धधकते भट्टे में फेंक दिया जाता है ? (देखें दानिय्येल 3:21...27 ।) उनके साथ भट्टे में कौन था ?(देखें दानिय्येल 3:25 ।) कैसे उद्धारकर्ता हमारी सहायता करता है जब हम परीक्षा के समय उसके पास जाते हैं ?

- शद्रक, मेशक, और अबेदनगो के साहस का नबूकदनेस्सर पर क्या प्रभाव पड़ता है ? (देखें दानिय्येल 3:28...30 ।) कैसे हमारे काम हमारे पड़ोसियों के गिरजाघर के प्रति उनके दृष्टिकोण पर प्रभाव डालते हैं ?

3. दानिय्येल राजा के आज्ञापत्र के बावजूद प्रार्थना करता है और उसे शेरों की मान्द फेंक दिया जाता है । प्रभु अपना दूत भेज कर दानिय्येल को मृत्यु से बचाता है ।

दानिय्येल 6 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

राजा नबूकदनेस्सर के बाद उसका बेटा बेलशस्सर राजा बनता है । जब बेलशस्सर को मार दिया जाता है ''दारा मादी राजा बनता है'' (दानिय्येल 5:31), और दानिय्येल को उच्च पद दे दिया जाता है । (ध्यान दें: दारा मादी, राजा दारा नहीं था जिसने कुस्रु के पश्चात फरीसियों के साम्राज्य पर शासन किया था और जिससे मन्दिर का पुनःनिर्माण करते समय यहूदियों ने प्रार्थना की थी । देखें एज्रा 4...6; पाठ 47 ।)

- क्यों राजा के अधिपति और राजकुमार दानिय्येल में गलती पाना चाहते थे ? (देखें दानिय्येल 6:1...5 । वे जलते थे कि राजा दानिय्येल को प्रमुखता देता था और उन्हें चिन्ता थी कि कहीं राजा दानिय्येल को अधिक अधिकार न दे दे ।) इन्होंने कौन से आज्ञापत्र पर राजा से हस्ताक्षर करवाने के लिए राजी कर लिया था ? (देखें दानिय्येल 6:6...9 । ये जानकर कि दानिय्येल नियमित रुप से प्रार्थना करता था, उन्होंने राजा को एक आज्ञापत्र पर हस्ताक्षार करने के लिए राजी किया कि 30 दिन के लिए सभी लोग राजा के सिवाय अन्य किसी भी मनुष्य या परमेश्वर से विनती नहीं करेगा । जो इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसे शेरों की मांद में फेंक दिया जायेगा ।)

- दानिय्येल ने राजा के आज्ञापत्र का कैसे जवाब दिया ? (देखें दानिय्येल 6:10 ।) हम दानिय्येल से प्रार्थना के महत्व के बारे में क्या सीख सकते हैं ? (दानिय्येल के लिए प्रार्थना इतनी महत्वपूर्ण थी कि अपनी जान की परवाह न करते हुए भी उसने प्रार्थना करना जारी रखा ।) कक्षा के सदस्यों को विचार करने के लिए आमंत्रित करें कि अपने परम पिता से प्रार्थना करनी स्वतंत्रता के मूल्य को हम कितना महत्व देते हैं ।

- राजा दारा कैसे महसूस करता है जब उसके आदमी उसे आकर बताते हैं कि उन्होंने दानिय्येल को प्रार्थना करते देखा है ? (देखें दानिय्येल 6:12...15 ।) राजा किस प्रकार परमेश्वर में अपना विश्वास प्रदर्शित करता है ? (देखें दानिय्येल 6:16; 18 ।)

- प्रभु दानिय्येल को शेरों की मांद में कैसे आशीर्वाद देता है ? (देखें दानिय्येल 6:19...23 ।) राजा दारा और राज्य के लोगों पर दानिय्येल के विश्वास और साहस का क्या प्रभाव पड़ता है ? (देखें 6:24...28 ।)

  एल्डर एल. टॉम पैरी ने कहा थाः ''दानिय्येल के सेवा से न केवल राजा को लाभ मिला था, परन्तु प्रभु में दानिय्येल के विश्वास से, पूरे प्रदेश प्रभावित हुआ था । राजा ने घोषणा की कि राज्य के सभी लोग सच्चे और जीवित परमेश्वर, अर्थात दानिय्येल के परमेश्वर की प्रार्थना करेंगे । एक नेक व्यक्ति की सेवा में कितनी शक्ति थी, कि जब उसने संसार में सेवा की जिसमें वह रहता था तो इतने लोगों पर प्रभाव पड़ा था ! हमारी सेवा का परिणाम कितना प्रभावशाली होगा यदि हम जिस संसार में रहते हैं उसकी सेवा करें !'' (in Conference Report, Apr. 1988, 16; or *Ensign,* May 1988, 15) ।

4. लोगों का जीवन बचाने के लिए एस्तेर आपना जीवन खतरे में डालती है ।

एस्तेर 3...5; 7...8 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

एस्तेर एक यहूदी स्त्री थी जोकि दानिय्येल के समय तुरन्त बाद रहती थी । उसके माता-पिता के मरने के बाद, उसे उसके चचरे भाई मोर्दकै ने पाला पोसा । ऐस्तर बहुत सुन्दर थी, और फारसी और मादी राजा, क्षयर्ष उसकी सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने उसे अपनी रानी बना लिया ।

- राजा क्षयर्ष ने हमान को उच्चतम पद दे दिया (देखें एस्तेर 3:1) । कैसे मोर्दकै ने साहस किया था जब राजा ने उसे तथा अन्य सेव कों हमान को दण्डवत करने की आज्ञा दी ?(देखें ऐस्तर 3:2...4 ।) हमान क्या प्रतिक्रिया थी ? (देखें एस्तेर 3:5...14 । उसे बहुत गुस्सा आया और उसने ''कुछ लोगों'' —राज्य में सभी यहूदियों का नाश करने की योजना बनाता है ।)

- जब एस्तेर को यहूदियों के बीच में शोक लहर का पता चला, उसने एक सन्देशवाहक को भेजकर मोर्दकै से पता करा कि क्या गड़बड़ है (एस्तेर 4:1...6) । मोर्दकै ने एस्तेर से क्या करने को कहा ?(देखें एस्तेर 4:7...9 ।) एस्तेर के लिए राजा के पास जाकर बात करना क्यों खतरनाक था ? (देखें एस्तेर 4:10...11 । राजा के पास ये कानूनी अधिकार था कि यदि उसके पास बिना बुलाया आता है वह उसे जान से मार सकता था ।)

- मोर्दकै ने क्या सन्देश भेजा जब उसे पता चला कि एस्तेर राजा से मिलने जा रही है ?(देखें एस्तेर 4:13...14 ।) आप क्या सोचते हैं कि एस्तेर ने सोचा होगा कि शायद उसे इस ''कठिन समय के लिए ही राजपद मिला हो'' ?(एस्तेर 4:14) । हम कैसे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे जीवन का कोई उद्देश्य है ? कैसे यह उद्देश्य हमारी सहायता करता है ?

- एस्तेर ने अपने सेविकाओं और स्थानीय यहूदियों से क्या कहा जब वह राजा से मिलने जा रही थी ? (देखें एस्तेर 4:16 ।) कैसे कई लोगों का संगठित उपवास और प्रार्थना हमारी सहायता करता है ?

- राजा से मिलने की अपनी इच्छा को बताते हुए, एस्तेर ने कहा था, ''यदि नाश हो गई तो नाश हो गई'' (एस्तेर 4:16) । कैसे यह घोषणा शद्रक, मेशक, और अबेदनगो को भट्टे में फेंकने से पहले के बयान के समान है ? (देखें दानिय्येल 3:17...18 ।) कैसे यह घोषणा एस्तेर का अपने लोगो और परमेश्वर के प्रति श्रद्धा को दिखाता है ?

- जब एस्तेर राजा के पास गई, उसने उसका स्वागत किया और उससे कहा वह उसकी किसी भी निवेदन को मानेगा (एस्तेर 5:1...3) । उसने निवेदन किया कि राजा और हमान दावत में आयें (एस्तेर 5:4...8) । दावत के दूसरा दिन, एस्तेर ने राजा से क्या कहा था ? (देखें एस्तेर 7:3...4 ।) राजा ने क्या किया जब उसे पता चला कि हमान जिन लोगों को मारने की योजना बना रहा था वे यहूदी हैं ? (एस्तेर 7:5...10 ।)

- हमान को फांसी पर लटका दिया गया, लेकिन यहूदियों को मारने का आज्ञापत्र पूरे राज्य में भेजा जा चूका था । एस्तेर ने राजा से क्या करने को कहा था ? (देखें एस्तेर 8:5...6 ।) यहूदियों को ऐस्तर के साहस और विश्वास से क्या आशीर्वाद मिले थे ? एस्तेर 8:16...17 ।) आपको दूसरों के साहस और विश्वास से क्या आशीर्वाद मिले हैं ?
- एस्तेर के समान साहस दिखाने के लिए आजकल हमें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ? हमें क्या आशीर्वाद मिलते हैं जब हम सही को यह जानते हुए करने की कोशिश करते हैं कि ऐसा करने से हम परेशानी में पड़ सकते हैं ?

निष्कर्ष

गवाही दें कि प्रभु हमें आशीर्वाद देगा यदि हम सच को सहयोग देंगे । कक्षा के सदस्यों को दानिय्येल, शद्रक, मेशक, अबेदनगो, एस्तेर, और मोर्दकै के उदाहरणों का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करो ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. साहसिक आज्ञाकारिता से मिलने वाले मूलभूत आशीर्षें

- दानिय्येल, शद्रक, मेशक, अबेदनगो, एस्तेर, और मोर्दकै में क्या बात समान थी ? (उन सभी के पास सही काम को करने का साहस था, चाहे इसके लिए उनकी जान को ही खतरा क्यों न हो ।) किन परिस्थितियों का आपने सामना किया जब आपको यह निर्णय लेने में कठिनाई हुई हो कि आपको सही का साथ देना चाहिए या नहीं ?

गवाही दें कि जब हम आज्ञाओं का पालन करने की कोशिश करते हैं, प्रभु हमें आशीर्वाद देता है । हालांकि, मिलने वाले आशीर्वाद सदैव तुरन्त नहीं मिलते हैं । यह दर्शाने के लिए, आप निम्नलिखित लोगों की परिक्षाओं की चर्चा कर सकते हैं जोकि अन्त तक कायम रहे थे.:

क. सारा 90 वर्ष की आयु तक बच्चे उत्पन्न करने के लिए अयोग्य थी (उत्पत्ति 17:15...17; 21:1...2) ।

ख. यूसुफ को उसके उसके भाइयों ने बेच दिया था और बाद में उस जुर्म के लिए कैद कर लिया था जो उसने किया ही नहीं था (उत्पत्ति 37:27...28; 39:7...20) ।

ग. उद्धारकर्ता को उसके ही मित्र ने धोखा दिया, अन्यायपूर्ण मुकदमा चला, और क्रूस पर लटका दिया गया था (यूहन्ना 18...19) ।

घ. नफी को उसके भाइयों द्वारा पीटा गया और बाद में रस्सियों से बान्ध दिया गया था (1 नफी 3:28; 18:10...11) ।

च. अलमा और अमुलेक को बल पूर्वक स्त्रियों और बच्चों को उनके विश्वास के कारण जलते हुए देखना पड़ा था (अलमा 14:8...11 ।)

छ. जोसफ स्मिथ को जेल में डाला गया और शहीद कर दिया गया था (सि.और अनु. 135) ।

- आपके विचार से प्रभु ने इन लोगों को परिक्षाओं में क्यों पड़ने दिया ? आप क्यों सोचते हैं कि यह परिक्षाओं को अन्त तक सहने के योग्य थे ? हम इनके उदाहरणों से क्या सीख सकते हैं ?

2. सच का सहयोग देना

कक्षा के सदस्यों को विभिन्न परिस्थितियों की भूमिकाओं का नाटक करने दें जिसमें उन्हें सही को सहयोग देना होगा । उन परिस्थितियों के बारे में सोचो जो कक्षा के सदस्यों पर लागू की जा सकती हैं । निम्नलिखित सुझाव आपकी मदद कर सकते हैं:

क. एक मित्र किसी का अपमान करता है और आपको उत्साहित करता है कि आप भी वैसा करें ।

ख. कोई आपको सुझाव देता है कि आप ऐसा संगीत सुनें जिसे सुनना उचित नहीं है ।

ग. कोई आपको कहता कि रविवार को गिरजाघर के बाद रेस्तरां में चलते हैं ।

घ. कोई आपको शराब या ऐसी वस्तु का सेवन करने के लिए कहता है जो ज्ञान के शब्द के विपरीत है ।

	6 अप्रैल 1830	1880	1930	1980	1995	2000
गिरजाघर के सदस्य	6	133,628	670,017	4,639,822	9,340,898	11,000,000 से अधिक
भाषाएं जिनमें मॉरमन की पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है	1	10	16	44	88 (39 पूर्ण और 49 आधा अनुवाद)	100 (61 पूर्ण और 39 आधा अनुवाद)
स्टेक	0	23	104	1,218	2,150	2,581
मिशन	0	10	30	188	307	334
कार्यरत मन्दिर	0	1	7	19	47	102

(वर्तमान संख्याएं हाल की किसी पत्रिका से प्राप्त की जा सकती हैं । आप इन संख्याओं को दर्शाने के लिए चार्ट में अतिरिक्त कॉलम बना सकते हैं)

कक्षा के सदस्यों को गिरजाघर के विकास की तेज गति पर उनके विचार प्रकट करने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं । समझाएं कि यह पाठ एक प्राचीन भविष्यवक्ता, दानिय्येल के बारे में बताता है जिसने परमेश्वर के राज्य—अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर की भविष्यवाणी की थी ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. दानिय्येल एक प्रकटीकरण प्राप्त करता है जिसमें उसे राजा दानिय्येल के स्वप्न तथा उसका अर्थ बताया जाता है ।

दानिय्येल 2:1...23 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

राजा नबूकदनेस्सर ने एक रात परेशान करने वाला स्वप्न देखा था । उसने अपने सलाहकारों की यह कहकर परिक्षा ली कि वह इसे भूल गया था और उनको आज्ञा दी कि वे उसे प्रकट करें तथा उसका अर्थ भी समझाएं (दानिय्येल 2:2...5) । जब उन्होंने कहा कि वे इसका बयान नहीं कर सकते हैं, नबूकदनेस्सर ने दानिय्येल और उसके मित्रों सहित बाबुल के सभी बुद्धिजीवियों को मारने का आदेश दे दिया । (दानिय्येल 2:10...13) ।

- कैसे दानिय्येल ने किस प्रकार राजा के स्वप्न का अर्थ बताया था ? (देखें दानिय्येल 2:17...18 । उसने अपने मित्रों से उसके साथ प्रार्थना करने को कहा ।) किस प्रकार परिवार के सदस्यों और मित्रों की प्रार्थना से आपको सहायता मिली थी ?
- दानिय्येल और उसके मित्रों की प्रार्थना का उत्तर किस प्रकार मिला था ? (दानिय्येल 2:19, 27...28 ।) दानिय्येल ने राजा के स्वप्न का दिव्यदर्शन प्राप्त होते ही क्या किया था ? (देखें दानिय्येल 2:20...23) उसके शब्दों ने किस प्रकार परमेश्वर के प्रति उसकी भावनाओं को प्रकट किया था ? प्रभु का आभार प्रकट करना क्यों महत्वपूर्ण है ? हम किस प्रकार अपना आभार प्रकट कर सकते हैं ?
- उन माध्यमों के भेद बताएं जिससे दानिय्येल और नबूकदनेस्सर ने प्रश्नों के उत्तरों की खोज की थी । (देखें दानिय्येल 2:2, 19...23, 28 ।) किन अविश्वसनीय माध्यमों की लोग तलाश करते हैं जब उन्हें मुश्किल प्रश्न का उत्तर पाने या कोई निणर्य लेने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है ? क्या बात लोगो को ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर का मार्गदर्शन लेने से रोकती है ?

2. दानिय्येल नबूकदनेस्सर के स्वप्न की व्याख्या करता एवं अर्थ समझाता है ।

दानिय्येल 2:24...49 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- किस प्रकार दानिय्येल ने उस महान प्रतिमा की व्याख्या की था जिसे राजा ने अपने स्वप्न में देखा था ? (दानिय्येल 2:31...33 । नीचे दिखाए गए चित्र या आपके बनाये चित्र दानिय्येल नबूकदनेस्सर का स्वप्न का अर्थ समझाता को संदर्भ करें ।)

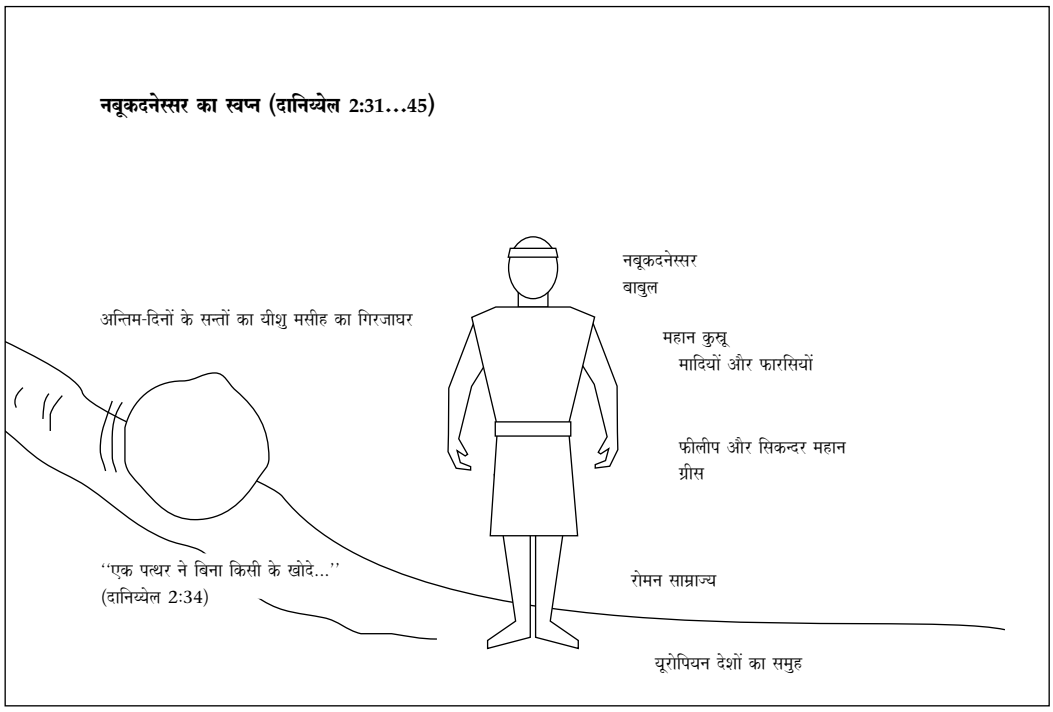

- प्रतिमा के विभिन्न हिस्से किस बात को दर्शाते थे ? (देखें दानिय्येल 2:36...43 । यह हिस्से विभिन्न राज्यों को दर्शाते थे जो कि एक दूसरे के बाद विश्व शक्ति के रुप में ऊभरेगें ।)

  चित्र में बताये गये राज्य के नामों को लिखें जब अध्यक्ष स्पेंसर डबल्यु. किम्बल की व्याख्या पर विचार करते हैं ।

  क. सोने का सिर नबूकदनेस्सर और उसके राज्य को दर्शाता है ।
  ख. चांदी की छाती और हाथ कुस्थू और उसके मदियों तथा फरीसियों के राज्यों को दर्शाते हैं ।
  ग. पीतल का पेट और जाघें फिलीप और सिकन्दर और ग्रीस या मसीदोनियन राज्य को बताता है ।
  घ. लोहे की टांगे रोमन साम्राज्य को दर्शाता है ।
  च. लोहे और मिट्टी के पैर यूरोपियन देशों को दर्शाते हैं । (in Conference Report, Apr. 1976, 10; or *Ensign,* May 1976, 8)

- नबूकदनेस्सर के स्वप्न में, किसे प्रतिमा का नाश किया था जोकि पृथ्वी के राज्यों को दर्शाता है ? (देखें दानिय्येल 2:34...35) ''एक पत्थर बिना खोदा गया...'' किसको दर्शाता है ? (देखें दानिय्येल 2:44...45; सि.और अनु. 65:2)

  अध्यक्ष किम्बल ने सीखाया थाः ''अन्तिम-दिनों का यीशु मसीह का गिरजाघर 1830 में पुनःस्थापित किया गया था ।...यह राज्य, स्वर्ग के परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया था, जा कभी नाश नहीं किया जा सकता ना ही इस पर विजय पाई जा सकती है, और बिना खोदा गया पत्थर एक बड़ा पहाड़ बन जायेगा और पूरी पृथ्वी में फैल जायेगा'' (in Conference Report, Apr. 1976, 10; or *Ensign,* May 1976, 8...9) ।

- अन्तिम दिनों में गिरजाघर के विषय में दानिय्येल ने क्या भविष्यवाणी की थी ? (देखें दानिय्येल 2:34...35, 44 ।)

  आप निम्नलिखित भविष्यवाणियों की सूची बना सकते हैं । दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि गिरजाघरः

  क. ''बिना हाथों के खोदे'' बनाया जायेगा (दानिय्येल 2:34) ।
  ख. ''एक बड़ा पहाड़ बन जायेगा, और पूरी पृथ्वी पर फैल जायेगा'' (दानिय्येल 2:35) ।
  ग. ''अनन्तकाल तक न टुटेगा'' (दानिय्येल 2:44) ।
  घ. ''न किसी दूसरी जाति के हाथ में किया जायेगा'' (दानिय्येल 2:44) ।
  च. ''उन सब राज्यों को चूर चूर कर करेगा'' (दानिय्येल 2:44) ।
  छ. ''सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44) ।

- इसका क्या अर्थ है कि पत्थर बिना ''हाथों के खोदा जायेगा'' ? (देखें दानिय्येल 2:34 । यह मनुष्य द्वारा नहीं बनाया जायेगा ।) किस प्रकार यीशु मसीह का गिरजाघर बिना हाथों के खोदा गया पत्थर के समान है ?

एल्डर जोसफ बी. वर्थलीन ने कहा थाः ''हमार प्रभु और उद्धारकर्ता गिरजाघर का सिर है तथा अपने सेवकों का निर्देशन करता है । यह प्रभु का गिरजाघर है; यह मनुष्यों का गिरजाघर नहीं है'' (in Conference Report, Oct. 1993, 4; or *Ensign,* Nov. 1993, 5) ।

- कैसे दानिय्येल की भविष्यवाणी कि गिरजाघर ''पूरी पृथ्वी में फैल जायेगा'' और ''अनन्तकाल तक न टुटेगा'' आज पूरी हो रही है ? (आप ध्यान गतिविधि के दूसरे चार्ट को संदर्भ कर सकते हैं ।)

अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने गवाही दी थीः ''यह गिरजाघर सच्चा है । यह हर तुफान का सामना करेगा । यह अपने आलोचकों जोकि इसका मजाक उड़ाते हैं, समक्ष टिका रहेगा । यह हमारे परम पिता परमेश्वर के द्वारा सभी पीढ़ीयों के अपने बेटों तथा बेटियों को आशीर्वाद देने के लिए स्थापित किया है । इसके साथ उसका, प्रभु यीशु मसीह, विश्व के उद्धारकर्ता, का नाम है जोकि इसका मुखिया है । यह पौरोहित्य शक्ति के द्वारा शासित और चलता है । यह प्रभु की दिव्यता का एक अन्य गवाह विश्व को देता है । मेरे मित्रों, विश्वासी बने रहो । सच्चे बने रहो । परमेश्वर की महान बातों में वफादार रहो जो इस पीढ़ी को प्रकट की जाती है'' (“Keep the Faith,” *Ensign,* Sept. 1985, 6) ।

- अपने घरों में, अपने समाज में, और पूरी दुनिया में परमेश्वर के राज्य का निर्माण में भागीदारी करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

कक्षा के नियुक्त सदस्यों को गिरजे की सच्चाई के विषय में संक्षिप्त गवाही देने के लिए आमंत्रित करें ।

निष्कर्ष

गवाही दें कि अन्तिम-दिनों का यीशु मसीह का गिरजाघर यीशु मसीह पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य है और यीशु मसीह इसका नेतृत्व करता है । कक्षा के सदस्यों को पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने में अपनी भागीदारी निभाने के लिए उत्साहित करें ।

पाठ
47

''आओ हम कमर बान्धकर निर्माण करें''

एज्रा 1...8; नहेमायाह 1...2; 4; 6; 8

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को सिय्योन का निर्माण करने और जो प्रभु के कार्य का विरोध करते हैं उन्हें यीशु के समान प्रेम दिखाने के लिए उत्साहित करना ।

तैयारी

1. प्रार्थनापूर्वक निम्नलिखित धर्मशास्त्रों का अध्ययन करनाः

   क. एज्रा 1...6 । राजा कुस्रू यशायाह की भविष्यवाणियों में अपना नाम पढ़ता है और प्रभु की सेवा करने के लिए परिपूर्ण हो जाता है । वह यहूदियों को स्वतंत्र कर देता है जो बाबुल में कैद किये गये थे और उन्हें यरूशलेम जाने का निमंत्रण देता तथा मन्दिर का निर्माण करने के लिए कहता है (एज्रा 1) । जरुब्बाबेल और येशू लगभग 50,000 लोगों को यरूशलेम वापस ले जाता है, और वे मन्दिर यरूशलेम शुरू करते हैं (एज्रा 2...3) । सामरी लोग सहायता करने के लिए कहते हैं, लेकिन उन्हें मना कर दिया जाता है, और वे निर्माण कार्य को रोकने की कोशिश करते हैं; पुनःनिर्माण बन्द हो जाता है (एज्रा 4) । कई वर्षों बाद, हाग्गे और जकर्याह यहूदियों को मन्दिर को पूरा करने के कहते हैं; सामरी इसका विरोध करना जारी रखते हैं (एज्रा 5; हाग्गै 1 भी देखें) । राजा दारा कुस्रू की मन्दिर निर्माण के आज्ञापत्र को फिर से जारी करता है, और पूरा करता तथा लगभ ग 515 ई.पू. में इसका समर्पण करता है (एज्रा 6) ।

   ख. एज्रा 7...8 । 50 वर्षों से भी अधिक समय बाद मन्दिर को समर्पित किया जाता है, एज्रा फारस के राजा अर्तक्षत्र से अनुमति प्राप्त करके एक अन्य समुह को यरूशलेम वापस ले जाता है । एज्रा के लोग उपवास और प्रार्थना करते हैं, और प्रभु उन्हें उन की यात्रा में सुरक्षा प्रदान करता है ।

   ग. नहेमायाह 1...2; 4; 6 । यह जानकर कि यहूदी जो यरूशलेम को वापस आये थे ''बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निन्दा होती है,'' नहेमायाह राजा अर्तक्षत्र से यरूशलेम में शहरपनाह बनाने की आज्ञा प्राप्त करता है (नहेमायाह 1...2) । यहूदियों के शत्रु उन्हें शहरपनाह बनाने से रोकते हैं । नहेमायाह मजदूरों को शस्त्र देता है और काम को तब तक जारी रखता है जब त क शहरपनाह बन कर पूरी नहीं हो जाती है (नहेमायाह 4; 6) ।

   घ. नहेमायाह 8 । यरूशलेम के चारों ओर शहरपनाह बन जाने के बाद, एज्रा लोगों को धर्मशास्त्रों को पढ़ कर सुनाता है । जब यरूशलेम नियम की बातों को सुनते हैं, वे रोने लगते हैं तथा उनका पालन करने की इच्छा लोग करते हैं ।

2. अतिरिक्त पठनः हाग्गै 1 ।

3. आप कक्षा के किसी सदस्य को प्रथम धर्मशास्त्र लेख के प्रारम्भ में दिए गए ऐतिहासिक परिवेश का संक्षिप्त विवरण को देने की तैयारी के लिए आमंत्रित कर सकते हैं

4. यदि चित्र प्राचीन समय में प्रयोग किये गये मन्दिर उपलब्ध है, आप इसका पाठ के दौरान प्रयोग कर सकते हो (62300; सुसमाचार कला चित्र किट 118) ।

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

कक्षा के एक सदस्य से एल्डर डालिन एच. ओक्स के निम्नलिखित उद्धरण पढ़ने के लिए कहें:

''हम पता लग सकता है कि, पवित्रात्मा के विशेष प्रभाव के अन्दर, धर्मशास्त्र की एक विशेष आयत जोकि बिलकुल ही अलग परिवेश में नितान्त ही भिन्न उद्देश्य के लिए कही गई थी, वही व्यक्तिगत सन्देश देती है जो हमारी जरुरतों पर आज भी वैसे ही लागू होती है ।...यदि हम धर्मशास्त्रों की तुलना अपनी आज की परिस्थितियों के साथ करते हैं, 'जो हमारे लाभ और शिक्षा के लिए हमें दिये गये हैं' (1 नफी 19:23), एक प्रेमी परम पिता इन्हें अत्यन्त व्यक्तिगत तरीके से आशीर्वाद देने के लिए प्रयोग करता है'' (*Studying the Scriptures* [साल्ट लेक सिटी मंडप में दिये गये भक्ति संगीत दिया गया, 24 नव. 1985]) ।

- क्या आपने कभी धर्मशास्त्रों को पढ़ते समय ऐसा महसूस किया है कि यह विशेष अनुच्छेद मेरे बारे में ही लिखा गया है ? (कक्षा के सदस्यों को उनके अनुभवों को बांटने के लिए आमंत्रित करो ।) कैसे धर्मशास्त्रों ने विशेषकर आपके जीवन में निर्देशन प्राप्त करने में सहायता की थी ?

समझायें कि इस पाठ में चर्चा की गई घटनाएं उस व्यक्ति द्वारा प्रारम्भ की गई थी जिसने पाया कि उसके जन्म से 150 वर्ष पूर्व लिखे गये धर्मशास्त्र के अनुच्छेद उससे व्यक्तिगत रुप से बातें करते हैं—असल में, उसे उसका नाम लेकर बुलाते हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. राजा कुस्रु यहूदियों को यरूशलेम वापस जाकर मन्दिर बनाने की आज्ञा दे देता है ।

एज्रा 1...6 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

निम्नलिखित ऐतिहासिक सूचना का संक्षिप्त विवरण दें (या कक्षा के किसी सदस्य को ऐसा करने के लिए नियुक्त करें):

721 ई.पू. में, जब इस्राएल का राज्य (उत्तरी राज्य, या दस जातियां) अश्शुरियों द्वारा बन्दी बना लिये गये थे, अश्शुरियों का राजा संसार में सबसे महान था । 612 ई.पू. तक, हालांकि, अश्शुरियों का साम्राज्य बाबुलों द्वारा नष्ट कर दिया गया था । राजा यहूदा के शासन में, बाबुल ने उन अधिकतर देशों पर राज्य किया था जिन्हें बाबुल ने जीता था । बाबुलों ने नबूकदनेस्सर के राज्य (दक्षिणी राज्य) 605 ई.पू. से लेकर 587 ई.पू. तक जीता था जब उन्होंने बहुत से यहूदियों को बन्दी बनाया था और यरूशलेम को नष्ट किया था ।

562 ई.पू. में नबूकदनेस्सर के मरने के पश्चात, बाबुल की शक्ति की तुरन्त पतन हुआ । 539 ई.पू. में, बाबुल का मादियों और फरीसियों के हाथों पतन हुआ, कुस्रु के मार्गदर्शन में संगठित हुआ । नबूकदनेस्सर के विपरीत, जिसने निर्दयता से शासन किया था, कुस्रू एक दयावान शासक था । जीते हुए लोगों के साथ दया दिखाकर तथा उनके धर्मों का आदर करके, कुस्रू ने उन लोगों की वफादारी को जीता था जिन पर उसने शासन किया था ।

बाबुल को जीतने के तुरन्त बाद, बताएं ने आज्ञा जारी की कि यरूशलेम का मन्दिर पुनः बनाया जायेगा । अपने दानिय्येल में यहूदियों को उसने यरूशलेम जाने तथा मन्दिर निर्माण करने का निमंत्रण दिया, और उसने सोने और चांदी के बर्तन वापस कर दिये थे जो नबूकदनेस्सर की सेना ने मन्दिर से चोरी किये थे । (देखें 2 इतिहास 36:22; एज्रा 1:1...3, 7 । यिर्मयाह की भविष्यवाणी जोकि इन आयतों में संदर्भ की गयी है कि यहूदी 70 वर्षों की बाबुल की गुलामी के बाद यरूशलेम लौटेंगे; देखें यिर्मयाह 25:11...12; 29:10 ।)

- कुस्रू ने क्यों आज्ञा दी थी कि यरूशलेम में फिर से मन्दिर बनना चाहिए ? (देखें एज्रा 1:1...2 ।) कुस्रू को कैसे पता चला कि प्रभु उससे यह काम करवाना चाहता है ? कुस्रू के शब्द एज्रा 1:2 में अंकित हैं यशायाह 44:28 की भविष्यवाणी को संदर्भ करें इसमें कुस्रू का नाम बताया गया है ।(यशायाह 45:1...5 भी देखें; समझायें कि यद्यपि पुराने नियम में कुस्रू की कहानी यशायाह की पुस्तक से पहले आती है, यशायाह कुस्रू के जन्म लेने से लगभग 150 वर्ष पूर्व रहता था) । यहूदी इतिहासकार फ्लैवीयस जोसेफुस ने कहा था कुस्रू आपने नाम को यशायाह की भविष्यवाणियों में देख कर प्रभु की आत्मा से भर गया था, और उसको पूरा करने की इच्छा जाहिर की जो लिखा हुआ था (*The Works of Flavius Josephus, Antiquities of the Jews,* trans. William Whiston [n.d.], bk. 11, chap. 1, pars. 1...2).
- आप कैसे महसूस करेंगे यदि आप धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर रहे हों और एक भविष्यवाणी पढ़ें जिसमें आपका नाम तथा विशिष्ट रूप से उन चीजों का वर्णन किया गया हो जिसे आप करेंगे ?

जब जरुब्बाबेल और येशु यहूदियों के पहले समुह को यरूशलेम वापस लाये थे, उन्होंने सामरियों को वहां पाया था । आप यह बताना चाहेंगे कि सामरी इस्राएलियों के वंशज थे जो गुलामी से भाग गये थे और अश्शुरियों तथा बाबुल के लोगों, जिन्हें राजाओं ने प्रदेश पर कब्जा करने भेजा था, से अंतरजातिय विवाह कर लिया था ।

- वापस लौट रहे यहूदियों से सामरियों ने क्या कहा था ? (देखें एज्रा 4:1...2 ।) यहूदियों ने सामरियों के प्रश्न का कैसे उत्तर दिया था ?(देखें एज्रा 4:3 । यहूदियों ने सामरियों को मन्दिर निर्माण में सहायता करने से मना कर दिया था क्योंकि वे सोचते थे कि सामरी सच्चे इस्राएली नहीं थे ।) सामरियों ने क्या किया जब यहूदियों ने उन्हें मन्दिर निर्माण में सहायता करने से मना कर दिया था ?(देखें एज्रा 4:4...7, 11...24 । उन्होंने कुस्रू के बाद के राजाओं से शिकायत करके मन्दिर निर्मार्ण को रोकने की कोशिश की थी ।)
- इसके परिणामस्वरूप मन्दिर का काम रुक गया था, कई वर्षों बाद यहूदियों को किसने पुनः काम शुरु करने के लिए कहा था ? (देखें एज्रा 5:1...2; हाग्गै 1 । भविष्यवक्ता हाग्गै और जकर्याह ने प्रेरित निर्देशन दिया था ।) यरूशलेम में मन्दिर निर्माण के विषय में प्रभु ने हाग्गै के द्वारा यहूदियों से क्या कहा था ? (देखें हाग्गै 1:3...4, 7...8 ।) यहूदियों के मध्य कौन सा विचार उन्हें मन्दिर निर्माण करने से रोक रही थी ? (देखें हाग्गै 1:2 ।) कौने से विचार हमें नियमित प्रार्थना तथा मन्दिर में सेवा से रोकते हैं ?

- जब मन्दिर का निमार्ण पुनः शुरु हुआ सामरियों ने फिर से इसे रोकने की कोशिश की । लेकिन यहूदियों ने समझाया कि राजा कुस्रू और राजा दारा ने उन्हें काम शुरु करने की आज्ञा दी है (एज्रा 5...6) । यहूदियों ने क्या किया था जब मन्दिर पूरा हो गया था ?(देखें एज्रा 6:15...22 ।)

2. एज्रा यहूदियों के एक अन्य समुह को लेकर यरूशलेम वापस आया था ।

एज्रा 7...8 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- ठीक जिस प्रकार यहूदियों को स्वतंत्र करने के लिए प्रभु ने राजा कुस्रू के हृदय को छुआ था, एज्रा के यहूदियों के समुह को यरूशलेम वापस जाने के लिए उसने राजा अर्तक्षत्र के हृदय को छुआ था (देखें एज्रा 7:27...28; आयतें 11...26 भी देखें) । अन्तिम-दिनों में गिरजाघर के प्रति सरकारी मार्गदर्शकों के हृदयों को कोमल करने के कुछ उदाहरण क्या हैं ? (देखें, उदाहरण के लिए, थॉमस एस. मॉनसन, Conference Report, Apr. 1989, 65...69; or *Ensign,* May 1989, 50...53 में ।)सरकारी मार्गदर्शकों के हृदयों को गिरजाघर के प्रति कोमल होने के लिए हम क्या कर सकते हैं ? (उत्तरों में सम्मिलित हो सकते हैं देश के कानून का पालन करना, भलाई करना, पूरे संसार को सुसमाचार सीखाने की तैयारी करना, और प्रभु से मार्गदर्शकों के हृदयों को कोमल करने के लिए प्रार्थना करना । देखें सि.और अनु.58:21, 27; 98)4...6 ।)

- यह सुनिश्चित करने के लिए कि यहूदियों का समुह जिसे वह यरूशलेम लेकर जा रहा है, सुरक्षित रहे एज्रा ने क्या किया था ? (देखें एज्रा 8:21...23, 31 ।) कैसे आप, आपका परिवार, या अन्य जिन्हें आप जानते हैं उपवास द्वारा आशिष प्राप्त की है ?

3. नहेमायाह यरूशलेम जाता है और लोगों का शहरपनाह बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है ।

नहेमायाह 1...2; 4; 6 का अध्ययन और चर्चा करें । आप बता सकते हैं कि नहेमायाह फारस के राजा अर्तक्षत्र का पियाऊ था । यह अति विश्वास पात्र और जिम्मेदारी का पद था, जिसमें नहेमायाह को यह सुनिश्चित करना होता था कि राजा का भोजन व पानी सुरक्षित थे । यद्यपि नहेमायाह फारस में एक महत्वपूर्ण पद पर था, वह यरूशलेम में अपने लोगों की देखभाल करता और उनकी मदद करता जब भी वह सुनता कि वे परेशानी में थे ।

- नहेमायाह में क्या किया जब उसने यरूशलेम के अपने लोगों की परेशानियों के बारे में सुना था ? (देखें नहेमायाह 1:4...11; 2:1...5 ।) राजा अर्तक्षत्र ने नहेमायाह के निवेदन का क्या उत्तर दिया था ? (देखें नहेमायाह 2:6...8 । राजा ने नहेमायाह को जाने की अनुमति दे दी, उसको सुरक्षा के लिए पहरेदार तथा सैनिक दिये, और उसे आज्ञा दी कि वह शहरपनाह बनाने के लिए जंगल से लकड़ियां ले सकता था ।) हम नहेमायाह से क्या सीख सकते हैं जो हमें अन्य लोगों के दुखों को दूर करने के लिए मार्गदर्शन कर सकता है ?

- कैसे नहेमायाह ने लोगों को उत्साहित किया था कि वे शहरपनाह बनायें ? (देखें नहेमायाह 2:17...18 ।) आप क्यों सोचते हैं कि सच्चाई की गवाही देने तथा आत्मिक अनुभवों को बांटने में इतनी शक्ति होती है यह दूसरों को भला करने के लिए प्रेरित कर सकती है ? कैसे दूसरों की गवाहियों तथा आत्मिक अनुभवों ने आपको प्रेरित किया है ?

- सम्बल्लत सामरिया का सेनापति था, और वह तथा उसके लोग, यहूदियों जो जरुब्बाबेल के साथ यरूशलेम वापस आये थे, के शत्रु थे । शहरपनाह को फिर से बनाने की योजना पर सम्बल्लत ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ? (देखें नहेमायाह 2:10, 19; 4:1...3, 7...8, 11 ।) कैसे यहूदियों ने शहरपनाह के निर्माण को रोकने की कोशिश की जवाब दिया था ? (देखें नेहमायाह 4:9, 13...15 ।)

- नहेमायाह ने क्या किया जब सम्बल्लत ने उसे काम रोकने तथा उससे मिलने के लिए कहा था ?(देखें नहेमायाह 6:1...4 ।) कैसे कुछ लोग आजकल गिरजाघर के सदस्यों का ध्यान प्रभु के कार्य से हटाने की कोशिश करते हैं ? हमें इन ध्यान हटाने वाली बातों का कैसे जवाब देना चाहिए ?

  एल्डर मारविन जे. एश्टन ने सलाह दी थीः ''कुछ लोग और संस्थाएं कोशिश करती हैं कि हमें अपमानित करके, व्यंग करके और गलत वर्गीकरण करके विवाद के लिए उकसाएं । हम अल्प बुद्धिमान होंगे यदि हम समाज की बातों से प्रभावित होकर खिसयाते, झगड़ा करते, या नाराज होते हैं क्योंकि ऐसा लगता है कि उन्हें हमारे बारे में गलत बयान देने में मजा आता है । हमारे सिद्धान्त या आदर्श किसी अन्य के द्वारा बयानबाजी करने से कम नहीं होने वाले । हमारा काम सिर्फ कारण बता कर, मित्रतापूर्वक, सही सच्चाई बता कर अपनी स्थिति को स्पष्ट करना है । हमारा काम मजबूती से और बिना झुके वर्तमान के आदर्शों तथा सुसमाचार के अनन्त सिद्धान्तों पर कायम रहना है, लेकिन हमारा काम किसी व्यक्ति या संस्था से विवाद नहीं करना है ।...हमारा काम सुना जाना और सीखाना है । हमारा काम न केवल विवाद से बचना, परन्तु यह देखना है कि यह दूर हों'' (in Conference Report, Apr. 1978, 10; or *Ensign,* May 1978, 8) ।

4. लोग आनन्दित होते हैं जब एज्रा उन्हें धर्मशास्त्रों को पढ़कर सुनाता है ।

नहेमायाह 8 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- लोगों ने जब शहरपनाह बनाना पूरा कर लिया, उन्होंने एज्रा से क्या निवेदन किया ? (देखें नहेमायाह 8:1...2 । ध्यान दें कि अधिकतर यहूदी इतने लम्बे समय से बन्दी थे कि उन्होंने कभी धर्मशास्त्रों को न तो सुना या पढ़ था ।)
- एज्रा ने लोगों को कितने समय तक पढ़कर सुनाया था ? (देखें नहेमायाह 8:3, 17...18 ।) उन्होंने कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी ? (देखें नहेमायाह 8:3, 6, 9, 12 ।) कैसे हम अधिक ध्यानपूर्वक हो सकते हैं जब हम धर्मशास्त्रों को पढ़ते हैं ? (चर्चा करें कि कैसे धर्मशास्त्रों को पढ़ते समय और उस हल्की आवाज को सुनने के लिए हमें अधिक सतर्कता बरतनी चाहिए ।) कैसे हम धर्मशास्त्रों के प्रति उसी प्रकार का उत्साह, जो इन लोगों के पास था, का विकास कर सकते हैं ?
- एज्रा ने अपने लोगों को धर्मशास्त्र समझने में मदद करने के लिए क्या किया था ? (देखें नहेमायाह 8:8 ।) आप तथा आपके परिवार को धर्मशास्त्रों को समझने के अपने प्रयासों में किस ने मदद की है ? (आप कक्षा के सदस्यों को विशिष्ट बातें बताने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं जो उन्होंने निजी और परिवार के धर्मशास्त्र अध्ययन में सुधार करने के लिए किये है ।)
- एज्रा और अन्य क्या मार्गदर्शक कहते हैं जब लोग धर्मशास्त्रों को सुन कर भावुक हो जाते हैं ? (देखें नहेमायाह 8:9...11 ।) कैसे धर्मशास्त्रों ने आपको आनन्दित किया है ?

निष्कर्ष

''नहेमायाह की शक्ति, योग्यता, निस्वार्थ देशभक्ति, और निजी ईमानदारी ने एक नये, उन्नत यहूदा के देश एक बार फिर से अस्तित्व में आया था । यरूशलेम की पुनःस्थापना, जोकि सौ वर्षों से भी अधिक समय तक बरबादी में था, शुरु हो चुकी थी । एज्रा एक नेक, समर्पित याजक, नहेमायाह के साथ इस कार्य में मिल गया था, और दोनों ने एक साथ मिल कर यहूदियों के समाज को एक बार फिर स्थापित करने में सफल हुए थे'' (*Old Testament Student Manual: 1 Kings...Malachi* [1982], 314) ।

समझाएं कि जैसे यहूदियों के पास धर्मशास्त्रों का फिर से यरूशलेम करने की निर्माण थी, अन्तिम-दिनों के सन्तों की भी पूरे संसार में सिय्योन को बनाने की जिम्मेदारी है । इस काम में मदद करने के लिए, हमें धर्मशास्त्रों की शिक्षाओं और मन्दिर के काम में भाग लेना है । धर्मशास्त्रों की सच्चाई तथा मन्दिर के कार्यों की गवाही दें ।

कक्षा के सदस्यों को याद दिलायें कि कुछ प्रभु के कार्य को रोकने की कोशिश करते हैं । हमें उनके प्रति यीशु के समान प्रेम दिखाना है लेकिन उन्हें किसी भी तरह से परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने की हमारी कोशिशों से अपना ध्यान हटाने नहीं देना है ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. ''काम तो बड़ा और फैला हुआ है, और हम एक दूसरे से दूर रहते हैं'' (नहेमायाह 4:19)

यरूशलेम की शहरपनाह बनाते समय, यहूदियों ने अपने आपको दूर दूर कर लिया था ताकि वे शहरपानह के विभिन्न हिस्सों में एक साथ काम कर सकें (नहेमायाह 3; 4:19) । कभी कभी वे बहुत दूर होते थे, लेकिन वे सब एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे थे, और एक साथ काम करने के कारण वे शहरपनाह को पूरा कर पाये थे । कक्षा के सदस्यों को याद कराएं कि गिरजाघर संसार भर में कई इकाइयों में बंटा है (जैसे परिवार, वार्ड, शाखाएं, स्टेक, जिले, और परिषद) । कभी कभी एक इकाई दूसरी से बहुत दूर लगती है । लेकिन सभी सन्त एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे हैं, और यदि प्रत्येक व्यक्ति तथा प्रत्येक इकाई समझदारी से काम करें सम्पूर्ण गिरजाघर उन्नति करता रहेगा ।

2. ''मन्दिर अनन्त अनुबन्धों के लिए हैं''

यदि *Family Home Evening Video Supplement 2* (53277) विडियो उपलब्ध है, आप इसके 6 मिनट के हिस्से ''मन्दिर अनन्त अनुबन्धों के लिए हैं'' मन्दिरों के महत्वता की चर्चा के हिस्से के रूप में दिखा सकते हैं ।

पाठ
48

''यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन''

जकर्याह 10...14; मलाकी

उद्देश्य

कक्षा के सदस्यों को (1) प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार होने, (2) ईमानदार दसमांश और उदारता से भेंट देने के लिए उत्साहित करना, और (3) उन आशीषों को अनुभव करना जो पौरोहित्य की मुहरबंद शक्ति के कारण मिलती हैं ।

तैयारी

1. इस पाठ में चर्चा किये गए जकर्याह 10...14 और मलाकी के अध्यायों का प्रार्थनापूर्वक अध्ययन करें ।
2. अतिरिक्त पठनः सिद्धांत और अनुबन्ध 45 ।
3. आप पाठ के पहले हिस्से में से कुछ धर्मशास्त्र संदर्भों अलग पन्नों पर कक्षा के सदस्यों को देने के लिए लिख सकते हैं ।
4. यदि आप ध्यान गतिविधि का प्रयोग कर रहे हैं, दूसरा आगमन (62562; सुसमाचार कला चित्र किट 238) को प्राप्त करें ।
5. अपनी कक्षा में प्रत्येक सदस्य के लिए *नया नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* (31392) को प्राप्त करें । (वार्ड में इन अध्ययन निर्देशिकाओं को वार्षिक पाठ्यक्रम के रूप में मंगाया होगा; धर्मध्यक्षता के सदस्य को इन्हें रविवार विद्यालय अध्यक्षता को देना चाहिए ।)

प्रस्तावित पाठ विकास

ध्यान गतिविधि

आप निम्नलिखित गतिविधि का (या स्वयं की किसी गतिविधि) प्रयोग पाठ को आरम्भ करने में कर सकते हैं ।

दूसरे आगमन का चित्र दिखाएं । फिर निम्नलिखित प्रश्नों को पूछें:

- आप के मन क्या अनुभूति होती है जब इस तरह के शब्दों को सुनते हो जैसे *दूसरा आगमन, अन्तिम दिनों, या समय के संकेत ?* धर्मशास्त्र दूसरे आगमन को ''एक बड़ा और भयानक दिन'' संदर्भ करते हैं (मलाकी 4:5) । यह दोनो ही कैसे हो सकता है ?

  अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा था, ''[उद्धारकर्ता का] आगमन महिमापूर्ण और भयानक दोनों होगा, यह उनकी आत्मिक स्थिति पर निर्भर करेगा जो उस समय बचे रहेंगे'' ("Prepare Yourself for the Great Day of the Lord," *New Era,* May 1982, 49) ।

समझाएं कि इस पाठ में (1) जकर्याह और मलाकी द्वारा अन्तिम दिनों के बारे में की भविष्यवाणियां और (2) दूसरे आगमन के लिए हमारी तैयारी के बारे में चर्चाएं सम्मिलित हैं ।

धर्मशास्त्र चर्चा और उपयोग

जब आप निम्नलिखित धर्मशास्त्र अनुच्छेद सीखाते हैं, चर्चा करें कि कैसे इनका उपयोग प्रतिदिन के जीवन में कर सकते हैं । कक्षा के सदस्यों को उन अनुभवों को बांटने के लिए उत्साहित करें जो धर्मशास्त्र सिद्धांतों को दर्शाते हों ।

1. जकर्याह और मलाकी ने अन्तिम दिनों की बहुत सी घटनाओं की भविष्यवाणियां की थी ।

जकर्याह और मलाकी में से कुछ भविष्यवाणियों की चर्चा करें, जो अन्तिम दिनों की घटनाओं की व्याख्या करती हैं । यदि आपने अलग पन्नों पर धर्मशास्त्र संदर्भों को लिखा है, उन्हें कक्षा के सदस्यों को बांट दें । प्रत्येक कक्षा के सदस्य को उस अनुच्छेद को पढ़ने दें और उस में बताई शिक्षा को बताने दें । यदि अनुच्छेद में दी गई सूचना हमें दूसरे आगमन के लिए तैयार कर सकती है, तो चर्चा करें हमें उसे कैसे लागू कर सकते हैं ।

भविष्यवाणियां जो दूसरे आगमन की तैयारी के लिए पूरी हुई

क. मलाकी 3:1 । मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि एक संदेशवाहक प्रभु के आने का मार्ग तैयार करेगा । यूहन्ना बपतिस्मा वाले ने प्रभु के पार्थिव सेवकाई के लिए मार्ग तैयार किया था, और जोसफ स्मिथ वह संदेशवाहक है जिसने दूसरे आगमन के लिए मार्ग तैयार किया था (देखें मत्ती 11:10) ।

ख. मलाकी 4:5...6 । मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि भविष्यवक्ता एलीशा दूसरे आगमन से पूर्व वापस आयेगा और पिता के हृदय बच्चों की ओर तथा बच्चों के हृदय पिता की ओर मोड़ेगा । यह भविष्यवाणी पूरी हुई जब एलीशा जोसफ स्मिथ को कर्टलैन्ड मन्दिर में प्रकट हुआ था, जब उसने मुहरबंद की शक्ति की कुंजियों को पुनःस्थापित किया था (सि.और अनु. 110:13...16) । *सम्भावित अनुप्रयोगः* हमें अपने वंशजों के नामों को खोजना चाहिए तथा उनके लिए मन्दिर की धर्मविधियां करनी चाहिए (इसकी अधिक चर्चा पाठ में आगे की गई है) ।

- यह जानना क्यों आवश्यक है कि दूसरे आगमन की कुछ भविष्यवाणियां पहले ही पूरी हो चुकी हैं ?

भविष्यवाणियां जिनका उद्धारकर्ता के आने से पूर्व पूरा होना बाकी है

क. जकर्याह 10:6...8 । यहूदा और जोसफ के लोग एकत्रित होंगे, और एप्रैम शक्तिशाली होगा । प्रभु अपने लोगों को ''पूकारेगा,''या आवाज, और उन्हें एकत्रित करेगा । *संभावित अनुप्रयोगः* दूसरी को सुसमाचार बांटकर हम इस एकत्रित होने सहायता कर सकते हैं ।

ख. जकर्याह 12:2...3, 8...9 । यरूशलेम और उसके आस पास एक महायुद्ध होगा, परन्तु प्रभु बीच बचाव करेगा और यरूशलेम के लोगों को नाश होने से बचा लेगा । *सम्भावित अनुप्रयोगः* अन्तिम दिनो की परिक्षाओं के समय हमें परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए ।

ग. जकर्याह 14:8 । जीवन का जल यरूशलेम के मन्दिरों से बहेगा और मृत सागर तथा यहूदा की वीरानभूमि को जीवन देगा (यहेजकेल 47:1; 8...9) ।

- अन्तिम दिनों की बहुत सी भविष्यवाणियों में मुसीबत जैसे युद्ध, प्राकृतिक आपदा, और व्यापक दुष्टता सम्मिलित हैं । हम कैसे आश्वासित हो सकते हैं जब हम इन भविष्यवाणियों और उनके पूरा होने के विषय में सुनते हैं (देखें सि.और अनु. 38:28...30 ।)

भविष्यवाणियां जोकि उद्धारकर्ता के आने पर पूरी होंगी

क. जकर्याह 14:3...4 । उद्धारकर्ता जैतून के पर्वत पर खड़ा होगा, और पर्वत आधे में बंट जायेगा (सि.और अनु. 45:48 भी देखें) ।

ख. जकर्याह 12:10; 13:6 । यहूदी लोग जो यरूशलेम की मुक्ति के समय जीवित थे यीशु मसीह को देखेंगे और शोक करेंगे कि उन्होंने मनुष्य के रूप में उसको मसीहा के रुप अस्वीकार किया था (सि.और अनु. 45:51...53 भी देखें) ।

ग. जकर्याह 13:2 । झूठी मूर्तियों, अशुद्ध आत्माओं, झूठे भविष्यवक्ताओं का नाश होगा ।

घ. जकर्याह 14:5 । नेक लोगों जो पृथ्वी जीवित होंगे उन्हें उद्धारकर्ता से मिलने के लिए खोजा जायेगा । नेक जो मर चुके होंगे पुनःजीवित होंगे और वे भी उससे मिलने के लिए खोजे जायेंगे (सि.और अनु. 88:96...98 भी देंखें) ।

च. जकर्याह 14:9 । प्रभु पूरी पृथ्वी का राजा होगा और हजार वर्ष में इस पर शासन करेगा ।

छ. जकर्याह 14:12...13; मलाकी 3:13...18; 4:1...3 । दुष्टों का नाश होगा, और नेक को बचाया जायेगा (1नफी 22:15...17, 19) ।

- आप क्यों सोचते हो प्रभु ने अन्तिम-दिनों, दूसर आगमन, और हजार वर्ष के बारे में इन भविष्यवाणियों को क्यों बताया है ? (देखें सि.और अनु. 45:56...57) ।

अध्यक्ष एज्रा टफ्ट बेनसन ने कहा थाः ''जब हम परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीवन जीते है, हम आनन्द के साथ प्रभु यीशु मसीह के दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर सकते हैं और अपने प्रयासों के द्वारा जान सकते हैं कि हम, अपने प्रियजनों सहित सम्पूर्ण अनन्तता के लिए उसकी उपस्थिति में रहने के योग्य हैं । इस महान उद्देश्य को पूरा करना वास्तव में बिलकुल भी कठिन नहीं है । हमें क्षणमात्र के लिए इससे पीछे नहीं हटना चाहिए । हमें आपने प्रतिदिन की जीवन से इसे सावित करना चाहिए कि हम—पुनः स्थपित सुसमाचार को फैलाकर, संसार को अपनी गवाही देकर, सुसमाचार को दूसरों को बांटकर, प्रभु की इच्छा पूरी करने को तैयार हैं'' (*The Teachings of Ezra Taft Benson* [1988], 341) ।

- यह जानकर आपको कैसा लगता है कि नेक अन्तता दुष्टों पर विजय प्राप्त करेंगे ?

2. मलाकी उस आशीर्वादों के विषय में सीखाता है जो दसमांश और भेटें देने से मिलती हैं ।

मलाकी 3:8...12 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- दसमांश और भेटें न दे कर लोग परमेश्वर को कैसे ''लूटते'' हैं ?

- पूरा दसमांश देने का क्या अर्थ है ?

प्रथम अध्यक्षता ने बताया थाः ''साधारणतः कथन जो हम जानते हैं वह स्वयं प्रभु का है, जो इस प्रकार है, कि गिरजाघर के सदस्यों को 'अपने साल भर के लाभ का दसवां भाग' देना चाहिए, जिसका अर्थ है कमाई का । किसी अन्य प्रकार से इस कथन को कहना न्यायोचित नहीं है'' (First Presidency letter, 19 Mar. 1970; see also D&C 119:1...4) ।

- प्रभु ने हमें किन आशीर्वादों की प्रतिज्ञा की है यदि हम दसमांश देते हैं ? (देखें मलाकी 3:10...12 ।) कैसे प्रभु ने आपको आशीर्वाद दिया है जब आपने दसमांश और भेटें दी है ?
- दसमांश और भेटें देते समय हमारा उद्देश्य क्या होना चाहिये ?

  प्रभु द्वारा दसमांश देने वालों को आशीर्वादों का संदर्भ करने के बाद, अध्यक्ष गोर्डन बी. हिंकली ने कहा थाः

  ''अब, मुझे गलत नहीं समझना । मैं आपको यहां यह बताने नहीं आया हूं कि यदि आप ईमानदार दसमांश देगें तो आपको एक भव्य बंगला, कीमती गाड़ी, और हवाई में शानदार छुट्टियां बिताने के लिए घर मिलेगा । *प्रभु आकाश के झरोखे खोलकर आपकी जरुरत के अनुसार, और आपकी अकांक्षा के अनुसार नहीं, आपको अपरम्पार आशीष देगा* । यदि आप धनी होने के लिए दसमांश दे रहे हो तो आप इसे गलत मतलब से कर रहे हो । दसमांश देने का मुख्य उद्देश्य गिरजाघर को उसके कार्यो को आगे बढ़ाने के लिए साधन उपलब्ध कराना है'' (in Conference Report, Apr. 1982, 60; or *Ensign,* May 1982, 40) ।
- क्यों कभी दसमांश के नियम का पालन करना चुनौतीपूर्ण होता है ? इस चुनौती का सामना करने के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

3. मलाकी पृथ्वी पर मुहरबंद करने की शक्ति की कुंजियां पुनःस्थापित के लिए एलीशा की वापसी की भविष्यवाणी करता है ।

मलाकी 4:5...6 सीखाएं एवं चर्चा करें ।

- मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि भविष्यवक्ता एलीशा प्रभु के दूसरे आगमन से पूर्व पृथ्वी पर आयेगा (मलाकी 4:6) । यह भविष्यवाणी किस प्रकार पूरी हुई थी ? (देखें सि.और अनु. 110:13...16 । एलीशा कर्टलैन्ड मन्दिर में प्रकट हुआ था और जोसफ स्मिथ को मुहरबंद की कुंजियां सौपा था ।) इसका क्या अर्थ है कि ''पिताओं के हृदय को बच्चों की ओर तथा बच्चों के हृदय को उनके पिताओं की ओर मोड़ेगा''? (इसका अर्थ है हमारे सभी पूर्वजों—हमारे ''पिताओं''—और हमारे सारे वंशजों— हमारे ''बच्चों''—सब हमेशा के लिए मुहरबंद हो जायेंगे । पौरोहित्य की मुहरबंद शक्ति और मन्दिर की मृत और जीवित की धर्मविधियों के कारण, परिवार हमेशा के लिए एक सूत्र में बन्ध जायेंगे ।)
- जब आप परिवारिक इतिहास और मन्दिर कार्य करते हो तो आपको अपने पूर्वजों की ओर अपने हृदयों को मोड़ कर कैसा महसूस होता है ? कैसे मन्दिर अनुबन्ध की प्रतिज्ञाएं आपके हृदयों को अपने माता-पिता, पति या पत्नी, और बच्चों की ओर ल जाती है ?
- मलाकी 4:5...6 का सन्देश प्रत्येक आदर्श कार्यो में सीखाया जाता है (लूका 1:17; 3 नफी 25:5...6; सि. और अनु. 2:1...3; जोसफ स्मिथ—इतिहास 1:37...39) । आप क्यों सोचते हैं कि यह सन्देश बार बार दोहराया जाता है ?

निष्कर्ष

आपने जो बातें इस पाठ में चर्चा करने के लिए चुनी हैं उनकी गवाही दें । इस साल के अध्ययन के पाठयक्रम के अन्त में, आप पूराने निय की शिक्षाओं के लिए अपना आभार प्रकट करना चाहेंगे ।

प्रत्येक कक्षा के सदस्य को *नया नियम कक्षा सदस्य अध्ययन निर्देशिका* दें (31392; देखें ''तैयारी,'') । समझाएं कि अगले साल अध्ययन पाठ्यक्रम नया नियम है । अध्ययन निर्देशिका को अगले सप्ताह से पढ़ने की तैयारी शुरू करने और नये नियम को अपने परिवारों के साथ पढ़ने के लिए कक्षा के सदस्यों को उत्साहित करें ।

अतिरिक्त शिक्षा सुझाव

निम्नलिखित सामग्री प्रस्तावित पाठ की रूपरेखा परिपूर्ण करती हैं । आप एक या अधिक विचारों का प्रयोग पाठ के हिस्से के रूप में कर सकते हैं ।

1. उद्धारकर्ता के प्रकट होने की भविष्यवाणी

- कम से कम सात अन्तिम-दिनों में उद्धारकर्ता के प्रकट होने की भविष्यवाणी धर्मशास्त्रों में की गई है । आप इन में से कितनों की पहचान कर सकते हैं ?

निम्नलिखित सूचना आपकी इस प्रश्न का उत्तर देने में सहायता करेगीः

क. भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को प्रथम दिव्यदर्शन में (प्रेरितों के काम 3:19...21; जोसफ स्मिथ इतिहास 1:15...17) ।

ख. उसके अन्तिम-दिनों के मन्दिर में (मलाकी 3:1; सि.और अनु. 133:1...2) ।

ग. आदम-ओनडी-आहमैन (सि.और अनु. 116; दानिय्येल 7:13...14, 22; सि.और अनु. 107:53...56, जोकि व्याख्या करता है आदम-ओनडी-आहमैन में पिछली सभा उसी सभा के समान है जो वहां होगी) ।

घ. विश्व के युद्ध जिसे हर-मगिदोन के रुप में जान जाता है, के दौरान यरूशलेम में (यहेजकेल 38...39; जकर्याह 12...14; प्रकाशितवाक्य 11; सि.और अनु.45:47...53) ।

च. नया यरूशलेम शहर, इन्डीपेन्डैन्स, मिसूरी में (3 नफी 21:24...26) ।

छ. नेक लोगों को उसके दूसरे आगमन पर (जकर्याह 14:5; 1 थिस्सलुनीकियों 4:16...17; सि.और अनु.88:96...98) ।

ज. दुष्ट लोगों को (सि.और अनु. 133:42...51) ।

2. दूसरा आगमन कब होगा ?

प्रभु ने स्पष्ट किया था कि वह अवश्य ही फिर आयेगा, कोई भी निश्चित तिथि नहीं जानता (सि.और अनु. 39:20...21; 49:7) ।

एल्डर रिचर्ड एल. ईवानस ने कहा थाः ''कुछ भाई-बन्ध...अध्यक्ष विलफर्ड वुडरफ से मिले और...पूछा कि उनके विचार से अन्त कब होगा—स्वामी आयेगें ? ये, मेरे विचार से, उनके एकदम वही शब्द नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा दिये गए जवाब की आत्मा को प्रदर्शित करते हैंः 'मैं इस तरह से जीवन व्यतीत करूंगा मानो वह दिन कल होगा—लेकिन मैं फिर भी चैरी के पेड़ों को उगाऊंगा !' मैं सोचता हूं कि हमें इस विचार को अपने जीवन में लागू करना चाहिए और इस तरह से जीवन बिताना चाहिए मानो यह कल होगा—और चैरी के पेड़ लगाना जारी रखें ! उन बातों के बारे में विचार करके जो हमारी पहुंच से बाहर हैं, हमें अपने परिवारों और मित्रों के साथ मिले अवसर को अनदेखा नहीं करना चाहिए, सम्भावित होने वाली घटनाओं के बारे में सोच कर, हमें उन कामों को अनदेखा नहीं करना चाहिए जो हम यहां और अब कर सकते हैं, तथा वे जो हमारी पहुंच के अन्दर हैं''
(in Conference Report, Apr. 1950, 105...6) ।

THE CHURCH OF
JESUS CHRIST
OF LATTER-DAY SAINTS

HINDI
4 02355 70294 1
35570 294